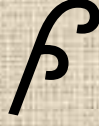


ISSN 2229-547X VIDEHA



वदह ३७४ न अंक १ॡ ढुठई २०२३ (व१ॡ १ॢ नऱस १ॢ७ अंक ३७४)

[वदह (सगऱये २०००) ३ॡषऱस २२२ॢ- ॡ४७श व३येॡहअ (सगऱये २००४) [वदहयेगऱ](#)]



वदह ढैथऱषऱ सऱहऱतऱ अऱगऱडेठनऱ ढऱगुषऱढहऱ संसऱकृतऱढऱ



वदह- ॡनथढ ढैथऱषऱ ॡऱकृषऱकऱ ३-ॡऱनऱकऱ

सढऱऱदकऱ ऱऱऱेगऱनऱ गकृनऱ



Vedika Learning

Gyandha Mahur



ऐ पौथीक सन्वायकान सुकंधान अछी कऱोपास्र (©) याकक वीपति अगुनानि वीना पौथीक कोनो अशक छाया पुननि एन निकांडी सहनि अकृत्नांगिक अथवा यांगिक, कोनो मायुधमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहस वा पुनपुनधोगक पुनमाथि द्वावा कोनो नूपमे पुननूपान अथवा संथान-पुनसासम नै कएए जा सकैत अछी

(य) २०००- २०२३ सन्वायकान सुकंधान गणसनीक गाछ पो सन २००० सँ बाहूसीटीपपन छए हानपौथीयनिसियोनवहसनीक गायहहहानमए, हानपौथीयनिसियोनगुआपवना आदि वीकपन आ अपनो न पुणव २००४ क पोस्र हानपुआपवनागानकनवहसनीकसापोयोन२००४०७वहसनीक-गायहहहानमए केन नूपमे इन्टनेटपन मैथवीक पुनायेगान उपसथीक नूपमे वदियमान अछी (कछु एनि छए हानपुवदियोन२००४०७वहसनीक गायहहहानमए वीकपन, सनो गीथवायक मायहनि १० हानपुसौवायवसिनोवैवदिए २५५ यापुनो स) उनीम २००४ तो २०१६- हानपुवदियोन गणसनीक गाछ पुनथम मैथवी वषऱंग मैथवी वषऱंगक एगोरोटन।

इ मैथवीक पहिप इन्टनेट पानिक थिक पाकन नाम वादमे १ जनवरी २००८ सँ "वदिए" पछी इन्टनेटपन मैथवीक पनथम उपसथीक यापना वदिए- पुनथम मैथवी पाकथीक इ पानिका यनी पहुँचए अछी, जो हानपौथीवदियोन पन इ पुनकाशति होन अछी आव "गणसनीक गाछ" पाछवना "वदिए" इ-पानिकाक पुनवक्राक संग मैथवी भाषाक पाछवनाक एगोरोटनक नूपमे पुनसुकर वऱहए अछी

(य) २०००- २०२३ वदिए- पुनथम मैथवी पाकथीक इ-पानिका (सनिये २०००) इषयस रररर- ५४७३ वस्यएहअ (सनिये २००४) समुपाकः गुणवदैन गकुन। एदनिः बापवदना थहाकुन इन नैसपेयानोड मोनोविस- पुवविसहैद नि वदिए, वदिए एदनि, वदिए होएदस तहे गीहान तो योनो तहे गीव नयहविस तहेम-वासैद गीव नयहविस, गीहान तो नानसवोत नानसवोतिना तहोस नयहविस नए योनो नानसवोत नानसवोतिनाहोव-नयहविस; नए तहे गीहान तो-पुवविसह पुनान-पुवविसह १७७ तहोस नयहविस नयवाकान संग्रहकनान अपन नोविक आ अपनकाशति नयवा संग्रह (संपुनास उनाहदातिव नयवाकान संग्रहकनान। मयथ) एतिनोविसनाडवदिएहानमाथियोन के मेथ अइथमसुटक नूपमे पठा सकैत छथी, संगेमे ओ अपन संकंधपिन पनियथ आ अपन सकैत कएए छोटो सेहो पठावथी एतः पुनकाशति नयवा संग्रह सनक कऱोपास्र नयवाकान संग्रहकनानक छामे छहनि आ एतः नयवाकान संग्रहकनानक नाम नै अछी एतः इ संपादकायोन अछी समुपाकः वदिए इ-पुनकाशति नयवाक वेव-आनकवसु थोम-आयानति वेव-आनकवसक गनैनासक अथकान; आ ऐ सन आनकवसक इ-पुनकाशत पुनट-पुनकाशतक अथकान नपैत छथी ऐ सन छए कोनो नऱपथी पानिसनमिक पुनवयान नै छै, से नऱपथी पानिसनमिक इयछुक नयवाकान संग्रहकनान वदिएसँ नै पुणुड्य वदिए इ पानिकाक मासमे दू अक विक्रैत अछी ए मासक ०१ आ १५ तारिके **वदियोन** पन इ पुनकाशति कएए जास अछी

वदिए होनवाए (वीक **वदियोन**) सि। मुठवदिसयिपवोनय नवनि पुनवाए देदियोनो तो तहे पुनोमोतिन नए पुनसेनवातिनोड तहे मातिहवि वनगुओ, वीनानुने नए युवुने शं सि। पवनाउनम उन सयहोवनस, तेसोनयहेनस, तेनानिस नए पोतस तो पुवविसह तहेन गीकस नए सहने तहेन कनोअडो नुनो मातिहवि वनगुओ, वीनानुने, नए युवुने थहे पुनवाए सि पुवविसहैद नवनि तो पुनोमो नए पुनसेनय मातिहवि वनगुओ नए युवुने थहे पुनवाए पुवविसहैद नानयिअस, तेसोनयह पापेनस, वीक तेवोसि, नए पोतनय नि मातिहवि नए एवविसह वनगुओस शं अडो उनुनेस नानसवोतिनस डोड वीनानयोनिकस उनीम तहेन वनगुओस निनो मातिहवि शं सि। पेन-तेवोद पुनवाए, गैथिह मेवगस तहान नानयिअस नए पापेनस ते तेवोद वधे अनेनास नि तहे उअडे वेउने तहय ते लयेपोए उन पुववियोनो **वेनन एसवोद पुनेये** हानपुसुवनसगुओथियोन, हानपुसुगतिहयवोनवनिगवनिहवकसवनामकस-वनस, हानपुसुसुयानयोन थहेसे ते पनान-न-दनाहव वीकस, सेनद युन टुनेसि तो एतिनोविसनाडवदिएहानमाथियोन थहे गीकसोड सोमे ड तहसे ते एवविअवडे उन सापेन वीगुअपे अथस [(य) अनेन थहाकुन, सापेसवदिएहानमाथियोन], सेनद युन टुनेसि तो सापेसवदिएहानमाथियोन थहे योनोवनास नए दैयुनेवनास-पुवविसहैद वय वदिए (सनिये २०००) इषयस रररर- ५४७३ वस्यएहअ (सनिये २००४) ते पेनोदियेअव वेवना थहेयकेद उन लयससविवीपति सिसेसु थैपेवोतिह दिसाविवीतिस सहुवद गोन होव दडिउयुवयन लयसससवो। तहसे योनोवनास दैयुनेवनास

© अनेना थहाकुन (सापेसवदिएहानमाथियोन)

वदिए-होनवाए इससे मो ३७४ न **वदियोन**



समानागतान पनपनाक वदियापनि- यतिन वदिए समानासँ समानानि शनी पनकवोड नमऱुड द्वावा

मैथिली भाषा भाषाभाषीनी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवाच- मातृभाषाहि संस्कृतम्।

अक्षय्य पम्पना (आष्विन पम्पना)

गण्डिवं पेतान्हाकात्रिणसु कर्तित्विच्छिपिसंगेन अक्षय्य पम्पनाम्ना ज्ञानमन्त्रो वगर्थावदेशः। (कीर्तिनिधिः प्रथमः पृष्ठः पहिले दोहा)

मागे आष्विन नूपी पम्पना गन्निमास कऽ ओरुपन (गण्डिव पम्पना नूपी) मंत्र जँ गै वाग्वह ज्ञान तँ ऐर्त्तुशिवनूपी कृषेत्तमे ओकर कीर्त्तनूपी छती केना पसना।

सुकुष्ठ यजुर्वेद (ऋच)-यथेमा वायं कृष्यामीमावदागि जगेश्वरः वृहन्नाजग्याभ्यां सूत्राय यात्राय य स्वाय यात्राय याहम सत्र गोटके ई पत्रिण वामी (वेदवामी) सुगावी। वृहन्नासके, कृष्यायिके, सूत्रके आ यात्रके; अपन छेकके आ अपनयिके सेहे (मागे सत्रके)। मुदा ऐ वेदवाक्यक वापिनी। मनुस्मृति वेदवामीक अर्थयत्न श्रवणके समाजक कछि गोट छेठ वषिय कऽ याहक, मुदा स्मृति सेहे वेदवाक्यके प्रमाण मागेन अछि (श्वेद प्रमाण) तँ एक वन्दित्य देठ ओकर गन्देश स्वयं अमात्य गऽ जासि अछि।

यो गीत पुष्टो यह दाम वय गहे हानवेसत यु गोप वृण वय गहे सेदस गहन यु पठान - दोवेन दुसि धोवेनसोव

वदितः मातृभाषा इतिहासे मोवेमेव

१

ॐ ह्रीः शान्तिरन्तरिक्ष गंग शान्तिः

ॐ ह्रीः आसिबुद्धिश्च W आसिः

शुक्लम्

३७ गन्धर्व कर्ण- अर्जुन शिपि (पेप-२३)

३८ गन्धर्व वधिस नाय-मोटासाश्कवि

३९ गन्धर्व प्रसाद मन्त्र- सुयोगि (यात्रावार्हिक उपन्यास)

४० गन्धर्व प्रसाद मन्त्र-योगी पविषी (उद्युक्त्या)

४१ गन्धर्व नायास मन्त्र-वदवि नह्य अर्जुनसकच्छि (उपन्यास)-
यात्रावार्हिक

४२ संतोष कुमार नाय 'वदोहि' - मंगलौगा (यात्रावार्हिक उपन्यास)- (तेनहम
पेप)

४३ पद्य प्याम्

४४ ङ्गा गयोअ नहमाग जाशुगी - एकटा गदी छत् एही गदी मे

४५ ङ्गा सुमंगला हा- सत्य कहूँ

४६ गान कशौन मन्त्र-आत्मवध

୪ ଅନୁଭାଗକ

୧. ପ୍ରତିହ ୩-ପ୍ରାକ୍ରିକ ସମୟ ପୁନାଗ ଅଙ୍କ ପ୍ରତିହୌ ମୁନାଗାଠ' ସ ୧୭୭୭୯ ସିମ୍ଭେସ

୨. ମୈଥୌ ପୌଥୀ ଡାଉଗଠୌ୭ ମାଗିହୌୌୌକସ ଧୌଗଠୌ୧

୩. ମୈଥୌ ଅଠୌୌ-ୌଠୌୌକ ସଠଠଗ ମାଗିହୌୌୌଶ୍ରୌୌସ-ପ୍ରୌୌସ

୪. ମୈଥୌ ଶସ୍ତି, ପାଠ ଆ କଶିଠୀ୧ ସାହାମ୍ପ୍ର ମାଗିହୌୌୌ ଷହୌୌୌୌୌ ଡାମାଗାମୁୌ

୫. ପ୍ରତିହ ସ୍ମୃତୀ କୌଗ

୬. ପ୍ରତିହ ୩-୭୧୧୧୧

୭. ପ୍ରତିହ ସୂୟଗା ସଠମ୍ପକ ଅଗ୍ରେଧାମ

୮. ଅନାଠୌୌୌ ଡାମାଗାମୁୌ ମି ମାଗିହୌୌୌୌୌ ପ୍ରତିହୌ ମାଗିହୌୌୌ ଡାମାଗାମୁୌ ମୌୌୌୌୌ

୯. ପ୍ରତିହ ମଧିୌୌୌୌୌ ମୌୌ

୧୦. ପ୍ରତିହ ମଧିୌୌୌୌୌ ମୌୌ



ॐ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष W शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे,
वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आपः-
जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे,
औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति
हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच,
आपः-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

१

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ॐ, ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ प॒रु॒षः॑। ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ शः॑
ए॒ ह्य॒ पा॒त्।

स भूमिं गंग विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ प॒रु॒षः॑। ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ शः॑। ए॒ ह्य॒ पा॒त्।

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने
अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत॥

ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ प॒रु॒षः॑। ए॒ ह्य॒ शी॒र्षा॒ शः॑। ए॒ ह्य॒ पा॒त्।

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

प↓ ड्र्यां ऋमि↓ दिभः↓ श्रोत्रा↑ ↑ ७।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❁ (White Florette- innocence and purity)

❁ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

ॐ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम सिद्धिबन्धु, सिद्धम् Devanagari Anji)

ᳵ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

ॐ (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

ॐ



११७७७६१ ७१११- गूगल अंक सम्पादकीय

१२अंक ३७३ ५१ टिप्पणी

११७७७६१ ७१११- गूगल अंक सम्पादकीय

अरुचमहश्रद्धाथ (मश्रद्धाथरुचम)

अरुचमहश्रद्धाथ [मातिहवि वेनसोनि र तनागसठाणीन इगदियथनागसर
गुनयहेदो ग माय रद, २०२३; साठिकानि छेगने 11 अरुचमहानात गुनयहेदो
गे हृष्य २८, २०२२]

हानपसूःशिवहानातिमायनि (अरुचमहश्रद्धाथ इथ मश्रद्धाथ)

हानपसूःमोदेउसाशिवहानातोनागमत्वर (मातिहवि थनागसठाणीन
वेनसोनि र)

हानपसूःगतिह्रुवयोमअरुचमहानातइगदियथनागसर

हानपसूःनशिवीनावसर३०५६३०७

हानपसूःगतिह्रुवयोमअरुचमहानात (घतिह्रुव अरुचमहानात)

हानपसूःशिवहानातिमायनिमोदेउस (अरुचमहानात मोदेउस)

हानपसूःदोयसगोउयेयोमडोनसूदे१६अरुपड७पडएओन६६६४पशदवउदय
दंछष६९सयननउमदवसगाँसवमदवउसगददोदटअवीडोनम?पठि=१ शु
दी थनागसयनविन मातिहवि अपपठय)

- घाणेगदना थहाकुन, दगिोन, वदिल (वे पानातोड वदिल वदिलयोनि -
सेगद युोन श्रौहानसअपप गो तो +दं१दं१दं१दं१०७२९ सो गहान ति याग वे
1ददेद तो गहे वदिल श्रौहानसअपप गनोदयासत डसित)

अपग मंगव्ये दगिोनाठिसगाउडवदिलवामाठियोम पन पडाउ

१२अंक ३७३ प१ टपिपामी

आशीष अगयन्निहम

मथिषिक्षममे प१मानगद एठ क१स जीक गीगा माहात्स्य गीक णकँ आगँ
वर्क गहठ अष्ठा व्रदिह पैटा१ दीपेश क संकठग अद्गुन् अष्ठा (आ१का३३)
अष्ठा स्रवागा१ जीक गकु१ कुमा१।

अपग मंगव्ये दगि१गि१सि१गा३३व्रदिहवा१मा१ठियो१म प१ प३३३।

रुग्णस्य पाम्पुड

रुग्णस्य दीपेश कुमान् डाकु- मथिषिक इतिहासिक वैज्ञानिक अध्ययन एवं
शोक-समीक्षात्मक विश्लेषण

रुग्णस्य पाम्पुड काव्य- गीता महात्म्य (आगाँ)

२३कुमान मगोण कश्यप-सम्मान के

२४आयान्त्र नामागण्ड मम्-गोठ् नामेश्वरम ठिगि स्थापना

२५उमेश मम्- मुदा सुयान गहिये

२६उमेश कामा-उँ उमेश मंउः एक मैथिली अग्रियोगि जगनाः सुभाष
यग्नै यद्वै शम्भू वावूक आत्मकथा मथिलिक स्वर्गात्तना सेनागी : सधैना
- गुनैम् उद्युक्त्या- हैथ

२७गन्मिठा कम्- अग्नशिपिा (प्येप-२३)

२८गण्ड विस नाम-मोटनसारकठि

२९गण्डिस प्रसाद मम्- सुयानि (यानावाहिक उपग्यास)

३०गण्डिस प्रसाद मम्- योनी पठिठी (उद्युक्त्या)

३१गण्डिस गानायाम मश्री-वदठि नहठ अर्या सगकछि (उपग्यास)-
यानावाहिके

३२संगोष कुमान नाम ' वटोहि' - मंगानौगा (यानावाहिक उपग्यास)- (गेनहम

पेप)

३१७०ं दीपेश कुमान ङकुन- मथिषिक शलिसक व्रैण्णानकि अद्ययन एवं
ओकन समीक्षान्मक व्रिश्लेषम



डॉ. दीपेश कुमार गोकुल

मथिषिक शहिसक वैज्ञानिक अय्ययन एवं ओकन समीक्षात्मक
वसिषेसम

शोध- पत्रक शीर्षक:

मथिषिक शहिसक वैज्ञानिक अय्ययन एवं ओकन समीक्षात्मक
वसिषेसम

षेपकक नाम आ संवदधना: डॉ. दीपेश कुमार गोकुल,

शक्तिषावदि, प्नाय्यापक (अंग्नेणी) मानवकी

डीआईटी वसिषवदियावय, मसूनी नोड, देहनाहूण, गाना

डेपेसहणगेवेमवेमगामाठियेम +ट्प- ८५२७७४०४९८

शोध सानांश:

मथिषि णकना नपिहण आ नपिठुक्का कऽ नामसँ सेहे णाणठ णाऽन
अव्छा, गानाक वहीन आ वेपावक दक्षमिपूनी गाने अवस्थति एक

भौगोलिक आ सांस्कृतिक क्षेत्रों की है। ई क्षेत्रों में महानदी, गंडी, दक्षिण में गंडा नदी, पश्चिम में गण्डकी नदी आ उत्तर में हिमालय के तट पर है। मथिवा क्षेत्रों के मुख्य भाषा मैथिली है आ ई भाषा वापस हीन लोकसंग के मैथिल कहल जात अछि। मथिवा नाम सामान्यतया ब्रह्म साम्राज्य के उद्देश्य के लिए प्रयोग कएल जात अछि आ सड़गे आधुनिक-काल के क्षेत्रों से ही ब्रह्म के प्राचीन सीमाओं के भीतर अछि। हम शताब्दी में, जयन मथिवा क्षेत्रों के दंडिगंडा नाम देना सांस्कृतिक कएल गेल छल, वृत्तिसि नाम एकरा एक न्यास नाम प्रक रूप में पहचान के ई ई क्षेत्रों में कृष्ण कऽ देना छल। हिनू यात्रा के ग्रन्थ संग में सबसे पहिले एक उद्देश्य नामासंग में भेटल अछि। मथिवा के उद्देश्य महानगर, नामासंग, पुनासंग तथा जैन आ वैद्य ग्रन्थ संग में से ही अछि। नामासंग अछि जे मथिवा नाम पौनासंग नाम 'मथि' कऽ नाम से कएल गेल आ अपन पति नामासंग कऽ संगीत से बनाएल गेल नाम जात अछि। कथि ए नऽ हुनकर उत्पत्ति अपन पति के देह से मन्थन उपरान्त भेल छल, एही काम से आ मथि कहाएल। पौनासंग के प्रथम नाम नामासंग के नाम नामासंग नाम जात छल। तब से मथि कऽ नाम प्रक ई क्षेत्रों के नाम मथिवा पड़ल। मथिवा जनकपुरी के नामासंग छल आ नामासंग मथि जनक से उत्पन्न भेल छल। तब काम से स्रष्ट मथि आ हुनक वादक सासक से ही जनक कहाएल। एक वाद मथिवा के नामासंग के जनक कहल जाएल। सीता के पति सीतल जनक छथि जे वाष्पनी के नामासंग के हिसाब से जनकपुरी के पत्नीसंग नामासंग भेल छल। देवी मातासंग से जन्म लेल अछि जे नामिकि उन्मत्त पीढ़ी में नामासंग जनक सीतल भेल छल। हिनक ब्रह्मनाक यन्त्र देवी मातासंग, संगीत संग ब्रह्मगीता, वृष्ण पुनासंग, वृहद् वृष्णपुनासंग आ अग्र पौनासंग के ग्रन्थ में भेटल अछि।

कौशिकी, गंडा आ गण्डकीय नामासंग सीता छल। तब काम से ई क्षेत्रों की नामासंग कहाओल।

शाम्भकी, सुव्रता एवं तपोवनसँ शुकुतामन होयवाक कामस ई तीनशुकुता
कहाओ।

ऋक, यजु आ साम तीन्हँ वेदसँ आहुताई वता व्राम्हंसक गविस छथ गार्हा
पेठ ई तीनशुकुता कहाओ।

इक्ष्वाकुतनय गमिकि अथगिायकत्वमे, व्रह्मन्षी गौतमक मातृगद्गणमे
एवं सत्यानवेषी अग्नि-वैश्वानरकि वैश्वानरक सद्दियागतक पुनश्चिमे
आयु सन्ध्याक एक पुत्राग सन्धियुक्त कछेसँ स्थापानति गऽ सुदू
पुनमे आवि एकटा भौगोथकि, गणगैरकि आ सांसकृति ईकाई केँ नूपमे
पुनशुत्व स्थापति कएक, जकर नामकाम “वदित्” भेठैका कांठानमे
जप्यन जगक-गणवंशके अन्तनायकीनी जगक कनाथ भेठ, ओ
सुपुनश्चिदि सामाजिकि भाग्यता आ पुनपुनाक अकिन्मस कएगर्हा
जप्यन कनाथ जगक के जगता द्वावा हत्या कऽ देठ गेठ आ मथिथि मे एकटा
सन्वथा गुतन शासन-पुमाथी (गामतान पुमाथी) अस्तित्वमे आए।
वदित् गामतान वगठ आ एवम पुकामे वदित् वृज्जकि संग गामतान
पुमाथीक पुमातेना वगठ एक समग्र जप्यन तुनक अश्चगाग युगमे गानक
अतनी भू-गाग पुन मुगठक आकामस गऽ नहठ छठ ओहि समय मथिथि
हगिहु पुनशासकक अधीन अपन स्वतान अस्तित्वके सुनक्षति नप्यवमे
सश्चठ नहठ। एहि भू-पामऽ पुन कनाथ गणवंशक शासन १०८७ ई० मे
पुनान्मन भेठ गहुपान ओश्चवान वंशक शासन आए। पहिठवेन
सग १३२४ ईस्वीमे गिहुनमथिथि, तुगठक साम्नाज्यक अधीन भेठ आ
दन्दिगाक नाम तुगठकपुन कऽ देठ गेठ। वंगाठ व्रिज्य अथियनके दौन
श्चिनिण तुगठक जप्यन गिहुन पृह्यठ, ओ कामेश्वर गकुनक अगुण
भोगीश्वर के शासक गपिकुन कएक, मुदा एहि समयक शासन व्यवस्था
स्थानि गहठ।

मुग़ल शासन आ महेश डाकुन:

मुग़ल शहशाह ज़ाहिरुद्दीन अकबर द्वारा महेश डाकुन केँ मथिषिक गण सौपठ गेठ, तयने सँ पुरानमग़ मेठ पंडवाठ गणवंशा एतय एकटा ऐतहिसकिक दृष्टिकोम अछि जे अकबर अपन कूटनीति सँ मथिषिक जे पूनवहसिँ अपन गणतैतिक ओ भौगोलिक अक्षुभ्मता वनाकऽ नयने छठ, तकरा वनिषट कऽ देठक। दरभंगामे शाहि औपदानक गयिक्तीति मेठ, आव निहुकें सुवा वहिनक भाग घोषति कऽ देठ गेठ। एहसिँ पूनव मथिषि आ वहिन मनिग छठ। अकबरक कूटनीतिसिँ मथिषिक भूमि जकर अपन पुनकृति, भौगोलिक आ गणतैतिक स्वतंत्र स्वरूप छठ तकरा गनार्हि ठेठ गेठ एकन पुनक्तिन कोनो रूपे नहि दियने अपठ। अद्यावधि मथिषि वहिनक अंशभातन वर्ग कऽ नहि गेठ। एतहसिँ मथिषिक अयोगनि पुनानंन नऽ गेठ, तथापि मथिषि एयनहुँ अपना केँ एकटा सांस्कृतिक इकाई के रूपमे जीवंत नयने अछि जयन शहशाह अकबर काठमे एक ठाय माठदह आमक गाछ ठगाओठ गेठ जकर नाम देठ गेठ ठक्या जे कठानमे ठैकहा नाममे पुनविनीति नऽ गेठ, नहिनि एक ठाय वम्वई आमक गाछक वगीया ठक्या ठगाओठ गेठ जकर नाम कठानमे ठैकही पडठ।

मथिषि पन अंग्रेजी शासनक पुनभाव:

सन १७६४ ईस्वीक वक्सन युद्धक पछानि वंगाल पुनतिक संगहि-संग मथिषि, व्निटिसि ईस्ट इंडिया कम्पनीक अयोग आवागिठ, मुदा यत्रातय जे अंग्रे पुनशासनक अघनिस्थतामे मथिषि अपन सांस्कृतिक क्षमता केँ अक्षुभ्म नयवामे सञ्चठ नठ। १८१५ ईस्वीक अंग्रे-नेपाठ युद्धक उपान मेठ सुगौठी संघि जहसिँ मथिषिक गणतैतिक नक्षके मान ओ नेपाठ के

वीय व्रिणाजति कऽ देठ गेठ, महाराजा उक्ष्मीस्वरा सहिक गानतीय
 राष्ट्रिय कांग्रेस आ स्वतंत्रता आंदोलनमे योगदान, वरिष्ठ
 हेतु मथिषिकषण उपिकि महारा आ मथिषिक दयनीय स्थिति संगर्ह
 विकसक गव-दिसा सेहो देपौठगर्ह अर्था ठेपक कहै छथि जे कोनहु
 क्षेत्रक स्वतंत्र अस्मिताक हेतु ओतुकका भाषा आ संस्कृति जीवति
 नापव पनम आवश्यक अर्था जँ इ जीवति अर्थात जनता केँ जागृत हेतौ
 ओ अपन आर्थिक आ गान्धीतिक अस्मिताक पुनः प्राप्ति कऽ ठेठ, मुदा
 सांस्कृतिक उपवर्षा स्मृति टुटि गेवाक उपान एकना पुनः हासि
 गहि कएठ जा सकैत अर्था वर्तमानमे मथिषि भौगोलिक रूपेँ वसिठति
 अर्था, आर्थिक रूपेँ गत अर्था आ गान्धीतिक दृष्टिँ अस्मिता-व्यसन
 अर्था, मुदा एतय सनसवती केँ उपासक गवास नहठ छथि, एतका धरती
 उत्तरा सम्पन्न अर्था, एहि क्षेत्रमे जठक प्रयुगता अर्था जार्हिसँ
 कृषिगत उद्योगकेँ ठेठ एतय अपन संभावना वदियमान छैक। मथिषिक
 स्वरात्मि गवर्षिक प्रता ठेपक आशावति छथि जे शहिस अपनाके
 दोहावैत छैक आ एकरे अनुपाठमे मथिषिमे गवर्षिक गन्मास होयत आ
 महाकविकेक पंथ पुनः गुंजायमान होयत।

माहुक पहिठ प्पुनाक मुगर्षि शासन सँ सुन गेठ, ठेपक भागैत छथि जे
 मथिषि प्रशासन पन पंडवाठ गान्धीनोत्स मथिषिक सूत्रासत थिक, एहि
 कर्षसँ अकवत मथिषिके सूवा-ए-वहिनक हसिसा घोषति कऽ देठका
 माहुक अर्था प्पुनाक पाश्यातय प्रमाठीक सामगवादी शहिसकानक
 आठेपक मायमे मथिषिके देठ गेठ। अंग्रेज शहिसकान वी समथि ठिपि
 देठति जे प्रजातंत्रक जन-स्थ वैशाखी अर्था मुदा ऐतिहासिक रूपेँ इ
 अंग्रेज आ मथिया छैक, ठेपक कहैत छथि जे अतन वैदिक कठिन
 संस्कृति, पारमिीक ग्रंथ अष्टाय्यायी, कौटिलिक अर्थशास्त्र आ
 अश्वघोषक बुद्धयति आदि वैदिकसाहित्यमे एकन स्पष्ट उठेप्य अर्था
 जे प्रथम गान्धीन वदित अर्था माहुक अर्था प्पुनाक मथिषिके अंग्रेज-
 नेपाठ बुद्धक पश्यात सुगौठी संघिक मायमेसँ देठ गेठ। मथिषिक अस्मिताके

गष्ट कतैक पुन्यास एक वेग सेग भेग, भथिथिके माहुनक अगुथि पुनाक भेटग आ ३ पुनाक छग पंडवाग गागपुनशासनक वनगाकुगग गाथा गीगसंवधी सनकुगग गहमि भैथथि गाथाके सथाग पग हदि गेगा गाथाके सथाग देग गेग एकन कुपगसिम ३ भेग गेग सुवाधीगगा पुनापुनकि पछगग गपुग गागुय पुगगुगग आगुग वगग गऽ सव कछु गहगिहु भथिथि पुनागग गह वगग सकग, गकन भूग कानस गहैक गाथाई आगाना भथिथि कषपिपुनयाग कषेग छग, मुदा सुवाधीगगा पुनापुनकि वाद गानग सनकान अपग पुनथम पुनहान भथिथिक कषवगुग पग कएगका गभेदानी उगभूग अघगियम के गाम पग पुनथम पांगकि कषक वगगक डडह गेग देग गेग गपुग सग १८५१ ईसवीमे सगुवोयुय ग्यापुगुय भैथथिक पकषमे (महानागा कामेश्वर सहि) गगिसुय देग एह अघगियम के गैगसंवधीगकि घोषगि कतैग एकग गगिसु कतैक आदेश पागगि कएगका गपुग दठिठिक कानुयपाठकि अपग वाग पग अडगि गहैक गेग संवधीगमे पुनथम संशोधग गक कऽ देगका

डॉ गगपुनसग आ भैथथि गाथा:

गाथाके अपग वषिद अयुयगग सँ डॉ गगपुनसग अपग गगिगसुठिकि सगवे आँसु सगुडियमे सथापगि कऽ युकग छथि आ गहगि गाथा के संवधीगकि अषुठम अगुसुयमि गगह देग गेग छैक, गेग गेपाठक द्वगगीय गगगगाथा अछा, गेग हानपंडक द्वगगीय गगगगाथा अछा गकन गगभसुथगके हदि गेगा कषेगन मागग गगन अछा, कानस वहिनके हदि गेगा कषेगन मागग गगन अछा एगका वासगिदाक मागुगाथा हदि गह थकैक पुनय गगगग हगिदि गेगा कषेगनमे कएग गगच्छा सवकयि गगगैग छी गेग वहिनक गगसमुदायके मागुगाथा अछा भैथथि, गेगपुनी आ गगहगि हदि एगका गगकय गाथा हेय ३ एक गगगैगकि सैसग छैक गेगक कहेग छथि गेग “गभे गे गगना की सदियी गे सगग पई” भैथथि गाथाक संग ३ पुनथम अछा, सगवदी गगगिग भैथथि के अषुठम अगुसुयमे सथाग पावेमे सारगियकान गेकगि सारगिय अकानिक

पुनस्कारमे एतपटाएठ छथि मैथिली, कान्थाएयक भाषा गहिवगसिकठ अछि जाहि सँ आमजनके सोकान छैन्ह, संवैधानिकि प्रावधान रहितहुँ हम सब एहि दिसिमे कुगु डेस कदम एम्बगयनि गहि उठा सकथहुँ अछि ऐयक, कहैत छथि जे व्रतमानमे गानाम पंयायत, गानगीतिकि सत्ताक पुनमुम् केग्टन वगि कऽ उठैत रहैत अछि आः एतय कान्थाएयमे मैथिलीक उपयोग अर्थकि सँ अर्थकि होयवाक याहि जगता के अपन जगभाषामे अन्वियक्तिकि अर्थकान छैक।

एकटा कहवी छैक जे पुनत्येक यानि कोसक दूनी पन भाषामे उद्युआंशिकि पनित्वगत होइत छैक, जान्ज गनियनसग सेहे एहि संद्वन के जाकि कएने छथि, मुदा मैथिलीके संग गानगीतिकि गऽ रहैत अछि, मैथिलीके वांटत जा रहैत अछि आ ओकर आसतित्वके कमजोर कएत जा रहैत अछि। व्रतमानमे मैथिलीके पश्यमि मथिथिमे वृज्जिका, पूनी मथिथिमे अंगिका आ दक्षिमी भागमे प्योग के नाम सँ दृषपुनयानि कएत जा रहैत अछि। मुदा ई पनम सत्य अछि जे इ सब मैथिली भाषाक स्वतुपअंग अछि आ एकर क्षेत्रीय बोधि अछि। ऐयक एहि विषयमे एकटा व्यापक दृष्टिकोस न्यवाह अछि, हगिक कहव छैन्ह जे एहि क्षेत्रके साहित्यके मैथिली साहित्यमे स्थाग भेटवाक याहि एतका पुकाशति नयना पन साहित्य अकादमी पुनस्कार, यात्री पुनस्कार, येतना पुनस्कार आदि ऐठ वरियान कएत जाए। गःसंदेश एहि सँ एहि दिसि मे पुनयिोगति कठिग गऽ जायत, मुदा एहि सँ मैथिली भाषाक सामन्य वढा, शकतिकि वृद्धि होयत। ऐयक, मथिथि क्षेत्रक वगिनैत पुन्याव्रतमके स्थिति सँ सेहे गनाश छथि, मथिथि पक्षीक वासक नामधामे वनी रहैत अछि। पक्षी वशिषज्म यात्रुस रंगवशि यानि दशकयनि एहि क्षेत्रमे रहिकऽ वशिषिट अययन कएतगह आ अपन अययनक सात “जगनठ आंशु वंवरक गेयुनठ हिसिटी” पुकाशति कतौठनि जाहिमे ओ कमसँ कम तीग सैय तोनासी पुजातिकि यडिस्क उपस्थिति दिसौने छथि। मुदा व्रतमानमे कतेको पुजाती वृष्टिपन गऽ युक्त अछि वा गऽ रहैत अछि। ऐयक एहि दिसिमे गनतपुन पक्षी अन्वयान्म्य जकाँ मथिथि क्षेत्रमे अन्वयान्म्य

वक्रिसाति कनैक वाग कऽ नहएह अछा

मथिठिसँ वौद्ध्यकि पठायन:

भाषाके महत्ता, हनिक गणि भाषाके पुनर्निर्माण- उद्गारन देप्पिठिगत अछिजे मैथिलि आ मथिठि हनिक यमनीमे सदिपिन पुनर्वाहति नहैत छन्हि। ठेपक महेदय, आनक्षाममंडल कमीशनक वृत्तिषिका के वाग कएएह अछा। ठेपक, एकरा मथिठिसँ वौद्ध्यकि पठायन के कामस भागैत छथि। ठेपक कहैत छथि जे एहि आनक्षाम नीतिसेँ मैथिलि वनामहस युवा के गकक टुटै आ ओ सहन दसि पठायन कएक आ अपन योगदानक अगुनूप गोजगार कऽ नहए अछि। मुदा मथिठि पर एकन कुपुनर्माण जवनदसत गेठ छैक, अयकिंस युवा मथिठिसँ कटा जेवापर आतुन छथि। ठेपक कहैत छथि जे मातृभाषा मैथिलिक माध्यमे एहि दिसामे संगठित होइक पुन्यास कए जा सकैत अछि।

मानव-संसाधनक सवसँ पैघ गिन्यातक मथिठि अछि। एहिसँ अक्षिपति, अन्यक्षिपति, शक्षिपति, सुक्षिपति आ पुनक्षिपति मैथिलि सव गानत गह सन्मपुस वसिषमे पसतए छथि। ठेपक आशावादी छथि, तार्ही वसिषास छैह जे एक-गै-एक दगि मथिठिक दगि सेहे घुनत।

स्वतंत्रता आंदोलनमे मथिठिक योगदान:

स्वतंत्रता आंदोलन मे मथिठिक भूमिका पर यन्था कनैत, स्वतंत्रता आंदोलनमे महानाण उक्ष्मीश्वर सहिक योगदान अवसिमानसीय अछि। एक समय छठ जे महानाण काँग्रेस के सवसँ पैघ वृत्ति पुनदाना नहथि। एहि संदर्भमे ठेपक एकटा घटना केँ जकि कएएह अछि जे जपन समुद्रियन बेसनठ काँग्रेसक यत्न अयविसन १८८८ ईसवीक रद सँ रद दसिभवन यनी उवाहावादेमे होएवाक गनिमय गेठैक, अंग्रेज सनकाल सँ पुसनो वागमे

अथर्ववेद अथर्ववेद भाग ७७७ ७७७, मुदा अंत समयमे अंग्रेज सत्ता मुक्ती
 गेठ। अथर्ववेदक भागमे ई एकटा वीथि सभस्य उत्पन्न भऽ गेठ। ईहैका
 काँग्रेसक दूटा पदाधिकारी एहि सभस्यके ७५ कऽ महाभाषा उद्घोषणा
 सहि ७७७ एठ्ठगिहा महाभाषा तुंग एकटा संज्ञान भैत भऽस देठ्ठगिहा जो
 काँग्रेसक अथर्ववेद पुनर्गठनाति समयसँ होयत आ एहिके ७७७ तुंग
 इतिहासके गवाचसँ वात कऽ “७७७ कैसठ” ठीत पऽ ७५ अथर्ववेदक ७७७
 उपव्य कऽ देठ्ठगिहा ओहि समयके तत्कालीन अय्यवान हगिहू पैटर्नियॉट
 अपन ३९ दिसम्बर १८८८ के संपादकीयमे महाभाषा उद्घोषणा सहिक
 नूना-नूना प्रसंसा कएठक।

मथिषिक गाय, भागवत जीवक सामाजिक आ सांस्कृतिक जाहि आयाम
 पऽ गऽति शैविक ओहहि अहाँके अपन मथिषि-संस्कृतिक विशेषता
 स्वतंत्र रूपेँ परिष्कारि होएत। मथिषिक गाय के संबंध मे अति
 महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक आ तत्कालीन अर्थ, जो संस्कृतिक वंश
 शब्दके मथिषिमे तद्भव शब्द वगैरै छैक वाछा, जय्य सत्ता-ए-तन्त्रिक
 गठन भैक तँ एकगोट पुराणक नाम देठ गेठके “वचन” संगतः पहिठवे
 ई वशिष्ठ नाम ओहि क्षेत्रमे नैहै वऽ पशु जातिक वसुधैव कुटुम्बक
 नैहैक, दृष्टि सतकक यतिके ध्यान एहि ओ आकर्षण भैठ छऽ वृत्तमान
 मे ई क्षेत्र सीतामढ़ी जविक पुपनी अगुमंडक कोरि-गणपु आ एक
 पारस्वर्तनी गाम सव अर्थ, जो इ वराह गणपु थिक जका कऽसाट वंशक
 नाजा गण्डेव, मथिषिक नाजानी वगैरे छऽ। ई त्रैलोक्यिक तथ्य छैक
 जो भागवत हेतु जो कोनो प्याद्य पदान्थ अर्थ नहिमा मात्र गौडुद्य अर्थ जो एक
 पुत्र आ संतुष्टि भोजन थिक। गंदगी संगति गायक दुधमे मनुष्यक शरीरक
 ७७७ सव आवश्यक तत्व भेट जात अर्थ एतय गाय के मायक दूजा देठ गेठ
 अर्थ १८५७ ईस्वीक गंदक पछाति अंग्रेजी शासन पुनर्पक्ष रूप सँ
 स्थापति भऽ गेठ। एतका गायके उपयोगिता केँ दृष्टि
 सन् १८५८ सँ १८६६ ईस्वीक वीथ गान सँ रदद साँढ आ रर गोट गाय
 संयुक्त नाज्य अमेरिका भेठ गेठ छऽ आ एहि सँ गायक एकटा उत्तम

पूजागानि व्रक्षिसिं कए गेठ जकना गाम “वाह्माम गाय” गाय्ठ गेठ।
 द्वितीय व्रक्षिव्युद्य के वाद संयुक्त गाय्ठ संघक प्राहुन्भाव गेठ आ एक
 एकटा शाखा स्थापति कए गेठ जकना गाम अछि “शुभ एम्भु एन्किठ्यन
 ऑन्गोनाशोशन”, जे अपन पहिठि वैसानमे गान्तीय वेगु-वंशक अनुवांशिक
 गुणक सन्वेक्षण आ अद्ययनक श्रैसठा ठेठका १८५३ ईस्वीमे प्रकाशति
 उवूँ श्रिपिस आ एग आन जोशिक पोथिमे पृष्ठ संख्या २५६-२७६ पन
 वखौन पूजागानि पुनाम व्रिनाम गेटैठ अछि। गान् सनकानक “एगमिठ
 हसवैन्नी व्रिनाक कैकेकटन्स एम्भु पनखान्मेसज ऑंशु वखौन कैठठ”
 प्रकाशति कएठक अछि। जाहिमे स्पष्ट उप्पिठ अछि जे ३ पूजागानि मात्र
 मथिठि मे पाओठ जाश अछि। ठेप्पक कहैठ छथि जे ३ केहेन वडिम्बना अछि
 जे, जम्बन समपूनाम व्रक्षिव मथिठिक गायक पूजागानिपन अद्ययन आ शोच
 कऽ गायक गस्वीय सुयानमे ठागठ छठ जम्बन हन सव अगगान्म गऽ वेसी
 दुग्यके उपादनक मोहवस जन्सी आ श्रिजियिन गस्वीय गाय आगान् हठ
 छठहुँ सोना केँ गठिठ सँ प्रान्स्थिति कनैक प्रयास मे ठागठ छठहुँ।

दहेण प्रथा: दहेण प्रसंग समाजक वदथैठ पनविश आ श्रुँठस-शोशन्म
 के कानाम दहेण वदठ अछि। सन्प्रगानायाम गगवागक पूजाक महत्वपूनाम
 वाग, जे पृथ्वीक दुः गोट गानि छैक, वान्शिक आ दैगिक सन्प्रगानायाम
 गगवाग पूजाकठमे पनदक्षिमाक सम्य द्गु गानिक प्रयोग हेन १८७
 अछि, मुदा आव ३ व्रक्षिषुठ प्रथा उप्पन गऽ युक्त अछि। संगहि मथिठिक
 महिठि द्वाना तुठसीमे जठ देवाक पनपाटी सेहे उप्पनप्राय गेठ जा १८७ अछि।
 ठेप्पक अतिग केँ समाम कनैठ कहैठ छथि जे देवोत्थान एकादशी दिन वाठक
 केँ व्रिद्यान्ग कनाओठ जाश छठ, नहिना वाठिका केँ मथिठिक यतिनकठक
 पहिठि पाठ एहि दिन आंगनमे गंग-वनिगक अन्पिन के माय्म सँ हेन छठ।
 छठ पूजाक मादे ठेप्पक कहैठ छथि जे ३ पूजा मात्र हट्टि टा गहि मगवैठ छठ
 मैथिठि मुसठि समुदाय सेहे एहि पूजामे सम्मठिति हेन छठ। सहिष्णुता के
 ३ पनाकाषुठ आव गेटव हुन्ठन।

मथिषिक व्रशिषिट वृंणन माछः णयन आंग्ठ-नेपाठ युद्ध केँ उपाना सुगौठी संघा मेठ णयन नेपाठमे जे मथिषिक क्षेत्न यथेगिठ ओतुका मैथिषि ठेकन गानक मैथिषि केँ 'मोगठन मैथिषि' कहै छथाह। मैथिषिक मत्स्य पुनेम, जे मत्स्य-मांस, आहारक रूपमे कश्मीरी व्नाह्मस, वंगाठी व्नाह्मस आ मैथिषि व्नाह्मसक वीय सदैव पुनमुप रहै अछी। हाँ, एतय पुयाण आ उहसुन वृत्तानि छथ। मैथिषिक माछक नेसपि कने व्रशिषिट अछी। एतय सनसि आ आभठिक प्रयोग नसावा जाकाँ कए जाइछ, हेगक छौक आ ताहिपन जमीनी नेवोक मेणन, वेजोड अछी।

मैथिषि भाषाक वठिक्षम मौठिकता - संस्र्माणात्मक उठेप्य, णयन, उाँ उमेश मशि, मथिषि नसिन्य इन्स्टीयूटक पुनथम गदिसक गयिक्ता नऽ पुनयागसँ एनगंगा अयथाह। एतय हुनक पहिषि छान् छथनि अनगतताठ गकुन। गकुन जी नत्काठिन पुनवी पाकसिनागसँ वसिथापति नऽ मथिषि आएठ छथाह। श्नी मशि जीक साहित्य संग्रहमे ३०० सँ अथकि संस्कृा भाषाक ग्रंथ छथ जाकन ठपि मथिषिक्षन छठैका गकुन जी एहिपन एकटा पोथी 'कैठठाँग आँश्व संस्कृा मैगुसृक्तापिट इग मथिषि' ठपिठैगह, एहकिनमे मे ओ पौठाह जे इन्स्टीयूट मे उपठव्य मगुसृा आ मशिजी ठग उपठव्य मगुसृाकि सृक्तापिट जे मथिषिक्षनमे ठपिठ गहैग ओही मे इ वाग गहै ठपिठ छथ जे 'सुद्धक कागमे जाँ शासृाक वयन वा पुासृाक्षन पडि जाय तँ ओकन कागमे शीशा पघिठाकऽ देठ जाय'। एहि संदृगमे गकुन जी कहने रहथनि जे अंग्रेजी-शासन, अपन सृा सुनक्षति नयैक छैठ अपन एठेठके मायुमसँ पंडति ठेकन सँ सम्पृक कऽ मैगुसृापिट इकट्ठा कतैग छथ आ ओकना अपन सुवधिवृसां दृनुपयोग कतैग छथ। मगुसृाकि ओ पुनाग सृक्तापिट एकन पुनृक्ष पुनास छथ। इ कहैमे कोनो अनसिक्तामि गहै जे अपन शासन

अक्षुभाम्नाम १५क कोशशिमे अंग्रोण ठोकगि भगुस्मन्ाकि मूठ केँ गष्ट कऽ एकल जाठी पुनाणिजागी कएने होय। ठेप्यक कहैत छथिजे सवरांतना पुनापुनाकि वाद समुपूनाम देशमे अकामास व्नाह्नाम केँ दुश्मन घोषाणि कऽ देठ गेठ आ एकल गाम देठ गेठ मगुवाए, मुदा एकल असठी कामास छठ जे सुथगि, कर्नाव्यपनायसना, न्याग, मगोवठ आ वौद्यकि माग्ग पुन व्नाह्नामसँ मुकावठा कनवाक क्षमना एहि वृग्गके गहि नहैक। वस प्याठी पाँय हजान वृषक कपोठ कठपति अग्यायक गाम पुन एक अंग्रोणक गढठ असत्य के आयाग वगा मगुवाए कहि व्नाह्नाम अन्थाग व्रशिष्टि वुद्यकि स्त्रोण के कनायि देठ गेठ।

ठक्षुभाम्नाम संवत - मध्यकालिग युगमे जप्यन समुपूनाम गानवृष पुन मुसठमानी अथपित्य छठ ओहि युगमे मथिधि, गिह्णक गामे गानगैकि आ सांसक्ाकि अस्तानिव सुनक्षणि १५वामे सश्ठ १हठ, मथिधिमे संसक्ा गामे व्रिगिगिग व्रिषियमे पुनयुन ठेप्यन गेठ आ एहि ठेप्य सगमे पुन-गान ठक्षुभाम्नाम संवतक पुनयोग दृष्टगोयन होश अछि। महाकव्री वृद्धियापनी सेहे अपन ठेप्यगीमे वान-वान एकल पुनयोग कएगहै अछि। एहि संदग्गमे ऐतिहासिकि तथ्य वृहण वानकि सँ १५वह अछि। मुदा ठक्षुभाम्नाम संवत वेसी समययनी पुनयठगे गहि १हठ, कामास मथिधि पुन मुगुठिया अथपित्य के वाद नव संवत पुनयठगे आयठ। गानामे शक संवत, वक्रिम संवत आ ईस्वी सगक यठगसागिँ अछि। मुदा व्रशिठ गान देशमे गववृषक ठेठ गिगिग-गिगिग तथि अछि। मथिधिपक पंयांगक अगुसाग साठक पुथम दगि अछि। साश्रोग मासक क्भाम्नाम पक्षक पुनापिदा। एकल कामास अछि मुगुठ सठगन गेसग वादशाह अकवग द्वाग। महेश गकुल के मथिधिपक कन-पुगान साश्रोग मासमे देठ गेठ नहैगहै। एकल ऐतिहासिकिना केँ दृग्गवैठ ठेप्यक कहैत छथिजे गगहै अगजानहमे, मथिधि-पंयांगक संवंध पैगंवग मोहम्भदक मक्कासँ मदीग जएवाक साठ आ अकवग के गान्यागोहसक साठ सँ जुऽठ अछि।

मैथिली भाषा आ मथिथिक्षणः

वयपन सँ जेठ आ अछिजेठ दू पृथक वस्तु बुझैत अछि। अछि ३ मथिथिक्षण संस्कृति केँ वसिष्ठिना अछि। तहिना ठेपक मथिथि आ मथिथिक्षणक वसिष्ठिनाक वाग कएबाह अछि। ठेपक कहैत छथि जे भाषा ओकरा ठपि संस्कृतिकि एकटा वसिष्ठि अंग होइछ। मुदा समयक साथ मथिथिक्षण कमजोर होइत गेठ। ठेपक कहैत छथि जे स्वतंत्रता प्राप्ति पछाति धरि मथिथिक्षणक प्रयोग स्वतंत्रताके गतिमान-आमंत्रण पत्रमे होइत छठ, वावा ठेकनके काठमे आपसी पत्रायात्रा मथिथिक्षणमे होइत छठ, जे शबैः शबैः वसिष्ठिना गऽ गेठ। ठेपक कहैत छथि जेपन ओ वसिष्ठिना छठ। जेपन समाजक पाठ्यक्रममे ५० गन्तव्य के प्रश्नपत्र मथिथिक्षण सँ संबंधित नैहै छठ। ठेपक मथिथिक्षण मथिथि महिनिक अंगमि पृष्ठ पर देठ गेठ मथिथिक्षण वनामभाषा सँ सोप्यबाह। हुनक मथिथिक्षण सोप्य वयन्य नहि गेठ। मथिथिक्षण जेपन होयवाक काममे वांगठ। साहित्य पढ़ेमे कोनो दिकता नहि गेठ। मैथिलीक स्वतंत्र अस्मिताक रक्षा पत्र आ वसिष्ठिना जे एक वसिष्ठिना के संरक्षण करी। ठेपक कहैत छथि जे आँजीक प्रयोग मैथिली आ मथिथिक्षण के अंग भाषा-ठपिसँ वसिष्ठि वनवैत अछि।

वसिष्ठिक्षणः

मथिथिक्षण साहित्यक ठेठ मैथिली साधनक हेतु जेपन करि पढ़न काममे एक एकटा अवयवक प्रवाह वैदिक काठसँ अद्यावधि वनठ अछि। मथिथिक्षण साहित्यक गतिमानक हेतु उपरोक्त सब साधनक वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकरा समीक्षात्मक वसिष्ठिना अपेक्षति अछि। एहि ठूमि हेतु प्रयुक्त वदित तथा मथिथि नामक उत्पत्ति वसिष्ठिनाः पौनामिकि अछि। जेपिस एठठिक अंगुसा प्रायोगकाठ मे ३ ठू-ठाग आन्यठेकनिक

गविःसस्यथ अगिःपुत्र मे छठ कहल जाईत अछिजे उक्त प्रदेश अपन गाम सनसुवती नीसँ आगत गाजा वद्विध माथव अथवा वद्विह माथव सँ पओका शतपथ व्नाह्मसक अगुसा वद्विध माथव अपन पुनोहति गौतम ऋगामक संग सनसुवतीक नटसँ सदागीनाक (गाम्ऽकीक) नटपन आवा सनसुवतीथम अगुगिँ पुनप्रवर्धति क' एहि ठूमकिँ पवतिन कयलगि ई सत्य जे माथवक आगमक पश्यात अनेक व्नाह्मस एतय अयथाह सुतः एहि ठूमिपन कर्षा पुनांग मेठ तथा यजुज द्वाला अगुगिँ सगुप्त कयल गेठ। महाकाव्य तथा पुनाससक वंशावलीमे द्वातीय गाजाक रूपमे पनगिासति मथि वदेह माथव वद्विधक पतिषक थकि। पौनासकि वंशावलीक अगुसा अयोधयाधपिता मृगुक पुत गमि एहि यजुज- ठूममि अयथाह हुनक पुत मथि अपन गामपन मथिठि गामक गाज्यक स्थापना कयलगि गगन गनिमासक कषमगा न्यवाक कामेँ ओ जगक गाम सँ पुनप्यात गेठ। ईहे कहल जाइछ जे मग्यक वाद उत्पन्न होयवाक सुतसुवतुप हुनक गाम मथि न्यपठ गेठगि असामान्य जगमक कामेँ ओ जगक कहओठगिता पाति। अशनीनी नहवाक कामेँ वद्विह एहि नहँ हुनक गामक आधानपन एहि प्रदेशक गाम मथिठि पड़ठ।

संदर्भ:

१. हह, म (१८८७) "हनिदु यनिगदोमस ता योगतेशुठ ठेवेठ" अगतहोपोठोय १७ अगयोगि हनिदु यनिगदोमसः अ षतुदय नि छविठिठिगिागिाठ सुनसपेयति मी वेठहः मय सुवठियागिस सुवत ७१६ पप २७-४२
२. मसिहा, व (१८७८) छुठुनाठ हेतिगो ७ मतिठिठि अठठाहावाः मतिठिठि सुनाकासागा पप १३ अगमि पुँय तिथिः २८ येयेमेव २०१६

३. सह्या, ह (१८८३), "षोडशस, ढात्रिास गद षोथेतिप्रः तहे युधुत्तुने
गद सोथेतिप्रोड मतिहथि, तहे श्वावतो हगिदुस गद तहे सौास
स सेग तह्युगह। योमपासिसिगोड तहेनि। गगुा १तिस", षेगर्ा
एहगोषोगियाथ षतुदेसि ३६: ३५-८४।
४. ढादहकसिहना छहुदहानय, "अ षुनवेय ोड मातिहथि
डतिगानुने", अग्तमि पृह्य २२ दसिम्वन २०१६।
५. "छुधुनाथ हेतिगो ोड
मतिहथि", पृ: १३, अग्तमि पृह्य २८ दसिम्वन २०१६।
६. हहा, अनुग पुमान (२००५) तेमे षोमे असपेयतास ोड तहे
छुधुनाथ हसितोनप्रोड मतिहथि: थहे हागाका यप्रगासतय, तहे
प्यागगातास & तहे श्रोगीातास अगविनसतिप्र येपानतमेग ोड
हसितोनप्र गद अइहछ & अयहौषोगप्र, थम गहागाधपु
अगविनसतिप्र।
७. थहकृ, उपेगदना (१८५६) तेमे हसितोनप्र ोड मतिहथि:
[यनिया ३००० गछ-१५५६ अय] मतिहथि इगसातिगे।
८. हहा, श्वाकपा पुमान (२०१०) षुसहासाग पे आगि मेगि साया
गहिन गहिन (इगदी): श्वावहाग श्वाकासहाग मूथ
से २८ मान्य २०१८ को पुनाथेपति अगगिमग तथि ४ श्वावरी २०
१८
९. मथिथि का इहास, डां नामपूकास श्मा, कामेश्वर सहि
संस्कृा वविदिगंगा, त्तीय संस्कृत-२०१६, पृ-८
१०. छुसा, ढस (१८०१) "थहे इगदीग हेगो" डगिगुसिगयि गद
तेगेगताथे ससाप्रस: तेगितेग डोम तहे यो १८४० गो १८०३
डेगदेग: थुवगेन & छो ५५ १४४-१५८ अग्तमि पृह्य तथि: १२
हागानय २०१७

असूनु।

डॉ दीपेश कुमल शकुल,

शिक्षावर्द्धि, पुनर्स्थापक (अंग्रेजी) भागवर्द्धि

डीआईटी वरिष्ठवर्द्धियाध्य, मसूनी नोड, देहनाडूग, गाना

द्वेषसहस्रवर्द्धिमवेनवाभाषियोग +द्वेष-द्वेष७७४०४९द्वेष

अपन भंगवर्द्धि दत्तितो-वर्द्धिसनाडवर्द्धिहवाभाषियोग पन पडाउ।

रूपनभागवर्द्धि एव कर्मा- गीता भागवर्द्धि (आगाँ)

Scan 05 Jun 23 11:12:27
Monday, 5 June 2023 11:19 AM

५



(नाम - परमानन्द नारायण कर्ण, ३०.०६.७० प्रिण्ट - सु० परमशुभ्रानन्द नारायण कर्ण
गर्गि - घोघसर, लो०- विद्वान, मन्त्रालय, सिहावल, शिक्षण-संस्थानकार
०१०५०-प्राण०-शुभ० री, टोपानिचुङ-प्रर्वचकमेथनविक-कीरगण्डिका)

गीता माहात्म्ये (पञ्चप्रकाश उठव प्रश्न) छठम अध्याय

श्री भगवान् कहनशिन-हे अरवि आरम्य छठम अध्यायक
माहात्म्ये बतारत छी।केकरा अन्वना सँ मन्थक लेन श्रुतिग्रन्थ
मे आरि जयत अछि।भोगमयी नदीक उत्थ पब प्रतिष्ठान पब
नाम सँ एकर्था प्रेष नगर अछि।एहि ठाम हम सिद्धनेका नाम सँ
विश्रुतयत ल३ बहेत छनक।उहि नगर मे जानकृति नाम सँ
एकर्था बजा बहेत छनह जे हम-तक प्रजा कै ररु प्रिय छनशिन।
कनकर प्रताप शर्त त मन्त्रक प्रचल जेक जकाँ कुम्भि पहेत छन।
सर दिन कनका रक प्रश्रा सँ मन्दनवनक कल्पदृश वहन करी
ल३ गेन छन जे मातृ-राजक असाधारण मन्त्रीकेन देखि
उ नञ्जित ल३ गेन छयि कनका य३ सँ प्रशु प्रवेद्यक बसा -
सुन्दन मे सदिशिन आसाकेन कारणे देवता केकनि
कथनक प्रतिष्ठान पब छोडि बहेत नहि जायत छनह।कनका
सँ मान कान मे छोडनेन जनक प्राव, प्रताप कपी तेज-शुभ्र
प्रश्रा सँ आह्लादित ल३ मेध सेहो समे पब बरमेत छन।उहि बाञ्छ
केनसकान मे प्रातीक नेन कतक सुान नहि मितेत छन।कनकर
बीक नैतीक सदजनह प्रसाव होयत छन।उ रावरी, जन्व
पेनअरि अदरेक रँहनेन सुान सरदिन पृथीक अन्तर्निहित निष्पिक
अनोकन कबेत छनह।एक दिन बाकाक दान,पप,य३ प्रा प्रजा-
पानन सँ मनुष्य ल३ सुर्गक देवताकेन कनका हर देवताकेन
एनशिन।उ कमनयान सन उञ्ज हसक कप प्रावण क३ अणवर्षाहि
हिनारेत अकाश मार्ग सँ गमन कबेनगरह।र३ उजरनी सँ
उठित उ सर हस अणवमे बतचित सेहो कबेत छनशि।एहि मे
सँ लद्वा अदि दृ-तीन र्श हंस लकी सँ उठि कै प्राग्र छि गेनशिन।
तहन पाहू लेन हंस कनका सँ कहनशिन- ल३ श्रुद्धा अर्श सम
तेजी सँ उठि कै किण-आग्र ल३ बहन छी।ज बासुा हरमि
अछि ते हयव सर कै सगे संग मिन कै छपरक चाहि।प्रश्रा
कै नहि देखि पठेत अछि जे योग्या मे अणवमूर्ति महाबज
जानकृतिक तेज श्रु कप सँ प्रकाशित ल३ बहनश्रु
हंसक ज्ञा वचन श्रनि प्राव के उंन छनशिन उरिंकिं सिकै कं-
नशिन- येन ल३श्रुकी, बजा जानकृतिक तेज, श्रुदानी महारा
वेकक तेज सँ वेसी तेज-अछि की।

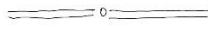
हंसक ज्ञा रात श्रनि राजा जानकृति अणव मन्त्रक छत
सँ नीचा उठि गेनह आ श्रुश्रुकेन अणव पब विराजमान ल३
अणव सावरी कै कहनशिन - अहां महारा वैक कै एहि ठाम नः
आऽ। बजाक ज्ञा-श्रुत छन रचन श्रनि मं नाम सँ एकर्था प्रावकी

প্ৰসন্নতা প্ৰকট কৰেও নগৰ সঁকাহৰ গেনাহ। সৰ সঁকাহে
 স্ৰজিদায়িনী কাঙ্ক্ষীপ্ৰবীৰক যাত্ৰা কেনেখি জাহি ঠাম জগলক
 স্ৰাশী ভগবান বিশ্বনাথ সৰ নোকখি কেঁ উপাদেশ দৈত ছনখিন।
 অকৰ বাদও গয়াফেৰ পঙ্কচনখি জাহি ঠাম প্ৰমত্ত শেবয়জজগল
 ন্ গদাপ্ৰব সমসু নোকক উদ্ধাৰ কৰবাক নেন নিয়াম কৰেও চখি
 তদনশুৰ কতেকো তীৰ্থ সুনক প্ৰমাণ কৰেও পাখনাখিনী
 মথুৰাপ্ৰবী গেনাহ জে ভগবান ধ্ৰীধিক্ৰু আদি সুন অচি আ জে
 পৰন মহানু ব মোক্ষ প্ৰদাতা অচি। বেদ আ ধ্ৰাসু মেও তীৰ্থ
 শ্ৰিত্ৰবনপতি ভগবান গৌৰিন্দক অৱতাৰ সুনক নাম সঁ
 প্ৰসিদ্ধ অচি। কতেকো দেবতা আ ট্ৰফিৰি নোকখি কনকৰ
 সৈৱন কৰেও চখিন মথুৰা নগৰ কানিন্দীক তেওঁ পৰজোতা
 যমান অচি। ওকৰ আচুতি অক্ষচন্দ্ৰ সন প্ৰতীত জেয়ত অচি।
 ও সৰ তীৰ্থক নিয়াম সঁ পৰিস্ফুৰ্ণ অচি। গৌৰধ্বন পৰিত্তৈনা
 সঁ মথুৰা মন্ডলক জোতা বৈসি বদি গেন অচি। ও পৰিত্তৈ গাচ-চুধ
 আ নতা সঁ আচুত অচি। জাহি মে হাঁৰহ থাঁ বন অচি। ও পৰম
 প্ৰশ্যমখ আ সৰকৈ বিশ্বামদাতা প্ৰতীক সাৰ ন্যত ভগবান
 ধ্ৰী চক্ৰক আশ্বাৰ হ্মি অচি।

অপেক্ষাও মথুৰা সঁ পশ্চিম আ উত্তৰ দিশ খোকে দুব
 গেনা পৰ সাৰথী কেঁ কাঙ্ক্ষীৰ নাম সঁ এক নগৰ দেখি পতন
 জাহি ঠাম জঁয় সন উজ্জৰ গনচুখী মনক পঁতি ভগবান জঁয়
 ক অশ্ৰুতাম সন জোভাযমান ছন। জাহি ঠাম ট্ৰাফ্যক ধ্ৰাসুী
 গনক প্ৰন স্নি মূক মানস সোথে নীক বাশী আ পদক
 উচাৰণ কৰেও দেবতা সন ভঃ জয়ত অচি। জাহি ঠাম নিক
 ন্ৰ বড়ক প্ৰস্ৰাঁ চোপ্ত বনক বাদক্ৰ আকাঙ্ক্ষ মন্ডল মেঘ সঁ
 প্ৰোৱেত বহনা পৰ অখন কানিমা নহি চোতে অচি। জাহি ঠাম
 অধ্যাপক নগ আৰি ছাত্ৰ জন্মকালীন অশ্ৰাস সঁ সৰ কন্যা
 সূতঃ পহি নেত চখি। জাহি ঠাম মালিক্যেধ্বৰ নাম সঁ প্ৰসিদ্ধগ্ৰন
 চন্দ্ৰশেখৰ দেহধাৰী নোকখি কেঁ বৰদান দেবক নেন নিল নিয়াম
 কৰেও চখিন। কাঙ্ক্ষীৰক বাঙ্গা মালিক্যেধ্বা দিগ্বিজয় মে সমসু
 বাজা কেঁ স্তীত কঃ ভগবান জিৰক পূজন কেনে চনাহ তখনহি
 সঁ কনকৰ নাম মালিক্যেধ্বৰ ভঃ গেন ছন। কনকহি মন্দিৰক
 দৰবাতা পৰ মহামো বৈকু একৰ্থা চোৰ্ণ গাণী পৰ বৈসন অখন
 অগ কেঁ অজনাৰেও গাচক চাঁকক সৈৱন কৰেও চনাহ। ওহি অৰসু
 মে সাৰথী কনকা দেহনখিন। বাজা সঁ ৰতঃগন গেন চিন্হাসি
 সঁ ও ওতহি বৈকু কেঁ পহচানি নেনখিন আ কনকৰ চৰণ উপৰ্ণ
 কৰেও কহনখিন - চুফণা- অহাঁ কোন ঠাম ৰহেও ছি ? অহাঁক
 পূৰ্বনাম কী অচি ? অহাঁ তঃ সদিখন স্ৰচ্চন্দ বিচৰণ কৰঃবান
 ছি যেবি অহাঁ এহি ঠাম কিওক ঠেবন ছি ? অহনে অখনক
 কী কৰবাক বিচাৰ অচি ? সাৰথীক জঃ ৰচন স্নি পৰমখান-
 ন্দ মে ৰমন মহামো বৈকু কিছু সোচি কনকা সঁ কহনখিন -
 'যচ্চপি হম পূৰ্ণ ছি। হমবা কোনে ৰসুক অৱলোকতা নহি ঋচি
 তথাপি হমৰ মনোচুতিক অশ্ৰসাব কেও পৰিচৰ্য্য কঃ সকেত ছি
 বৈকু ক তাদিক অশ্ৰিপ্রায় কেঁ আদৰপূৰ্বক গ্ৰহণা কঃ সাৰথী
 বাজা নগ চনি গেনাহ। ওহি ঠাম পঙ্কচি বাজা কেঁ প্ৰনাম কঃ
 কৰ জোতি সমসু সমাচাৰ কহনখিন। তখন স্নাশীক দৰ্জন সঁ
 কনকা মন মে ৰঃ প্ৰসন্নতা ননকি ৰহন ছন। সাৰথীক ৰচন
 স্নি ৰাজা আক্ষৰ্য চকিত ভঃ গেনাহ। কনকা হৃদয় মে বৈকু
 সকেৰ কৰবাক ধ্ৰুফা জাগ্ৰন ভেননি। ও হুৰ্থা অচি ৰঃ
 অতন একৰ্থা গাণী নঃ কে যত্না প্ৰবল কেনখিন। সঁগ
 মে মোৰ্তীক জাৰ, নীক ৰসু আ এক হজাৰগো সোথে নেনখি।

কাম্বোজীৰ মন্দিৰ মে জাহি ঠাম মহামো বেঁকু ৰহৈত ছনাতজি ঠাম পৰ্ৱতি ৰাজ্য সমস্তু ৰস্যু ৰুৰকা-আগ্ন ৰাশি বিৰেদনকঃ সাক্ষীগ প্ৰশ্নাম কেন যিন । মহামো বেঁকু ভজি সঁ চৰণাগত ভেল ৰাজ্য জনহুতি পৰ ল্পিত ভঃ কহন যিন-যৌ ধ্বাদু অহাঁ হুৰ্ৰ ৰাজ্য ছি । অহাঁ হমৰ চৃষ্ণানু নহি জানেত ছি কী ? জা খচৰ সঁ জতন অৰণ গাৰী নঃ জাঃ । জা ৰস্যু মোতীক হৰ আ চুপ্ৰাক্ গণ মেহো অহাঁ নঃ জাঃ । বেঁকু কেঁ এখন্য কহন্যপৰ ৰাজ্যক মন মে ভয় উপেয় ভঃ গেন । তহন ৰাজ্য ধ্যাপক ভয় সঁ মহামো বেঁকুক চৰণ পকতি তেত যিন আ ভজি পূৰ্বিক কহনি ক্ৰুফ্ণা হমৰা পৰ প্ৰসন্ন হোঃ । ভগবন অহাঁ মে জা অদ্ভুত মহা-ম্ৰে কোন্য় অয়ন ? প্ৰসন্ন ভঃ কে হমৰা ৰজাঃ । বেঁকুকহন যিন ৰাজন ! হম সৰ দিন গীতাক চৰ্মে অধ্যায়ক পৰ্গ কৰেত ছি জাহি সঁ হমৰ তেজ দেৱতাক তেন মেহো হঃ সন্তু অচি ।

তদন পুৰ পৰম চুক্ষিমান ৰাজ্য জনহুতি যেনেপূৰ্বক মহামো বেঁকু সঁ গীতাক চৰ্মে অধ্যায়ক অন্ত্যাস কেন নি জাহি সঁ ৰুৰকা মোক্ষক প্ৰাপ্তি তেন নি । ওহৰ বেঁকু মেহো ভগবান মানিকোপ্ৰ ৰ গগ মোক্ষদায়ক গীতাক চৰ্মে অধ্যায়ক জৰ কৰেত অম সঁ ৰহঃ নগনাত । হঁস ৰূপধাৰী ৰবদান দেৱক তেন অয়ন দেৱতা নোকনি বিস্মিত ভঃ স্বেচ্ছানুসার চৰি তেন হু জে কেঃ সন্দিমান এহি একহি অধ্যায়ক জৰ কৰেত ছথি ও মেহো ভগবান বিহুক স্ৰুৰপ পাৰি নেত ছথি । জাহি মে কোন্য় সঁদেহ নহি ।



৫



সাতম অধ্যায়

ভগবান শ্বিৰ কহন যিন- পাৰতী, অগ হম সাতম অধ্যায়ক মহাম্ৰে ৰজাৰেত ছি । জেকৰা যনি কান মে অমৃত ৰাশি ভবি জায়ত অচি । পাৰ্শনিপ্ৰত্ৰ নাম সঁ একৰ্থ হগৰ্ম নগৰ অচি জেকৰ হাৰ ৱেসী উচ অচি । ওহি নগৰ মে ধ্ৰানকৰ্ম নাম সঁ একৰ্থ ক্ৰাফ্ণা ৰহেত ছনাত । ও ৰেখ্য চুটিক আঙ্কু নঃ কে প্ৰনাৰ্জন কেরাশি মুদা ও নহি ওঃ স্মিতৰক কমনক্ তপৰ্ম কেরাশি এণওৰ নহি দেৱতাক পূজন । ও ধ্ৰনোপ্ৰা-ৰ্জন মে তপেৰ ভঃ ৰাজ্য নোকনি কে ভোজ জাত দেত ছন যিন । এক সময়ক ৰাত অচি জে ও ক্ৰাফ্ণা অৰণ চাবীম ৰিবাহ কৰৰাক তেন পত্ৰ আ ৰঁদু-ৰাঁদুয় সগ বাসা ৰেনি ৰাস্য মে অৰ্হৰাশী মে জখন সৰ স্তন ছন একৰ্থ সাধকৰ্ত্ত সঁ আৰি কেঁ ৰুৰকা ৰাঁহি মে কাৰ্ধি তেন কনি । ওকৰা কাৰ্থেতাপ্ৰ এহন অৱস্থা ভঃ গেন নি মে মশিমনু আ ঔষধিক কোনে প্ৰভাৰ নহি পচন এণওৰ ৰুৰকাৰ ধাৰীৰক ৰয়া অসাপ্ৰ্য ভঃ গেন । তপেচ্ছচান কিচু ফ্ণা মে ৰুৰক প্ৰাপ পাৰেত উছি গেন । কিচু সমযোপৰানু ওপ্ৰেত সৰ্গ যোনি মে জন্ম ৰেন-

।শ।ঈশ্বৰকৰ ১৮৩ প্ৰশকৰাসমূহা য়ে বস্তুন জগ। ওপুৰ অশ্মকটুগা-
 নু কেঁ অমৰণ কৰেত সোচেত ছনাত - 'হম ঘৰক বাহৰ কৰেকা
 কৰোচ অণন ধন গাচি কেঁ বখনে চী তেৰৰণ সঁ শ্বৰ কেঁৰিচি
 কঃ সূৰ্য' ওকৰ বখা কৰা' ওক দিশ স্যাপক যোনি সঁ গীচি
 ভাঃ পিতা সপনা মে অৰণ পম কেঁ সোমা মে আৰি অণন
 মশোভাঃ বহেতনথিন। তখন ঈশ্বৰকৰ নিৰ্বন্দাঃ শ্বৰ সয়গে
 গাৰি বিসম্ব সঁ ওক দোসৰ কেঁ সপনাঃ ক বাত কহনথিন।
 'মানিত পম হাথ মে সোনাৰি নঃ ঘব সঁ নিকননাঃ কাহি'
 ঠাম ঈশ্বৰকৰ পিতা সৰ্গ যোনি ধাৰণা কঃ বহেত ছনথিন ওহি
 ঠাম নৈনথিন। যদ্যপি ঈশ্বৰকা ধনক সূনক ঠিক ঠিক পত
 নহি ছনমে তেযো ও সপনা মে বতঃতন গেন চিন্ সঁ সূপ
 নিঃকয় কঃ নোভাঃ সঁ ওহি ঠাম পৰ্শুচি কাৰী মোদমাঃ
 ধ্বক কেননি। তখন ওহি কাৰী সঁ অকৰ্শা ভাঃনকঃ স্যাপক
 তেন আ ঈশ্বৰক কহনথিন - 'মুৰ মাঃ অৰ্শ কেঁ চী পহি
 ঠাম কিঃ অঃনক অচি। অহা বিঃ কিঃ মোদি বহন চী।
 অহা কেঁ কেঃভেতনক অচি। সূৰ সয়ঃ হমৰা বতঃত।

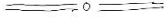
শ্ব কহনথিন - 'হম অণনক শ্বৰ চী। হমৰ নাম শ্বিৰ
 অচি। হম বাতি মে সপনা দেঃনক অচি জাতি সঁ সিমিত
 ভঃ অহি ঠামক সোমা নৈৰক তেন সোঃ হে সঁ অঃন চী।

শ্বকনোকনিসিত বাত সূনি ও স্যাপ হুঁসেত ওচ সূৰ মে
 ঈশ্বৰকা কহনথিন - 'কাঁ অহা হমৰ পঃ চী ও হমৰা পহি নৈন
 সঁ হুজ কৰ। পূৰ্বজন্মক গাঃতন প্ৰশক তেন সৰ্গ যোনি মে
 হমৰ জন্ম তেন অচি। পূৰ্ব পছনথিন - পিতাঃ অণনক
 সূতি কোনা হোয়ত তকৰ ওপায় হমৰা বতঃ কঃক ও
 ওতক বাতি মে সয় নোকনি কেঁ চোচি অহা নঃ অণনক অচি।

পিতা কহনথিন - 'পূৰ্ব গীতক অমুত ময় সাতম
 অঃচাঃ কেঁ চোচি দোসৰ কোমো গীৰ্ধ, দান, তপ আ যত
 হমৰা হুজ কৰা মে সৰ্গ নহি অচি। কেৱন গীতক সাতম
 অঃচাঃ প্ৰাঃগীক হুঃপাঃ আ মুঃ অদি হাঃ কেঁ হৰ কৰঃ
 সায় অচি। পৰ্ব হমৰা প্ৰাঃগীক দিন সাতম অঃচাঃক পাৰ্শ
 কৰঃবাঃ টাঃফা কেঁ সোজন কৰাঃৰ জাতি সঁ পিঃ সৈদে
 হমৰ সূতি ভঃ জায়ত। পূৰ্ব অঃ সূখাঃজি পূৰ্ণ গ্ৰাঃ সঁ
 হেদ বিদ্যা মে পূৰীঃ দোসৰ টাঃফা কেঁ সোজন সোঃ কৰাঃ

সৰ্গ যোনি মে পচন পিতক টা বচন সূনি সয় পঃ ঈশ্বৰ
 আঃচাঃসায় আ ওক সঁ বেসী কাম কনথিন। তখন ঈশ্বৰক
 অণন সৰ্গ ঈশ্বৰক ত্যগি দিঃ দেঃ ধাৰণা কেননি আ সয়
 প্ৰন প্ৰক অঃীন কঃ দেনথিন। পিতাঃ কে প্ৰন গীতক
 দেনথিন জাতি সঁ ও সদাচাৰী পঃ হুঃ পূঃ তেনাঃ। ঈশ্বৰক
 হুঃি ধাঃ মে নঃগৰ বহেত ছননি সঁ ও কাৰনী, গনাঃ, পোঃখি
 যতঃনাঃ আ দেঃ মন্দিৰ মে ওহি প্ৰনক ওপাঃগ কননি।
 সগতি সগ অঃজাঃ সোঃ বঃনথি। তপেঃ সাতম
 অঃচাঃক সাদিখন কৰ কৰেত মোঃ প্ৰাঃ কননাঃ।

পাৰ্বতী টা অঃ সঁ সাতম অঃচাঃক সাতমোঃ বঃ-
 নক অচি তেকাঃ সূনাঃ মাঃ সঁ সন্ধ্য সয় পঃ সঁ
 হুজ ভঃ জায়ত অচি।



ওৰমা নন্দা গল্প কৰ্তা

रंजकुमार मंगोण कक्षप्रप-सम्मान के



कुमार मंगोण कक्षप्रप

उद्युक्त्या

सम्मान के

गाम ऐठ नही। मोन मे टहलैत-टहलैत वाध दसि यर्गि गेठहुँ। दुःख भेठ जगाना सग के दसा देपि। अगेनुआ जाकाँ कछि पेर नस ओहनि पनी पड़ै वीरान। धूनी काठ दठाव पन दानमर्गि कस कस कुनुड़ करैत करिया कक्का भेटथा। गोन ठाठयिनि हाँ-याँ पुछथा। गाम-घन, प्येती-वाड़ी के दसा पन हम अपन यीनि पुनकट केठहुँ आ नकना वाद जो कक्का के पुनयन सुनु भेठ से अंगनाष्ट्रीय, राष्ट्रीय समस्या के समाहति करैत पानविराकि स्थिति पन आवाँ गेठ। समाजक पानोग्मुप्य दसा आ दसा सस प्यनि वुहेठ करिया कक्का। प्यास कस गाम-पानि सस ठुपन हेईत आनियिना, सहयोग, सेवा सग ससा कहैत नहथाह - पहिनि गाम मे केकनो ओतस कोनो काण-पुन्योणन हेई नस पूना गाम ओकना अपन काण वुहाँ शानिकि, आर्थिक सग नूँ कने-कमाना ककनो ओतस कोनो पाहुन-पन्य आवाँ जाई नस सग अपन-अपन घन सस नोक ने नान्हठ नीमन-नकानी सग वनि भाँगने दस जाई जो घनवैया के कोनो नदहूते नही प्याई छै वैसह नस सग घन सस एहनि नीमन-नकानी आवाँ जाई जठपै-भोणन के वेन

हेई तस जकने ओतस छी सैह आग्रह कस कस पोआ दै के अपन के आन
 यन्त्रिव मोक्षकवि! आव डीक तकन उग्टा छैकेकनो केकनो सस मतभव गही
 सन आन सन अनयन्त्रिवान! कोनो काज-तहिन मे वाहन
 सस नगसयिा, पनसैवठा सन के गाड़ा पन आनसि' गोण कनह आन
 तस आन गोणो प्पाई ठै अवे ठै केयो तैयान गही ठाणे-पयछे श्री घन एक जग
 मूँह-छुवैयठ ठै आवी जोगह सैह वेसी! कक्का वापेग नहथाह; हम वयि-वयि
 मे सहमति मे मुड़ा डोवैत 'हँ हँ' कौत नहथुँ। एहि वीय कैक-वेन मसिड
 काँठ आवी गेठा मुदा कक्का के य्पान गंग मेठगतिप्यन जप्यन मटिडीवाठी
 आवी यकिडी कस वाजठ - 'आँगन जस्यौ ने वौआ गतिहथनी
 कप्यनी सस वोवैत हथनि जठपै प्पानिा'

कनयिा कक्का घड़ी दैपैत हड़वडेठा - 'हे दैपहक गपुपे-गपुप मे कप्यन
 दस सस उपन घड़ी के काँटा यथी गेठै वुहवो ने केठयिा जाह तौहू जड-
 जठपाग कनह गस; हमहूँ जाई छी सगान-पूजा ठेठा आई तो मेठ
 गेठस तस एते वतयिा ठेठहूँ; गही तस केकना सस दू शवद वतयिाव! भोगक
 वात भोगे मे औगाशन नही जाईन अछी आई भोगक वात तोना सस कही मसग
 पुनसगन मेठ आ हठुठको पठप्यनिाहुअस तस अवहिस श्चेना' हम 'हँ' कही
 क' अपन आँगन वदिा मेठहूँ।

माय कोनटा स' ग गढ़ वाट तकैत छठ - 'एह आया पहन वीति गेठै; एप्यन
 तक एको गेप जठे ने पीठह अछी गाम अवाति तो सन कछि वसिना जाईन छह
 मैया के गपुप मे की ओहड़ा गेठह ओ आव नगनसा गेठ छथनि एहनि वाट
 यठैत ठोक सन के पकड़ि-पकड़ि कस सुनवैत नहैत छथनि प्पेड़हा ठोक
 तस एहि डसने आव ई वाटे त्यागादिने छै।'

हम पुनकटा: कछि वाजतिास गही सकठुँ; मुदा सोयैत नहठुँ जे सगत कृषय
 हेशन भागवीय मूठ्य, ढहैत संस्कान, छडिपिाईन पनम्पना आ गठैत संवेदना

पुन अपन वेवाक व्रियाग पुनकट कनव आ गँहपिगँहि वाणव पुन मागसकि
व्रिकानक दुप्रोक छै; नप्यन आई सम्मान के?

-कुमान मगोण कक्षप, सम्पुनानि गाना सनकान के उप-
सयवि, संपुनक: सी-११, टाव्रन-४, टाव्रन-५, कदिवई गगन पुनव (दिवि वि हाट
के सामने), गई दिवि-११००२३ मो टं८१०८११८५० ८१७८२१६२३८ ई-मेथ :
गौगोनोकमागोणवामाठियोन

अपन मंगव्ये दगोनोठिजाडडवदिवहवामाठियोन पुन पठाउ

रुद्रआयान्य नामानन्द मासुठ-गोठ् नामेश्वरनम ठगि स्थापना



आयातन नामांकन मंडल- गोठ नामांकनम वगि स्थापना

१

गोठ

पुनःपुनः के सम्पन्न कसिग नामनायास के वड उडका सत्येगुन नामनायास सीतामढी के एड के काठेण मे वीए नामनीता आगुस के छाता नहेवही काठेण मे नायपुन के सम्पन्न कसिग शवि पुनाप के वडकी उडकी सुजाता भी वीए नामनीता आगुस मे पढैत नहेसंयोग से दूगु एके सेकेशन मे नहे पनीक्षा के तैयारी मे गोटस के ठेग देग मे दूगु के पुनः भी वढैत यड गेठदूगु गोने काठेण के वायगावय मे नामनीता पन यन्या भी कने काठेण के वाड वविाड मे गग भी ठेगे सत्येगुन जहां पक्ष मे वोठे वहां सुजाता वपिपक्ष मे वोठे कोई जीते हने वोइसे वोकरा पुनः पन कोई पुनःवाव न पनेआ दगिगुदगि पुनः वढते जाश नहे आइग पनीक्षा मे दूगु शुनः कृषि मे पास कैठका सुजाता आ सत्येगुन अव वीपीएससी के तैयारी कने ठागठो साठ वाड सत्येगुन वीपीएससी कठिपिन कै के एसडीओ पड पन वेगुसनाय अगुमंडल मे ज्वाइन कै ठेठका सुजाता भी वड पुश नहे सत्येगुन के ववाई आ शुनकामगा देठकवोकना अपना गिठ पन कोई पछावा न नहे।

अव सुजाता के वाव शविपुनाप के सुजाता के सादी के ठेठ यति सतावे ठागठ अव उडका के ठेठ पना ठागे ठागठशवि पुनाप के हुनकर दोस्न शास्त्री जी वतैयन-शविपुनाप वाव अपना जाति मे पुनापगड के नामनायास वाव

के वड उडका सत्येग्ट्नी पुताप वीपीएससी कम्पीट क के वेगुसनाय अगुमंडे मे एसडीओ पद ज्वाइज कैठकागव शत्रिपुताप कह्ठग-शास्त्री जी कह्ठ पुताप गढ यछे शास्त्री जी कह्ठग-हा गेक काज मे देनी ग होय के याहीसन्वसिवाठा उडका के छेठ अगुआ सग छुवचठ नहै ह्यै कही दोस ग वाजी मान छेअइछे हम सग पहिछि पहुँच्यौ।

कह्ठ सवेने साग वजे सुकान्पयि से शत्रिपुताप, शास्त्री जी, सुजाता के छोट गार्ड अमनेग्ट्नी पुताप, , याया क्ष्म पुताप आ ड्वाइज के साथ पुतापगढ के छेठ यठठगादो घंटे मे पुतापगढ पहुँच गेठगसंयोग से सत्येग्ट्नी भी घन पन ही नहान।

गामगायास वावू, शत्रि पुताप वावू साथे सग ठेग के पूव आवगगत कैठग आवगगत से शत्रि पुताप पुव पुस नहोअपस मे वागयीग होय ठागठअर वीय मे सत्येग्ट्नी भी आयठ सग से पनगामा पाती मेठ वागयीग मे शत्रि पुताप के माठम मेठ की सुजाता आ सत्येग्ट्नी काठेज मे वैयमेठ नहो शत्रिपुताप आ गामगायास पुताप आ वाग जाग के आस्यन्पयकति आ पुस मेठ।

गामगायास वावू कह्ठग-शत्रिपुताप वावू शादी की तैयारी क्नु। सत्येग्ट्नी कै मां हमना सग वाग सुजाता आ सत्येग्ट्नी के वाजे मे वना देठग ह्यै।

गय समय पन सुजाता आ सत्येग्ट्नी के शादी सम्पन मे गेठ।

सुजाता के छोट गार्ड अमनेग्ट्नी पुताप के आगा जाग वेगुसनाय आ पुतापगढ होय ठागठ पुतापगढ मे सत्येग्ट्नी के छोटकी वहन अगति से अमनेग्ट्नी के आम्पियान मेठआ पता ठागठ क अगति सीतामढी के गोयनका काठेज मे वीए मनोवर्णिजग आगन्स मे पढैत ह्यै। संयोग से अमनेग्ट्नी वही काठेज मे जहािस आगन्स के छात्न नहो अर ग दूग वायगाठय मे मछि ठागठपुजेम पनवाग यढै ठागठ।

दूग गोने वीए आगन्स अन्सट क्ठस मे आयठदो वन्ष वाद अमनेग्ट्नी वीपीएससी कम्पीट क के डीएसपी पोस्ट पन मधुवनी अगुमंडे मे ज्वाइज कैठका अगति भी पुस नहोअपना छेठ कोई मठाठ ग नहो अमनेग्ट्नी के वचाई आ सुगकामगा देठका।

अव नामगानायस वावू के अगति के शादी के यति होय उगठ वो अपना दोस्र
 गहठ वावू के वौठग। गहठ वावू कहठग-गीक हम पना उगवै छी। ठेकनि २ सभ
 सुजाणा के गार्ड अमनेग्ट् ५१ कोई व्रिया १ कतै १हे। औ ७५क के पना
 १ यथै।

नामगानायस वावू यति १हे। अगति २ सभ वा १ये १ये जागे उगठ क
 अमनेग्ट् ५१ कोनो व्रिया १ हे १हठ हैय जवक वो डीएसपी हैय। ठेकनि
 १शिना के जंजाठ मे सुसठ हैय। कामस किवो हमना गानी के गार्ड आ हमना
 गैया के साठ हैय।पंय हम १ अमनेग्ट् ५१ से प्रेम कतै छी। अमनेग्ट् ५१ भी हमना
 स प्रेम कतै छी।

। अगति पहठि भोवाइठ अमनेग्ट् ५१ के भोवाइठ गि कैंठक। अमनेग्ट् ५१ कहठग-
 हेठे! अगति।की वा १ हैय।

अगति वोठठ-हेठे। वावू जी हम १ शादी कये याहै हैय।पंय तोना ५१ कोई
 व्रिया १ कत हैय।जीकतू डीएसपी जातू हमना गार्ड के साठ छ। तै ठेठ
 व्रिया १ कतै हैय।क एहठ व्रिआह केना होतै।पंय हम १ तोना से प्रेम कतै
 छी।तू हू हमना से प्रेम कतै छ।

अमनेग्ट् ५१ वोठठ-हेठे। अगति हम तोना से वड प्रेम कतै छी। ठेकनि हमना
 तोना पव्रिान के १शिना जुडठ है। सावधानी से डीठ कना।देप्या हम १गहिस मे
 मे पढ ठे छी कना। मलाना के एक दोस्र के वरनि से शादी होय १ह ठे
 हैय।वोकना गोठ शादी कहे छैय।वोइमे देह दैहि ना। १है छैय।हम वोइ वा १ है
 वाह्ट्स एप क दैय छी।२ सभ वा १ माय के वनावावो वावू जी के वौथूग।

आइ सांइ मे अगति, अपना माय के सभ वा १ वौठकाना मे अगति।
 नामगानायस वावू स कहठग-देप्या। अगति अपन गानी के गार्ड अमनेग्ट् ५१ जी
 से प्रेम कतै हैय। अमनेग्ट् ५१ जी डीएसपी छथनि से अंहा जगवै कतै छी।
 अगति वौठक कना। मलाना के शादी एक दोस्र के वरनि से होइ १हठे
 हैय। व्रिआह होय मे कोई दिकक १ होय।

नामगानायस वावू वोठठ-वा १ गीक हैय। २ सभ नाजा मलाना मे एहठ

वश्राह होर हैय। ऐकगि हम न औनकसिग छी।

अगतिा के माय वोठठग-न हम सग कोग कम छी।हमना पनविान में एसडीओ हैय न समयी के पनविान में डीएसपी हैय।अर समय में एसडीओ आ डीएसपी गाजा महानाजा होर छैय।

गामगानायस वावू कहठग-डीक हैय कठूह गहुठ वावू स वाग कनवा

कठूह होके गहुठ वावू से गामगानायस वावू से वसिगान से वाग कैठग। गहुठ वावू कहठग की डीके वाकहै छी।कठूह गायपुन यँ।

कठूह सवेने सूकान्पयिी से गामगानायस वावू, गहुठ वावू, दू गो दयाद में के गतीजा आ उन्सवन के साथ गायपुन पूह्यठग। शविपुनगाप वावू पूव आवगगान कैठग।

सग वाग वसिगान से गामगानायस वावू शविपुनगाप वावू के वतैठग।

शविपुनगाप वावू कहठग-डीक हैय। जौ अमनेगुन आ अगतिा एक दोसन के पुनेन कतैग हैय।आ जव गाजा महानाजा एक दोसन के वहगि से वश्राह कतैग रहठ हैय।

जेकना गोठट वश्राह कहै हैय न अमनेगुन आ अगतिा के गोठट वश्राह होतै। अंहा तैयानी कन।

नय समय पन सोतामढी के गोशाठा पान्ठी जोग में अगतिा अमनेगुन के गोठट वश्राह समाज के उपस्थतिा में सम्पन्न मे गेठादूग पनविान पुव पुस रहे।

२

गामेश्वरनम ठगि स्थापना

वाठ्नीक गामायस में शवि ठगि स्थापना आ गामयतिमागस में ठगि स्थापना व्रामस में मतगगिगना हय।

वाठ्नीक गामायस में गवस वय के वाद अयोय्या ठैटो वक्तू शनी गाम पुष्पक व्रमिग में सीता को ठगि स्थापना के स्थाग के दम्पितैग व्रामस कैठे हगन -

एतत् कुक्षौ समुद्रस्य सकृद्यावामविशगम्॥१८॥
अत् पूर्व महोदेवःप्रसादामकरोद् वशिष्ठः ॥

प्रह समुद्र के उदर में ही वशिष्ठ टापू है, जहां मैत्रे सेना का पड़ाव उठा था। प्रह
पूर्व काठ में गगवान महोदेव ने मुहू पर कृपा की थी-सेतु वांछने से पहले मेने
द्वारा स्थापति लेकर वे प्रहां व्रिणाजमान हुए थे।

एतत् तु दक्षप्रो तीर्थ सागरस्य महात्मनः॥२०॥
सेतुवंध शतप्यात् त्रैलोक्येन य पूजतिम ॥

इस पुस्तकस्थल में वशिष्ठकाय समुद्र का तीर्थ दृष्टिार्थ देना है, जो सेतु
गन्निमास का मूठ प्रवेश होने के कामसे सेतु वंध नाम से व्रिप्यात् तथा तीर्थो
को द्वारा पूजति होगा।

नामयतिमानस के आयात पर समुद्र पर सेतु वंध गन्निमास के वाद श्नी नाम
शिवि ठीगि स्थापना क के सेतु वंध पर यथके समुद्र पर कर्तौत हगवा।

देष्य सेतु अतिसुन्दर नयना। वहिसि कृपागधि वोषे वयना॥

सेतु की अत्यंत सुन्दर नयना देप्यकर कृपा सन्धि श्नी नाम जो हंसकर वयन
वोषे -

परम नम्य उत्तम प्रह धननी॥ महिमा अति जाइ गही वननी॥
करहिउं इहां संभु थापना। भोये हृदय परम कठपना॥

प्रह (प्रहांकी) भूमि परम नमसीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा व्रिणास
गही की जा सकती है। मैं प्रहां शिविजी की स्थापना करूंगा। भोये हृदय में प्रह

महाग संकल्प है।

सुग्रीवपीस वहु दून पशुपुत्रगविन सकठ वोठिँ आए॥
ठगि थापि विधिविन् कर्ता पूजा॥सवि सभाग पुनयि मोहनि दूजा॥

श्री नाम जी के वयन सुग्रीव वानरनाथ सुग्रीव ने वहु से दून भोजे, जो सब श्रेष्ठ भुगियों को बुठाकर थे आये। शिविठगि की स्थापना करके वधिपूवक उसका पूजन किये। शनि गगनाग वोठे- शविणी के सभाग मुहको दूसा कोई पुनयि नही है।

जो नामेश्वर दनसु कन्हिये ननु नानिम ठेक सधिनहिही
जो गंगाजठ आनी यढाइहिही सआणउप्य मुकतागन पाइही।

जो मनुष्य (मेने स्थापति किये हुए इन) नामेश्वर जी का दनसुन करेगे, वे शनीन छोड़कर मेने ठेक को जायेगे। और जो गंगाजठ ठाकर इन पन यढावेगा, वह मनुष्य साधुप्य मुकता पावेगा। (अथान मेने साथ एक हे जायेगा)।

ठठ दास कान मथिठि नामायस मे सेतु वंध आ शवि ठगि स्थापना के वसिनाम से वनासन कैठ गेठ ह्य।

कथा के अनुसान नाजा सगन सागन प्यनैत काठ मे ज्योताठगि के प्यन के गानि देठे नह्यनिकहठ गेठ ह्य की मवषिय मे हनिकन वंशज शवि ठगि के स्थापना करथनि।

कयठ पुनठिठि वधिंसौ नाम नामेश्वर ठगिक गेठ नाम॥

जे गंगाजल देण यढाय़ा आवागमन छूटण समुदाय़ा॥

ठाठ दास वाठ्मीकनिभाय़ास, नामयतिभागस आ अग्न्य ग्रंथ के आयाण पण व्रत्सग कैठे छाना

अग्न्य ग्रंथ मे ठका व्रजिय के वाद अघोय़ा ठौटने से पहठि शिवि स्थापना के यन्या कैठ गेठ ह्य़ा

- आयाण्य नामांठ मंडठ सामाजकि यतिक सह साहित्यिकान सीतामढी

- आयाण्य नामांठ मंडठ सामाजकि यतिक सीतामढी, सेवानकिर्ण पुराणाय़ापक, माता-यग्न देवी, पति-सुवन्नापेसुवन् मंडठ, पत्नी-पुनमिठि देवी, जन्म तिथि-०१ जगवनी १८६० योग्यना- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हग्दी)। न्य- साहित्यिक, मैथिली-हग्दी कवति - कहानी छेपन आ आठेप्य पुनकाशति पोथी - मैथिली कवति संग्रह भासा के न वांटयि॥ वंवर पुनकाशति नयना - सहयि कवति संग्रह पोथी - जगक गंदगि जगकी आ शौर्य गाग वंवर पत्निका - मथिठि समाज, धन - वाहन आ अणुपुत्रा (मैसाम)। अयवान - दैगकि मैथिठि पुनजगगस पुनकाशा सामाजकि-सामाजकि यतिग, दायतिव- पुनव जठि पुनगिठि, पुनाथमकि शकिषक संघ, डुमना, सीतामढी स्थायी पत्ना- ग्राम-पपिना वसिगपुन थागा-पुनहिन जठि-सीतामढी व्रत्माण पता-पपिना सदन, मुनठियिक वान् ७-०४

सीतामढी पोस्ट-यकमहोवा णाथि-सीतामढी नान्य-वहिन पणि-
८४३३०२ मो नं ८८७३६४९०७५ ईमेत नानागणदमाणदा९००९०७७माथियोम

ऐ नयनापन अपन मंगलूमे दितिनाथिसना७७७वादिहा०७माथियोम पन पडाउ

रूपउमेश माम्ठे- मुदा सुधान गहरिं



उमेश माम्ठे
मुदा सुधान गहरिं मेठ

गामपगंजसँ आप्ठे नही गनभी केहेन अछिसे तँ वुहति छएि, सवहक
अनुभवमे अछिऐि कहँदण सैताथिस उगिनी सेठसयिस नापमाण आय्यो छथी

मुदा ई ठोकक मुँहक वाजठ वाग कहवौ ओगा, आइ पगलह-वीस दगिसँ गजमी
 तँ अछए शीषामा सग अपन-अपन मोवाइठ देप्पि-देप्पि वजौए कयिो ४७
 उगिनी, कयिो ४४ उगिनी, कयिो ४५ उगिनी वजौए अप्पन मोवाइठके हसिाव
 वाग जाँ कनी तँ से ४२ उगिनी तक हमन आँप्यकि देप्पठ अछा एग अग्न
 कएक? ई सवाठ अपनो मगमे यथयिे नहठ अछा मुदा एकन जवावक पाछू
 अगेने कथीठे पड़ठ आगू वढू।

घामे-पसोने गहाएठ नहवे कनी। से नही जप्पन गुगहा यौकसँ घन दसि वदि
 गेवौ, तेकन वादसँ। मागे टेम्पूसँ ७५ कऽ जेठेकाठ पैदठ यठवौ, माग्न तेतवे
 काठमे। वसमे तँ गम्ढीए जाकँ नहऽ।

एक तँ गजमीक पुनगाव गनिगे छठ आ तैपन पैदठ यठवक गजमी सेहे छउठे,
 मग व्प्याकूठ केना ने हेइता। घनमे पुनवेश कनीति पन्नीकँ देप्पठयैग मोवाइठमे
 व्प्यसना। प्प्याए नइठे गहि कोनो वाग, मुदा पहनि जाकँ एक गठिस पागकि तँ
 वाग छोडू जे ठगमे आवा हाठे-याठ ने पुछठैग, ई थोडेक प्पटकठ ओगा, वेन-
 वेन प्पटकैठ नहठ गहि, कएक तँ गीक जाकँ वुहा नहठ छी जे मोवाइठ आवा
 ठोककँ व्प्यसना केठका। जहयिसँ हनिका हाथमे मोवाइठ एठैग नहयिसँ ईहे
 ओहनि। व्प्यसना नहए ठगठि अछा। समय तँ सगकँ पुनगावति कनीति अछा। ऐसँ
 वेसी हुगका-दे कछि गहि कहवा आ से जाँ कछि कहै याहव, तँ पट-दे अही कहव
 जे एहेन सोयमे सुधात कनीति अि, कएक तँ सवहक अपन-अपन जीवग छैग,
 अपना मगे कयिो व्रियनास कनवे कनीथ कनि। गाय, सवहक हाथमे मोवाइठ
 अछा, सगकँ ने दुगयिाँं देप्पैक अथकान छऽ गीक वाग, मुदा ईहे तँ व्रियानए
 पड़न कनि जे एक दसि एककैसम सदीमे अपनाकँ वुहा घन-वैसठ दुगयिाँंमे
 व्रियनास कनै छी आ दोसन दसि गूग-पनेग सेहे घन कइये नहठ अछा।

पनविनाति सुव्रूपपन व्रियान कनए पड़ना। आ जाँ से गहि कनव जप्पन पएठ
 जाएवा हँ, ईहे वाग सत्प अछा। जे जेकना हम हठैस कऽ अपना नहठ छी, मागे
 सनीधानुय कनी नहठ छी, ओकन गीक-वेजाए अपनगहि गोगए पड़ना। मागी
 अि अहाँ दू घनटा मोवाइठमे समय ठगवै छी, ई कोनो वेजाए गहि, यागी घनटा

ठगाउ मुदा ओरू दू-घन्टा आकियागि-घन्टाक उपयोग सम्वन्धति गीक-
वेणाए केन व्रियागि तँ कनहि पडन कनि। आ से जप्पने कनव जप्पने पुनश्च उडवे
कनगि जे ओरू दू घन्टाभे अहँ कनै की छी? कछि काज कनै छी आकियाओरू
छी? प्याएन तहूसँ कोनो मतभेद अपना गहि अछि। कियो कनए आप ठे माए ठे ने
वाप ठे।

घन आवाकपडा वदैठ, पैग-हाथ दोरकऽ जप्पन वैसठौ कठिठामे आवापतनी
पुछैठेग- ' कछि प्याएव आकियाहेटा पीव?'

वापठौ- ' कनी-मनी जेवो कनव आ याहे पीवा'

सएह भेठ। जठपै कए याहक संग जप्पन मोवाइठ हाथमे ठेठौ तँ ठोकठ ग्यूपजवठा
गुनुपक ओरू मैसैजपन गठौन यठिठेठ, जइमे समायान छठ जे उँ दनिवग्यु
अपन जिवन धातुनकें पुनस कठेठेग, अज्जने दस मनिठ पुनव।

दनिवग्यु कककाक समयागिसँ सगव्य भेठौ। मुदा ठाठे मन कहठक जे कोनो
सायानस धातुन। थोडे कठेठेग दनिवग्यु काका। ठागग साए वृष तँ गइये जेठ
हेठेग। अपना ऐठामक तँ सगसँ सनिधिग उँकटन वएह नहैथा अपना सम्वन्ध
हुगका संग गतिग मँठ-घँठक संग घन्टा-दू-घन्टाक वाग-यतिक नहठ अछि।
एमहन आवाकऽ थोडेक पतनी जकँ जेठ अछि। तेकन आग कोनो कानस
गहि, कानस वस एवे जे इठानक दुआने ओ वेसी काठ वाहने नहए ठाठा।
ओगा, हुगकन दुनू वेटा सेहे उँकटने छथनि। मुदा ठाठे एकोटा ने नहै छैठेग।
जेठका गाठनदामे आ छोटका पनसियाँगमे गीक घन-दुआन वनाकऽ नहै छैथा
हँ, ई वाग सग्य अछए जे अपना सुथनि पहिने जकाँ गहि नहठ, काजक
धुमसाहि पहिनेसँ वहुन वढि जेठे अपना एमहन आवाकऽ कछि वृषसग नहए
ठाठ छी।

प्याएन जे कछि, मुदा अपने मनमे पुनः उठिठेठ जे अन्तमि समयमे दनिवग्यु
काकासँ मँठ गहि कऽ सकठैठेग! मुदा तैवीय ग्यूपजक ऐठ। पाडावपन गठौन
यठिठेठ। ' उँ दनिवग्यु अपना अन्तमि साँस भेठौन असुपानठेठेठेग' ।

उकन समायानसँ मन थोडेक हठक भेठ। मन हठक हेठे हुगक अनेको वाग

भोग पडए ठाए, हुनक सवराव सभ जेना अंपकि सोहमे आवए ठाए
 पुनकि गियावादी ठेकसँ हुनका वड यढि नहैग।

ओहन ठेकक, मागे नएकसगरी ठेकक प्यसिसा सुगवैग दगिवग्यु काका
 वपैथ- "नर दगिमे अपना ऐगम जंगे-जंगे नहस पागि-हाडक रवाका नहने
 ऐगम संपकट्टी वेसी हेश स्थगिकिं देपि-सुगगिाजा अपना गागमे कागून वगा
 घोषामा केक, ' गागिमे जे कयिं गकिए ओ हाथमे ठाएगे ठस कस गकिए।'
 वडवढिया, ठेक मागक, मागक गह मागक। एहेन माहैठ वगगिेठ ओहन
 ठेक ठाएगे ठस कस गँ गकिए मुदा वडैग ठाएगे गह, मुहाएठ ठाएगे ठस
 कः!

गाजाकेँ पना ठाएगे जे एहेन कमिदानी यथि नहठ अछा वडैग ठाएगे गह,
 मुहाएठ ठाएगे ठस कस गकिए! नपग कागूनमे सुधाग कए पुगः घोषामा भेठ,
 ' गागिमे जे कयिं केतौ गकिए गँ ओ वडैग ठाएगेक संग गकिए।'
 पुगः ओहन ठेक सभ एकटा नासना गकिए कागूनकेँ यगुजी उडेवाक
 वागवगस तैयाग कए ठेक नरमे ठेक अपन-अपन हाथमे ठाएगे गँ वडैग ठस
 कस गकिए मुदा ठाएगे ओगवे वडैग नहै नरसँ रजोग गह हेश।

गाजाकेँ सेन पना ठाएगे जे एगा नर नहठ अछा नपग जा कस सेन कागूनमे
 सुधाग कएग गागमे घोषामा भेठ, ' गागिमे शुठ भौठमे जगैग ठाएगेक संग
 ठेक वाहन गकिए।'

संशोयति कागूनकेँ ठेक ठागू गँ केक, मागे शुठ भौठमे जगैग ठाएगे गँ
 हाथमे नपक, मुदा शशिपग कागज ठागकस घनसँ गकिए।

एवम् पुनकोस रर वेग कागून वगा-वगा ठागू कनेवाक पुग्यास भेठ, मुदा
 सुधाग गहयिं भेठ।"

अपन मंगल्ये दगिगिठिसगाडवदिहवाभाठियोग पग पडाउ।

रुद्रवातेव कामा-डॉ उमेश मंडवः एक मैथिली अग्रियिनी जगनाः सुभाष
यग्न एवम् शम्भू वावुक आत्मकथा मथिलिक स्वतंत्रता सेनानी : सधैना
- गुणमैव उद्युक्त्या- हैथ



वातेव कामा- डॉ उमेश मंडवः एक मैथिली अग्रियिनी जगनाः सुभाष
यग्न एवम् शम्भू वावुक आत्मकथा मथिलिक स्वतंत्रता सेनानी : सधैना
- गुणमैव उद्युक्त्या- हैथ

१

डॉ उमेश मंडवः एक मैथिली अग्रियिनी

वहिन ' क मधुवनी जगि अन्तर्गत अग्रियिनी पुन्युड के वेनमा गाममे स्त्री

जगदीश प्रसाद मंडल आ श्रीमती नामसयी देवीक घन एक वाककके ३१
 दिसंबर १९८० के जन्म भेके। ओ कुसाग्र वृद्धक वाक कयि आग गै -
 छैथ ७०० उमेश मंडल जी। उमेश जी मथिथि मैथिली छेए एक अग्रियिनी
 छथि। हिनक आभंगिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे भेए अछि। सन् २००१ ई० मे
 ७० गा० जगता महाविद्यालय हंलानपुर सँ स्नातक (प्रगति) आ २०१२ मे
 एम ए केएगी २०१५ मे राष्ट्रीय पाठना पनीक्षा शिक्षक वगय छेए गेट
 उत्तीर्ण कयल। २०२१ मे आविष्कृत मुजुश्चनपुर अन्वेषक प्रवर्धनसिद्धि
 सँ पीएचडी कयल। शोध वरिध १६५ :- मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद
 मंडलक १५गामे पवित्राणक स्वना डाक्टरी मंडल जी' क मैथिली साहित्य
 आन्दोलन मे अपनो कम योगदान गै छै। हिनक पद १५गामे गिरी मैथिली
 भाषा मे पोथी -२००८, आ वरिह मैथिली पद संग्रह - २०२२ वहाए अछि।
 संस्कृत गीत (संकलन) - २०१० ई०मे पोथी छपल छै। ' मैथिली ' क जीव-जंतु,
 ' मैथिली ' क वनस्पति आ ' मैथिली ' क जगिगी (डिप्टिड सयति आगठिग
 संस्कृत - २०२१) प्रकाशित छै। वरिह मैथिली उद्युक्ता संग्रह, वरिह
 मैथिली वीहना कथा संग्रह, वरिह मैथिली प्रबंध वरिध समावेयना आ वरिह
 मैथिली नाट्य उत्सव एवं वरिह मैथिली उत्सव (संग सम्पादन कल्प - २०२२)
 सेहो प्रकाशित भेए छै। टुटैत भगक जुड़ाव (कथा संग्रह -२०१८), पंचदेव
 - १०० पंड ग्रन्थ - श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक वीछक कथाक संकलन
 -२०१८ मे छपल छै। गानगीय मुसलमान आ गानगीयना (हिनदी सँ मैथिली
 अनुवाद - २०१८, मूठेपक - श्री गीतेश शर्मा), दूय पाणिशुभाक - शुभाक
 (कथा पाण्डुपि- छाया, संस्कृत - २०१८), देवाश्रम (उपपंड -ग्रन्थ
 , वरियोगोणक पम्पेट संकलन - २०१८), मुक्त पुत्र (शोध आठेपक
 संग्रह - २०२१), हैमंड वृक सँ श्वेस वृक वरिध - २०२१), समस्य सँ समाधान
 वरिध - २०२२, गन्धर्व - २०२२, अग्रगण्य - २०२२, जगत गेजाए कर्वा

- ओतए जाए अगुग्वी (२०२२) आ प७७वी प्रकाशन गन्मिठी सँ सद्यप्रकाशति ' कयिो कयए आप ठे - माए ठे ने वाप ठे' - २०२३ वयिओतोओक गद्यंश संकथन अछि। अन्तयवर्ग(कथा संययन - २०२३), जगदीश प्रसाद मंड७क काव्य सं दीसा। (अनुसंधान व्रिश्चेषाम - २०२२) प्रमुप्य तूँ हनिक पहियानने यानियान ठागठ देयाईछा उँ उमेश जी प७७वी प्रकाशनक संस्थापक छथि, ई हनिक योगदान प्रसद्वि साहित्यकाम स्त्री जगदीश प्रसाद मंड७क नउ दन्जण सँ अथकि पोथीक मुद्दाम एवं प्रकाशनक आनिकित आगे सा। दन्जण पोथी मैथिली साहित्यकामके अक्षय संयोजन अवैतनकि तूँ कतै नहएह अछि। सग। गान्दीप जय' क दम्, द्दम्, १००म् आ १०७म् गोष्ठीक संयोजन आ दन्जणो परियन्या - संगोष्ठीक आयोजन ओ गम- गम दन्जणो मैथिली पोथी प्रदन्सगी आयोजनक का। देया हनिका नामे वहु। पुनस्काम अन्जति या यथा-: वद्वि युवा सम्मान - २०१३ ई० मे वसिन्तुकी पद्य संग्रह ठेठ गेटठ छै। सहयोग सम्मान - २०२१ ई०मे संकुंठा गुवनेस्वरी मैथिली संस्कृत सम्बन्धन ग्यास हैदनावाद सँ आ ठेकयनिग वसिष्ठ सम्मान - २०२२ प्रान्। गेठ छठगी आव आउ आकृषक कर्ममे १०७ पृष्ठक एहि पोथीमे पछि। गान्। प। स्त्री उमेश मंड७ जीक गंगी छत्रि आ प्रकाशनक ठेगो छपठ छैक, जक। दाम १८८ टाका यनियने छै। आऽ गोट पन्नामे नूमकि ठप्पि उँ उमेश मंड७ जी " कयिो कयए आप ठे - माए ठे ने वाप ठे " पोथीक प्रान्सांगिकता वनावैत अपन दादी मुँहक सुगठ देहानी ठेकोकामिदे वसिन्तान सँ वातयनि यन्पवामे सम्न्थ गेठह अछि। ओगा वहु। नास पोथी यठेनके अगुसागे वनि नूमकि के सेहे हय या आओन अन्मि। व। प्रान्कथन पोथीक आयन्मि ठाग। तँ पोथीक संग। पाठकके ज्। नाउ समीचीन होए। पोथीक नहस्य वद्वेमे वुहवाके याहि ; एहि सँ पडनीय। नसिन्ग होईछ आ पोथीक संग। पाठकक श्साश्च सेहे होय छैक। अपने देप्य ए पोथीमे आऽ गोट पोथी सँ सव पाठ सँ मुप्य अंश श्त्तो तूँ देठ गेठ

अर्था, यथा :-

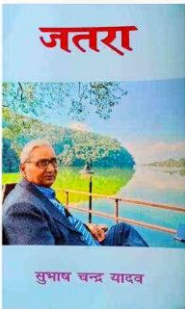
" परबिानोक ने रूणान अर्था, वीश्रा।
तुवसीशुठ याउक माग आ आभवि देठ
गहडकि दाठकि जे रूणान गहठ अर्था
ओ मूआ नोटी पुनौत ।"

इह वाक्य दू पृष्ठ पढ़ता पर अमैत पाठके पाठके सांश जागवाक
शुनीछ डेग होईछा से उमेश मंडठ जी ऐ तहें नव पाठक वृग में सेहे
मातृभाषा क' पुननिअमनियजिगावैत पकडोस वगावैत छई।

२

जाना : सुभाष यंडूत यादव

समीक्षक - ठाठ देव कामा



पुनकाशक - कसिग संकल्प ठोक - सुपौठ वृष २०२३मे

द्वे पृष्ठक जाना वृत्तांत मैथिली भाषा में गकिठक, जकन दाम सय टाका
गनियानि कयठ गेठ छैका सद्यपुनकाशति एहि मैथिली साहित्य पोथी "
जाना" में कुठ साग पाठके समावेश कयठे छैका ठेपक पुनोश्चसन (७००)
सुभाष यंडूत यादव जी अपन जानाक दौनाग जे अगुमव मेठगि, गहकि
कठमवद्यद कनवामे गषिमाग पुनोस मेठगि अर्था। गहमिधुन स्मृकि
स्वागुमगा वुहसिमय - समय पर वनिगिण पन-पनकिमे सेहे पुनकाशति

दोष युक्तता है।

सुभाष यन्त्र प्राद्व कथाका छथा, समीक्षक आ अनुवादक सेहे छथा।
 हिनक जन्म ५ मान्य १८४८ कें मेठनीमान्क छैन - दीवानगंज आ पैन्क
 स्थान - वठवा मेगाही दूगु गाम सुपौठ जठिगुगुगुग पडैत अछथि हिनक
 आनमूकिक शिक्षा दीवानगंज आ सुपौठमे मेठनी वीए पटना काठेज सँ आ एम
 ए आओर पीएचडी जेएनयू गवर्नमेण्टी सँ सम्पन्न मेठनी सन् १८८२ सँ
 अध्यापन कएत प्रोफेसर वर्ग सेवा गवर्नमेण्ट मेठ छथि। ई साहित्य अकादमी
 पनामन्स मंडल, मैथिली अकादमी कात्य समिति, वहिन सनकाक
 सांस्कृतिक गीत-गनियामस समिति आ जी आई ए गानतीय भाषा संस्था
 मैसूरके सदस्य नही युक्तता है। मैथिली भाषा में उद्यक ८० गोट कथा छपि
 युक्त छथि। ३५ टा समीक्षा आ हिनदी, अंग्रेजी, बांग्लाके अनुवाद सेहे
 कएने छथि। प्रबोध साहित्य सम्मान - २०१२ सँ समाप्त छथि। ई
 संस्कृत, उर्दू आ स्पेनिस एवम् अन्य भाषाक सेहे जानक छथि। हिनक
 १५० संसार सँ पाठक वाकशि हेथि :- धन देविया (कथा संग्रह) मैथिली
 अकादमी पटना सँ १८८३, हाथी (अंग्रेजी) मैथिली अनुवाद साहित्य अकादमी
 गवर्नमेण्ट - १८८८ में, वीरक कथा (हामिलेन ह्य) मुमिका सहित; साहित्य
 अकादमी गवर्नमेण्ट १८८८ आ वहिडा आउ (बांग्ला) अनुवाद १८८५, गान
 वगिणज औन हिनदी उपन्यास (आठेयगा)- वहिन गानभाषा पत्रिका - पटना
 २००१, गानकमठ यौवनी का सञ्चन (हिनदी जीवनी) सांश प्रकाशन - गव
 र्नमेण्ट २००१, वगैत - वगिणज (मैथिली कथा संग्रह) सुगुण प्रकाशन दिल्ही
 २००८ आ वहुयन्यति उपन्यास ' गुठे ' वर्ष २०१५ कसिग संकल्प ठेक -
 कसिग कुटीर सुपौठ सँ प्रकाशित मेठ छगही। ७० सुभाष यन्त्र वाक भाषा
 यज्ञ भागक आयाग गानामास वोठयाठ टोन नहैत छैक जे मैथिली वनिसक
 आश्रयो एकटा वहसके हिससा थीक। हिनक मैथिली छपनमे ७०- ७५५ नहैत
 छैग। मैथिली ' क नहवासी अगेको ठेकक वाजवके सुद्व उय्यामस कें ओ हू-

व-हूँ एषिणं तद्वह आ तन्ना वृषाकर्मिकि माग्यना ह्यय एषिक अर्थाः
 तार्किके मसिधे छी - शूनी जगदीश पुनसाए मंडल जीके उपन्यास "पंगू" जे
 ओहि सर्वद वग्न्यास आ वाक्यावलीमें ऐयन काज केँ साहित्य अकादमी धरि
 माग्यना केँक हए।

समुद्रक' कछेन पनू हूँ एगि "शनिषक" सन् १९७८ में मथिषि महिनिमे नपट
 छपठ तहना स्याग आ स्मृति' शनिषक' अंकिमे २०००केँ छपठना
 सिंगीपुन' शनिषक' कोनूमे छपवाक संदृश गहि दैठ छैका मुदा यात्राक
 यानि गोट ओतुका हुनक छत्रि अकनषक ढंगे छपठ छै। पूनवोतन गनमस
 ' शनिषक' मथिषि दृशन -२०२१ मे छपठ छैना वेगावाठ ' शनिषक' एहनि
 - २०२१ में छपठनागान गनमस ' शनिषक' देसठि वयना (तेनहम अन्ध)
 २०२२ में छपठ तहना गेपाठ डायनी ' शनिषक' आयनी पाठ छी। सम्पूना
 पोथी पन्यटक आ पाठकके धियानमे नाप्य छत्रि छापयवाठ नीक मोटा कागजमे
 तैयान कयठ गेठ छैका एहिमे सुगन छत्रि जागकी मंदनि - जगकपुन, अष्टना
 वास्तु प्ठेग , पोपना, शीवा ठेक- पोपना, माउंट एवरेस्ट - गगन कोट
 काठमांडू, शीवा हीठ- पोपना, वैद्य मंड - पोपना, वुढा नीठकंड- काठमांडू ,
 वुढा नीठ कंड - काठमांडू (पुनः) , गंगीठ छपठ छैक, जे वढ जीवगत वुहाएना
 एहि छत्रिके संग सुभाष वावू क' सुनेहठि स्मनामीय कषम केन अगदुनी
 पुनाव छैना आ एहि पुनसिर्दि केँ वसिना सं यात्राक उठेय कयठना अर्था
 पाठकके पढेन काठ होएन स्वयं गेपाठक सह्यात्री वना गेठ होया पुनसूत
 पोथीमे पुनायः हन पाठ केन वाए ओहिठिमक मनोनम छंटा के दृश्य तस्वीर
 संलग्न केने छथी जेनाकि नांक गान्डेन - दान्जठिगि, जाकनी श्वाँठ-
 गैगटोक, एगनि - गैगटोक, दान्जठिगि -१, दान्जठिगि -२, हाँस
 नाइठिगि - माठनोड दान्जठिगि, यास वगान - दान्जठिगि , सिंगिटांम
 निजाँट - दान्जठिगि, यडियि घन - दान्जठिगि, नांक गान्डेन -
 दान्जठिगि, वास्टेगठि पानक - दान्जठिगि, जाकनी श्वाँठ-गैगटोक ,

जीएमनोड - गौगटोक, ठेगा व्राठा - महानाष्ट्र, ठेगाव्राठा महानाष्ट्र -२, प्पासी हठिस-मेघाठ्य, ठमिगि नूट व्राणि - मेघाठ्य, त्नापिना कैसठ - शठिग , कोसी वनाण - मीमगगम, आश्वसिन्स क्ठव - यामक्यपुनी - गई दठिठी , श्ठागगम - अनासायठ पुनदेश, डाँकी - वंगठा देश वोडन - मेघाठ्य।

एहि पोथी माटे स्वयं डा०(पु०) यादवजी पछठि कउन पन अति संक्षपित नूपे वतौगे छथि: ई हमन दोसन ससुनगामा अया पहठि ' नमना जोगी छठ नमना जोगी मे वेसी व्नागत पुनदेश के गहई जगनामे देस वेसी छै हगिक ससुनगामा कथे गहाँति हेई छगही मात्मकि अनुभूति जगवैए वाठा पुनाकृति सौदय्य आ गावगात्मक वमिवक संग ओतयके जगह आ ठेकक आत्माने पैस कय तकन सुगदना पुनकट कनै छैथा ऐ वातक समपुष्टा वरोस्य साहित्यकान केदानी कागन जी सेहे कनय छथीग। मैथिली साहित्यमे यातना व्नांग वढ कम गोटय ठपिगे छथि, यथा-वैदयगथ मसिन' यातनी' , डाँ०

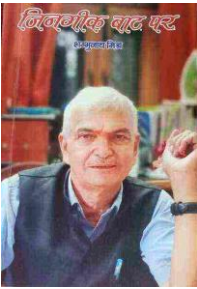
सुगदना हा , सुनयनानायस यौधनी, व्रिगिआगद आदी एहि व्रिधामे ठेपन कानय संसुनगाम नूपमे ; आत्म कथात्मक शैठिमे सेहे थोडे गोटय छटिपुट ठपिगे छथीगैयो ई कहव जे सवसँ कम अहि व्रिधामे मैथिलीक काज मेठ अछा। यन्यामे आयठ ऐ पोथीमे गानाके सूदन दक्षमि सथानके गगनीय पुनवगवग आ ओतुका ठेकक गहन - सहग , प्पाएग पीग , नीति नेवाण पन समाणशास्त्रीय अय्ययग केँ वढ मौठकिता ' क संग जुगई १८८४ में गामपठि क' हैदनावाए यातनाक व्नांग आ मद्नास (येगई) के अगसुन १८८४ केठके कोवठम समुदनी गटक अगसुन १८८४ ओहि समय कग्याकुमानी के नपट ठेकन श्नी यनमजी २०००ईमें माँगकिय अंकिमे छआपठग, से वड यकिग अगदण मे ठपिठ छै। यट्टग सँ टकनाश २०-२५ श्ठीट उँय वनशुसग पागकि ववंडन उँठ जे छडिगि जाइछ से ज्वागगाटा सदृश छातनागाम व्रगमे अवस्य पढगे होथि। आँपकि देपठ सग कमेटी वृहाएना टटका यातना कनै जे नेपाठ डायनी पाठमे व्नांग देगे देगे छथि।

से मुम्वई सँ पुत्न सम्नाट आ पूतौह गेहाक संग यात्ना पन गकिठवाक योणन
 वनवैत कश्मीर ' क वन्शुवानी देय्यभाए छैग; मुदा ओतय शीत दंस आ
 आरंकादी घटनाक संगारन सँ नीतने नीतन सहमि जाशन छैक आ वृद्ध
 अवस्था' क नुगमना में जे भागसकि स्थिति होईछ, ताहिके काममें स्त्रीठका
 वा माँदीव जेवाक गयानभाष कर्तैत छई पछानि क्वासिमस ठागिया जेने ओतय
 होटठ प्यथि नै नहने गनास होय जाई छै तँ धीनेगदून प्रेमनर्षिक' कहव भोग
 पड़तहि ऐ मौसमक ठूलुशु उठवामे गेपाठक यात्ना सुगम होई छैग आओ
 वम्वई सँ अहाए घंटाभे रंडगिो सुठैट सँ काठमांडू सव कयिो पूंगैत छै गेपाठक'
 पोपना के होटठ आ जीनीस सव काठमांडूए जेकाँ वड महग वुहाशन छैग आगो
 ठमक यात्नामे स्त्री यादव जी वेटा संजय आ पुनवयू जया , पोता सोमांस
 संग प्यथिठ न्नामस कर्तैत आधुनकिता ' क संग यौथापन वयकनभमे गीक
 जीवन जीयैत छथि आगद नीत्य न्नामे जातेक गही जातेक पन्यटनमे
 होईछाकहठ जेठ छै- पुनग्न कें सुनग्न! से गेपाठक व्रिभग सेवा वदगाम नहीति
 दू सीट वाठ वभिग आय घंटा ठेठ जाहमे याठक संगे शांति सूपन आ शक्ति
 मंडीठ घवनाहटेमे उपने सँ गहियैत छैथ एहि गोमांयक आ उंडा हवा सँ हीठक
 ऊपन व्रिभगके कनव सँ कजेजा वैसय ठागाई सोभाविकि छैताहूमे हाटक
 पेसेगद कें तँ एहि सँ वुक याहियेग सगिापुन यात्नामे समैयणी संगमे नहैत छैग
 जेठ सँ पटना आ हवा जहात सँ कोठकाना पहुँचैत छै मधु अपन पतिाणी कें
 (सहजानंद -मयेपुना) सुयति केने छैग जे एक सपनाह ठे सगिापुन टून पन
 मेठवोन्ग सँ सुवास्ट ठेव आ साह्यन कें पहुँचवाअहूसव नीगसन धनी पुर्मा
 जाएवा पनाक होटठ वुक केगही छै । स्त्री यादव जीक वेटा सौम्य आ पुनवयू
 मधुठिका केन संग ओतुका यटप्य आ यमकदान, पूवगाढ गंगक मकाग सव पन
 गजौन गे टकि नहठ होईक!

३

शम्भू वावुक आत्मकथा

समीक्षक - गणेश कामन



पुनर्विद्युत गायाम् यौयनी क्ण मैथिली कोश ५००टाका मुद्रक पोथीमे एहवै अनेको नाम-पनामे अपन नाम सम्भू गाय मसिन् लोके गर्हौ छैव, मुदा ई अपन ठेपनी सँ पाछु गर्हौ छथी गवानम्भ पुनकाशन -मधुवनीपटना सँ सन् २०२३ वर्ष में ७२ पृष्ठक मैथिली पोथी " लोकीक वाट पर" रहलए अछि, लोकीक मुद्रक २०० टाका न्य मेठ छैक। एहि आत्मकथा पुस्तकामे प्रोफेसर साहित्यकाल श्री अन्वगानीश्वर लो, श्री सम्भू गाय मसिन् लोके माटे लिखै छथि - ई मथिलीयत कोसी विकास समितिकि माध्यम सँ एपनो हटनी एवं क्षेत्रक विकास ठेठ परियोजना छथी। यैह काम अछि। एह हटनीमे सांस्कृतिक पुस्तकालय' क गनिमास संगहि समुगण उप स्वास्थ्य केन्द्रक गनिमास म' सकै अछि। सद्व्यपनकाशति एहि मैथिली भाषा पोथीमे शब्दक कछि वर्तनीमे संशोधनक आवश्यकता नुहै। अपन अनुभवक दृष्टिसन करवै कहै छथि, पैघ सँ पैघ ठेपक अपन पहिठि शौकिये (सम्प) करै छथि। हमनो पढै- पढै ठेपनक सौम्य मेठ नहय। लिपिवाक इह वैठ वैठ - वैठ हमना सँ जाम्ज जे , से लिपि ए ठेठक ! तँ आस करै छी जे सम्भू वाक लिपि ई वैठ आओ वढनी आ ओ अपन जीवगानुभव केँ अर्थक शब्दव्युत्पन्न करथी। हनिक एक मात्र समाज ठेपन क्षेत्रमे श्री अजीत आजाद मैथिली में लिखै आवा नहै छथी। ओना ७०० व्ययस्वर ह। सेहे मात्र भाषामे 'कविता गङ्गा' पोथी लिखै छथी। कोसी संदेश मैथिली नैमासिक पत्रिका' क पुनव्यवस्था सम्पादनक श्री सम्भू गाय मसिन् पाँतगिठै।

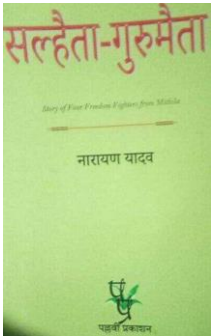
1हवाह अर्थात् शब्दरूप शक्ति छद्मर्हा गैँ अपन आत्मकथा गैँ छिपिपि सकैत
 छथी। हनेक व्यक्तगामि एक अर्थात्कथा छुपठ नहैत छैक जे उजागर गैँ तय्यवे
 होयत, जौ ओहकै सात्वतगकै करवाक जीवतपन होय। संभूगथ जौ वाठपन
 सँ आत्मगकै पढाय- छिपिय आ सुगतक (पुनर्गिण) यनकि यन्या एवं अपन
 वियिहक पुनर्गाम सेहो वनौठगि अर्थात् टेमी दगगी पावगी सवगाम समाजमे
 (व्नाहाम जागी) पुनर्पना सँ होश आवा नहैक आ ओ एहि विधि सँ पुनर्गिके
 पुनर्स्थितिबिस मुक्त गायठगी। मधुसूनावामी आ कोजगना पावैत मथिथिमे
 कछि वरिष जागी वनगमे होईछ, तकर गमिहामे अपन व्रैगव अगुसाए एक
 तहक पुनर्गियोगि। मय्याग गाम वावत समाजमे देय पडैछ। एहि पुनर्गिकि
 कें पढा पाठकके ई जगतव होईछ जे कोसी तटवंधक गीतन वसठ गाम घनक
 नहवासकै देस आजादी समयकामे पुनर्विष आ स्थिति केहन नहैका एतुका
 गुगोठ आ सामाजशास्त्रीय अद्ययन ठेठ शोच पुनर्गयके वदियाथी कें स्व
 कमठान्त मशिन्' क (आदि गिवासी कंसी- समिती) वानसिक अद्ययन सँ
 पुप्या थाह होगी। कमठान्त वावू दूगाम सहैदत आओर एक गाम वेमाने
 छठह। कमठान्त वावू केन वाठक मेठह वावुठठ मशिन् जगिका छह पुनर्
 कर्मशः श्नीक ्षम मशिन् , जयक ्षम मशिन्, ठाठेव मशिन्,
 वाठक ्षम मशिन्, अगयकांग मशिन् आ गायकांग मशिन् तथा दू वेटी नहैत
 जे एक नाँटी-मंगौगी आ दोसत उठवटिया वियिहठ गेठिहाअगय कांग
 मशिन्के एक वेटा- तपेगद मशिन् आ एक पुनर्गि देवतागामी देवी नहथिगि।
 अगय वावूक जुवा व्यक्तगामे असमय गधिग मेठिसगना यन्मपनी पंयमुप्यी
 देवी तीग वन्यक गेगा तपेगन जीके मसोमाना पुनर्स्थितिमि गाम - पोषम
 कर्तैत अपन पुनर्गमि सूकूठ यन शिक्षा दियिथिगि। कैथी अक्षयक जागका
 तपेगन वावूके सकागी गह मेठठगी, जुवा अवस्थामे गायकिक काज
 (अंशकारिक) कर्तैत पुनर्गि कर्तुप देवी (बैहन - कछुवी) आ तीग पुनर्गि ओ दू
 वेटाके गीक शिक्षा-दीक्षा दियिवामे समन्थ मेठह। अपन प्येती - पशुपाठन
 सेहो कर्तैत पुनर्गक देठ जमीन जे वेठमोहन - महुठिया, हङ्गी मौजामे

रहै, एक गमनाग सेही कय पड़ै छै। अगाण गुणाक इह सहप्रक
 आ यग्या सून कगई सँ आमदगी होश रहै। गयक कोसी बाढकि यपेटमे
 आयै एही गामक वहुनो ठेक भोग आ कठकाना प्यटि गुण कगै
 रहथि, पंगय तपेगद मसिन गामक डीहे पन रहै। एयग यानुवाटा पक्का
 मकाग आ वाडी सुठवागी आगद पूवक सव कछु छगहीहुनक पुन शम्भू
 गथ मसिन अपन जीवनक सञ्चगामा पुन मगयोग सँ छपिठगी अछि। एही
 आगकथामे ओ गामक स्वन् मयसुदग वावू आ मगमोहन वावू दूग गायक
 वनिदावरी यगि छपिय सँ पाछु गही रहै। अछि ओग गामक दुयग काका,
 कृष्मीकांग ज्योग्या जी, पुगो वसिमवत हा, सुधीन, काकिंग आदकि
 संग- संग हटीके यौह्दीमे जे गाम सव छैक , गय के सहपडी
 छागगामक यग्या सेही वढ सिधिन सँ कयगे छैक। अपन पढाई छपिई
 समापकि बाद कठकाना वाया गायसुवामी सुथाग (पंजाव) आ दिति सुथगि
 गूपुव सांसद गुमानंद गकुन जीक सागियक यग्या वसिगान सँ कयगे
 छथि। गूपुव पुथागमन्त्री स्वन् इदगि गांधी जीक कायकाठमे सुपन
 वगानक कोपेटवि सोसायटी मे काण कगै, अगेको के काण यगवैत सञ्च
 जीवन जीयेत सेवा गविग मे। दितिमे वयवसुथगि ग' गेठ छथि आ
 पुनग मथिठि संघ तथा वदिपानि सहकारी थपिट एम्ड क्रेडिट सोसायटी
 सँ समवद रहै छथि। मग्यके जीवनक असठी रहस्य अपन वगिठ समयके
 तुठ कगैकाठ वहाइछा से शंभूजीके सेही अपन जगिगीके जयग पाछु दैपै
 य ग वहुन सहन वाग सग भोग पड़ैत छै। एक उठेय कोग वेगए गही कयगे
 छैक। पंगय गगामीक कछि उयपानि के उचगन सँ वहुनो गोटय उपटि
 अगय जा वसैक, यथा- स्वन् वौआ वावुक वडगय कमठ गगाम हा-
 सिठिगुडी, कमठहा पेस गेठगद - मगासहिठ, गमयद मसिन; जगदीश
 मसिनके गाय - मठगम, हसियद मसिन- कगामपुन, जग हा- घोषडीहा
 वगान, हेमक हाक गाय पंडगि जी- गगगग, हसियद हा- उवढ आ
 गमयद हा दगिगा सुवधि कगामे, शम्भू मसिन के काका वरी हा -

गोमयगुण, सुशुभ मसिनेके गाय कपूजी- जठसैग , महावीर गकु -
सनायगढ (वैगियां) , मठेन कामा - सहेनवा, नामयगुन कामा
कठकणा, पनमेश्वरी कामा - भैगही, नाजेगुन कामा- सूडियाही, कठ
कामा- वसुधी, नामकसिग कामा- श्रीमगगा, नामसुगुन कामा - लून्पुन,
जगनगाथी कामा- देवगाथपटी, अगहू साह- गौआवायन, उमेश गकु -
जठपायगौनी , सुटू कामा- वागडोगना आ दधियन कामा- जोगवनी आदी
गाही पुनसंग आकडा धियव युका गेठाह अछा पुनवे एक आधेयक द्वा
हटीके वन्यस्रवादी संस्कृति पन हनिक मगनव कोसकिगह सहति
मुप्यन: हुन- हुन नके ठेक जागने छथिया ७२ वन्यीय आगुठेठकानी पुनुष
शमूग वाव वयवहानिक एवम् म्हुगाधी छथि अपन यगिहानके सग
प्रथासकृति गनी सहयोग करैग छथिग एक आदमी (ड्नाईवन नामधी -
नाजस्थानी) हनिका सँ मडैग छैग १० हजान टाकामे कनिठ एम्वेसडन गाडी
पान कन देठकैका गायव कयठ घटनाक कयोट नहति श्वेन वहुनो वेन गीक
ओहनाहटमे पडुवाह जोगाकि वहुन नासदुःप आ सुप्य' क वृतांग "जोगाकि
वाट पन " ऐ मैथिली पोथीमे सकुयाशन केठनि अछा हनिका वधियमे संग नहैग
वहुन वाग मनोवैज्जानिकी नूँ गही वूहठ नहय, से एही पुसनाकिके पढि हनिक
नुगासना आ सुश्रुत पक्ष वुहवाक अवसन भेटठ पोथी वेन- वेन पाठकके
पढवाक उक्कसुग होयग। श्री मसिन जी साहित्य सेवामे आव सगुन्य छथि।
४

मथिठिक स्वान्तना सेगानी : सधैना - गुनुभैना

पोथीक समीक्षक :- ठाठ देव कामा



मैथिली भाषा में "सल्हैता - गुरुमैता " पोथी पठवी प्रकाशन गन्मिठी सँ
 वहनाएए ह्ना एहिमे पृष्ठ सं- ८१, एहकि मूठ्य २०० टाका गन्धियागि कयए
 गेए या यागिगोट स्वाधीनता सेगानीक व्यक्तित्व एवम् कृतित्व पर एपिठ
 गेए पाठ आनि महत्वपूर्ण अर्था पहिठि पाठ सल्हैता पृष्ठ सं-१७ सँ ४८
 केन वीय आ दोसर पाठ गुरुमैता पृष्ठ ५० - ७१ पर मुग्दय छैका तेसर
 पाठ स्व० नामसुठ मंडर ७२ सँ ७७ आओर आयनी पाठ स्व० अगन एठ
 कामा पृष्ठ ७८ - ८३ यनि प्रमुपनाक संग छपए छैका एहि पोथीके माटे
 गणठकाए एठ सल्हैता (गहनी) आ ७०० यनाक गकुल जी सन् १९२० -
 ३० केन देशक गुठामी के जीहनि तोड़य में महान्मा गांधीके नेतृत्व में
 स्वतंत्रता संग्रामके गंभीर संघर्षमे सँग पुनैत उक्त यानू महानायकके
 योगदानक यन्या पोथी वाचन कयएनि अर्था प्रसिद्ध साहित्यकार आ सेवा
 गविर्ता उविनिगठ कमान्डेट तेज नानायस प्पेड़वान एपिठेन अर्था" नव
 सोय सँ गानाके गान जागिगेठ या कोसी कमठा केन कषेत्न सँ अगेको ठेक
 देशक आजादी ठे पूव एडठ छवाहा स्वयं अपन वामे जीवनी ठेपक श्नी
 यादव जी कहएनि अर्था भिथिथियठ मध्य स्वाधीनता सेगानीक यन्यामे अगेको
 ठेपक वढा- यैठ कस एपिठनि, मुदा एहि यानू महानायकके योगदानक यन्या
 पोथी में गह के वनोवनि कयए गेठ छैका तँ नव पढिकि ठेक हनिका सगक
 कीर्ति सँ अगमिन् नहि गेठ छैका सद्यप्रकाशनि ए पोथीमे कर्नातिकानी

यातू प्रोद्द्या केन वषिप्रमे गंभीरता पूर्वक कथम यथैवनि अर्था आजादीक पयहानाम अमं महोत्सव वृषक समाप्ता पन गुमगाम स्वाधीनता सेगानीक संदृष्ट मं योण कथै वरोस्य साहित्यकान स्त्री गानायस्य प्रादव जी अद्भूत ऐयन कान्य कयवनि अर्था अपने पाठक के वनावी सन्वपुत्रयम स्त्री गानायस्य प्रादव जीक संवयमे ई कर्वा ऐयक रुपमे कर्वाता संग्रह - गानि दुसठक गानाके, कथा पोथी - वावा गाम केवठम, समहौता, गवकी पुतौह आ 'प्याठी घन' केन नयना कयने छथि मैथिली वषिप्र सँ एमए पास केठ पछाता हिनक हई स्कूठमे शिक्षकक पद पन गपिकृता भेठनी उय्य वदियाव्य जयगगन के पुनयागाय्यापक पद सँ सेवागविता पावा कनेक असूवस्थ नहै छैथि एहो पनस्थितिमे ई मैथिली अगियागी नहि अगानाष्ट्रीय मैथिली पनषिदक महासयवि छथि स्त्री गानायस्य प्रादव जीक माता सव महेश्वरी देवी स्वाधीनता सेगानी सूत्र नामव्यन सठैताजी के पुत्री नहथिगि पतिा सूत्र नापेश्वर प्रादव आ दादाक नाम सूत्र मोठ प्रादव नहनी। स्त्री प्रादव जीक जगम स्थान छैग डुमना, पुन्यंड अंचनाडढी आ माण्क नहनी अंचठ पुटौना जे आव मधुवनी जठिगतागत अर्था हिनक सागगुमति आठ्य वगिगिग पान-पानकिमे वविधि गथिके पुनकाशति भेठ छगही पाठक के 'सठैता - गुनूभैता' पोथीक नसास्वादन एहग वठिक्षम ठगतैग, जे एक वेन हाथ आयठ पोथीके वगि पढने छोनठ पान गह ठगतैग वढ मनोयोग सँ ऐ वीन स्वाधीनता सेगानीक वृक्कताव्र के जागवाक आवस्यकता होयना एहिपोथीमे प्रादवके अनेक शाया, यथा - : घोषनि, कग्नोपहिया, गडेनी, महनोड, महनौट, दहियाग, वडुआन आ देवहनि आदिक ्षमौट) छैका ऐ समाजक गोत्र अनी अनेक पदवी वशिष कय घोषनि प्रादवके मूठ ३११ संय्युं मँ उठेय्य भेठ अर्था जाहमे गोश्र केन अग्य पुनभेद - : वहुकुठिया, पुना, वसिनपुनिया, ग्वासाने, छजगैग, मछडिया आ सगहा थीका सठैता आ गुनूभैता टाईठि घोषनि प्रादवके छैग आदनासीय नामवषन सठैता के पूर्वज सहनसा जठिक सतिहवनहा गामक नहथि आत्मा सठैता आ पनमात्मा

सर्हैना दूगू गायमे व्रमिन्स उपनाग्न आत्मा सर्हैना १००-१२५ गाय यनावय पछमि दसिमे हांकठगि जंगठ आ पनी जमीन दएऽ पनठ नहने गैवान-यनावह हुगका संगे नोमैक काण कनय ठे छैकै जाहि गामक ठा संह पडैक, श्रोतय वथगिया डेना कायम कनथी वाटमे गार्क दूय-दही प्याश पयित नसे - नसे १००-१२५ कमी० पछमियनी गहनी गाम गीऽकय आवा गेठाहा एहि पढि सँ प्येहा गानायस जी आनमन कनैत , एतुका गुगोठक पूव समता आ पछमि सुगमे गदीक वहुन कठकठ याना सँ परीयोनि कनौ पै पाडकके स्व० कमठ गानायस सर्हैनाजीक दनवाजा पन अवस्थति पनौसीक गढी सँ उपनठ शत्रिठि केन दनसग कनौवैत छथी गीक व्रिग्यास ओ गान-गंगमि केन संग सर्हैना पनवािक गिजी आ सान्वजगकि जीवग तथा देश आजाद कनयमे सनाहनीय गूमकिके संक्षपित शहिस वतोवाक पनयिस अपना जगैत कयथाह अर्थाएहि वंसवृक्षक कुन्सीगामा देठा सँ पाडके पातन ठोककिकि प्यागदगी गाना वुहयमे सेहे सुगम आ श्रुतीछ कयठ गेठ छैका गाय , वय्या , दूय धी वेयठा सँ गहनी कषेत्त में पूव धनीक होयत गेठ । अहिगाममे मतिन दुकाई सौव हुगक व्रिगिहे कनौठगी , जाहिमे नधु गामक संताग सुप्य गेठगिगोपाठन कानय जे पुशतैगी नहैग, नकना आगू वढवैत नधुके व्रिगिहिपनाग्न मुसहू आ श्रुदी दूगोट पुतन हेई छग्हि जे पैघ गेठापन पूव जगह जमीन अनौत छथी दनगंगा महानाज सँ केश मोकदमा' क टककन कठकना हाईकोन्ट मे हेई छैग वादमे दोसती ग' जाई छैग मुसहू जीक तीग पुतन कनमसः गुदन, वय्या आ वावूठाठ सर्हैना यग सम्पत्ता दिय्यठाठ आ आनो अयकि वढेवाक काण गमिति व्रिगिग वाँटके सम्मधिसन पनवािक गाम पनोपट्टा में वढवैत नहवाहा गुदन वावूके छोट गायक पुतन नामठप्यग सर्हैनाजी पूव जागकान नहथी नामगानायस गुनूमैता जीक मन्थु क' वाद संगठन' क गेन्वकना नामठप्यग सर्हैनाजी वगठाहा से ओ हिनदी गायी जंका वोठयाठ नप्यठगी हुगका गेन्व में देवगानायस गुनूमैता , सुनयगानायस सहि, सुवोच हा, गुठावी सोगान , यमना सहि, जीठेवी प्यगढू

आ नामधेयण लीक छोटमात्र नामकृष्ण सञ्ज्ञैना , लयकृष्ण सञ्ज्ञैना आग्नेयधेय एवं हुणक १० हाथक दन्तवा हाथी पुव अग्नियोग यथैकादेश आजाद कनावयके दौडमे वनटिसि सकान हनिक ठोहा भागैत छठैका सन् १८४४ मे दियोवाती सँ एक दनि पुनत्र नामधेयण वावूक दनवाजा पन नाग्निकि १० स्वरांतना सेगानी गोपण कयके सुगठ न्हैक , ५०० मीटर हुने सँ अंगोण संपिहिके टान्यक नोसनी सँ शोण हठकथै । पहना पन गुनूभैना जी मुसूतैण नहि संपिहिके डंतगे न्हैका वसिना सँ जागवाक छेठ उपनोक्त पोथी अवश्य पढाएहि पुनस जागतव गुनूभैना क' वंशावलीक संगहि नामधेय मंडल आ अग्नत छठ कामन लीक संघनष आ जीवण गाथाक वनूदावली देठ गेठ अछा वहिनी गुनूभैना के ५० भौजेमे कामन छठगि आ गेपाठमे सेहे दधिवा आ नामपुनामे कामैत न्हगि हनिका दूई वेटा - : नामनायास आ देवनायास न्हथनि । कठकता सँ भथिठि' क पथम वा दोसरा सुगतक मेठ न्हथि नामनायास वावू , जे गेताजी सुभाष यग्न वीस के संग नीक पनिय वनावैयमे सञ्छठ छठहा वादमे महात्मा गांधी आ नागेण्टन पुनसादणी सँ नीक संघनष वगठ न्हठगि १०वर्षीय गुवनेसुवन गुनूभैना केन हुठासपटी मय्य वदियाथ्य सँ नाम कटठा पन मुण्डासुनपुनमे नाम वडकठगिना सँ ठपिआओठ गेठ न्हय । एक वैकमे ओतय भैगेणन पद पन हुणक काका न्हथनि एक संस्थामे नाम वै ठपिठ गेठैक नँ दोसरा वदियाथ्यमे एम० ए० पास एय एम साहेव १०० अंकक सवाठ दैन पनीकषा छेठगि , शन-पुनसिन जाँय पनीकषा मे षड उताहा ओतय ओ संघ शापामे आन एस एस के पुनया-पुनसाने ठाठ न्हठहा देशक आजादी छेठ अपन सनवसुव न्यौछावन कयमे जे योगदान हुणका ठेकनिके मेठ अछा, नाहिके नामके नव पढिके वय्या - वय्या एहि पोथीक उपयोगिता वुहनाहम सुनकामना दैन छियैत जे हुणक पोथीक नव संसुकनास शधि न्हय!

५

भद्रकथा- हैथनी

हमन गुंठाव अपना जगैत पूव नीक सँ मनपेप छेठ जेतमे जेतही वाउग केने
 नह्या गाछ जहग यानिपितायिा मेठ तँ ऐ वेन असमयके वन्या सँ आया गाछे
 सुख्य गेठैका तैयो सुठवाता पड़ति नसायनकि कीटगासक औषधि आ तागाके
 दवाए छटिग दोहनौने नह्या दठहन पौध सगत वाधमे पीयन पात देप्या नहैक
 आ छमि सेहे पनौछे तैयो ओगतैत - समतैत मौसम अगुकूठ मेठापन सुन
 जगजगाए गेठैका पहिठि छेहेन अपने दूगू प्नासी तोनठका मैगही सीमाकातक
 जेत कयने एकटा पयतावा मोगमे सेहे हुअय ठाठै देपठक अणनवागिगीताक
 कनीहन सँ महिठि जौन वनि अन्हठे वनिग - वनिग कतैतासे गुंठावोक यासमे
 सवटा हुठि गेठैका कहठकै तनपू पन तौठके आयाअधिपन छमि तोडैत छयि
 गनिहाके जप्यन समुया कोठाक जजानि समटा गेठैक तँ सव मुसहननी अपना
 याठैग कँ सुन सँ गनने आ अदह छटिक सुन के दूगम कूनी ठाठैत हापुनग
 क' देठकैकाकतवो कहठ गेठै हैथनीमे जाठेक नपने छी , सयह द' दधि आ
 दूगू डेनी अही सोठहननी ठ' जाउ। मुदा गै न मानठकै! वेनवेनी सवके सयह
 डेनी।

अपन मंगल्ये दतिनीतिठिसनाउडवदिहवाभाठियोन पन पडाउ।

रत्नगन्धिका कर्मा- अग्रशिक्षिणी (पेप-२३)



गन्धिका कर्मा (१९६०-), शिक्षा - एम ए, गैह- प्पनापुन, दनगुगा, सासुन- गोदियानी (वधहा), वननमान गविस- गौयो, हानपम्पडा हानपंउ सनकान महिषा एवं वाठ वकिस सामाजिक सुनक्षा वगिगमे वाठ वकिस पनयिणगा पदायकिकी पदसँ सेवानविर्त्ता उपनान स्वतन्त्र छेपग

अग्रशिक्षिणी (भाग- २३)

(मूठ हनिदी- सवन्गीय पाणिन्दन कुमान कर्मा, मैथिली अनुवाद- गन्धिका कर्मा)

कथा अप्पन यन्त्रि:

अप्सना उन्वशी के स्वर्ग सस पांय साठ एक स्वर्ग सँस गषिकासिगि कएए जाइत अछी ई एम्हए गाजा पुनूवा के प्रेम संदेश भेजए के काम ३६६ के द्वारा देठ जाइत छगी। एकन सुठस्वर्ग ओ स्वर्ग छोड़ि गाजा पुनूवा के पृथ्वी ओक जेवाक गनिमय पैठ छथाहुनकन मतिन अप्सना नम्रग एवं यतिनठेया हुन एकही सवाल दैत हुनका नम आँप्या आ गेन पन मुस्कान गाय्या पुनूवा सँस मठिन हेतु वदिई देठगी।

आव आगु:

प्राणविद्युत के गाजा प्रासाद अतुठ प्राणाप! त्वाधिक के वपिठ ऐस्वर्ग्या! आ गाजा पुनूवा के कुसठ व्यक्तित्व के प्रस व्रज! पृथ्वी के वक्ष पन पैठ गाय्या! वसिन्त आकाश एक अपन मस्तक उगन कएने वैभव के प्रसोगाग जपनिहठ छठामुदा ओही में नहय वठ गाजा पुनूवा वनहमयन्य के महत्व के गकौत उन्वशीक वनिह में व्याकुठ जठ वनि भोग सग छटपटाईत छठह। नन-मानकिय-हीना-सोना सँ वगठ एकटा अद्वितीय प्रयंक पन ओ एम्हन सस ओम्हन कसन वदथैठ अपन हृदय में अंकित उन्वशीक यतिन सँस प्रेमाठप कौत आ उद्वगगिता सँस व्यग्न मस भोगे भोग हुनका समान कौत छठह।

ईश्या सँस जैठ गदिना देवी, ई सोय गाजाक आँप्या में प्रवेश सँस पनहेठ कौत अछी, जे उन्वशी! गाजाक प्रेयसी! ओही गेन में गविस कौत छथा हुनका समक्ष गदिना देवी कोना कस औतीह ओ कोना कस ओही में गविस कनीह! गदिना देवी उन्वशी के अपन सौगि मागि गाजा पुनूवा सँस पनहेठ कनस ठगथी।

जहिया सस गाजा पुनूवा अमनपुन सँस यना याम वापस आयठ छथि जहिया सँस असामान्य वृहास छथी वयिवा क वनिद्वेह कपान सग गाजासहिसग आइ-काठ्ठी अपन हुनगाय्य पन ससिकैठ वृहास अछीपनिवितन-पुनोहति, पान्ध आ पनजा सव के सव गाजा पुनूवा के गाज्य कान्य के प्राणि

उदासीनता पर आसूयप्रयक्ति छथी

गाणपुत्रक व्रिया - ' गाणा पुत्रा सदपिण स्वर्ग लोक समेत ब्रूषोक के शासन व्यवस्था मे संलग्न नहवाक कामे थाकी गेठ छथी, गार्हपथ हुनका कछि दैनिक वस्त्राभ धेवय पडैत छनी

ऋषि-मुनि के म अर्था - ' आर गाणाक मनमे व्रह्मयज्ञ आ धेनुपनक वीय द्वाद्व अर्था ।

कुठ पुनोहति ठेकनी सोयैत छथी - आर हमन समक गाणा के असंगुआ नीरस जीवन पेशान कस नहठ अर्था - मुदा गाणा व्रिवाह कएक गही कनरन छथी? ई वात गही वृहाइत छनी कनिको तथापि ओ सन सोयईत छथी जे गाणा पुत्रा के अम्न कछि दैनिक आनाम कनव नीक अर्था गाण काय सुयानू रूप संस यठि नहठ अर्था, तम्न गाणा कएक व्र्यथ मे अपन माथ प्पावथी।

मुदा पुना व्रग मात्र एकटा वात सोयैत अर्था - ' ठगैत अर्था जेगा गाणाक आँपि मे कुनो अठम्य सौन्दर्य ननी गेठ होय मुदा ओकना गेटव गाणाक सामर्थ्य सं वाहन अर्था; गार्हपथ हुनका ठेकनीकि गाणा दनि-नानी व्रिहाइनी मे जनी नहठ छथी

मुदा पूना गाण्य गाणा के ठेठ यतिगि अर्था, सव कयि अपन गाणाक दुःख मे दुःखी अर्था, सव योहैत अर्था जे अपन गाणा सुखी नहथी, गाण्य के सुख के आनंद ठेथी। तम्न गाणा सदपिण पुना के प्रसन्न नपवाक प्रयास कनैत छथी, तम्न पुना व्रग हुनक दुःख संस दुःखी कोना गही होथी।

आर कोको दैनिक वाद गाणा अपन सहिसन सुसोमति कएने छथी, कोनो आन समस्याक यगिना मे छी कही संस व्रिहक वात गुका ठेठनी दूड-मूड के सुखद मुस्कान हुनकन थाकठ येहना सजा देठकदेह मे ननी आठस्य आ गाण काय मे आयठ उदासीनता के ओ गुका ठेठथी यंदन मे कपू के अथकि अंश पडठ कही कस, एक दूड काठपनीकि काम वना।

मुदा तम्नगे वेसी व्रिह पीडाक कामे हुनका संस अगेको वेन कछि गठनी गस नहठ छठ, जकन कामे ओ कनवहु गुकौथी मुदा हुनक पीडा भोगक अशागती

ककरो सँस गुकाप्रै गही नहिसकै ।

"अहाँक भोग आ मसूनाषिक एप्पग असूवसूथ वुहाइग अछि नाजग, गँ व्पूथ कष्ट गहीकू, कर्गिके काँ वग ग्गमास कस छै जाओ" - पूयाग आमात्य कहैथी ।

ई सुगैग नाजा "वग ग्गमास छै जाइग छी" ई कहैग महै सँस वाहग गकिँगी गेवाह ।

हुगको भोगक शांति छै एकंग स्थान पर जेवाक आवश्यकता वुहैगि, गँ ओ जंगै घुमवाक छै गकिँगी गेवाह असूव पर सवाग सहग ग्गमास क्कैग एकंग स्थानक आगँद छेवप छै सहक वाहग सूथति गकिँटसूथ वग दसि वदि गेवाह वग मे एक स्थान पर वैसै ओ नाँ पत्त पर तूँकि सस गवगी सौदप्यमयी उत्रशी के यति वगावप गेवाह उत्रशी के यति वगेवा मे एके डूवाँ गेवाह जे अपगा के वसिगी गेवाह नाजा ।

वहुग काँक अथक पूयासक वाद ग्गप्य क्कैग उत्रशी नाँ पत्त पर मुस्कूना नहै छैवाह हुगक यति देपिपुनवा प्रेममग्न गस गेवाह प्रेमक पूयाव मे वही गव वहिँवप पुनवा हुगक एक-एक अंग कँ युम्वग छेवप गेवाह ओ अपग सुधि-वुधि वसिगी क्कैको काँ वग उत्रशी के अंग-पूतपंग के युम्वग छै नहैथी मुदा जप्पग हुगका वुहायप जे ई यति अछि! हुगक उत्रशी गही! हुगक उत्रशी कप्य छथिपप्य! जप्पग छै उदास ग' गेवाह! आँपि सँ गी वह्य गेवाह! ओ छै वगिह मे वयिँति गस गेवाह आ व्पथति ह्दय सँ उत्रशी कँ भोग मे समाम कस गेवाह ।

काजग सग के कानी अमावस्या के नागि! कानी साँगे मे छपटाँ! साँप सग धीने-धीने वगती पर सनकैग आवि नहै छै! पूयाि संग नहै पर मागव के मगेहग छैग अछि, मुदा पूयाि वहिँग मागव के ई नागि ओहिग छैग छै जेगा गागि उसप छै जीह छप छपान वढै आवि नहै होय । नागी स्वयं कज्जप

काठमा के घोर अंधकार नूपी वहैत यान मे व्रिगाह्युर्गा मे जागि रहै छथिह
 हुनक प्रियिणम यन्द्न हुनका सँस वच्छिनि अत्यंत दून मस गेठ छथनि, एहि
 ठेठ उथिति-अनुथिति, न्याय-अन्यायक हुनका कोनो ज्ञान नहि छथनि ओ
 कोना कस यज्ञ नप्पतिथि! आर हुनक प्रियि याग हुनका संग नहि छथनि
 अपन यागक नमस मे शून्य आकाश मे अपन दृष्टि दहे दिसि श्रुति रहै
 छथिह-अपन प्रियिणम के नहि पावा वेदना मस वदिग्य अशुभपात करैत अपन
 कानि आँयन ठहारावैत, वानावनास मे सहिन उतपन्न करैत, ओ समस्त
 जीवक हृदय मे मय पसारि रहै छथिह

पुनरा के स्थिति नजनी के स्थिति मस की कुनो अठग छै? ओहे अपन
 कोठि मे मसिकैत छै! अपन स्वनाम प्रयंक पन अथठेठ मग गेठ छन
 नहिजैत उवशी के यज्ञ मे गमिग्न छथाहओ भोग मे की सोयि रहै
 छथाह, कनिको ज्ञान नहि छै मथ ओ अपन पीडा कहितिथि केकरा सँस!
 हुनक दुःख, हृदयक पीडा नजनी के अनिक्ति देय्य आ जागय वाठा दोस
 कयि नहि अछा! नप्पन के वृहत् ! कयि नहि छै हुनक नकिट एहेन सुहृद
 व्यक्ता जगका सँस ओ प्रेम पिपासा सँस व्याकुल अपन हृदयक गप्प
 कस सकतिथि!

क्रमशः

अपन भंगव्ये दिति-निष्ठिजाडवदिहवाभाठिये म पगउ

रङ्गगद्द व्रथिस नाय-मोटनसास्कथि



गद्द व्रथिस नाय मोटनसास्कथि

हमन मतिन छैथ, गाओ छएण श्याम गकुना हम सग हुगका श्यामजी कहै छएण। छग व्रगसँ ग्यामहमा व्रग यनहम हुगू गोटा संगे पढवौ। श्यामजीक घन नहयिओ वाजान आ हमन घन सप्पुआ। मैटनकि उतीनास भेओ पछारन श्यामजी आगाँक पढास्क छेओ पटना यथी गेओ कएिक ते ओ अमीन वापक वेटा छैथ आ हम ननिमथी कौथेणमे गाओ ठपिबौ। यूकहि हमन पतिाजी एकटा छोट-छोण कसिाण छेओ तँए मधुवनी, दनगंगा, पटना वा आग कोनो सहनमे नाप्पि हमना पढाएवसँ अक्षम नहैथा। अक्षमक माने भेओ प्यन्या देवामे समन्थ गही हएवा ननिमथी कौथेण हमना घनसँ छअ-साग कथिभोटनक दूनीपन अछि तँए

साइकलिसँ वा पएगो घनोसँ वनग कऽ सकै छी।

इन्टरनेटक पछाशा स्यामजी इंजीनियरिंगि केन पढाइक छै वंगलैत यथा गेला। ओतएसँ सविधि इंजीनियरिंगिमे वीटेक कर्ता वहिन सनकाने गौकनी पकड़ला। पार कमा कऽ वुहू टाए ठगल देवपनि। हम गन्मि कौषिजसँ वीएस-सी पास कऽ सनकानी गौकनीक छै वऽ पुन्यास केवै मुदा जेना कहव छै जे ए युगमे गगनाग गेटव आसाग अछि मुदा सनकानी गौकनी गेटव मोस्कथि थाक-हिन। प्येती-गृहस्थी कऽ अपन गुणन कए ठगलै। माए-वावू सेहे दविगन गऽ गेथ नहैथ।

स्यामजीक पतिाजी सेहे पारवला नहथनि आ ओहे मागे स्यामोजी तेतेक पार कमेथ जे पटना सहनक पाठवीपुत्रा कावेनीमे गीग महला मकान वगैथैथ। मुदा हमनासँ सम्बन्ध वगथे छैग। जहिया कहियो गाम अवे छैथ तँ समाए पडा कऽ हमना वजा अऽ छैथ आ गेट कए छैथ। आव तँ सहजे मोवाइड गऽ गेथ हेग तँ ए श्रोग कर्ता कऽ वजा अऽ छैथ।

काठि स्यामजीक पोतीक जन्म दनि छैथेन। स्यामजीक पुतोहु गनहिये उय्य वदियाथयमे शिक्षिका छथनि आ वेटा अमति डेवढ कौषिज, घोघनहिसमे ऐक्यन। तँ ए ओ सग यानी स्यामजीक वेटा अमति अपन पत्नीक संग गामेमे नहै छैथ। वेटा-पुतोहु गामेमे छैथ तँ ए पोतीक जन्मदनि गामेमे मगौथपनि।

हमनो गौत-हकान देगे नहैथ। वेस नाम-हामसँ जन्म दनिक आयोजन छैथ। नहवो कएक ने कन। गगनाग स्यामजीकेँ कोन यणिक कमी देगे छैग। अपना वहिन सनकानक पथ गन्मास व्रिगामे इंजीनियर, जोडका वेटा आ जोडकी पुतोहु डॉक्टर, छोटका वेटा (जगिकन वेटीक जन्म दनि छैथे) अंगीभूत महावदियाथयक ऐक्यन आ छोटकी पुतोहु उय्य वदियाथयक शिक्षिका। पनविान वेस सुप्पी-सम्पन्न छैग। हँ तँ कहै छैथै स्यामजीक पोतीक जन्म दनि छथ।

साँहक छत्र वजे हम साइकलिसँ कान्यकनम स्थपन पहुँच्यौ। वीस-वाइसटा यनियकियो गाड़ी, साए-सवा-साए मोटनसाइकल आ दस-वाहटा स्कूटी

ठागठ न्हइ हमही एकटा एहेन नहि जे साइकलिसँ गेठ नहि। श्यामजी आ एक गोटा आओ, जनिका गहियिन्है छैथएन, गेटपन आगिथि ठिकैगकेँ स्वागान करौन न्हयनि। हम साइकलिसँ पड़ाकऽ गेट दसि वढौँ कि श्यामजीक गणौन हमनापन पड़थेन, ओ वजठा-

“भाइ, आवह! आवह!! तो घनवानी ऋज कऽ अप्पन एह हेंग”

ई कहैत ओ ऋजपाँजमे पकैऽ हमना गठासँ उगा छैथेथ। जेना ऋजवाग श्नी क्प्स सुदामाकेँ ठगौने न्हयनि। श्यामजीक संगेमे जे सज्जण छथ, ओ गियियासँ उपन यनि हमना देखैथ। कएिक तँ हमन अगे-वगे तेहने सन न्हय। मामूठी घोतीपन मामूठी कुना। पैनेमे पुनाग प्यिथहा ह्वार यपुपठ, सवानीक नाओपन पुनाग साइकलि। जप्पन कि श्यामजी आ हुनका संगे जे सज्जण न्हैथ, महा सूट-वूट पहिने न्हैथ। यभागीनी पुछू ते हमना ठाजो हुअए। श्यामजी अपना संगेकेँ हमन पनियस करवैत कहथपनि-

“सभैय, ई हमन भीत छैथ, ठगोटिया भीत गन्दणी। छडासँ मैट्कि यनि हमसंग संगे पढौँ।”

ठागठ हाथ हमना दसि तकैत श्यामजी पुनः वजठा-

“भाय, ई नवका सभैय भेठा, त्निठिक वावा हगिके वाठकसँ वीसाक विशिहक वाग पकका भेठ हेंग। दुइहा टाटमे रंजिगयिन छैथ आ त्निठिक वावा नाँयी वसिवदियाथमे पुनोखेसना। सग वाग-वयिान पठनेसँ भेठ तँए तोना गहिवुहठ छह”

हम वजठा-

“सएह तँ। गामसँ जँ वाग-वयिान भेठ न्हैत तँ हमना जून वुहठ न्हैत।”

श्यामजी वजठा-

“एहने कही नइ वुहठ नहिह”

पुछथैग-

“वीसा वुय्यीक एभए अइगठ तँ ऋज गेठ हएन कनि?”

श्यामजी कहलैग-

“हँ-हँ! वीसा श्वसूट कूवाससँ एभए पास केठक हेग। वश्राह पंयमीकेँ वश्राहक दगि नय अछा। गामेसँ वश्राह कनवा”

हमना मुहसँ वजा गेथ-

“वाह! अगिउत्तमा”

नृणिक वावू हमना पुछलैथ-

“अपनेकेँ वेटा गहि अछा की?”

हमना हुनकन वागक कोनो अन्थे नर भागथ। हम हुनका मुँह दसि वकन-वकन नाकए भावै।

श्यामजी वजथ-

“से वाग कएक पुछलैग, सभैया ओगा, मायकेँ वेटा गहि छैग दूटा वेटीए टा छैग”

नृणिक वावू वजथ-

“सुआश्रन अहाँक मीन सास्करिपन यढे छैथ। यौ हम अपना गाममे देखै छी, जेकरना ने वसऽ छेथ घनाडी छै आ ने प्यार छेथ घनमे एक मासक वृत्ताग छै, सेहे अपना वेटाक वश्राहमे वेटीवठासँ दहेजमे मोटनसास्करि छै। वेटा ने दठिथी, पंजाव, कठकाना प्यटै छै आ वाप मोटनसास्करिपन यढकिऽ टीनवी करै छश”
हम सोयए भावै, हमनो गाममे तँ वेटावथा सग सएह करैए मुदा वजथै कछि गहि, युपे नहथै।

अपन मंगल्ये दगिनीठिसनाउडवदिहावामाठियोम पन पडाउ।

रुद्रजगदीश प्रसाद मास्डै- सुयतिा (यागावाहकि उपग्यास)



जगदीश प्रसाद मास्डै

सुयतिा (यागावाहकि उपग्यास)

'सुयतिा' यागावाहकि रूपेँ छपव प्रानमम मेठ 'मथिथिा द्नासग' मे, जे पहिने प्रानिमे छपव वन्द मेठ आ माग्न पीडीएशु मे ई-प्रकाशति हुअप्र ठागठ आ छेन सेहे वन्द गः गेठ आ गेँ 'सुयतिा' क सेहे छपव ई-प्रकाशति हएव वन्द गः गेठ अही आठोकमे ई उपग्यास यागावाहकि रूपेँ ई-प्रकाशति कएठ जा रहठ अछा-सम्पादक

छअम पडाव

हमिमठाठ ऐडमसँ एठापन यागानमसक व्रियाज पहिना आगू-मुहँ संयतिा हुअ ठाठैग पहिना सुवासिगीक सेहे मेठैग। दुगूक व्रियाज संयतिा होइक दू गंगक कानसो छेठैग। ओगा, यागानमसक दृष्टिकोसमे दूनी सेहे छेठैगहे मुदा अप्पन से गही सुवासिगी पहिना अपन पत्रियाज, देप्पि रहठ छेठी पहिना हमिमठाठक सेहे देप्पि रहठ छेठी। दूगू पत्रियाजक सग व्रिकानकेँ हटवैग

सुवासिनी हस्मिताएक सम्पन्न परिवार देष्पिष्ठशावगोन्मुष्प सेहे मेथी। हेवो केना ने करिण्थ! पारिब्रह्मिण हस्मिताएक माएकेँ सेहे देष्पिष्ठी आ अपन पतिा ब्रह्मिण माएकेँ सेहे देष्पिष्ठिहए छेथी। तैसंग वाठ-वय्यासँ एऽ कऽ वुढ यकि जे परिवारक शाण्णप्रियता होऽए तेकनो हस्मिताएक परिवारमे देष्पिष्ठि युक्तए छेथी।

इन्हन, नाथानमासकेँ ब्रियानैक अगेको कानाममे एकटा कानाम ईहे छैथेन जे अपनो परिवारक शहिस सोहहेमे अर्छा आ हस्मिताएक सेहे अर्छाए, मुदा शहिसक कर्म एहेन सन जे जेना दुगू परिवार दू युवसँ प्राप्त। कनैए हुअए प्राप्त। जे जेएए कनैए हुअए मुदा हस्मिताएक परिवार देष्पिष्ठि नाथानमासक मन अपन परिवारक प्रता हुहुआ जून नहए छैथेन। हुहुएवो केना ने करिण्थ! जैशम हस्मिताए दुगू पनागी अपनो आ अपन परिवारो ए जेना कमान नहै छैथ नहिन। वय्यासँ वुढ यकि सेहे तीन-कमान नेगे तैयान नहति छग्हि।

शुवनेश्वर (उडसि) एठ नाथानमासकेँ छह मास वीण युक्त छैथेन। वन्प्यक आया। काण कनैक अपन जे कए छैन, ओ धीने-धीने आव एहेन वगिठैण अर्छा जे थानक महानपन यढा जेना मागसोवनसँ गंगासागत तक प्राप्त। कनए ठागठ होऽना मनमे जे होऽन हेना मुदा छत्र मासक वीय कोनो शकिश कम्हिसँ, कम्हिसँ मागे मेठ जे ने जगमानसे दसिसँ आ ने प्रशासने दसिसँ, एकोदगि मेठेन। तँए मनमे ईहे ब्रियान घन केनहै छैन जे अपन जगिगीक पहिठि वहाथी, मागे पहिठि कदम छी जेकन अपन गसियति सीमा छऽ ओऽ सीमाक उठ्ठघन नेगे ने कयिँ अपन अवर्था (सीमा) पुनौनहविनि। एन्हनसँ ओन्हन मागे हेन-सुन होऽ छैथ, मुदा नऽमे अपनकेँ नहै देष्पिष्ठि नाथानमासक मनक वठमे दगि-दगि वढोतनी नेगे मनोवठ सेहे सकताए ठाठे छग्हि।

कान्थाएधमे तँ दुगू गोने, मागे नाथानमासो आ हस्मिताए वेसीकठ संगे वीणवो छैथ, नऽमे कनसिक जे दूनी अर्छा ओऽमे प्यियाव मेठ। छत्र मासक वीय परिवारक संगे नाथानमासो दू वेन आनो हस्मिताए एडम पुहुँय युक्तए छेथ। नऽमे एक दगि संजोग वगठ आ महिठि-जगतक ब्रियान सवहक वीय उर्डी

गोठा ढरसँ दुगू गोतेक पत्नीमे मागे लूकूमिमी आ सुवासिगीक वीथ वण्डा-
वण्डी सुनू गज गोठा हम्भताएक पत्नी सुवासिगीकेँ कहि देने नहैन- 'दीदी,
अपन पतिव्रतक वात णँ कयिी श्मान नप्पि वापैथ णँ ओ सभसँ पवत्रिन् गंगा
असगाव कनव मेठा'

सुवासिगी अपने व्रियामे ओहना गेठ छेथी। ओहना ई गेठ छेथी जे जमीनपनक
गंगा आ आय्यात्मक गंगाक मागे वुहवे ने कनै छेथी। णँ गंगा केना पवत्रिन्
नहैए आ केना ओइमे पुनदूषाम वडैए से वुहयि ने पेव नहए छेथी।

ओगा, नाथानमस सेहे मने-मन ओहनाएठे छथा। ओहनाएठ ई छथा जे
लूकूमिमी (हम्भताएक पत्नी) जे वण्ठी जे 'श्मान नप्पि वण्णहिन', एकन
मागे की मेठ? श्मानकेँ नप्पि जण्ण वण्ण ओ श्मानक मेठ आका श्मान
गर मेठ? एक मनमे हेना जे श्मान सहति एकटा व्रिया मेठ मुदा श्मान नप्पि
वाणव ई की मेठ? श्वेन ठाठे हेना जे श्मानकेँ मूनापिप आगूमे नप्पि वाणवा
दुगूमे सँ कोनो माँजोपन ने यढैवना मुदा छथा णँ सवहक वीथमे। ढरसँ आगूक
कोनो याता नहदिप्यि समगम हेइत वण्ठा-

"मनुक्यसँ ठऽ कऽ समाजो आ देशो-दुनियामे जोते सजगता औत ओते ओ आगू
वढवे कना।"

ओगा, वपैक कनमे नाथानमस वाणगोठा मुदा जण्ण अपन वाणवपन अपने
व्रिया कनए ठाठा जण्ण मनमे उकडू हुअ ठाठैना उकडू ई हुअ ठाठैन जे
नीक काण केगहिन जहनि कनैकाठ सजग नहै छैथ नहनि अथवा काण
केगहिन सेहे सजग गर नहै छैथ सेहे केना गर कहए जाए? मुदा संयोग नीक
नहैवैन जे ने कयिी हम्भताएक पतिव्रत दिसिसँ वाणठ आ ने सुवासिगीए कछि
वण्ठी। युपा-युपी देप्यि नाथानमस सुगदनाकेँ कहएपनि-

"यायी, गोटे-गोटे दनि अपनो डेनापन आउ पत्नियि असगने नहै छैथ आ अहूँ
नयिने नहै छी। डेनो कोनो दून नहयिँ अछी। पनो आवयि सकै छी। तहूमे अहाँ
ऐडम जोते सजग छी तेते ओ नहयिँ छैथ, मागे सुवासिगी, णँ हुगका अवे-
जाइमे कनी ग्यौन ठावे कनौना तहूमे सकानक जमिनामे सेहे मेठौ, णँ

ओते तँ वनए पडता"

नाथानामसक वरियानमे पुनवाहति होश सुमह्ना वज्जि-

"वौआ, हम तँ पहिना हमिनताएकेँ वेटा वुहै छी पहिना अहूँकेँ वुहै छी। किए तँ हम कछि मेथौ तैयो तँ पाँयटा पोता-पोतीक दाई मेवे केवौ कनि। दुगू पनागी हमिनताए सग वेटा-पुनोहु सेहे अछएि आ अहाँ अप्पन गव-गौतान छी, गज्जान एकेटा सगताग देखैग अछि आनो दैथा"

सुमह्नाक पेटक वाग नाथानामस आँका रहए छथ। आँका ई रहए छथ जे तँ कोनो नरहक मथिगता हुनका मगमे रहतिग तँ दुगयिसँ गनास मेथ जकाँ दुगयिसँ या तँ गनयिवैग वजातिथ वा दुगयिसँ छोड़ैग वजातिथ मुदा से तँ गहि छैग। हमनो पनवान गीक जकाँ वढह से तँ मगमे छैगहे।

पहिना छोटो-छीन पागकि पुनवाहकेँ कयिो नसता वग पुनवाहति कतैग याग वगवैए पहिना नाथानामस वज्जि-

"यायी, अपने कछि मेथएि तैयो एक जनिगी तँ टपठे मेथएि, जनिगी याहे जेहेग रहए हुअए मुदा जावे ओइमे जीवगंशु गहि अछिगावे ओ जीवति केग। अछि। याहे जीवगक जे पहू जेहेग रहए हुअए मुदा गव पक्ष तँ ओहेग अछएि जे गव-गुवगमे अप्पनो ओहेग अछि जेहेग हेवा याहि।"

नाथानामसक वरियानकेँ कोन रूपेँ सुमह्ना वुहै छी से तँ ओ जाबैथ मुदा मुहसँ गकिथैग-

"वय्या, अहूगम (मागे अपग एगम) किकोको काज कतै छी, गनिदिगि वय्या सवहक संगे हेनाएठ रहि छी। टहैथै-वुथैक अपनो मग होशए काएहि आएवा।"

पहिना सुमह्ना दोसरा दगिक समप्र वगौथेग पहिना वेनू पहन मागे तीग वज्जि पछाश एकेटा पोता, जे साग वन्यक अछि आ एकेटा पोती जे गअ वन्यक अछि, दुगूक संगे पए-पए सुमह्ना नाथानामसक डेना एग पहुँय नसतापन गढ मेथी। मोवाशथीक तँ पुग आवयि जेथ अछि। जप्पने सुमह्ना घनसँ गकिथी, नूकभामिो हमिनताएकेँ सूयति कऽ देखनिग। हमिनताए

गायानमासकें कहैकैग। गायानमास सुवासिगीकें सुयति कऽ देउपनि। जइसँ गायानमासक सनकानी गविसमे पुनवेश करैमे सुमद्दाकें कछु ने वाया भैषैग। ओगा, गायानमासक मगमे उडि गेठैग जे गाय दुगियाँ तँ दुगियाँ छी। कयिओ याउनेकें गाने टा वगा प्याइए कयिओ नोटयिओ वगा गइ प्याइए सेहे केगा गइ कहैए जाए। गछै ठोक कहए जे गहुमक नोटयिओ टा हेइ छै, मुदा ठोक गान वगा गइ प्याइए सेहे केगा गइ कहैए जाए। तँए आँश्वसिक काज गपिटा सवेन-सकाठ गकैए जाएवा थागा गइ ने छए जे यौविसो घन्टा यए।

आँश्वसिक काजकें गायानमास हँइ-हँइ गपिटावए एगए। तही वीय हम्भानाए आवि कहैकैग-

"सग, छुट्टीक समय सेहे एगयिअये गेए अछा, तइ वीय कनी पहिने छोडि दइतौ तँ अपन काजक गान दोसनकें सुमदा यए जइतौ।"

ओगा, गायानमासक मगमे ईहे नहैग जे अपन कान्पाठयक तँ अपने माठक छी, मागे वनि केकनो कहने जा सकै छी। मुदा हम्भानाए तँ से गहँ अछा। गायानमास वजए-

"हम्भान! छुट्टीक समय तँ प्यटयिअये सग अछा दुगू गोने संगे यएवा।"

गायानमासक वाग सुनि हम्भानाएक मग पूनास सगनुष्ट भेए। पूनास सगनुष्टक मागे भेए जे गायानमास असगने जेवाक छुट्टी दऽ दितिथि तँ ओ भेए सगनुष्ट, मुदा जप्यग दुगू प्यिओसँ भेए, मागे आँश्वसिओ आ उनेक प्यिओसँ भेए जप्यग पूनास सगनुष्ट भेए।

यानि विपैमे मान् आया घन्टा शेष छए कहि हम्भानाए आँश्वसिमे गाए एग। गायानमासक संग गकैए गेए।

दुगू गोने मागे गायानमास आ हम्भानाएकें पहुँचैसँ पहिने सुवासिगी सुमद्दाकें कोठनीमे वैसा जहनि गप-सप कए एग। तहनि हम्भानाएक गअ वन्यक वेटी- सुतीकषमाक संग सुयति सेहे गप-सप कए एग। सुयति अढाइ वन्यसँ टपि पौगे तीग वन्य कनीवक गाये गेए अछा ओगा, पवित्रक पुनगाव सेहे उमनपन पड़ति अछा। उमनक मागे सनिश्च दनि-महनिटा सँ गहँ

एकदम वैसठ छी तप्यन ओहने गप-सपुप ने समगम कएन जाइसँ यातू गोते जाउठ होइ आँसुसिक युन्य कएव तँ अनेते महीसिक आगू वीस वजाएव हएन। हमिमतोएक व्रियाकँ अप्पन मोठे कोन छै। पतिाक मृत्युक अगुसंसापन सुशीतेमे सनकानी गोकनी परन जाइ, ओ केना पुहन जे गोकनी पाछू दौड़गहिनकँ व्रियाक पागि औन उमेरो पागमि यथि जाइ छै। मुदा गोकनी मगमे हथिहोना प्येठि नहि जाइए। असठ जीवग, मागे जाइ जीवगसँ कछि सीप्य भेटैए ओ तँ हमिमतोएक माएमे छै, दोसरा अप्पन सगसँ उमरदानो छथिए तँए गोक हएन जे हुनकेसँ जीवगक वाग कएि ने सगकपि सुनी। ओहना एकटा वीगत जीवगक जीवग व्रानाग सेहे हेवे कएन, तप्यन कहि हमना सवहक, मागे वाँकी सग कयिक जीवग अप्पन गवसि दिसि डेा उडेवे केठक अछि।

ओना, नाथानमासक मगमे दोसरो वाग घुनयिास नहै, मुदा ओहन पनसिथि गहि दैप्यापेव नहै छै। ओ पनसिथि तँ समाजक वीय होइए जे एक दिसि जाहनि समाजमे नूपाति छैथ तँ दोसरा नू-वहिना नहनि एक दिसि महाजन छैथ तँ दोसरा दिसि नगिया सेहे छथिए। एक दिसि वद्विवाजन छैथ तँ दोसरा दिसि अमनुष्य सेहे छथिए। मुदा ऐगम तँ समाज-पनविान गौस अछि। मात्र दू पनविानक छी। तहूमे दुनू पनविानक आमदगीक सनोत सेहे एक्के जाइसँ अछि, गँठे ओ कम-वेसी कएि ने हुअए। तएवे गहि, जाहनि अपने दनि उगी आँसुसिकँ सुमना अपन दनियन्यामे जाि जाइ छी नहनि ने हमिमतोएक जाि जाइ हएन। जाइ वेवस्थाक वीय समाजक वोषी-वासा अछि तइसँ तँ दुनू गोतेक पनविान शुककहाड़ मरये गेठ अछि। ओहि शुककहाड़मे ने दुनू गोतेक पनविान गढ गऽ नहै अछि।

नाथानमासक मग मागा गिठेन जे एक गत्र सीमाक सुनआन केवे वनि, मागे भेठ जे याहे रूप जे हुअए, मुदा सग कपि मगे-मग अपन जीवगक सीमा तँ वगेवे कएि छैथ, गँठे ओ जे हुअए, जेते हुअए, गइ हुअए कहुअए, ई दीगन भेठ। नाथानमास वजाए-

"यायी, अप्पन समाजक वीय थोड़े छी जे दस ांगक वाग-व्रियान हएना अप्पन तँ मात्र दू परव्रियानक ठेक वैसथ छी, तँए नीक हएना जे अपने दुनू परव्रियानक गप-सपू कएि गे कनी।"

नाथानमसक वाग सुगि सुगद्ना यागक जाँ व्रियोन होश वज्जि-

"वाउ नाथा, कवीनोवावा कहने छैथ जे ' कुठवामे कोर-कोर जागी' अहाँ सग सुपात्र पुन्यक जन्मसँ परव्रियाने गहि, समाजो वैतनी पाव होश।"

जहियसँ परव्रियानक गान वेटा-पुनोहुपन सुगद्ना सौपा देवि जहियसँ अपन समय शक्ति-गजग दसि ठावए ठावि, जइसँ गप-सपू कनैक ढंग वदथिये जेठ छैथैना सुगद्नाक व्रियानक गनिमठानसँ नाथानमस व्रियोन गऽ जेठ। जइसँ थडहा व्रियान जाँ व्रियान मनमे जागि गेथैना वज्जि-

"यायी, जहियसँ अपन जनिगी भोग अछि जहियसँ कनी कहियौ।"

नाथानमसक वाग सुगि सुगद्नाक मन पसीज गेथैना वज्जि-

"वाउ, वय्येमे व्रिवाह भेठ।"

' वय्येमे व्रिवाह' सुगति नाथानमस वय्येमे वज्जि-

"केतो वन्यक अवस्थामे?"

सुगद्ना-

"साग वन्यक अवस्थामे, जप्पन माएकेँ जायैग तोड़िकऽ आगि दऽ छेथिये जइसँ गानस होर छै।"

ओगा, नाथानमसक मन परव्रियानक उपादति पूंजी दसि वढए ठावि, मुदा तेकना समेटि वज्जि-

" वय्येमे, माता-पिता व्रिवाह कएि केथैना गावे तँ आगगम माने सासुन नहै-जोकन गहि भेठ हएव?"

नाथानमसक जाजिआसाकेँ देप्पि सुगद्ना ओहनि वरिध्वठ गऽ जेठि जहनि कयि शहिसक पनगामे अपन नाम सटठ देप्पि होश वज्जि-

"वाउ, हमना माए-वाप सग-सग अथकिंश पनविान समाजमे छथे आ अछथिौ, जकरना दैवी डांगसँ वेसी मानवीय डांगक योट पड़ैत रहै, तौगम जगिगीक कोनो ठेकाग छथ, मुदा वाए-वय्याकें येष्टजान वनेछा पछानयि ने छोड़व नीक हएना वेटा-वेटीक व्रिाह-दाग सेहे ओहि येष्टजान वनवैक सीमाक भीान ने अवेए"

शव्दक उगट-श्वेत आक व्रियानक उगट-श्वेत भेषेन से तँ नाथानमास वुहना मुदा एतवे वज्ज-

"यायी, कनी दोहना कऽ कहयिौ"

सुमहना वज्ज-

"वाउ, वाए-वय्याकें व्रिाह-दाग कनव माना-पतिाक कनयिभाग कनम छी, एकरा गमिाहव सग माना-पतिा अपन यनम वुहै छैथ, जगिगीक अगस्यतिा टैप्या जण्टी-सँ-जण्टी ऐ काजसँ गव्रिा अणगकें कनए याहै छैथ तँए वाए-व्रिाह होश आवा नहए अछी"

सुमहनाक वाग सुगि नाथानमासक मन आनो आगू वढा गेथेन, मुदा से अपना मुहँ गहि वाजि सुमहनाकें ऐतहिसकि पौतुष भागि, हुनके मुहसँ वज्जक प्यियासँ वज्ज-

"आनो कछि मगमे, भागे माना-पतिाक मगमे छेथेन?"

ओगा, सुमहना सेहे अपन जीवगक पाछुए उठैट टैप्या नहए छेथी, मुदा गमहन वाटक दूनी रहने नीक जकाँ गहि टैप्या पड़ै छेथेन, मुदा नाथानमासक वाग सुगति जेगा थक-टे भोग पड़थेन नहनि थक-थकाश वज्ज-

"वाउ, व्रियान तँ अनेको मगमे छेथेन, अनेको कतिो एतेक तँ मगमे छेथेनहे जे अपन सप्या-सगनाग अणगसँ सग नहँ नीक नऽ अपन जगिगी टैप्या, मुदा से तँ मगक व्रियान मगमे सपनीती वनि नहथेन"

वज्ज-वज्ज सुमहना जेगा जीवगक वोगमे भोतयिए छथी। मुदा छथे येत

जेथी जे अपन जगिगीक वाग ने वाजव, आनक तँ नीको अछि, अथथे अछि ओइपन तँ सामूहिक ढंगसँ व्रियान हएन। ऐडम तँ मान्नु दुइये पनव्रानक ठोक छी, तँए पनव्रानक जे उपयोगी व्रियान अछि, तेजवे वाजव ने वाजवि हएन। व्रियानक यनाजपन सुगद्ना पहुँचते वजथी-

"वाउ, व्रिवाह सनिश्च सुत्नी-पुनुषक जीवनेक वाग्हटा गर छी, सामाजिक वाग्ह सेहे छी। ओ छी जे व्रिवाहक पछाशा जँ कोनो पुनुष कोनो औनकें कुट्टसँ देयन वा कोनो औनक पन-पुनुषक संग दुनवेवहान करन तँ ओ दुनू समाजक वीय अग्यायी भेथ।"

सुगद्नाक वाग सुगि नायानमसक मन वौथए ठाँठेन। मुदा वौथपनकें आग्न करैत, व्रियानकें दोसन दसि मोडैत वजथी-

"यायी, अपन जे अपन नकक जीवन छठ भागे अपन हाथ-पैरक वठे जे जीवै छेथी, तैडम गकता-गजगक पाछू नभजिथी, आ जेना माना-पतिाक संग वेटा-पुनोहुक वेवहान देयै छी, नयन गकता-गजग नहै पौन?"

जहनि अदम साहस कऽ कयि कोनो काजमे कुट्टए नहनि असीम वसिवासक संग सुगद्ना वजथी-

"वाउ, जहनि सग वेटा-वेटी माइयो-वापक सगनाग छी नहनि माइयो-वाप सवहक माए-वाप छथिए। मुदा जगिगीक जे यान वहैए नइमे अनेको यान पुनवाहति गऽ नहठ अछि तँए सगन जकाँ अनेके कएि समुद्न उपछै पाछू ठागव, नइसँ नीक ने अपन जीवनेक समुद्नकें उपछव हएन।"

सुगद्नाक व्रियान सुगि नायानमसक व्रियान जेना आनो सव्रयच्छ पागसँ युआ जेथेन। युआइते वजथी-

"यायी, दुनू पनानी हनिमनजपन केते वसिवास करै छी?"

सुगद्ना वजथी- "जहनि सोइहेअन अपन वुहहि हन केथिए, नहनि ने ओहे करन। तैवीय अगद्देशा अछि जे पनव्रिसक अगुकूठ करन करि नहनि, मुदा ई ननिमन करैए जीवनेक वेवहानिके पक्षपन। से दुनू पनानी हनिमनजपने छइ।"

अग्देशा तँ हजानो अर्छा, मुदा ईहे तँ अर्छए जे सभ माता-पति। वेटे-पुनोहुक
आशापन जीवै छैथ सेहे वाग गहरिये अर्छा, जेठारतो-दुपारन मनासक अगुसनास
सेहे कनति छैथा"

नाथानमास वज्ज-
-

"हमिभन, वृहण समय ठऽ गेथ, अहनि आवा-जाहि होश नहए तँ जीवणक
अगेको गुण्थी अपगे-आप सुठहैन जाएना"

अपुन मगक वेथा व्यक्त कएत हमिभनज्ज वज्ज-
-

"भाय सारैव, की कहव! केनाएनि पत्नीक अगुयति काज देय्पि मग नामसे
जएत नहए मुदा मास्यक मुहसँ पत्नीक पुनसंसा सुगि अपन नामसकेँ भेटवए
पडैए भेटवो केना ने कनव, जे माए पनविनक श्लेषु होशक गाते सभपन
समान गजैत नय्पतिथ से तँ अपगे एकजगू ठऽ जाइ छैथ, नय्पन हमन वाग
के सुगत आ केकना कह्यै।"

हमिभनज्जक व्रियान सुगि नाथानमासक मनमे भेटैत जे मनसिक हमिभनज्ज
पुनष-महोषिक व्रियानक समनूपाने मँसयिा नहए अर्छा तँए कएि ने ओह
मासकेँ नीक सुन-नागमे व्यक्त कएए जाए। वहिसिकऽ नाथानमास वज्ज-
-

"हमिभन, एहनो तँ समग्रव अर्छए जे यायीकेँ तोहए पत्नी अपगे माए जकाँ
सेवा कएत होग, जइसँ तोहए व्रियानक काज पछुआ जाइत हुअ, जेकन नामस
उँत हुअ?"

एक तँ ओहना हमिभनज्ज नाथानमासकेँ अपन ओहए जेठ भाय वुहै छैत जे पति।
सदऽ होइ छैथ, मागति छैत, तौपन वाठि जकाँ (नामायसकि वाठि जकाँ)
अपन सदियागतक संग अपन दनियन्योक समसिनास कएत वाज्ज हेथ। जइसँ
गनुतान जकाँ सेहे मस्ये गेथ छथ, मुदा कयहयिा हवा तँ ज्जठे छइ, तँए
अपन नामसकेँ एठपैथी दवार जकाँ दवैत, जनिगीक समहौता कएत
हमिभनज्ज वज्ज-
-

"भाय सारैव, कोनो क'आश्ये भेठ हेन आक'अदौसँ होश आवा नहए अर्छा जे

पन्नालमे कनी-मनी हक्कम-हीक होशे अछा ओ तँ महिनाक शोनायो-
अहनायो पपक दुआये होशे, मुदा सेन सन एककेशम वैस पेवो-पीवो कने
छथि आ ह्यो-गव तँ कनी आवा नहथ छैथ पन्नाल छी, कुम्हानक आवा
जकाँ माकि दसटा वनाग एककेशम अछा, कनी-मनी ढगमगेवे कना। मुदा
एकोटा सुटए गहसे अगो-अग वनकुम्हान कनी अछा।"

हमिनातक वाग सुना नायाममम मने-सम युपे हएव नीक वुहएग
वयानकेँ आगू वढवैग नायाममम वजथ-

"हमिना, पन्नालक वीय लोक तेग सटथ नहै, मागे काजसँ सटथ नहै,
जे कषम-पक महान्मयकेँ तँ जगैए मुदा कषम-पक उपजोगोक तँ अपन
महान्मय छरहे। हमिना, अहना सन कयो एककेशम वैस गप-सप कने
पन्नालकेँ आगू मुहें वढवैग यथवा अपन समयो वेसी मऽ गेथ, जसँ
पन्नालक काजो सन एकाएकी वढवे कना।"

सुनएक वयान नायामममक मनेकेँ तेग छी-वीछी कऽ देथकेँ जे अपने
आपने वेसमहान हुअ जगथ। मोन पडथैग अपन सासु आ सासुक पन्नाल।
ओर पन्नालकेँ गढ कनेमे अपनो योगदान अछा सुवासिनी तँ सहजे ओहि
पन्नालक छैथ, तँए कए ने दुनू पानी ओकनी समीक्षा कश्ये छी।
हमिनातक पन्नालकेँ अडियाशन सुवासिनी धुमथि कि नायाममम टोकैग
वजथ-

"कने सुना पहिने मसुगाग याह पश्चाउ, पश्चात अपन पन्नालक सेहे वयान
कनव अछा ऐशम तँ दुस्रे गोने छी, तँए अपने दुनू गोने ने एककेशम वैस
पन्नालक आगू-पाछुक वयान कनव।"

जहना नाजक मंत्री सदकिथ नाजकेँ अपना अगुकूथ नपए याहै छैथ नहना
सुवासिनी वजथ- "अपनो मने उठैग नहै छथ जे जपन गैहने वसैग गेथ
नपन पन्नालजग केए छैथ से कनी डकिया छी।"

याह वगए सुवासिनी मनेसाधन गेथि कि वयियेमे सुयाना नायाममम जग

पूँछथी सुयतिकेँ देप्पि नाथानमस मने-मन व्रियान करए ठाठा जे अपन जइ नूपे वेटीक सेवो कऽ रहए छी आ मनमे अनाथना सेहे कजै छी जे अपनासँ वीस पनियानो आ वीस गुत्तो-यन्म होइ, मुदा की हएन से केना कहए जाए? तहूमे समाजक जे पनविश वनगिठ अछतिरमे तँ वेटी जातपारवठा-हाथक प्येवैना वनगिठ अछति जोकना छै, ओ गाड़ानो-पुछ्केँ अकास यढा दइए आ जोकना नइ छै ओ साक्षात् सनस्रनयिकेँ नावसक प्वासिगी सेहे वनाइये रहए अछति तहि वीय सुवासिगी याह नेगे पूँछथी।

सुवासिगीक हाथमे याहक कप देप्पि नाथानमसक मन, जहिना ठंकासँ कुदा हनुमान सातो समुद्र टप गिठ तहिना मुवनेस्रनक नोकनीसँ अपन वदियानथी जीवनेमे पूँछथी जेवना मोग पड़ैत गोवर्गिद वावूक व्रियानोतोपक बाषाम, जे पढ़वैक कर्मक छथि सगिमाक नीठ जकाँ नाथानमसक मनमे जनिगीक नीठ कर्मभानुसान यए ठाठैना जइसँ याह केना सई जेठैत से वुहवे ने केवाह।

तैवीय सुवासिगी याह पीव सुयतिकेँ आगूमे वैसवैत अपनो गप-सप कजैक मन वनौठैना ओना, नाथानमसक मनमे अपन पैछठा जनिगीक सभ प्पेठ दौड़-धुप कइये रहए छैठैना जनिगीक उत्कृष्ट काज जहिना जनिगीक उत्कृष्ट प्पेठ कहए जाइए तहिना आवस्यकसँ आवस्यक काजकेँ सेहे ठोक प्येवैना वना शेकवे कजैए। अपना मनमे मसूना नाथानमसकेँ देप्पि सुवासिगी वजथि-

"एक तँ गनठ-गुथठ दू पनागी छी, वय्याक कोन हिसाव, तहूमे जाँ अपने-अपने मने मगन रहव तप्यन एक-दोसनक वीयक व्रियान व्रियानस केना करत?"

सुवासिगीक वात सुनि नाथानमस अगयोकेमे सुनठ वात जकाँ यौकैत वजथि-
"मन कनी नीना जकाँ जेठ छथि ओना, याहे पीवे केवै मुदा नीक जकाँ ठक्क गहिपुजथि आव नीक नऽ जेवै।"

सुवासिगी-

"की गप-सप कजैक वात कहने छैवै?"

सुवासिनीक मुहसँ 'की गप-सप कनैक वाग' सुगि गायानमसक मन सुवासिनीक ओर घड़ीक सुई देपए ठगैव जइ घड़ीमे सुवासिनी पति ्रवहिन मेठ छैथी। की मन मनिकानिकऽ ओर प्याथकिँ सुवासिनी मनसिकै छैथी? एगाम आवि गायानमसक व्रियानऽमकठैना व्रियानमे मोड़ आगैव गायानमस वजअ-
 "कही मातागामकेँ श्वेग एगा कुसठ-छेम पुछयौग तँ। तइमे हमन गाम गहँ कहवैग। तँ पुछैथ तँ कहवैग जे ओ अप्पन दोसरा काजमे ठगठ छैथ। तँ ई कहवैग जे ओ नइ छैथ आ तइ वीयमे तँ उकासी-तुकासी हए तँ ओ पुछवे कर्गी।"
 गायानमसक वाग सुवासिनी वुहँ गिथी। सए कनैक व्रियानसँ श्वेग एगा माएकेँ पुछथी-

"माए, हम सुवासिनी वजै छी।"

माए-

"वुय्यी सुवासिनी?"

सुवासिनी-

"माए, कनै सग मने कएि वजै छै?"

माए-

"की कहवौ वुय्यी! दैवक जाँग तेहेग ठगठ जे व्रधिया मेठौ। घन मन नहगहिनसिँ वाहन मन व्रौएगहिन। मुदा समाजो आ वेटोक जे छछि-वछि देपै छी, तइसँ वुहँ पड़ैए जे जावे जीव, तावे अहनिग पहड़ान पड़ठ दवाइते नहव।"

ओगा, सुवासिनीसँ कम पढ़ठ-ठपिठ माए छथनि, मुदा जनिगीक दौड़मे एतेक समह तँ वगयिँ गेठैव जे जनिगीक नीत-नीठ वुहए ठगठ। जे सुवासिनीमे अप्पन गहँ आएठ छैव। मुदा गायानमस सासुक सग वेथा-कथा नीक जकाँ वुहँ नहठ छठ। तँए वजैसँ पनहेज सेहे केगहँ छठ।

(जानी---)

अपन भंग्ने दृगि-गि-सग-ड-द्वि-ह-ग-भा-धिये-म-प-प-डा-उ-

२१०७७६१५ प-सा-द-मा-ड-य-नी-प-धि- (धु-क-था)



जगदीश प्रसाद मासुड

योगी पठिथी

वन्धु, अहाँ पूछव जे एतेटा दुनयिंमे, जसमे आकाश वनि गापक अछि आ धनीक गाप गऽ गेथ अछि, तैसन अहाँकेँ कथाक गाओ दिसन गहि गेटथ जे 'योगी पठिथी' कथा एहि छी? की कहव, दुनयिंमे केतो समुद्र अछि आ केतो सागनमहासागन-, गँ महासमुद्र गऽ हुअए जे अहँ जगै छी आ अपनो गँ जगति छी। तहिना देश केतो अछि आ देशक जगसंय्या केतो अछि, सेहो सग जगति छी, मुदा वोगक गाछ जकाँ गहि अछि सेहो केना गहि कहथ जाएत। जस गाछक गनिती, सुथसुथक रूपमे अछि-, मागे जे पह्यागमे आवागैथ अछि, तेकरा जगव ने असाग गऽ गेथ, मुदा जे अगडिया अछि, जेकर पह्याग गऽ गेथ छै, तेकर गनिती केना हएत? एकर मागे ई गऽ वुहव जे धनीपन साग अरवक उगमग मनुक्य अछि से गँ अछि पह्यागथ, मुदा जेकर गनिती गऽ गेथ अछि वा जेकर पह्याग गऽ वगथ छै, से केतेक अछि, से केना वुहव? प्याए जे अछि से अछि, सग अप्पन भाग अछि गेगे जग्न कऽ तकदीन उऽ-तकदीने जीवग वताएत-मागे अपग।

ओना, अपनो केतो दिससँ गश्चि छेथै जे एकटा कथा एहिवा मुदा कथाक शीर्षक की नायव तसने तीन भास समय वति गेथ। ने कथाक शीर्षक गेथ आ ने कथामे हाथ उगेथै। संयोग वगथ जे गनिनुका याह पीव गनि दिक समय गँ वति छेथै मुदा सग्यकिथ क याह ठे जे दूय नयने नहि ओ पठिथी आवाकऽ

पीव छेठका साँहमे जप्पन याहक नृषासा जागठ आ याह वनवैक व्रियान मेठ आ कपसँ ठऽ कऽ केतवी नक थोर कऽ आगि युष्हि ठा जाप्पि, याह वनवए वैसठौ आ दूधपन गजौन देठए आका टिप्पठए जे दूध अछए गही दूध मेठ की, हियासए ठावौ। घनसुहवी वठिइ तँ एकोटा अछि गही जे पीवे हए, नप्पन तँ मेठ जे वनि पोसठ पठिठि जहाँतहाँ व्रौआइए, वएह पीवे हए। नत्तन कतै - मन मार्गि गेठ जे पठिठिए दूध पीठक अछा मुदा केकनो दोष्य ठावैसँ पहिने ओकन शहिसो ने देप्प, मागे पैछठ यनति।

कुत्ता तँ मनुकूपक ओहन संगी छी जे अदौसँ संगेसंग आवि रहए अछि, तैगम एते गमहन शहिसमे केना ओकना आकषेप कएव जे वएह योना कऽ दूध पीव छेठक अछा योनियौक तँ अगेको कस्मि अछा एहेन तँ जगहजगहक - मागि रहना तेहने ने सेहे नूप योनिकि तैगम अछि जेहेन जगह जे छी। व्रूत्ता ठिअि, केकनो गाछक आमे कठिठामे योना कऽ तोडव, नइसे सगिमाना आका सोनकट्टा औजानक प्पगाना कए हए। सोनकट्टा आका सगिमाना औजानक प्पगाना तँ ओइगम हेइए जौगम घनक दवाठकें काटा ठेकपैसा वगैठ जाइए, जइ दऽ कऽ पैसा ठेक, ठेक नइ रहि, योना ठेक नऽ जाइए ओना, ठेक ठेको छी आ योनो तँ छीहे।

देप्पति छी जे मुँहदुव्वन नीकनीक व्रिद्विपान्थीकें मागे वय्याकें अन्तमि - केठहा ओकन जोडि कँपीमे मुँहगनहाक गकिठि पग्ना पनीकषाक कँपीक कइए पान केठहा सग कऽ घोसिया अपगामे अंके दइए एकन मागे ई नइ वुहव जे हम अगकन कएठ सम्पनाकि छूठक वात कहै छी। ठेको तँ ठेके छी, कयिठो ठेकवो कतैए आ कयिठो शेकवो तँ कनति अछि, कयिठो अप्पन अन्तमकें अन्तमि दए कऽ, मागे जागियौ कऽ आ अगजानमे सेहे, नइ शेकैए सेहे वात गहिये अछि, सेहे तँ अछएि प्पएन जे अछि, अप्पन जे सग्यकिठक याहक दूध जे अगेनूआ कुत्ता पीठक नइ समवग्यमे कहै छी।

कुत्ता ओहन पाठूओ आ वनि पाठूओ मागे अगेनूआ, यौकयौनाह पनक - कुत्ता, छीहे जे ने गाएमहीस जकाँ पोश मागठ जाइए आ ने गनदैनकें डेनीसँ - महीससँ-गाए कुत्ता तँ सँ हिसाव नइ वाग्हि पोशा सेहे वगैठ जाइएनीक

अछए जे गनदैनमे वनिु जेनी ठगौगहएतो तँ सूत्रिकानि अछि कनि जे जेकर
 नून आँकिसीमाकेँ अप्पन तँए तीमन प्यार छए तेकर सेनियिण जून १९६३ छए-
 ओगा छीहे सेहे एकषक पहूदान, कहव जे जाए कतए पैदा महीस अम-
 कए मेवे से मेठा नीक ने से, अहूँ वुहै छी आ अपनो वुहै छी जे कुतनाक
 काटव दुगियाँक हम पनयैती कनी वा गर कनी-अहाँ याटव दुगू अथठा छी-
 अछि नूनाने अतनिकितो, जेकरा गाव नूनाने कहै छए ओकनो तँ अप्पन दशा-
 दानूमे नशा वुहै छए मुदा ओ-नाडी अहाँ दिसा छरहे, मागे गाव नूनाने, जँ कहै
 जे नशा नाडीदानूमे नहि-, अहाँक व्रियानमे अछि तप्यन अहिकेँ की नामस गर
 उडन? अहाँक व्रियाने ने नीक घात तँए अछि घातक जँ अथठाक व्रियान कतए-
 हेर, तँए क ओहन वसूत दुगियाँमे गर अछि, वहुनो अछि, जे पुनासाघात
 कतए दोसरा वाग ईहे जे जेकरा अहाँ अथठा वुहै नहएए हेन तेकरा नीको
 वुहैहिन तँ अछए, तँए नीक वुहै नीकक सेवग कतए प्यार नर सगसँ
 अपना कोन मतव अछि, मतव अछि अप्पन सौहुका याहक दूयसँ, जे
 कुतना पीठका ओगा, अप्पनो तक चुकचुकी अछए जे तप्यन अपना आँपयि ने
 कुतने आका विठिश्येकेँ दूय पीवैत देप्यौ, तप्यन तँ जागिकऽ दोय उगाएव मेठा
 मुदा उगठे मग ईहे कहए जे विठिस्क वदगामी तँ गर सुगै छी जे केकनो घनमे
 नगहा माछ क ईदूये आका भिठिश्ये योना कऽ प्य गेठा से वदगामी तँ कुतनेक
 हेर छर अपने आँपयि गठे गर देप्यौ, मुदा ठेकक मुहँ तँ सुगति छी, ' योनावा
 कुतना' आका' योनी पठिठि' । गानोक तँ अप्पन गुणधर्मक संग याम सेहे -
 तँ छै गर से जँ छरहे' नाम' केगा ' आत्मानाम' छैथ आ ' आत्मानाम' केगा
 नाम वनी जाइ छैथ।

एक दसि याह पीवैठे मग यटपटाइ छठ, दोसरा दसि व्रियानक तेहेन घेना घेना
 ठेठक जे याह वनाएवे वसिन गेठौ कोन वडका घटगा मेठ, याहक दूय जँ पठिठि
 क पठिठा पीवयि गेठ तँ पीव गेठा केठिठिक पानामे दूय गर नहने गनीगे याह
 वना कऽ पीव ठेव, नरठे एते मत्थापय्यीमे समय उगाएव-, केतौसँ नीक नहिये
 मेठा ओगा, याहक व्रियान, मागे याह पीवैक व्रियान, मगमे उडठ मुदा उगठे
 व्रियानक दावमे नन पडि गेठा एकाएक मगमे उडठ जे मगुक्य आ कुतनाक

सम्बन्ध आरंभे नहीं, अद्वैत आवाज ही अर्थात् मैं से नर आवाज ही अर्थात् कुकुड़्याथि मनुष्य के वा वगैरे अर्थात् कहे जो कुत्ता अर्थात् कुत्ता कहे कुत्ता मनुष्य के लिए भेद, कुत्ता मैं मनुष्य सग नर वृद्धिमानो अर्थात् आ प्रियानवानो आ कर्मवामो मैं अर्थात्

ऐशम ई नर वृद्ध जो अकल दानवाने जो वीरवृद्ध छे नर सम्बन्धने कहै जाइए, ऐशम कहवक माने वस्तुगत अर्थात् वास्तव नहीं सब जानै छे जो कोनो वस्तु वा वस्तुके रूप जगन धारण करैए जगन शब्दक जगन हेइए अपन ऐशम कुकुड़्याथिके रूपमे सेहे एक नरक गतिविधि अद्वैत अर्थात्, मैं कुकुड़्याथि शब्दक सृजन भेद पहिछी इकाक वय्या वीरवृद्ध, माए पहिछपन सुषुप्त जगन गोड़ गुणन करै छैछे, जो वीरवृद्ध सग सगान हुनयिाँके देवेन।

असंभ्रममे पड़ै अपने दवज्जाक युद्धिवा वैसठ नही। ऐशम ई नर वृद्ध जो दवज्जाक युद्धिके माने मनदगना युद्धि भेद आ अंगनक युद्धि भौगियिहि भेद। अपना भेद भेद अपने वृद्धिके माने अर्थ, ई अर्थात् प्रियान छे, अहाँ ईहे कहि सकै छे जो अंगनक युद्धिमे योग्यकवा वगियास सेहे वगैए, मुदा दवज्जाक युद्धि मैं से नर वगवैए दसदुआरी दवज्जा हेइए कोनो नीक भोज्य वगियास यौधाना घनसँ घन अंगनक युद्धि वा असंगते वैस भनभाश्चरि वना प्पाए से, आ दस गीके वीय वनाक प्पाए नरमे अगन नरमे जाइए से हेइए वास्तविकमे, मनुष्यकेमे एक वगियास गुणन रूप मे वना कऽ प्पेठापन, जो नर देवके, तेकना मैं वगैक आयन वगिये जाइए प्पाए जो हेइए, हनि अगन हनिकथा अगना अर्थात्

नही वीय कुसुमभाउ पहुँच गे। अर्थात् ओ यकमकार, मैं कछि ने वाज्जा ओना, कुसुमभाउ जगन भेटैए जगन असपताक सटाश्च जकाँ ' गोड़ भौ छे ' से कहति अर्थात्, मुदा से जगन ओकना मुहसँ नर नरकेमे नर नरकेमे उयति अर्थात् वग्य, अही कहू जो जगन सुनिउठि भेदे, माने प्रियानक रूपमे मानापतिाँके प्रसाधन करै छैए, मैं ओ सवनीक यनयिकिया गाड़ीक यक्का नरमे पड़ि जाथि, जगन मैं ओ सामने पड़ना वा पड़नी, मैं पहिने हुनका यक्का

तनसँ गकिठव आकपिए छुवा प्रामाम कनव? एहेने असमंजसमे कुसुमठठ पडि गेठ प्रामामक आसीनवाए तँ मगक अगुकूठ ठेटैए, जतठ मगक आसीनवाए तँ जतारन महकवे कनत। कुसुमठठक मगमे मेठ जे गनसिक मुनेसन गायकँ याह वगवैसँ पहिने याहक वसतु याहपतीदूध श्याए-यिग्नी-पन ययिग नर नहैठ आ जप्यन युठ्ठि ठा वगवए वैसठ अछा जप्यन आगूमे नर देप्यिगुमन छैथ। तँए कुसुमठठ प्रामाम कनव छोडि पुछठक-

"गाय, जँ याहयिग्नी नर हुअए तँ कहूँ, अप्यन गढे छी दौड कऽ दोकानसँ ठाठे गेने अवे छी।"

अपपनअपपन मगक गाजा कहियौ आकभाठिके, सन छीहे तँए कुसुमठठ अपन वरिये वाजठ कुसुमठठक वाग सुगमिगमे मेठ जे वनि देपठवुहठ - अपन ठेक अहनि वपौए तऽठे मगकँ माहून वगाएव केतौसँ उयति नर हए। -वजठै केतौ वृक्षक वरिये मगक सोगाएठे

"कुसुमठठ, याह हेनाएठ जँ यिग्नी सव अछए मुदा दूध कछि पीव ठेठका-सेहे सनिपान दूधक आ नहैठ ओघनाएठ गठिसो तँ नहैठ नहैठ।"

केतवो घनसुहवी वठिऽ कएि ने अछ मुदा ओकना तँ यो न वा योनी नर कही सकै छएि मुदा कुतनाकँ तँ से वाग नह अछा तहूमे पठिठ तँ अपपन याठि-मनी जप्यनौ अछ मुदा पठिठिकँ सन-मप्याए कनी-ठठिसँ अपन माग' योनी पठिठि' कहति छै।

दासगकि जकाँ कुसुमठठ वाजठ-

"गाय, अहाँकँ कन नर वुहठ अछ जे ' दगेदगे पन ठप्या है प्यागे वठे का - गाम' । जेकना कपानमे दूध ठपिठ छेठे से पीठक तऽठे अगेने कएि मग मगहएने छी। हमहूँ आवयि गेठै, सोदामे दुनू माँर साती दू गठिस पाग केठठिमे गापिकेऽ दियौ आ कनी असामी यायपती सेहे दऽ दियौ, अंगेजयि याह वगिजाएत।" कुसुमठठ मुँहक ' अंगेजयि याह' सुगि जठिजासा मेठ जे अंगेजयि याहक मागे की मेठ? शंका ए दुअगे मेठ जे जऽ शंठैठ वेठस), सकाठठैठ शंठैठ मठि जनेट वनाटिगमे याहक उपज नर अछा (, नर देसक ठेक सनसँ वेसी याह पीवैए, से अगै केतएसँ अछा वजठै-

"की अंगोपय्या याह कहलहक, कुसुमठा?"

गेनाहिनौगी जाकाँ, ओकरा ओपेपनी पकैए नहनि कुसुमठा वाजए-

"गाय, अंगोप सव जय्यग याह वगागपनी हमठा कऽ छीगठक, जय्यग अपना ऐगम जो एऽ गेठ से तँ उर्ये गेठ, जो अपना ऐगमक मागे अपना ऐसक ठोक जो याह गर पीवै छी, नगिको सगकँ ठोगाठेग-। याहक अदैन उगा अपन वाजानी वढा ठेठका"

कुसुमठाक याहक नाग्वक वसिठेपाम सुनि अपनो मन सकपका गेठ जो - कुसुमठा इहासक वाग वाजनिहठ अछि, तँए ओकरा दोसन दिसिमे मोड़व, मागे प्रसंगक मायप्रमसँ वरियानक नासना मोड़ए जाइए, उयति नहि, तँए सह दैन वजौ-

"आव की कनी, कुसुम?"

कुसुमठाकँ अपना वरियानपनी जेगा मनोस जागैए नहनि वाजए-

"गाय, असाम जो गेठ नहि से मोग अछि कि नहि"

अपने गाछवनीछसँ वेसी सगिह अछि-, तँए असामक वंसवोनी आ गानयिठ- सुपानीक वोग देखै पाछू नहि गेठौ, याहक वोगपनी ययिगे ने गेठ। तँए अपन कमजोरीकँ गुकवैए वजौकुसुम" -, एक तँ उमेरो मेठ आ दोसन पनविानमे तेहेन प्यजपौहनि सग अछि जो ओकरे सम्हारै पाछू अपन सोएवेअगा सकृति- सकृति आया पद्यता विशिहे मथिठिक जहनि वावाकँ यागनी जाइए प्यतम गऽ ठेठकैग पीय, मुदा अड़छोट कएए गरियँ मेठेग, नहनि अपने गऽ गेठ छी।"

कुसुमठा वाजए-

"अपना ऐगमक ठोक वऽ मेठगय्या छैथ से मागे छी की नहि देखति छी जो असामक पनपौक सग वोगहाड़मे पागक पत्ता तोड़िठर छैथ आ गाछसँ -

"नहि की छैथ उर नस पागक प्यसठ सुपानीक प्योस्या सोहि पाग सेगे प्या कऽ कुसुमठाक वरियान सुनिमन मधुआ गेठ। वजौ-

"कुसुम, अपना ऐगमक की मेठगय्या कहलहक?"

हँसैए कुसुमठा वाजए-

"गाय, अहाँ यौठ कनै छी। कहवी छै जो ' साँझक गाम सव जागै मुदा हऽहऽ -

कतै', तहनि कतै छी। होउ अपन प्रपञ्चक नमिपणन कनू। यह आ यहके प्रपञ्चमे अप्पन समय ठग देव से उयति नह, एकटा व्रियान कएन आए छी।

जानिआसा मेठ जे यह वनवैके कुसुमठ प्रपञ्च कहएका वजवै-

"की प्रपञ्च, कुसुम?"

कुसुमठक मन जेना व्रियानसँ नमठ होइ, तहनि वाजवै-
"नाय सहैव, अहाँ तँ अपने जवै छपि, अनेने हमना वानन कएि वनवै छी। हनुमान जकाँ अपन शक्ति अहाँ वसिंन गेठ छी तँए अंगद जकाँ मोन पाड़ि देवै हेन।"

अपन मनमे नृपति नइ मेठ, वजवै-

"की प्रपञ्च कहएक, कुसुम?"

तहनि गहेठ पछाइन भीजठ अंगक वसुनकेँ थोर ओइने समाए पाविकेँ नयिओड़ि सुप्पाए जइए तहनि कुसुमठ व्रियानकेँ नयिओड़िकेँ वाजवैनाय " - सहैव, पिठिठि दुनू वना यह पहनि छी वैसठ वनवए यह पिठिठिकेँ माँण छोड़ू- पियोननी नयने ठेव पीव यह जयने ठिअ पीव वैस एकदाम माँइठि मनसँ हेन। जाएन आ आवि जाएन जे दुनयिंमे जेते अंगक प्रपञ्च अछि ओइने ' ज्ञान प्रपञ्च' सभसँ श्रेष्ठ अछि।"

कुसुमठक व्रियान सुन भनमे हनि कान्गति जकाँ जागि गेठ। वजवै-

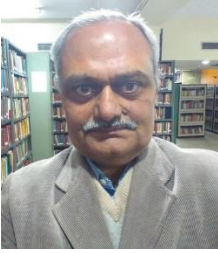
"ज्ञान योग तँ अगुन अछि।"

कुसुमठ वाजवै-

"नाय सहैव, अनेने कोन हमेठमे पड़ै छी, नान्प्रयोगकेँ ज-न ठेव तहिसँ सब नपिट जाएन।"

अपन मनवृत्ते दितिनीठिसनाउड़वदिहवाभाठियेन पन पडाउ।

२१११वीग्ट्-१ गानायाम् मशि-१-वदधि १६७ अरि सगकछि (उपग्यास)-
यानावाहिके



१वीग्ट्-१ गानायाम् मशि-१

वदधि १६७ अरि सगकछि (उपग्यास)- यानावाहिके

प्यास ११-१५

वदधि १६७ अरि सगकछि

११

गोनुकवा उगागिठ छठ । ओसानाप-१ वैसठे-वैसठ ह्मसग श्रौघा १६७ छठहुँ ।

वाहन सड़कपन पुरानःगुनमस कएएवठि ठेकसगक आवागमन पुरानंन नए गेठ छठ । गेठाणीक गनिग सेहे पुरायः पुरा नए नहठ छठगि ओ कनोट वदठठथि कनीमनी आँप्यिपोठठथि। आँप्यिपोठिहि हननासगकँ ओसागापन पड़ठ देपठथि। ओ योट्टे ओछाओनपन सँ उरगिआन छथि ओसागापन अवेन छथि आ ययिआि उँठ छथि-

"संदीप! संदीप!

कोनो जवाव नहि अवेन छैक । श्वेन ओ हननासगक ठगीय अवेन छथि हनसग कछि वूहनिहनिपावनिहठ छी। हननासगकँ एगो अपन घनक ओसागापन पड़ठ देप्यि ओ यकति छलाह कनी काठ गँ ओ युपुपे नहिगिआह । कछि सोयआह । श्वेन हनन पैनकँ जोनसँ हठि देआह । हन हड़वड़ा कए उँठ छी ।

"तँ एगो, एहठिम?"

हन कछि वाजा नहि पावनिहठ छी । आवाज सुनि शकूनिगिथो उरगिआन अछि । हनसग कछि वजनिहँ, कछि कनिहँ नाहिसँ पहनिहनि गेठाणी जोनसँ यकिनआह-

"योन! योन!"

एकाएक गेठाणीकँ सामनेमे देप्यि घवड़ाहठमि शकूनिगिथ मकनक सीढीपन प्यसिपड़ठ । हन ओकन पाछू-पाछू छठहुँ । हननो संतुठन वजिड़गिठ । हनहु ओनहिधनम दए प्यसठहुँ । दुगुगोटे उठैठ-पठैठ सीढीपन प्यसैठ-पड़ैठ नीयाँ पँहुँयठहुँ । उपनेसँ गेठाणी रसागा कए देगे नहथि। सीढी ठा हुनकन आदमीसग हननासगकँ पकड़ि ठेठक । सौसे देहमे कनोको गन योट ठागठ छठ । हाथ-पैन ठेहुनसँ पूग वही नहठ छठ । शकूनिगिथोक कमोवेस सएह हाठ नहैक । गेठाणीक मुसूठउसग ओहगो हाठने हननासगकँ थपनअवेन ठगीयेमे वनठ गौकनक आवासमे ठेगे यठि गेठ। हनसग योटसँ छटपटा नहठ छठहुँ । मुदा नकन ओकनासगकँ कोनो पनवाह नहि नहैक । पनह नगिटक वाद गेठाणी स्वयं ओहठिम अएआह। हननासगकँ देप्यति यकिनए ठाआह-

"नोनासगकँ की गेठह जो गेठाणीकँ यकमा दए देवैक । साशु-साशु वाजह जो

तोनासगकेँ एहदिम के आ कएिक पडओक? जाँ हूँ वजवह तँ पनामिाम
भोगवाक हेतु तैयान रहै ।"

गेताजी एतेक वाजते छथिह कमिस्टंडसभ ठाँगी माँजए ठाँगी । ठाँगी छठ जेना
आव ठाँगी यथत तँ ताव । हम दुगुगोटे युप रहै । की वजतिहँ?

"वजौन कएिक गहि छह?"

हमसभ तौओ युप

एवहमि गेताजीक श्लोक घंटी वाजाउसथ ।

"अहाँकेँ नाज्यपुनमुप गवांसपन वजाहटि अछि।"

"वात की छैक?"

"से की जागे जेथएिक?"

"कछि तँ अंदाज होए?"

"कछि गहि कहि सकैत छी । नाज्यपुनमुपजी से सभ कछि गहि कहथिअछि
। सोहे कहथिह जे देवग वावूकेँ वजावह ।"

ओहकिान नाज्यपुनमुपजीक आप्तसयवि श्लोकपन रहथि ।

गेताजी गत्र नाज्यपुनमुपजीक ओहदिम पहुँचैत छथि । श्रुतकएिसँ पुश्चिआसभ
हुनका पछोड़ केने यथि रहथ छथ । आगू-पाछू पुठिसिक ठोक तँ छथेह ।

नाज्यपुनमुपजीक आवासपन पहुँचतहि हुनकन स्वागतमे नाज्यपुनमुपजी
स्वयं आगू अवैत छथि । दुगुगोटे अंदाज जाइत छथि । वाहन हँसी-डडक अवाज

सुगार पडैत रहैत अछि । कहि गहिओ सभ घंटा गनी-की-की कएत रहि गेथिह?
मुदा जायग ओ वाहन गकिथिह तँ हुनकन पुनसगना देमएवथ छथ सनकानी

कानसँ हुनका वापस अपन घन पहुँचा देथ गेथि । गेताजी आइ कतेक दगिक
वाह आश्वसना ठाँगी रहथ छथिह । संभवतः हुनकाठोकनकिँ आपसमे कछि सौदा

पटि गेथ छथि । घन पहुँचि गनि छाँक दानू पीथिह आ यैगसँ सुनि रहथिह ।
गेताजीक गेथक वाह हम आ सकतगिथ मुस्टंडसभक कव्जामे छथिहँ । योड

ठाँगीसँ हमना दुगुगोटेक हाँगा गडवडा रहथ छथ । हमसभ वेन-वेन ई वात
ओकनासभकेँ कहएिक । मुदा ओकनासभकेँ कोनो असनएि गहि होइक । जहग

हमसभ वहुन पनेसाग भए गेछुँ तँ ओ सभ गेनाजीकेँ श्रोग केँक ।

"एकसभक हाँका गीक गहि छैक । जाँ-जाँसँ पूग गकिथि नहए छैक । ओ सभ दूदसँ पनेसाग अछि ।

"तँ की कनवाक छैक?"

"एकसभकेँ अस्पनाए भए जाएव वहुन जूनी अछि ।"

"तँ भए कएक गहि जाइत छीह?"

"भेठ जे अहाँसँ पूछथि ।"

"हूँद भए गेठ । हम अप्पन जूनी काजमे भागए छी । जे जेना जूनी होइ से कनह ।"

नकन वाद ओ सभ हमना दुगुगेकेँ काजमे वैसाकए अस्पनाए पहुँचए । अस्पनाएक गेटेपर पुठिसि गढ़ छए । काजसँ उगलक वाद आपाकापीन व्रिगिगमे पहुँचवासँ पहिगहि पुठिसि हमनासभक पछोड़ कए भागए ।

अस्पनाएमे मामूठी उपयानक वाद साँह यनी हमना दुगुगेकेँ छुट्टी दए देठ गेठ । मुदा पुठिसि पछोड़ केगहि नहए । योद कोना भागए, की भेठ , अहाँसभ गेनाजी ओहिगिम की कए नहए छथुँ? ननह-ननहक प्रश्नसँ जाग वँयाएव मोसकथि भए गेठ। शकानिथ वहुन कहकैक, पुसामद केँकैक मुदा पुठिसि कछि सुनवाक हेतु तैयार गहि गेठैक । शकानिथ वूह गेठैक जे वनिगि ठेगे-ठेगे ई सभ जाग गहि छोड़न । जेविमे हाथ देठक आ जाके टाका नहैक से पुठिसिकेँ जेविमे युपयाप नार्पा देठक । काजमे जा कए ओ सभ टाका गनठका तुंगे ओकनसभक आव-भाव वदथि गेठैक । पुठिसिक कस हठठक भए गेठैक ।

"गीक छैक । अहाँसभ अपन डेना यथि जाउ । जूनी हैकैक तँ हम स्वयं संपृक कए ठेव ।"

हमनासभक जागमे-जाग आएठ । किंसा पकड़ि अस्पनाएसँ वदि गेठुँ ।

अस्पताओं से छुटाएक वाद हमसभ अपन ग्नामीसक उनापन पहुँचैछुँ । संयोगसँ ओ अपने गहि छैछह । हुनकर पत्रिकाक ओक सेहो गहि नहए । हुनकर ग्रागि नहथि । हमसभ अपन पत्रिय देवअनि । ओ अपन मामसँ ओपन गप्प केँछह । हमसभकेँ ग्नामीससँ ओपन गप्प भेट । तकवाए गयिगसँ हमसभ ओए नागिनि विसिनाम केँछुँ । योसभमे दूए होश नैह छै । डाक्टर कछि दवाइसभ देगे नहए , से प्वाइ नहैछुँ । तकवाए जे गनिग पड़ैछुँ से भोगे उअछुँ ।

नागिनि हम आ शकृनिगिथ गवषियक दिसि आ दशापन यतिग कएत नहि गेछुँ । गे हम सुनिसि केँछुँ गे ओ । जहँसँ ए कए गेतापीक शकृनिगिथ स्थिति घन घनि घटति घटनाक्रम वेन-वेन भोगमे आवाँ नहए छै । वनि कोनो गठनीकेँ गेतापी हमना जहँ पड़ै छैथि । हम ओए कतेको दनि घनि वंद नहैछुँ । वावू हमन जमागत हेतु की गहि केँछह? प्पेन वेयि ओकीओक शिस दैत नहैछह । नागिपपन-नागिप पड़ैत नहए । मुदा जमागत गहि भेट । हम जहँसँ नपने छुटा सकैछुँ जपन गेतापी याहँथि कामस, कछि गहि वूह सकैछैक । मुदा आव वूह नहए अछि जे गेतापीकेँ हमनापन सक गए गेठ नहनि जे हम हुनका वागेमे वूह कछि जानि नहए छी, जानि गेठ छी । युवाओक समयमे हमनासँ एकहुटा वाग वहाइत तँ ओ वमसँ कम वसिओक गहि होश । गेतापीक नाजनीतिक गवषिय हवामे उअि सकैत छै । तँ तनह-तनहक व्पोग कए ओ हमना जहँमे पड़ओने होएत ।

"मुदा आव की कए जार?" - हम ई सवाँ वेन-वेन शकृनिगिथसँ पुछैछैक ।

"है! हमना गोनासँ वेसी थोड़वे वूहँ अछि । मुदा एवा तँ हमहुँ जगैत छी , तुँ जगैत छह जे देश, समाजक हाँत ठीक गहि यथि नहए अछि । गेतापी सग-सग ओक देशक समस्त व्यवस्थाकेँ अपहाम कए एगे अछि । वेसक देशमे कागूमे सभ वनावन अछि मुदा असभित की छैक, से केँ गहि जगैत अछि? जकरा गे नहवाक ठेकाँ छैक, गे प्पेवाक उपाय छैक , से अपन मन की देत? ओकरा तँ केओ अपना हिसावसँ वहका छै । जे याहँ से कना छै । "

"ई समसूया तँ पुनाग अछि। कोनो आर ई सभ मए नहए अछिसे वाग तँ गहि अछि। समायाग तँ वनावह।"

"समायाग कोनो मगवाग तँ कनथनि गहि। हमने-तोना आगू आवए पड़ए।"

"हम तँ सभ नहै तैयान छी। मुदा केमहन की कनी से मागए-सग याहि।"

"से सभ के कनए? जकना कनीको अकीए छैक से अपन सूवाथमे ठागि जाइत अछि। के व्रिवाइमे पड़ए?"

"देपहक, कोनो गव एए वगाएव, ओकना यथाएव आ एहियोग्य वगाएव जे ओ युगाओ उडए आ जीनए वहुन कठिनि वाग छैक। एहिमे साथे ठागि सकैत अछि। तथापी, वाग वगए, गहि वगए नकन कोनो डेकान गहि अछि। कानाम जे सानामे वैसए जे ओकसभ अछि, से कोनो युप तँ नहए गहि ओही सभ हमसभक कछि-गे कछि काट गकिाँवाक पुन्यास कनए, हमन आइभीसभकेँ नह-नहक पुनोमन एए ओडवाक पुन्यास कनए, जे गहि ओकन वाग सुगतैक नकनासभकेँ कोनो-गे-कोनो नहै छँसेवाक पुन्यास कनए।"

"नप्यन?"

"हमना हिसावे तँ जे व्रिगीथी एए अछि, ओकन सहयोग थी। नप्यनहि हमसभ कछि कए सकव।"

"कहक मागे जे जगकान्ता एए(जेकेडी)क संग भठि जाइत"

"आओन की? मौकापन हुकनाइ जानूनी छैक। जे संगी जकाँ गढे नहैत अछि, से टुटि जाइत अछि।"

"मुदा एकटा वाग नीकसँ वूहै एएह। समगन व्रिकिस एए (एसजीडी) अप्पन शासनमे अछि। ओकना प्यिष्ठ केओ जएई सामने गहि आवए याहनह।"

"देपहक। उनेवासँ तँ वाग गहि वगए। जकना जे कनवाक हेइक से कनओ। हमसभ तँ अपन व्रियानमे स्पष्ट हेइ ई हुगश्चि उनपोक, कापनक ठेठ गहि छैक। जे जीवए से प्येएर श्वाग। उडनाइ तँ छैहै। नप्यन सभ जागे वँयेवामे ठागए नहि जाएत तँ पनविनान होएन केना?"

"ठीक छैक, हमसभसँ संपत्क कनी सएह बे।"

"आओन की?"

हमसभ दुनूगोटे गप्प कएए १हए छएहुँ की संदीप ओतए पहुँचए। हमनासभकेँ देखाओ कनी अयंगति जून भेए मुदा जएदीए सही मुद्दामे आवगिओ।

"तँ सभ एहठिम?"

"संयोगेसँ काएहएहठिम अएहुँ। मुदा गौवा गह छथी हुनकन मागनि छथनि। ओएह हमनासभकेँ स्वागत कए १हए छथी।"

"हमहुँ तँ हुनकेसँ भेट कनवाक हेतु आएए १ही।"

हम संदीपकेँ देखाए १ही जाश छी। ओ नीतनसँ कछि पनेसाग भगि १हए अछी। कछि वाजनिह १हए अछी।

ओ वेन-वेन पाछू दसि नाकी १हए अछी। ओकन भागसकि स्थिति किँ देखाए शकनिथ वाजि उँत छथि-

"वाज की अछी? तँ वहुन पनेसाग वुहा १हए छह? वेन-वेन पाछू दसि कएके देखा १हए छह?"

मुदा संदीप कछि गह वाजए। युप्पे १हीगिओ।"

१३

देवक नेताजी वगवाक प्यसिसा वहुन नोयक अछी। हुनकन घनक नाम देवक १हनी। देवक पति वहुन गनीव १हथी वहुन मोसकठिसँ जीवण-प्रापण कनथी। गाममे वहुन कम जमीन १हनी। कछि जमीन वँटाएपन सेहो कनथी। आमक भासमे हाटपन आम वेयाँ छथी। कुसश्चिक भासमे कुसश्चिक पेनी कए गुंन वनावथी, सेहो वेयथी। जप्यन एहूसभसँ काज गह यधनी तँ कहिओ काँ कठकनना सेहो यथि जाथी। ओतए नगसश्चिक काज कनथी। देवक हुनकन एकमात्र पुत्र १हथनि। सदीपिन हुनका अपने संगे जायथी। जप्यन कप्यनहुँ ओ कठकनना जाथी तँ देवककेँ सेहो संगे छेने जाथी। नेताजीक माएक मन्त्रु

वृहत्तम कम वपसेमे गए गेठ नहनी । तँ हुनकन पतिा माएक काण सेहे कथी । एकटा वेटी छठनी, णकन वश्राह गामे ठा सनश्रा (संदीपक गाममे) गेठ छठनी । गेताणीक गेनपनेसँ ओहगाममे आवागमन नहै छठनी ओहिक्रममे संदीपोसँ हुनकन पनियय गेठनी ।

गेताणी अपन पतिाक गनीवी देपने नहथी । ओ अपन पनियानक नक्षा कतौन-कतौन एकवेन कठकतोमे वनिा पडएह आ अगयोकेमे यथी णाशन नहएह । गेताणी ओहिसमयमे वीएमे पडैत छएह । णेगा-णेगा कठकतोमे हुनकन अंति संस्कृत कए गाम घुनी गेएह । णकन वाएक श्नाद्यकर्म गामेमे केथथी । पतिाक देहगतक वाए ओ एकदम असगन गए गेथथी । आव की कथथी? णेगा-णेगा वीएक पनीक्षा देथनी । णकन वाए शक्तापिनम यथी गेएह । ओणए णे काण गेठनी से कनए एगएह । कर्मशः हुनकन शक्तापिनममे पनियय वढए एगएनी ।

शक्तापिनममे नहैत ओ ट्यूसन सेहे कथथी । ओहिक्रममे समग्न वक्रिस एठ (एसबीडी)क णत्काठिन अय्यक्ष सुमंताणीक वेटी-महमिकेँ सेहे ट्यूसन पढावथी । संयोग एहन गेठैक णे हनिकासँ पढैक वाए ओकन पनीक्षासुठमे गनितन सुयान हेशन गेठैक । वेटीक पनीक्षासुठ नीक गेठसँ अय्यक्षणी गएगए नहथी । गेताणीक भागदान वढैत गेठनी अय्यक्षणीक घनमे गेताणीक समय-कुसमय आवागमन सेहे हेशन नहथनी महमिा सेहे हुनका संगे वेसी समय वनियए एगएनी । कहिओ काठ वणान-हट सेहे जाए एगएनी । णँ कोनो काण हेसैक तँ देवनक संग कए ओ यथी णाशन । अय्यक्षणीक पनियानमे हुनका पुनए णेके वसिवास नहैक णे केओ कोनो पुनकानक आसंका सोयथिओ गह सकेत छठ । कछि दनिक वाए महमिक मैट्रिकिक पनीक्षासुठ वहनाएठ । ओ पुनथमशुगेमीमे नीक गनसँ पनीक्षा पास केथक ।

अय्यक्षणीक गेताणीक पुनए वसिवास वढति गेठनी । ओ हुनकन पनियथितिसँ सेहे यतिाति नहैत छएह । एकदनि मौका देपि हुनका पान्टी कान्थायमे काण यना देथपिण । णकनवाए हुनकन णीवन कछि आसाग हेवए

छात्रों। देव वृद्ध समाप्तों अक्षयक्षणीक सेवा कथी। संगहि हृगकन
घनपन महिमाक ट्युसग न कति नह्यी।

महिमा आ देव समप्र-कुसमप्र एक-दोससँ भेट कति नहै छएह ।
अक्षयक्षणीक पानिवाकिक वातावनास उगमुक्त नहवाक कानास ककनो एहिसिग
वधिप्रपन ध्याग नह गेथैक । ककनो यति कनवाक प्रयोग नह भेटैक ।
ओहना अक्षयक्षणीक घनक वागेमे नह-नहक प्यसिसा सौसे शक्तपिनिममे
सुगठ जाइ छए । मुदा तँ की? ककनो साहस नहैक जे हृगकन सामगेमे कछि
वाजिथेना कोनो प्रयोगनो नह नहैक।

एकदिग महिमा आ देव गंगा कानमे वृद्ध देनी धनी वैसठ नह जाइ गेथए ।
समप्रपन घन वापस घुनवाक होस नह नह गेथनी शजोश्रि पसनी गेठ नहैक
। गंगाक प्रवाह आगू-पाछू होइ नहै छथैक । ओहनि हृगको सगक मोगमे
तूश्वान मयठ नहनी वडी कठक वाद अगहन अएवाक संवावना वगेन देप्यीओ
सग उठएह आ वापस घन दिसि वदि भए गेथए । तकन वाद ई कनम यति
नहए । अक्षयक्षणीकें समप्र नह नहनी, पानिवागेमे ककनो कोनो भाठव नह
नहनी । महिमा आ देवकें कथुक प्रवाह नह नह गेठ नहनी । पानिसाम भेट
जे एकदिग साँहमे ओ सग गनिमप्र केथी । ओहनिगिसप्रकें आगू कनवाक हेतु
दोसने दिग आनप्र समाज मंदीन पहुँचथी आ ओनए अपन कछि मतिनसगक
उपस्थितिमे विश्राहक वधि प्रानस कए ठेथी । विश्राह केठक वाद हृगकासगकें
साहस नह होनि जे घन वापस जाइ । सोहे शक्तपिनिम टीसग यठ गेथनी ।
ओनए वणिप्रपुनमक नेठगाडी आठ नहैक । जेना-जेना टकिटक जोगान केथी
आ ट्पेगमे वैस गेथनी ।

दोसने दिगसाँहमे वणिप्रपुनम टीसग पहुँचएह । पठेठश्वानम गंवन एक पन
ट्पेगसँ उतनी हृगगोटे वेयपन जा कए वैस गेथनी । संजोग देप्यीओक जे ओहि
समप्रमे अक्षयक्षणी वणिप्रपुनमसँ शक्तपिनिम वापस जेवाक हेतु ओनए
पहुँचएह । ओनए हृगगोटेकें एकेक ठगीयमे वैसठ देप्यी कनीकाठ न हृगका
वसिवास नह भेटनी जे ओएहसग छथी मुदा एग अएठक वाद वात पनछि
गेथनी ।

"महामा! महामा!"-अध्याक्षणी अवाण देउगि। ई तँ वावूणी वूहा १६९ छथि। महामा हुनकर अवाण सुगि पाछू दसि घुमथिह। अपन पतिाकेँ सामने देप्यि ओ हउवडा गेथिह। देवग सेहे अकथका कए वेयपनसँ उउआह। महामाक माथमे सगिगुन देप्यि अध्याक्षणीकेँ वाग वुहवामे देनी गहि मेउगि। कनीकाउ तँ वहुन छगुगनामे १६थि। श्वेन अपनारकेँ समहायणह।

"जपन नोनासगकेँ वआह कएके छथैक तँ हमना तँ कहतिह? नीकसँ अत्सव मनवतिहुँ। ठेकसगकेँ वजवतिहुँ। गीत-गाद होश। मुदा कोनो वाग गहि। जे मेठैक, से मेठैक। आव सगगोटे शक्तापुनम यथै छी। ओतहि आगूक कायकाम मगाएवा भोगक कछुओ अगठिषा तँ पूनास होअए। ओतए स्वागत समानोह आयोजति कएउ जाए। तकर वाद नोनासगकेँ जाए जेवाक होअ से जइअह।"

सग कछु अगूक देप्यि टुंगोटे अध्याक्षणीक संगे टुंगसँ शक्तापुनम वापस वदि गए गेथिह।

१४

अध्याक्षणीक वेटीक वआहक स्वागत समानोह शक्तापुनमे यूमयामसँ मगाओउ गेउ। एक सपनाह यनि विविधि कायकाम यथै १६९। ११६-११६क गाय-संगीतसँ महश्चि दनि-नानि आंगदमय वगउ नैह छउ। जकरा जे भोग होइ से प्याउ, जेहन गीत सुनवाक भोग होअ से सुगु। श्वेन देप्यवाक होअ तँ सएह देप्या कहि गहि सकै छी जे ओहिगिमक वातावरण कतोक आंगदमय १६९। शक्तापुनमक समस्त गामनाग्य ठेकसग एहि समभिति मेउथि। जय-जय गए गेउ।

महामाक संगे देवगक वआह ओकरा जीवगक एकटा जवदसुन पवित्रनकानी घटना सावति मेउ। अध्याक्षणी वहुन दगिसँ एकटा सहे उतनायकानीकेँ नाक १६९ छआह। दनि-नानि पान्टीक काज कनैत-कनैत

थाकी गेठ रहथी। देवगपन हुनकन य्पान वहुन दगिसँ छथी। आव तँ ओ हुनकन जमाए वनी गेठ छथपनि सोयबाह जे हुनके आगू कएए जाए। ओना ओ महिमाकेँ पहिने नौका देवए याहथी। मुदा ओ नाजनीगमि जेवासँ साश्वे मगा कए देगे रहनी।

"नाजनीगमि हमना कोनो नूयि नहि अछी।"-ओ साश्वे जवाव दए देगे रहनी। मुदा आव तँ ओ वक्रिष्प भेटा गेठ रहनी। तँ वनि कोनो वरिषिकेँ आगू वढवाक नगिम्सय केठनी। एकदगि साँहमे ओ महिमा आ देवगक संगे गपप-सपप कजैत छथ। माहैठ अगुकूठ देया वजबाह-"हम आव नाजनीगमि कजैत-कजैत थाकी गेठ छी। वहुन दगिसँ एकटा सही उगतनायकिनीकेँ नाक रहथ छहुँ। संयोगसँ देवग हमनासगकेँ वहुन उपयुक्त वूहा रहथ छथी। हम याहैन नहि जे पान्ठीक कमान पनविगेमे नहि जाए। सेहो अगिषिषा हमन पूना गए जाएत। हमना जीवैत ककनो साहस नहि छैक जे हमन पुनसूतावक वगिथ कन। सगक आश्वे हमन आठमीगमे वंद अछी। जँ केओ अगट कन तँ पनिसिम भोगत। ई वाग सभ जगैत अछी। तँ हमना वरियानसँ जठ्डीए देवगकेँ पान्ठीक कान्प्रकानी अय्प्रक्षष वगेवाक घोषामा कए देठ जाए। गोहन सगक की वरियान?"

देवग सूत्रीकानमि मुडी लथि देठनी। नकन वाद अय्प्रक्षषणी वनि कोनो वरिषिकेँ आगू वढैत गेठ। देवग पान्ठीक कान्प्रकानी अय्प्रक्षष वना देठ गेठ। नगवे नहि, नकन वाद जगेक पदसभ नहैक नाहपिन गोट-गोट कए देवगक पसदिक ठेकसगकेँ वैसा देठ गेठनी अय्प्रक्षषणीक कामगा इए रहनी जे देवग गषिकंटक नाज कनथी। पान्ठी आ सनकान दुगूमे। अय्प्रक्षषणीक ओहगिम संवंध भेठसँ देवगक गागय पठेठेठनी। ओ हुनकन अकूत संपत्ताकि महिमाक संगे उगतनायकिनी गए गेठथी। संगहि पान्ठीक कान्प्रकानी अय्प्रक्षषक पद सेहो दहेजमे भेटा गेठनी।

मुदा सगटा सोयबाह थोड़वे लेश छैक? पान्ठीक वहुन वनषिड ठेकगसिम कही नहि कहीआसँ आस ठगओगे छथ। जे अय्प्रक्षषणी आसग प्याथि कनगाह तँ हमने नवन आओना मुदा अयागक देवग कनहुँसँ टपकि गेठ। एकहि वेन कान्प्रकानी अय्प्रक्षष सेहो वनि गेठ। सगटा शकता हुनकेमे केहूनी गए

गोठनी वँकए ठोकसगक हाथमे शोकथ । अय्यकूपणीक एहि काणक सामना-सामनी तँ केशो व्रितीय गहिकेठक , मुदा पान्ठीमे शीतने-शीतन दू गुट वगिगोठ । एकगुटमे व्रिषिठ ठोकसग छथाह जे अपना-आपकेँ जगि महसूस कए नहए छथाह । दोसरा दसि देवग आ हुनकन समन्यक छथाह । सही मागमे ओ सग देवगक कोनो शुभयतिक छथाह से वाग नहि नहैक । देवगक संग देवामे हुनका सगकेँ नात्कारिकि श्रुदा भेटगि । पान्ठी आ सनकानमे महव्रपूनास पदसग भेटथगि । मुदा थोड़े देगिक वाद युगाओ भेटैक । अय्यकूपणीक पुनगावसँ वा जेना-जेना हुनकन पान्ठी युगाओ जीतति तँ गेठ मुदा गान्धपुनमुप्यक पद केशो आओन हथिआ भेटक । पान्ठीक युगठ गेठ जग पुनगिधिमि सँ वहुमान देवगक प्यथिश्च यथिगोठनी पनासिमाम सामने छथ ।

युगाओ जतिवाक हेतु गेनाजी कोनो कर्म छोड़े गहि छथाह । हमसग सेहे सुनुमे ओकन पाछू-पाछू धुमैत नहएहुँ । मुदा साँप संगे दोसती कतेक काठ यथैत? भौका पवतिहि ओ हमनासगकेँ उँक मानथाह । आओन जे भेट, से भेट मुदा हमसग गेनाजीकेँ गीकसँ यन्त्रि गेठहुँ । गेनाजीकेँ तँ हमनासगपन कहीओ व्रिस्त्रास नहवे गहिकनगि ओ तँ हमनासगकेँ मान् नसतमाठ कनैत छथाह । मुदा कतेक दगि एना यथैतिक? आयनि हम, शकृतागिथ आ संदीप एकठम गए गेठहुँ । एकठम आवाति तँ गेठहुँ मुदा हमनासगक पासमे साधन वहुन सीमति छथ । आर-काठहिकि गानगीतति तँ मान् टाकाक प्येथ अछि । जँ टाका अछि, ठाडी अछतिप्यगहिसिद्धिगतक वाग कनू ।

१५

संदीप अयागक हमना सगक ठगीय आवा गेठ छथ । एहिसँ पहिने वहुनादिगि धनी ओ गेनाजीक प्यासम-प्यास नहए । आव की भेटैक की गहिकि ओहठिमसँ जाग वँया कए गजगठ । आएठ तँ नहए गौवासँ भेट कनए मुदा भेट गेठिगिठिकि हमसग । ओ ततेक आह्वन ठगीत छथ जे भौका भेटतिहि भोगक वाग उजैत गेठ । युप नहव ओकना वसमे गहिक नहैक ओ कहए गजगठ-

"कछि कनैत जाउ । ठौत अछि जे माथ अटि जाएत।"

"की भेटह?"

"की कहू? वाजठ गहि जाइत अछि । ई गेताजी वऽ अग्यायी अछि, गीय अछि । सभ नहि वनवाए कए देएक।"

"जे! भेटैक की से तँ वुहएक?" - शकूनिगिथ वाजठ ।

"कोनो एक दगुका वाग छैक जे कहि दइ आ अहाँ प्यसिसा वूहि जेवैक । अग्याय कनव, गनिदोष ठेकक शोषस कनव ओकन याठि छैक।"

"मुदा गोना ई देवज्जाग अयागक केना गए गेठह? साठक-साठ तँ ओकने सेवामे ठागठ छठह?"

"से की कहूँ? जे की कनी आ कएक कनी? आ तँ कहवे कनव तँ अहाँसभकेँ वसिवास होएत? कदापि गहि? ठेक एते कहत जे अप्पन गेताजीक शकूनि किम गए गेठनि अछि तँ ई वदठ गकिठि नहठ अछि।"

"देपहक । ठेकक काज छइ कहनाइ । ओ तँ कहवे कनव आ हमसभ सुनवो कनव । मुदा नाहिसभसँ सत्प्र नेगे वदठि जेतैक।"

"नप्पन तँही कहह जाहिसँ गोहन कछि मदन कए सकी आ हमहुसभ कछि शांन होइ।"

संदीपक हाथ वृहण गऽवऽ ठागि नहठ छठ । तथापी, ओ वानंवात वाहन दसि इसागा कनए । मागे ओमहन देप्यथौक । आप्पनि हम शकूनिगिथकेँ वाहन जा कए देप्यवाक हेतु कहठिएक। ओ तुंग वाहन गेठ । सऽकक कागमे एकटा महिठि वैसठ कागि नहठ छठि । संदीप ओहि महिठि ठा जाकए गऽ गए गेठ । ओ कछि गहिवजठैक, कनति जा नहठ छठि । आप्पनि शकूनिगिथे पुछठकैक-

"अहाँ संदीपक संगे छएक?"

ओ सहमतमि मुँडी हठि देठकैक ।

"तँ एहिठिम कएक वैसठ छी?"

"संदीपक वाट नाक नहठ छी। ओ कहठथि जे हम गौवासँ भेट कए कनीके काठमे वापस होएव, नप्पन संगे यठव।"

"मुदा ओ तँ हमयेसभ ठा छथि। ओकनो भोग गीक गहि पुहास छैक । अहाँ हमना संगे यूँ ।"

ओ महिषि शकूनागिथक वाग भागि कए ओकना संगे वदि गए गेली। शकूनागिथ ओहि महिषिक संगे अवैत छथि। ते संदीप ते ओ महिषि कछि कहवाक स्थितिमि पुहास छथि। हम वेन-वेन प्रयास केएक जे संदीप कछि कहए जाहिसँ वस्तुस्थितिकि सही अनुमान ठा सकी आ समाधानक वाजेमे सोचिसकी। मुदा ओ कछि वाजवे गहि कए। ओकनासभकेँ कहू कोनो योट गहि ठागठ छैक। देहमे वोपान गहि नहैका कोनो स्पष्ट शारीरिक परेसागी गहि देखाइक। तप्यन कष्ट की छैक?

हम आ शकूनागिथ आपसमे कछि यन्या कएत छी। सड़कक कागमे वगठ टोकागपन जास छी। ओतए सघिना आ घुघनी टटका वगठ छठ। हम प्रयापन भातनामे सघिना आ घुघनी कीर्ति छै छी। शकूनागिथ याह वगवैत अछि। हुगुगोटकेँ याहक संग सघिना आ घुघनी दैत छएक। हमहुसभ संगे याह पवैत छी, सघिना, घुघनी प्यास छी। सघिना, घुघनी आ याहक जोगसँ ओकनासभक जेगा गक्क टुटैक। आकूनापिन हनश्रिनी अएक। हम कहएक-

"नोनासभकेँ अस्पनाठ ठेगे यथै छी। संभवतः डाक्टरक रोगसँ वेसी अएदा हेतह।"

"गही, गही। हमसभ कहू गहि जाएव। गेताजीक गुंडासभ हमनासभक पछेड़ कए नहठ अछि। तँ हमसभ पकड़ेहुँ तँ जेठ घन छी।"

"एकटा काज कएह"-शकूनागिथ वाजत।

"की? कनीके हटा कए एकटा औषधाठय छैक। ओतए एकटा डाक्टर नहैत छथि। हुगके वजा छैत अछि।"

"गीक कहएह। सएह कएह।"

शकूनागिथ ओहि डाक्टरक ओतए जास अछि। हुगका सभटा वाग कहैत छनि। डाक्टर तानन अपन स्कुटिसँ शकूनागिथक संगे वदि गए जास छथि।

- १वीर्गद्द१ गानाप्रस मसि१, पणिक गाम: सुवर्गीय सुन्य गानाप्रस मसि१, माणाक गाम: सुवर्गीया द्याकाशी देवी, वएस: दर्ट व१ष, पैर्क गानाम: अडे१ डीह, माण्क: सन्धिआ ड्योढी, व्ाि: गाना सनकाक उप सयवि (सेवागक्ि१ण), सुपेशठ मेटनोपोठिण मणसि१टनेट, द्ठि१(सेवागक्ि१ण), शक्तिषा: यग्द१यागी मथि१ि महावदिया१यसँ वीएस-सी गौकि वणि१गमे पु१णधि१ : द्ठि१ि वसि१वदिया१यसँ वधि१ि सुगाणक, पु१काशणि क्ाि: मैथि१िमे: पु१काशण व१ष:२०१७ १गोनसँ सौँह व१ि(आणम कथा), २ पु१संगवस (गवि१य), ३सुव१ग सारि अरि (या१ना पु१संग); पु१काशण व१ष:२०१८ ४ सुसाए (कथा संग१ह) ५ गमस१सुथै (उपग्यास) ६ ववि१ि पु१संग (गवि१य) ७मह१ाण(उपग्यास) ८ठणकोट१(उपग्यास); पु१काशण व१ष:२०१८ ८सीमाक ओरि पा१(उपग्यास)१०समायाग(गवि१य संग१ह) ११मा१्गुमा(उपग्यास) १२सुव१ण१क(उपग्यास); पु१काशण व१ष:२०२० १३संपगाए(उपग्यास) १४३एह थकि १ीवग(संस१म१स)१५ढहैा देवा१(उपग्यास); पु१काशण व१ष:२०२१ १६पाथे१(संस१म१स) १७हम आवा १ह१ छी(उपग्यास) १८प११यक प१ाण(उपग्यास); पु१काशण व१ष:२०२२ १९वी१ा१ि१ सम१(उपग्यास) २०प१ावि१ि१ि१(उपग्यास) २१वद१ि१ह१ अरि१ि सगकछि(उपग्यास) २२नाषट१ मं१ि(उपग्यास) २३संयोग(कथा संग१ह) २४गाया १ह१ छ१ि वसु१ा(उपग्यास) २५दीप ण१ैा १ह१ (उपग्यास)।

अपग मंगव्ये द्ठि१ि१ा१ि१ा१ड१वदिया१ा१ा१ि१ि१ोम प१ पडा१।

रंजितसंतोष कुमाल नाथ ' वटोही' - मंगलौगा (यानावाहकि उपग्र्यास)- (तेनहम प्येप)



संतोष कुमाल नाथ ' वटोही'

मंगलौगा (यानावाहकि उपग्र्यास) - (तेनहम प्येप)

ओपटिन काका कहथिन्ह, " वावा वांस मे व्प्रासणी के सागा गहटिप्यैण छयैन्ह
। हुगकन सागा के ईट ठकऽ घेन दियौया ओ अहाँक पति ् छथथी"
हम कहथियैन्ह जीवैण जी गुँहा गन्ना मुसठा पन दुया गन्ना। २ कहवी डिके छै।

यनिजीव व्प्रासजी अपन गाम वनीगे नहणी टाका णँ हुनका गहि छैएन्ह, पनज्य ज्जाग छैएन्ह । ओ ज्जाग केँ ससमय उपयोग गहि कऽ सकैवाह

आई पुसवू केँ वानाग आवि नहए छन्हि हम दनिगंगा सँ नाहि ऐठ गाम आयए छी। आई-काएहविन-वानाग मे गतेक गे छेने-देनी होयत छै जे वेटी वावा केँ हम सुएऽ ठौग छन्हि सुयोग्य दुएहा प्योपवा मे ठोक केँ कुन-कुन घाटक पागि पीवऽ पडैत छन्हि से महदेवे साक्षी छथि गीक दुएहा भागे सवहक ऐठ अठग-अठग होयत छै।

सुनेगदुन याया सुयोग्य दुएहा प्योपवा

मे कम श्चनिशान गहि भेवाह तेनह उविपिा तेठ जनि गेठग्हि पुसवू देप्पवा-सुगवा मे गीक छथि, वी०९० श्चसूट उविपिन सँ पास भेवीह एकटा कुशए ग्हीमी केन सभ गुम हगिका मे छन्हि गामक आओन शहनी दुगू पनविसक ज्जाग छन्हि गोन छथि कद-काठी सेहे गीक छन्हि।

पुसवू ऐठ गीक-सँ-गीक दुएहा ऐठ ओ तीगि साठ धनि श्चनिशान भेवाह वेटी ऐठ माय-वाप कतेक सुनेह नपैत छथि से हुनका सँ जागए जाउ । एकटा गंभीर आओन जनिभेदान पतिा छथि सुनेगदुन याया। अपन काया केँ वेय केँ वेटी केँ सुगन-सँ-सुगन दुएहा कनवाक प्प्रास कएत छथिन्ह माय-वाप।

वानाग आवि गेँवै मुक-मुकपिा वएव सँ छाए छै सभ जगह गीक सँ सजौठ गेठ छै व्प्राहक मडवा।मडवा मे वन्हन हम देठपिा पीऽ पन पुसवू अपन हाथक पीगन ठावाह छाप देठकै। मूठी मडवा सजौगे छेँवैह मडवा गीक ठागि नहए छेँवैह मूठी वऽ दनि सँ मडवा सजावैत अछि। गीक टाका कमा जायत छथि। वो। अर कठकानी मे सीजग मे गीक कभैत छवाह वो, पनज्य हएदम व्प्राहक ठाग गहि होयत छै। कछि दविस वेनोजगान गऽ जायत छवाह नाहि दुआने ओ

दिल्ली यथी गेवाह

दिल्ली मे अरु कथाकाल के के पुछै छै ? कयिो दुगयिा नह छिन्ही दिल्ली मे। कछु दनि होटल ठाईन मे काण कयैत छथि आओन भोग नहि ठावाह पर सेन गाम नागि जायत छथि। एक-दु मास घन पर वीता कऽ सेन दिल्ली आओन वंगठेन दसि नागि जायत छथि। ई साठक तीन-चारि मास वेनोणगान नहैत छथि। कथाकाल के अंदरक कथाकाली मनी जायत छै।

मपनहो टोठ पर मोठा नाम के अंदरक कथाकाल अही कालस मनी गेठैक। मोठा नाम वेणो, हानभोगयिम, ढोठक, हैठ वगैरह वाद्य यंत्र वजा पैत छथाह। अठठाह-उठठ के गाय मे तवठा वजावैत छथाह दुगगा पूजा मे ओ। नीक जनिगी जीवै केन कोसशि केठाह अछि मोठा नाम। गाम पर नहि केँ ओ पहिने नकिशा यथावैत छथाह। हमन वऽको दीदी केँ सासुन कनभौषी कठोक वेन ओ गेवाह नकिशा ठकऽ।

दहेण ठकऽ ठोक अगिशिाण छथि। ई कहयिा म्पतम होयत ? दानवी जकाँ ई समाण ठेठ अगिशिाप वगठ छै। वेटा वाठा सोयैत छथि। जे हम वेटा जगमठहुँ वेटी वाठा केँ जनिगी केँ तवाह कनवाक ठेठ। आन गाम मे दहेण ठेठ हिसा गऽ जायत छै, परअ्य मंगलौगा मे ई नहि भेठ अरु यनी। हमन व्याह वनि। दहेण केँ भेठ अछि २०१६ मे। गुसा केँ हुनकन माय जे देठकैरह ओ अपन भोग सँ। कोनहयिा गाम हॉर्ट दुआरे सेमस अछि। जयगगन सँ पहिने पैसेजान अरु हॉस्टल पर नूकैत अछि। हम अपन ययेना गा ई केन व्याह मे गेठ नहि कोनहयिा वाता। ई नहि वुहठ छठ जे वाताण सेन आवऽ परत ठक अरु गमा दूटा वेटी आओन एकटा वेटा वाप हम भेठहुँ अछि।

-संतोष कुमार नाथ ' वटोही', गुलाम - मंगलौगा

अपन भंगव्ये दृष्टि-विश्रान्त-वृद्धि-व्यापारियोग पन पडाउ।

इपद्य याम्

इण्डं जयिउन नहमान जाशुगी - एकटा गदी छत् एहि गदी मे

इण्डं सुमंगाठा हा- सत्य कहूँ

इण्डाण कशियेन मशिन-आत्मवध

डॉ. जयिाउम रहमान जाशुगी - एकटा गदी छप् एहि गदी मे



डॉ. जयिाउम रहमान जाशुगी

एकटा गदी छप् एहि गदी मे

एकटा गदी छथ

भेघ प्योपौन आविगिे
कतहु गदी छथ
कतहु काठोनी छथ
एतय वनप्या गेथ

समुद्दुन जाँकँ ठागथ
पागि छीटा मानिदिथक
एहनिदिपवा ऐथ नुकुजाशुन छथ
नप्यन पागिकोगा एहनाशुन छथ

कतहु मोट-मोट गाछ-वनिछि छथ
थाकथ प्रागनी नुकुजाशुन छथ
पागिके छूवैत डंढा हवा
सवके डंढा कनवैत छथ

गहिआव गदी मे पागिअछि
वाए, थाथ मानुन यूना अछि
अपन जनुजनु पोप्यनपिडुथ अछि
पुनाग यटिगी जाँकँ ठपिथ

२

एहनिदी मे

एही गदीक काग मे आवा नहए अछा
हम अहाँसँ प्रेम केवै
अहाँ सेहो कहि पागि छडि कदि ऐठियिक
प्रेम वना देठक

हम आ अहाँ गदीक काग मे वैसए छी
एहि ठहरा मे हेना गेए
जायन उँडा हवा वहैत अछा
हम सग कोना मे गीद आवा जाश छठुँ

जायन माछ कूद जाश छए
अहाँ कहैत छठुँ एक मेठ
हमना सेहो देखापुशी गेए
अहाँ एहिना गप्प कतैत छठुँ

जँ गदी गहि नहैत न' होश
अहाँ हमनासँ प्रेम गहि कतैत छी
जायन कहि हम दुगू कगान नहि
ई गेट हन वेन गहि होश छैक

तोहन प्रेम एकटा गदी अछा
कोयए आवा गावैत अछा
गदीसँ कहियौ गहि वदि होश अछा
माछ एकना वगि मन जाश अछा

-डॉ. जयिउत नहमान जाशुगी, सुनाकोत्तन हग्दी वशिष्ठ, मनिजा
गाथवि कंठेज गया, वहिन २२३००१

श्री ८८३४८४७८४९, ६२०५२५४२५५, डुंगनाहभागगाडनित्दवामाठि
छोम

अपन मंगव्ये दगिगाठिसगाडडवदिहवामाठियोम पन पडाउ।

डरडॉ सुमंगाठा हा- सग्य कहुँ



डॉ सुमंगाठा हा
सग्य कहुँ

मथिठि वछिहा, मैथिठि ज्ञान गय अरुछ
माग्राषा छथिसे मागसम्भाग वड अरुछा-

वदिप्रापना गान म वनियति वसग्न अरुछ,
कनओ ग उपव्य अरुछा !ई सौन्दर्यनस

जयदेव कविकः !पहुँ जयग गीतगोवनिद,
मन पडे गकषम, पुनसद्वि नवमिथिठि के !
कवीश्वर यदा हा के मैथिठि मे नामायम,
वुद्यगाथ हा के 'महागान' के पायायम।

अनेकागेक वद्विवाग अछि माष मैथिली मे
नुमी मो-नश्यो नूथ घटथ जाय नुमी

ननुहुना अपि ठागग ठुपुनपुनाय मरुथ जाय,
नहि अपि, अगु मष, वकिसि मरुथ जाय।

नीतिंगी, कीन्तिनी कीन्तिपिताका सग,
मेथन न वयिअवग, कवि वद्वियापति सग।

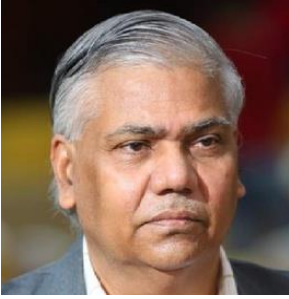
अनुवादति ननुहुना मे !नाकयि कतौ मेथन
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद मैथिली मे।

मथिलिक पुनपिठ अछि वनासति, मथिकिया म
सगा-जगक !ज्जागकोष पुनपुनस, गान्गी समुमाष म।

-डॉ सुमंगला हा, मथ (पोथी & हगिदी), सुह्य

अपन मंगुप्रे दतिनीति सगा उद्वद्विहावाभापियोम पुन पडाउ।

३३१११ कश्मीर मस्मि-आग्मवठ



१११ कश्मीर मस्मि, ११११११ यीश्व जेगलठ मैनेजल (इ),
वीएसएसएस(मुम्प्याव्य), दद्वि, गाम-अने जेह, पो अने हाट, मधुवनी
आग्मवठ

१११ ह घन के छह गहप्या म्ह,
ओ नऽ प्पसवे कन, यडा मा

सो ङ-यो ङा, कनेक का ठ,
छो टो वसा न कनै की हा ठ?

एमहन टेढ, ओमहन सो ह,
उडा ने पवैठ अछअपनो वो ह।

जे गहअपन पए पन ग ढ,
को ना यढन, जनिगी क पहा ङ?

ककन मनौ पेट वएन सँ?
नगि ठऽ कऽ के नहए यैग सँ? सँ

वा वा वऽठे पुनए मनो नथ?
कएक जो गा, ना पव गजि समनथ?

वो ठ-मनो स, आ' आशूवा सग,
प्रथा नथक, ने अछिओ पा सडा

पैँय- उया न, वुह्यओ वऽठक,
वा ट ने ई, जगिगी क, अछियऽठका

टकिठ दो सक मएनकि आशा पन जो वन,
ओ नवन अपन ? जकन पा ओठ जनसी मन ।

वेका न, अकन महठ-अटा नी,
सग सँ वढा आ अपन एकया नी ।

सो अएगन गहि अछि छपुपन मो ग,
जो अपन गहि, आ ने जकन मो गा

पुनषा नथ अपन अछि, असठी वन,
ओ जो न, जो नठ गजि वठ सँ नसा

करोक दून वन घियियिअओतै?
संजनि जा हगिा डी क अछि वगएठ,

ओहिंगा, घसिआस्त नहा ओ जागिगी,
जा हीमे अछनिह, जा गठ आत्मवध

अगकन वध के केहेन आस?
मेटा ओत मेघ, मृगुमृगि-पिआस?

जे कतैत अछिअपन पुनया स,
गुफत गहिओ, डेकत अका सा

अपन नऽ एको ओ टा पा गि,
ओकने देप्पी, जठथिमा गि

सकता-प्या गिपिडठ, तकिओ
नऽ, अपना ना ग गिगि,
वगिजिगैक ओ सुवनास सन,
जकना वुहैत छी पतिगडि

अगकन ओ प टका सँ वेसी,

अपन एक छदा म,
सक गनिका ज कनए वध
वढिआँ, गूडथिजे हा मा

कतवो गी क नहै या न, मुदा
गढ गहि नहा घन, सो उन सँ,

दा म्पत्त जागिगी गहियैत छै,

कूटला, पापी, अगे ७१ सँ

कामेन्ट्रियि दा स अछि भगो वठक,
आदेश नऽ हो सक, ओकना यठक।

पैय -उया एक वठ सँ गहि यैठि अछि जगिगी,
जड़विनु को गो नुक हनि अरि नहैछ ने सुगिगी।

जकना ठा, आत्मवठक आयुध,
ओ जी नन, जगिगी क हऽक युद्ध।

अपन मंगल्ये दगिगीसनाडऽवदिलवाभाषियोम पन पडाउ।

४ अंगुलक

१. वदह ६-पुनकिक सगटा पुनाग अंक वदहो 'जुनगा' स । ७७७७ सिसेस

२. मैथि पोथी डाउगठोड मातिहथि शोकस यौगठोड

३. मैथि आँडयो-वोडयोिक संकठग मातिहथि शुद्धीस- वदिस

४. मैथि शसि, वाठ आ कशोऽ साहत्प मातिहथि छहठडेग डतिगतुने

५. वदह सुनी कोग

६. वदह ६- ठगडिग

७. वदह सूयग संपुक् अन्वेषम

८. शानठठठ डतिगतुने नि मातिहथि गद वदह मातिहथि डतिगतुने मोवेभग

९. वदह मथिथिक प्पोज

१०. वदह मथिथि ग्ग

वृद्धिह ई-पत्रांकिक सगटा पुनाग अंक वृद्धिहो पुनाग' स १९९०९६ सिसेस

वृद्धिह पुनाग अंक

वृद्धिह वृद्धिह वृद्धिह विदेह हानपसूवृद्धिहयोनि वृद्धिह पुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रांकिक वृद्धिह इसाग मागिहथि
ढोगनगिहणथे पुनाग वृद्धिह पुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रांकिक गव अंक देपवाक छे पृष्ठ सगकेँ गच्छिनेस कर देपू अथौयस
नेउनेसह नहे पागेस डीन वृद्धिहो नौ सिसेसोड वर्यएहअ

षोणयहौतिहनि ओए इससेसोड वृद्धिह

हानपसूवृद्धिहयोनि

वृद्धिह अयहवि ोड ओए इससेस वृद्धिह पुनाग अंकक आन्कास्व (पूनागः
अव्यवसायिक उद्देश्य आ माग्न एकेडमिक प्रयोग छे) वृद्धिह ई-पत्रांकिक
सगटा पुनाग अंक पीडीएफ डाउनलोड छे कमानुसाग नीयाँक ठिकपन उपव्य
अर्था अथ नहोए सिसेसोड वृद्धिहो पुनाग मे वृद्धिहो डीन पद दौगथोए
न नहे नेसपेयनवि ठिकस वेथौ

ननिहना, नेवाडी आ कैथी श्रॉम्सट डाउनलोड घोगथे' स सोतो ढेगनस पनोपेयन घतिहव

ननिहना गरी श्रॉम्सट	कैथी ओटोस्व	कैथी श्रॉम्सट	नेवाडी ओटोस्व	नेवाडी श्रॉम्सट
---------------------	-------------	---------------	---------------	-----------------

हानपसूःडोगनसगोगथेयोनि (घोगथे ओपेन ढेगनस दौगथोए)

थनिहना ओडडठनि प्येवोमह दौगथोए

प्येवमान थनिहना वेदिये वेवानागानि प्येवोमहस दौगथोए

हानपसूःमागनपनोपेयनगतिथानिहना (थनिहना प्येवोमह ओगथनि)

१

गणेश्वर गुरु (सम्पादन)

वद्विह-सद्वह १-२५ **वद्विहयुगि**
 वद्विह ६-५११किक अंक १-३५० सँ-
 मैथिलीक सन्वसनेषु गदुय आ
 पदुयक एकटा सडगगगग संकठग

दवगगगी	डथिलीकषड
वद्विहसद्वह १	वद्विहः सद्वह १ गडिहुग
वद्विहःसद्वह २ मैथिली ५१वगुथ-गविवगुथ-सडगगगग	वद्विहः सद्वह २ गडिहुग
वद्विहःसद्वह ३ मैथिली पदुय	वद्विहः सद्वह ३ गडिहुग
वद्विहःसद्वह ४ मैथिली कथड	वद्विहः सद्वह ४ गडिहुग
वद्विह मैथिली वद्विह कथड वद्विह सद्वह ५।	वद्विहः सद्वह ५ गडिहुग
वद्विह मैथिली वद्विह कथड वद्विह सद्वह ५२-संसुकगडड-।	वद्विहःगडिहुग। २-संसुकगडड सद्वह ५ :
वद्विह मैथिली उषुकथड वद्विह सद्वह ६।	वद्विहः सद्वह ६ गडिहुग
वद्विह मैथिली पदुय वद्विह सद्वह ७।	वद्विहः सद्वह ७ गडिहुग
वद्विह मैथिली गदुय उडसड वद्विह सद्वह ८।	वद्विहः सद्वह ८ गडिहुग
वद्विह मैथिली शडु उडसड वद्विह सद्वह ८।	वद्विहः सद्वह ८ गडिहुग
वद्विह मैथिली ५१वगुथ-गविवगुथ-सडगगगग वद्विह सद्वह १०।	वद्विहः सद्वह १० गडिहुग
वद्विहःसद्वह ११:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह ११ :
वद्विहःसद्वह १२:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १२ :
वद्विहःसद्वह १३:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १३ :
वद्विहःसद्वह १४:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १४ :
वद्विहःसद्वह १५:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १५ :
वद्विहःसद्वह १६:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १६ :
वद्विहःसद्वह १७:	वद्विहःगडिहुग। सद्वह १७ :

वर्द्धिःसदेह १८:	वर्द्धिःसदेह १८:
वर्द्धिःसदेह १९:	वर्द्धिःसदेह १९:
वर्द्धिःसदेह २०:	वर्द्धिःसदेह २०:
वर्द्धिःसदेह २१:	वर्द्धिःसदेह २१:
वर्द्धिःसदेह २२:	वर्द्धिःसदेह २२:
वर्द्धिःसदेह २३:	वर्द्धिःसदेह २३:
वर्द्धिःसदेह २४:	वर्द्धिःसदेह २४:
वर्द्धिःसदेह २५	वर्द्धिःसदेह २५ तिमिहना

वर्द्धिः-सदेह २६-३६ **वर्द्धिःसदेहयोगि**
 वर्द्धिः ई-पत्राकारिक अंक १-३५० सँ-
 थोम आध्यात्मि मैथिलीक सन्वसन्नेष
 मूठ आ अगूदति गद्दु आ पद्दुकर
 एकटा समागागत संकठग

वर्द्धिःसदेह २६ (डॉ. शमश कुमान सिंह आ डॉ. अशुभ कुमान सिंह अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २६ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह २७ (गणेश कुमान आ नवी श्राम पाठक आग बाबासँ अगूदति गद्दु आ पद्दुकर अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २७ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह २८:अगूदति गद्दु आ पद्दुकर - १३५० सँ	वर्द्धिःसदेह २८ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह २९ (नवी श्राम पाठक आ डॉ. कैलाश कुमान मशिन- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २९ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह ३० (संकठ-कारिणीक वर्द्धिसदेह योगि अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३०:
वर्द्धिःसदेह ३१ (डॉ. कामिणी कामायनी आ कुमान मंगल कश्यप- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३१ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह ३२ (नयनात्मक गद्दु-पद्दुकर योगि भाग-१- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३२ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह ३३ (नयनात्मक गद्दु-पद्दुकर योगि भाग-२- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३३ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह ३४ (नयनात्मक गद्दु-पद्दुकर योगि भाग-३- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३४ तिमिहना
वर्द्धिःसदेह ३५ (नयनात्मक गद्दु-पद्दुकर योगि भाग-४- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३५ तिमिहना

वद्विहःसद्वहः उद्व (नथनानमक गद्वय-पद्वय षेपन नान-प- अंक १-उप० सँ)	वद्विहः सद्वहः उद्व नानिह्वान
--	-------------------------------

धूपीएससी आ आन पुनानियोगानि पनीकषा षेठ दैपू:

वद्विहःसद्वहः १७	वद्विहःसद्वहः २१	वद्विहःसद्वहः २३	वद्विहःसद्वहः २६	वद्विहःसद्वहः २८
वद्विहःसद्वहः ३०	वद्विहःसद्वहः ३२	वद्विहःसद्वहः ३३	वद्विहःसद्वहः ३४	वद्विहःसद्वहः ३५

२

वद्विहक सनटा पुनान अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

वद्विहक अंक १-१४८ (दिवनानानि, नथिठिकषन आ वनेठने)

दिवनानानि	नथिठिकषन	वनेठ
वद्विहः ०१ ०१ ०८	वद्विहः ०१ ०१ ०८ थनिल्वान	१
वद्विहः १५ ०१ ०८	वद्विहः १५ ०१ ०८ थनिल्वान	२
वद्विहः ०१ ०२ ०८	वद्विहः ०१ ०२ ०८ थनिल्वान	३
वद्विहः १५ ०२ ०८	वद्विहः १५ ०२ ०८ थनिल्वान	४
वद्विहः ०१ ०३ ०८	वद्विहः ०१ ०३ ०८ थनिल्वान	५
वद्विहः १५ ०३ ०८	वद्विहः १५ ०३ ०८ थनिल्वान	६
वद्विहः ०१ ०४ २००८	वद्विहः ०१ ०४ २००८ थनिल्वान	७
वद्विहः १५ ०४ २००८	वद्विहः १५ ०४ २००८ थनिल्वान	८
वद्विहः ०१ ०५ २००८	वद्विहः ०१ ०५ २००८ थनिल्वान	९
वद्विहः १५ ०५ २००८	वद्विहः १५ ०५ २००८ थनिल्वान	१०
वद्विहः ०१ ०६ २००८	वद्विहः ०१ ०६ २००८ थनिल्वान	११
वद्विहः १५ ०६ २००८	वद्विहः १५ ०६ २००८ थनिल्वान	१२

वर्द्धि ०१ ०७ २००८	वर्द्धि ०१ ०७ २००८ थगिहना	१३
वर्द्धि १५ ०७ २००८	वर्द्धि १५ ०७ २००८ थगिहना	१४
वर्द्धि ०१ ०८ २००८	वर्द्धि ०१ ०८ २००८ थगिहना	१५
वर्द्धि १५ ०८ २००८	वर्द्धि १५ ०८ २००८ थगिहना	१६
वर्द्धि ०१ ०९ २००८	वर्द्धि ०१ ०९ २००८ थगिहना	१७
वर्द्धि १५ ०९ २००८	वर्द्धि १५ ०९ २००८ थगिहना	१८
वर्द्धि ०१ १० २००८	वर्द्धि ०१ १० २००८ थगिहना	१९
वर्द्धि १५ १० २००८	वर्द्धि १५ १० २००८ थगिहना	२०
वर्द्धि ०१ ११ २००८	वर्द्धि ०१ ११ २००८ थगिहना	२१
वर्द्धि १५ ११ २००८	वर्द्धि १५ ११ २००८ थगिहना	२२
वर्द्धि ०१ १२ २००८	वर्द्धि ०१ १२ २००८ थगिहना	२३
वर्द्धि १५ १२ २००८	वर्द्धि १५ १२ २००८ थगिहना	२४
वर्द्धि ०१ ०१ २००९	वर्द्धि ०१ ०१ २००९ थगिहना	२५
वर्द्धि १५ ०१ २००९	वर्द्धि १५ ०१ २००९ थगिहना	२६
वर्द्धि ०१ ०२ २००९	वर्द्धि ०१ ०२ २००९ थगिहना	२७
वर्द्धि १५ ०२ २००९	वर्द्धि १५ ०२ २००९ थगिहना	२८
वर्द्धि ०१ ०३ २००९	वर्द्धि ०१ ०३ २००९ थगिहना	२९
वर्द्धि १५ ०३ २००९	वर्द्धि १५ ०३ २००९ थगिहना	३०
वर्द्धि ०१ ०४ २००९	वर्द्धि ०१ ०४ २००९ थगिहना	३१
वर्द्धि १५ ०४ २००९	वर्द्धि १५ ०४ २००९ थगिहना	३२
वर्द्धि ०१ ०५ २००९	वर्द्धि ०१ ०५ २००९ थगिहना	३३
वर्द्धि १५ ०५ २००९	वर्द्धि १५ ०५ २००९ थगिहना	३४
वर्द्धि ०१ ०६ २००९	वर्द्धि ०१ ०६ २००९ थगिहना	३५
वर्द्धि १५ ०६ २००९	वर्द्धि १५ ०६ २००९ थगिहना	३६
वर्द्धि ०१ ०७ २००९	वर्द्धि ०१ ०७ २००९ थगिहना	३७
वर्द्धि १५ ०७ २००९	वर्द्धि १५ ०७ २००९ थगिहना	३८
वर्द्धि ०१ ०८ २००९	वर्द्धि ०१ ०८ २००९ थगिहना	३९
वर्द्धि १५ ०८ २००९	वर्द्धि १५ ०८ २००९ थगिहना	४०
वर्द्धि ०१ ०९ २००९	वर्द्धि ०१ ०९ २००९ थगिहना	४१
वर्द्धि १५ ०९ २००९	वर्द्धि १५ ०९ २००९ थगिहना	४२

वर्द्धि ०१ १० २००८	वर्द्धि ०१ १० २००८ तामिळुना	४३
वर्द्धि १५ १० २००८	वर्द्धि १५ १० २००८ तामिळुना	४४
वर्द्धि ०१ ११ २००८	वर्द्धि ०१ ११ २००८ तामिळुना	४५
वर्द्धि १५ ११ २००८	वर्द्धि १५ ११ २००८ तामिळुना	४६
वर्द्धि ०१ १२ २००८	वर्द्धि ०१ १२ २००८ तामिळुना	४७
वर्द्धि १५ १२ २००८	वर्द्धि १५ १२ २००८ तामिळुना	४८
वर्द्धि ०१ ०१ २०१०	वर्द्धि ०१ ०१ २०१० तामिळुना	४८
वर्द्धि १५ ०१ २०१०	वर्द्धि १५ ०१ २०१० तामिळुना	५०
वर्द्धि ०१ ०२ २०१०	वर्द्धि ०१ ०२ २०१० तामिळुना	५१
वर्द्धि १५ ०२ २०१०	वर्द्धि १५ ०२ २०१० तामिळुना	५२
वर्द्धि ०१ ०३ २०१०	वर्द्धि ०१ ०३ २०१० तामिळुना	५३
वर्द्धि १५ ०३ २०१०	वर्द्धि १५ ०३ २०१० तामिळुना	५४
वर्द्धि ०१ ०४ २०१०	वर्द्धि ०१ ०४ २०१० तामिळुना	५५
वर्द्धि १५ ०४ २०१०	वर्द्धि १५ ०४ २०१० तामिळुना	५६
वर्द्धि ०१ ०५ २०१०	वर्द्धि ०१ ०५ २०१० तामिळुना	५७
वर्द्धि १५ ०५ २०१०	वर्द्धि १५ ०५ २०१० तामिळुना	५८
वर्द्धि ०१ ०६ २०१०	वर्द्धि ०१ ०६ २०१० तामिळुना	५८
वर्द्धि १५ ०६ २०१०	वर्द्धि १५ ०६ २०१० तामिळुना	६०
वर्द्धि ०१ ०७ २०१०	वर्द्धि ०१ ०७ २०१० तामिळुना	६१
वर्द्धि १५ ०७ २०१०	वर्द्धि १५ ०७ २०१० तामिळुना	६२
वर्द्धि ०१ ०८ २०१०	वर्द्धि ०१ ०८ २०१० तामिळुना	६३
वर्द्धि १५ ०८ २०१०	वर्द्धि १५ ०८ २०१० तामिळुना	६४
वर्द्धि ०१ ०८ २०१०	वर्द्धि ०१ ०८ २०१० तामिळुना	६५
वर्द्धि १५ ०८ २०१०	वर्द्धि १५ ०८ २०१० तामिळुना	६६
वर्द्धि ०१ १० २०१०	वर्द्धि ०१ १० २०१० तामिळुना	६७
वर्द्धि १५ १० २०१०	वर्द्धि १५ १० २०१० तामिळुना	६८
वर्द्धि ०१ ११ २०१०	वर्द्धि ०१ ११ २०१० तामिळुना	६८
वर्द्धि १५ ११ २०१०	वर्द्धि १५ ११ २०१० तामिळुना	७०
वर्द्धि ०१ १२ २०१०	वर्द्धि ०१ १२ २०१० तामिळुना	७१
वर्द्धि १५ १२ २०१०	वर्द्धि १५ १२ २०१० तामिळुना	७२

वर्द्धि ०१ ०१ २०११	वर्द्धि ०१ ०१ २०११ तानिह्णुवा	७३
वर्द्धि १५ ०१ २०११	वर्द्धि १५ ०१ २०११ तानिह्णुवा	७४
वर्द्धि ०१ ०२ २०११	वर्द्धि ०१ ०२ २०११ तानिह्णुवा	७५
वर्द्धि १५ ०२ २०११	वर्द्धि १५ ०२ २०११ तानिह्णुवा	७६
वर्द्धि ०१ ०३ २०११	वर्द्धि ०१ ०३ २०११ तानिह्णुवा	७७
वर्द्धि १५ ०३ २०११	वर्द्धि १५ ०३ २०११ तानिह्णुवा	७८
वर्द्धि ०१ ०४ २०११	वर्द्धि ०१ ०४ २०११ तानिह्णुवा	७९
वर्द्धि १५ ०४ २०११	वर्द्धि १५ ०४ २०११ तानिह्णुवा	८०
वर्द्धि ०१ ०५ २०११	वर्द्धि ०१ ०५ २०११ तानिह्णुवा	८१
वर्द्धि १५ ०५ २०११	वर्द्धि १५ ०५ २०११ तानिह्णुवा	८२
वर्द्धि ०१ ०६ २०११	वर्द्धि ०१ ०६ २०११ तानिह्णुवा	८३
वर्द्धि १५ ०६ २०११	वर्द्धि १५ ०६ २०११ तानिह्णुवा	८४
वर्द्धि ०१ ०७ २०११	वर्द्धि ०१ ०७ २०११ तानिह्णुवा	८५
वर्द्धि १५ ०७ २०११	वर्द्धि १५ ०७ २०११ तानिह्णुवा	८६
वर्द्धि ०१ ०८ २०११	वर्द्धि ०१ ०८ २०११ तानिह्णुवा	८७
वर्द्धि १५ ०८ २०११	वर्द्धि १५ ०८ २०११ तानिह्णुवा	८८
वर्द्धि ०१ ०९ २०११	वर्द्धि ०१ ०९ २०११ तानिह्णुवा	८९
वर्द्धि १५ ०९ २०११	वर्द्धि १५ ०९ २०११ तानिह्णुवा	९०
वर्द्धि ०१ १० २०११	वर्द्धि ०१ १० २०११ तानिह्णुवा	९१
वर्द्धि १५ १० २०११	वर्द्धि १५ १० २०११ तानिह्णुवा	९२
वर्द्धि ०१ ११ २०११	वर्द्धि ०१ ११ २०११ तानिह्णुवा	९३
वर्द्धि १५ ११ २०११	वर्द्धि १५ ११ २०११ तानिह्णुवा	९४
वर्द्धि ०१ १२ २०११	वर्द्धि ०१ १२ २०११ तानिह्णुवा	९५
वर्द्धि १५ १२ २०११	वर्द्धि १५ १२ २०११ तानिह्णुवा	९६
वर्द्धि ०१ ०१ २०१२	वर्द्धि ०१ ०१ २०१२ तानिह्णुवा	९७
वर्द्धि १५ ०१ २०१२	वर्द्धि १५ ०१ २०१२ तानिह्णुवा	९८
वर्द्धि ०१ ०२ २०१२	वर्द्धि ०१ ०२ २०१२ तानिह्णुवा	९९
वर्द्धि १५ ०२ २०१२	वर्द्धि १५ ०२ २०१२ तानिह्णुवा	१००
वर्द्धि ०१ ०३ २०१२	वर्द्धि ०१ ०३ २०१२ तानिह्णुवा	१०१
वर्द्धि १५ ०३ २०१२	वर्द्धि १५ ०३ २०१२ तानिह्णुवा	१०२

वर्द्धि ०१ ०४ २०१२	वर्द्धि ०१ ०४ २०१२ तिमिहुना	१०३
वर्द्धि १५ ०४ २०१२	वर्द्धि १५ ०४ २०१२ तिमिहुना	१०४
वर्द्धि ०१ ०५ २०१२	वर्द्धि ०१ ०५ २०१२ तिमिहुना	१०५
वर्द्धि १५ ०५ २०१२	वर्द्धि १५ ०५ २०१२ तिमिहुना	१०६
वर्द्धि ०१ ०६ २०१२	वर्द्धि ०१ ०६ २०१२ तिमिहुना	१०७
वर्द्धि १५ ०६ २०१२	वर्द्धि १५ ०६ २०१२ तिमिहुना	१०८
वर्द्धि ०१ ०७ २०१२	वर्द्धि ०१ ०७ २०१२ तिमिहुना	१०९
वर्द्धि १५ ०७ २०१२	वर्द्धि १५ ०७ २०१२ तिमिहुना	११०
वर्द्धि ०१ ०८ २०१२	वर्द्धि ०१ ०८ २०१२ तिमिहुना	१११
वर्द्धि १५ ०८ २०१२	वर्द्धि १५ ०८ २०१२ तिमिहुना	११२
वर्द्धि ०१ ०९ २०१२	वर्द्धि ०१ ०९ २०१२ तिमिहुना	११३
वर्द्धि १५ ०९ २०१२	वर्द्धि १५ ०९ २०१२ तिमिहुना	११४
वर्द्धि ०१ १० २०१२	वर्द्धि ०१ १० २०१२ तिमिहुना	११५
वर्द्धि १५ १० २०१२	वर्द्धि १५ १० २०१२ तिमिहुना	११६
वर्द्धि ०१ ११ २०१२	वर्द्धि ०१ ११ २०१२ तिमिहुना	११७
वर्द्धि १५ ११ २०१२	वर्द्धि १५ ११ २०१२ तिमिहुना	११८
वर्द्धि ०१ १२ २०१२	वर्द्धि ०१ १२ २०१२ तिमिहुना	११९
वर्द्धि १५ १२ २०१२	वर्द्धि १५ १२ २०१२ तिमिहुना	१२०
वर्द्धि ०१ ०१ २०१३	वर्द्धि ०१ ०१ २०१३ तिमिहुना	१२१
वर्द्धि १५ ०१ २०१३	वर्द्धि १५ ०१ २०१३ तिमिहुना	१२२
वर्द्धि ०१ ०२ २०१३	वर्द्धि ०१ ०२ २०१३ तिमिहुना	१२३
वर्द्धि १५ ०२ २०१३	वर्द्धि १५ ०२ २०१३ तिमिहुना	१२४
वर्द्धि ०१ ०३ २०१३	वर्द्धि ०१ ०३ २०१३ तिमिहुना	१२५
वर्द्धि १५ ०३ २०१३	वर्द्धि १५ ०३ २०१३ तिमिहुना	१२६
वर्द्धि ०१ ०४ २०१३	वर्द्धि ०१ ०४ २०१३ तिमिहुना	१२७
वर्द्धि १५ ०४ २०१३	वर्द्धि १५ ०४ २०१३ तिमिहुना	१२८
वर्द्धि ०१ ०५ २०१३	वर्द्धि ०१ ०५ २०१३ तिमिहुना	१२९
वर्द्धि १५ ०५ २०१३	वर्द्धि १५ ०५ २०१३ तिमिहुना	१३०
वर्द्धि ०१ ०६ २०१३	वर्द्धि ०१ ०६ २०१३ तिमिहुना	१३१
वर्द्धि १५ ०६ २०१३	वर्द्धि १५ ०६ २०१३ तिमिहुना	१३२

वस्यपरुअ २२०	वस्यपरुअ २२१	वस्यपरुअ २२२	वस्यपरुअ २२३	वस्यपरुअ २२४
वस्यपरुअ २२५	वस्यपरुअ २२६	वस्यपरुअ २२७	वस्यपरुअ २२८	वस्यपरुअ २२९
वस्यपरुअ २३०	वस्यपरुअ २३१	वस्यपरुअ २३२	वस्यपरुअ २३३	वस्यपरुअ २३४
वस्यपरुअ २३५	वस्यपरुअ २३६	वस्यपरुअ २३७	वस्यपरुअ २३८	वस्यपरुअ २३९
वस्यपरुअ २४०	वस्यपरुअ २४१	वस्यपरुअ २४२	वस्यपरुअ २४३	वस्यपरुअ २४४
वस्यपरुअ २४५	वस्यपरुअ २४६	वस्यपरुअ २४७	वस्यपरुअ २४८	वस्यपरुअ २४९
वस्यपरुअ २५०	वस्यपरुअ २५१	वस्यपरुअ २५२	वस्यपरुअ २५३	वस्यपरुअ २५४
वस्यपरुअ २५५	वस्यपरुअ २५६	वस्यपरुअ २५७	वस्यपरुअ २५८	वस्यपरुअ २५९
वस्यपरुअ २६०	वस्यपरुअ २६१	वस्यपरुअ २६२	वस्यपरुअ २६३	वस्यपरुअ २६४
वस्यपरुअ २६५	वस्यपरुअ २६६	वस्यपरुअ २६७	वस्यपरुअ २६८	वस्यपरुअ २६९
वस्यपरुअ २७०	वस्यपरुअ २७१	वस्यपरुअ २७२	वस्यपरुअ २७३	वस्यपरुअ २७४
वस्यपरुअ २७५	वस्यपरुअ २७६	वस्यपरुअ २७७	वस्यपरुअ २७८	वस्यपरुअ २७९
वस्यपरुअ २८०	वस्यपरुअ २८१	वस्यपरुअ २८२	वस्यपरुअ २८३	वस्यपरुअ २८४
वस्यपरुअ २८५	वस्यपरुअ २८६	वस्यपरुअ २८७	वस्यपरुअ २८८	वस्यपरुअ २८९
वस्यपरुअ २९०	वस्यपरुअ २९१	वस्यपरुअ २९२	वस्यपरुअ २९३	वस्यपरुअ २९४
वस्यपरुअ २९५	वस्यपरुअ २९६	वस्यपरुअ २९७	वस्यपरुअ २९८	वस्यपरुअ २९९
वस्यपरुअ ३००	वस्यपरुअ ३०१	वस्यपरुअ ३०२	वस्यपरुअ ३०३	वस्यपरुअ ३०४
वस्यपरुअ ३०५	वस्यपरुअ ३०६	वस्यपरुअ ३०७	वस्यपरुअ ३०८	वस्यपरुअ ३०९
वस्यपरुअ ३१०	वस्यपरुअ ३११	वस्यपरुअ ३१२	वस्यपरुअ ३१३	वस्यपरुअ ३१४
वस्यपरुअ ३१५	वस्यपरुअ ३१६	वस्यपरुअ ३१७	वस्यपरुअ ३१८	वस्यपरुअ ३१९
वस्यपरुअ ३२०	वस्यपरुअ ३२१	वस्यपरुअ ३२२	वस्यपरुअ ३२३	वस्यपरुअ ३२४
वस्यपरुअ ३२५	वस्यपरुअ ३२६	वस्यपरुअ ३२७	वस्यपरुअ ३२८	वस्यपरुअ ३२९
वस्यपरुअ ३३०	वस्यपरुअ ३३१	वस्यपरुअ ३३२	वस्यपरुअ ३३३	वस्यपरुअ ३३४
वस्यपरुअ ३३५	वस्यपरुअ ३३६	वस्यपरुअ ३३७	वस्यपरुअ ३३८	वस्यपरुअ ३३९
वस्यपरुअ ३४०	वस्यपरुअ ३४१	वस्यपरुअ ३४२	वस्यपरुअ ३४३	वस्यपरुअ ३४४

वृद्धिंक सग अंक सम्वन्धी कछि आवस्यक पोथी पागकानी

डोग मतिहठि षगिग डगगुगो- घाजोगदनी थहाकुनी (२००९ २०२३)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहि वेनी)

डोग मतिहठिकसहान- घाजोगदनी थहाकुनी (२००९ २०२३)

डोग रसुअ गहलुगह मतिहठिकसहान- घाजोगदनी थहाकुनी (२००९ २०२३)

डोग मगठिठे गहलुगह मतिहठिकसहान- घाजोगदनी थहाकुनी (२००९ २०२३)

थगिहाना ओउउठिगे षेयवोमद दौगठोद

षेयमग थगिहाना वेदथि वेवगगगानी षेयवोमदस दौगठोद

डोग प्पतिह- घाजोगदनी थहाकुनी (२००९ २०२३)

कैथी ठपि (मैथिली साहित्य संस्थान डउगठोउ ठिक)

- डोमन सौमि- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन छाउठगिनापहयि सौमि (ढगजागा)- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन उमहु पयनपिन- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन थविनाप पयनपिन- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन ह्यापगेसे पयनपिन डोम हाकुि- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन गनाहमि- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)
- डोमन प्पहानोसहाह- घाजोगदना थहाकुन (२००८ २०२३)

सुथायो सगमम जोगा मथिथि-गण, मथिथिक पोण, वदिह ई-उमगाडि, वदिह सगनी-कोगा, वदिह पेटा (वदिह ई-पानकिक सगटा पुगन अंक; वदिह पोथी डाउणठोड; वदिह मैथिथि आं उथि-वीउथिक संकठन आ वदिह शसि, वाठ आ कसिीन साहगिय) आ सुयगा-संपनक-अग्नेपाम (नियुठदगिग) आगाउठठ डगिगाने गि मागिहथि गद वदिह मागिहथि डगिगाने मोवेमेगा) सग अंकमे समाग अर्था गइ हेतु ई सग सगमम सग अंकमे वै देठ पास अर्था ई सग सगमम देपवा ठेठ कठिक कूल वदिहक ३४६ म, ३४७ म, ३६६ म आ ३७४ म अंक ऐ यानु अंकमे सम्मथिगि नूपे ई सग सगमम देठ गेठ अर्था

वदिहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवगागनी	मथिथिकुषम	आसप्यी	मैथिथि व्नेठ
वस्यपक ३४५	वस्यपक ३४५ थोमहुग	वस्यपक ३४५ २५अ	वस्यपक ३४५ गनाठिठि
वस्यपक ३४६	वस्यपक ३४६ थोमहुग	वस्यपक ३४६ २५अ	वस्यपक ३४६ गनाठिठि
वस्यपक ३४७	वस्यपक ३४७ थोमहुग	वस्यपक ३४७ २५अ	वस्यपक ३४७ गनाठिठि
वस्यपक ३४८	वस्यपक ३४८ थोमहुग	वस्यपक ३४८ २५अ	वस्यपक ३४८ गनाठिठि
वस्यपक ३४९	वस्यपक ३४९ थोमहुग	वस्यपक ३४९ २५अ	वस्यपक ३४९ गनाठिठि

देवगागनी	मथिथिकुषम	आसप्यी	मैथिथि व्नेठ	कैथी
वस्यपक ३५०	वस्यपक ३५० थोमहुग	वस्यपक ३५० २५अ	वस्यपक ३५० गनाठिठि	वस्यपक ३५० पकस्यह
वस्यपक ३५१	वस्यपक ३५१ थोमहुग	वस्यपक ३५१ २५अ	वस्यपक ३५१ गनाठिठि	वस्यपक ३५१ पकस्यह
वस्यपक ३५२	वस्यपक ३५२ थोमहुग	वस्यपक ३५२ २५अ	वस्यपक ३५२ गनाठिठि	वस्यपक ३५२ पकस्यह
वस्यपक ३५३	वस्यपक ३५३ थोमहुग	वस्यपक ३५३ २५अ	वस्यपक ३५३ गनाठिठि	वस्यपक ३५३ पकस्यह
वस्यपक ३५४	वस्यपक ३५४ थोमहुग	वस्यपक ३५४ २५अ	वस्यपक ३५४ गनाठिठि	वस्यपक ३५४ पकस्यह

गागनी	गोहगा	आसप्यी	व्नेठ	कैथी	गंगना	गैसाडी	पनेप्यी	व्ण्ण्यी
उम	थोमहु	२५अ	गनाठि	पकस	ढव	सौ	पहानो	गनासना

गागनी	गोहगा	कैथी	गंगना	पुनथगी	व्ण्ण्यी	सक	व्नेठ	पनेप्यी	उहु	गिस्त्री	गिस्त्री-उे
उम	थोमहु	प्या	ढव	सौ	गनाठ	२५अ	व्नेठ	पनेप्यी	उहु	थवि	उे
उम७	थोमहु	प्या	ढव	सौ	गनाठ	२५अ	व्नेठ	पनेप्यी	उहु	थवि	उे

गाणी	गाणिना	कैथी	गैला	पुनवरी	वृहस्पति	शुभ	वृष	गिरी	गिरी-अ
३५८	थिहु	प्रा	दल	सो	गनाह	शुभ	वृष	थि	अ
३५९	थिहु	प्रा	दल	सो	गनाह	शुभ	वृष	थि	अ
३६०	थिहु	प्रा	दल	सो	गनाह	शुभ	वृष	थि	अ

गाणी	गाणिना	कैथी	गैला	आरपीए	वृष
३६१	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६२	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६३	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६४	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६५	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६६	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६७	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६८	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३६९	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३७०	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३७१	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३७२	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह
३७३	थिहु	प्रा	सो	शुभ	गनाह

३

वृहस्पति वृषिपांक

१) वृहस्पति वृषिपांक

वर्द्धि १५ ०६ २००८	वर्द्धि १५ ०६ २००८ थोड्डा	१२
--------------------	---------------------------	----

२) गणध वरशिषांक

वर्द्धि ०१ ११ २००८	वर्द्धि ०१ ११ २००८ थोड्डा	२१
--------------------	---------------------------	----

३) वर्र्णिक्थि वरशिषांक

वर्द्धि ०१ १० २०१०	वर्द्धि ०१ १० २०१० तानिहुवा	६७
--------------------	-----------------------------	----

४) वध साहन्तिय वरशिषांक

वर्द्धि १५ ११ २०१०	वर्द्धि १५ ११ २०१० तानिहुवा	७०
--------------------	-----------------------------	----

५) गटक वरशिषांक

वर्द्धि १५ १२ २०१०	वर्द्धि १५ १२ २०१० तानिहुवा	७२
--------------------	-----------------------------	----

६) समीक्षा वरशिषांक

वर्द्धि १५ ०१ २०११	वर्द्धि १५ ०१ २०११ तानिहुवा	७४
--------------------	-----------------------------	----

७) गानी वरशिषांक

वर्द्धि ०१ ०३ २०११	वर्द्धि ०१ ०३ २०११ तानिहुवा	७७
--------------------	-----------------------------	----

८) अणुवाड वरशिषांक (गट्ट-पट्ट गामनी)

वर्द्धि ०१ ०१ २०१२	वर्द्धि ०१ ०१ २०१२ तानिहुवा	८७
--------------------	-----------------------------	----

८) वध गणध वरशिषांक

वर्द्धि ०१ ०८ २०१२	वर्द्धि ०१ ०८ २०१२ तानिहुवा	१११
--------------------	-----------------------------	-----

१०) गकूत गणध वरशिषांक

वर्द्धि १५ ०३ २०१३	वर्द्धि १५ ०३ २०१३ तानिहुवा	१२६
--------------------	-----------------------------	-----

११) गणध आठेयगा-समाठेयगा-समीक्षा वरशिषांक

वर्द्धि १५ ११ २०१३	वर्द्धि १५ ११ २०१३ तानिहुवा	१४२
--------------------	-----------------------------	-----

१२) काशीकांग मशिन मद्युप वरशिषांक

वर्द्धि ०१ ०१ २०१५

१३) अणुवण्ड गकूत वरशिषांक

वर्ष ०१ ११ २०१५

सुवर्णयोग- अन्नविद् गुरुः व्यक्तित्व-कान्तिव (सम्पादक आशिष अग्रयन्विहारी) [विदेह अन्नविद् गुरु व्रशिषांकक पुनर्मिट १५]

१४) ण्णदीश यन्त्र गुरु अन्वि व्रशिषांक

वर्ष ०१ १२ २०१५

१५) विदेह सम्मान व्रशिषांक

विदेह सम्मानः सम्मान-सूची (समागन्त साहित्य अकादेमी, समागन्त उद्योग कला अकादेमी आ समागन्त संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान पुनस्कात गामसँ व्रप्तिप्राप्त)

साक्षरान्कान् सम्मानोह

साक्षरान्कान्	वर्ष १५ १२ २०१५	वर्ष १५ ०१ २०१६	वर्ष ०१ ०२ २०१६	वर्ष ०१ ०३ २०१६
वर्ष ०१ ०४ २०१६	वर्ष १५ ०१ २०१६	वर्ष ०१ ०३ २०१६	वर्ष १५ ०४ २०१६	वर्ष ०१ ०७ २०१६

१६) मैथिली सौन्दर्य अन्वय गीत संगीत व्रशिषांक

वर्ष ०१ ०१ २०१७

१७) मैथिली वेव पत्रकारिता व्रशिषांक

वर्ष १५ ०३ २०१६

१८) मैथिली वीह्णकित्था व्रशिषांक-२

वर्ष १५ ०३ २०१७

१९) नामधेय गुरु व्रशिषांक

वर्ष १५ ०३ २०१७

२०) नामधेय गुरु शब्दांश व्रशिषांक

वर्ष १५ ०३ २०१७

२१) नामधेय गुरु व्रशिषांक

वर्ष १५ ०३ २०१७

२२) नामधेय गुरु व्रशिषांक

वस्यपरुथ ३४८	वस्यपरुथ ३४८ थयिहुवा	वस्यपरुथ ३४८ ३कुअ	वस्यपरुथ ३४८ वानाडिदि
--------------	----------------------	-------------------	-----------------------

२३केदाग गथ यौधनी वसिषांक (

वस्यपरुथ ३४९	वस्यपरुथ ३४९ थयिहुवा	वस्यपरुथ ३४९ ३कुअ	वस्यपरुथ ३४९ वानाडिदि	वस्यपरुथ ३४९ पक्षरथिदि
--------------	----------------------	-------------------	-----------------------	------------------------

२४ पुमेमथा मसिन् ('पुमे' वसिषांक

वद्विहा ३५७	वद्विहा ३५७ थयिहुवा
-------------	---------------------

२५समदगिदु यौधनी वसिषांक (

वद्विहा ३५८	वद्विहा ३५८ थयिहुवा
-------------	---------------------

२६संगू दास -सग्दग्म) वमिन्स वसिषांक-कठा (, कृष्ण कुमान कश्यप, शशविा, एससुमन आ सी (सुवेगा हा यौधनी

वद्विहा ३६८	वद्विहा ३६८ थयिहुवा
-------------	---------------------

२७नयनाकान अशोक वसिषांक (

वद्विहा ३६८	वद्विहा ३६८ थयिहुवा
-------------	---------------------

२७ नाम गनोस कापडि ('गनम' वसिषांक

वद्विहा ३७०	वद्विहा ३७० थयिहुवा
-------------	---------------------

२८वसिषांक (पुएसएम) मथिाि सूटडेसुट पूगयिन (

वद्विहा ३७१	वद्विहा ३७१ थयिहुवा
-------------	---------------------

४

ठेपकक आमंतीति नयना आ ओरुपन आमंतीति समीकषकक समीकषा सीनीण

१कामनीक पांय टा कवतिा आ ओरुपन मयुकाग्न हाक टपिपमी

वद्विहा ०१ ०८ २०१६

२पन गजेगुन गकुनक टपिपमी "माटकि वासन" क "मनु" णगदागगद हा

वस्यपरुथ ३५३

३आ ओरुपन गजेगुन गकुनक टपिपमी "जगिदगीक मोठ" मुग्नी कामाक एकांकी

वस्यपरुथ ३५४

४ टा कथा कपटिस्वरु १।३।१ क पञ्चा ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

वस्यपरुथ ३५६

५ टा कथा आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी उमेस मम्सुठक ५

वदिस ३५७

६ टा कथा आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी १।३।१ वरुविस साहुक ५

वदिस ३५८

७ गति गवठ सुग्राष यगुन ५।६।१ सुग्राष यगुन ५।६।१ ससुग साहित्य आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी -

गति गवठ सुग्राष यगुन ५।६।१

गति गवठ सुग्राष यगुन ५।६।१ (मथिठिकष ५)

८।३।१ मम्सुठक साहित्यप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

ढापडो मगदठ- मातिठिठि औगति १

९ टा कथा आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी आयाय १।३।१ मम्सुठक ५

वदिस ३६०

१० गगुठ वरुविस १।३।१ यागि कथा आ एकटा एकंकी आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

वदिस ३६१

११ गगुठ १।३।१ मम्सुठक साहित्यप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

हअधयषरु सुठअषअय मअमयअउ- मातिठिठि औगति १

१२ गगुठ १।३।१ मम्सुठक पाँयटा कथा आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

वदिस ३६३

१३ गगुठ १।३।१ मम्सुठक पाँयटा कथा आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी

वदिस ३६४

१४ दगिस कुमा १।३।१ मम्सुठक उमेस आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी - गति गवठ दगिस कुमा १।३।१

गति गवठ दगिस कुमा १।३।१ (गानी)

१५ सुशीठक मम्सुठक साहित्य आ ओरुप १।३।१ गकु १ क टपिपमी - गति गवठ सुशीठ

गति गवठ सुशीठ (गानी)

५

"पाठक हमन पोथी कए पढ़थी"- ऐपक द्वारा अप्पन पोथी नयनाक समीक्षा सीरीज

१ आशीष अग्रयन्निहा ०१ अगस्त २०२१

१११ आशीष अग्रयन्निहा ०१ मार्च २०२३

रसनिम्बन २०२२ गणेश १६ अंक ०१

६

एडिटर्स योशस सीरीज

एडिटर्स योशस सीरीज-१

ब्रह्मिमे वधाकानपन मैथिलिमे पहिठि कवति प्रकाशति मेठ छथ। ई दसिम्बन २०१२ क दृष्टिक गन्गया वधाकान कामुडक वादक समय छथ। ओना ई अगूदति नयना छथ, तेउगुमे पसुपुठेटी गीताक कवतिक हन्दि अगुवाद केने छथिह आ। हमन शांता सुन्दरी आ हन्दिअँ मैथिलि अगुवाद केने छथिह वगिन उत्पठा गेठ नयठ गै माषामे कोनो वषियपन ऐ कवति सहिनावैवठा वेशी ऐसँ जागकानिमे अछा कताक साठक वादो ई समस्य़ा ओहने अछा ई कवति सगकँ पढ़वाक याही, प्यास कऽ सग वेटीक वापकँ, सग वहनिक गाएकँ आ सग पन्नीक पानकँ आ व्रियानवाक याही जे हम सग अपना वय्या सग ठेठ केहन समाज वनेने छी।

एडिटर्स योशस सीरीज-१ (७३७७७७ ठिक)

एडिटर्स योशस सीरीज-२

वद्विहमे व्नेसूट कैसनक समसुप्रापन वद्विह मे मीना हा केन एकटा उघु कथा पुनकाशति मेथ ३ मैथिलीक पहिठि कथा छथ जे व्नेसूट कैसन पन उषिठ गेथ। हनिदीमे सेहे नाथनिए व्रषियपन कथा मे उषिठ गेथ छथ, कानाम ए कथाक ई-पुनकाशति मेथक १२ साठक वाद हनिदीमे दू गोटेमे घोघाउण मऽ १६७ छथ कति पहिठि हम आकहिहम, मुदा दुनूक नथि मैथिलीक कथाक पुनवृत्ती छथ। वादमे ई वद्विह उघु कथामे सेहे संकथति मेथ।

एउटिन्स योश्स सीनीण२- (७उगठो७ ठकि)

एउटिन्स योश्स सीनीण३-

वद्विहमे णगदीश यन्द्न गकुन अगठिक कछि वाठ कव्रति। पुनकाशति मेथ। वादमे हुनकन ३ टा वाठ कव्रति। वद्विह शसि उन्सवमे संकथति मेथ णश्मे २ टा कव्रति। वेवी याश्ठुपन छथ। पढू ई तीनू कव्रति, वादक दुनू वेवी याश्ठुपन उषिठ कव्रति। पढ़वे टा कनू से आग्नह।

एउटिन्स योश्स सीनीण३- (७उगठो७ ठकि)

एउटिन्स योश्स सीनीण४-

वद्विहमे णगदागन्द हा क एकटा दीन्घ वाठ कथा कहि ठिअि वा उपन्यास "मनु" पुनकाशति मेथ, नाम छथ योगहा। वादमे ई नयना वद्विह शसि उन्सवमे संकथति मेथ, ई नयना वाठ मनोव्रजिभापन आधानति मैथिलीक पहिठि नयना छी, मैथिली वाठ साहित्य कोना उषिठि तकन ट्नेगि कोनसमे ए उपन्यासकेँ नाप्यठ जेवाक याही कोना म्ोडन्ग उपन्यास आगाँ वढे छै, स्टेप वास् स्टेप आ सेहे वाठ उपन्यासा पढ़वे टा कनू से आग्नह।

एउटिन्स योश्स सीनीण-४ (७उगठो७ ठकि)

एउटिन्स योश्स सीनीण५-

एडिटिंग्स योशस प मे मैथिलीक मागे कुमान पवनक दीर्घकथा "उसने कहा था" पाठक हर्षदीक । (सामान अंतिका) "पशु", जे पढ़ने हेना "उसने कहा था", केँ वृद्ध छगह जे कोना अह कथाकेँ नयि यगद्वयन शमा अमन गऽ "गुठेनी" यन्या कऽ हम गेठाह नहै छी, कुमान पवनक एकना दीर्घकथाका "पशु" वरियति एकटा अहाँकेँ वाद पढ़ाक, सुप्यद आ मोग हौठ कनैवठा अनुभव भेटा, जे सेक्सपीनअिन ट्पेजेडी सँ मठिति ठागत आ श्चुनाको मुदा ऐ नयनाकेँ पढ़ाक वाद नामस, घृसा सगपन गयित्नासकेँ आ सामाजिकिपात्रिकि दायित्वकेँ आन गं सेहो अहाँमीनासँ ठेवै, से यनपिकका अछा मुदा एकन एकटा शून अछा जे एकना समै गकिाक कऽ एकके उप्पड़ाहमे पढ़ि जाश

एडिटिंग्स योशस सीरीज- (७३७७७ ठिक)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-६-

जगदीश प्रसाद मास्डक ठेकथा क अकाठमे वंगालमे ४३-१८४२ : "वसिाँढ़" ठाप्य ठेक मुशु १५, मुदा अमन्यु सेग ठपिण छथा जे हुनका कोनो सन-मे आ इन्दिया ३ १८६७ आएठ अकाठ मथिठिमे सम्वन्धी ऐ अकाठमे गै मनठगह्हा मुसहल जाग गाँधी जप्यन ऐ कषेत्न अएठी तँ हुनका देप्याओठ गेठ जे कोनाकि ठेक वसिाँढ़ प्या कऽ ऐ अकाठकेँ जोगि ठेठगह्हा मैथिलिमे ठेप्यनक एकगगाह स्थिति व्रदिहक आगमनसँ पहनि छठ। मैथिलीके ठेप्यक ठेकना सेहो अमन्यु सेग जेकाँ ओह महवमीषकिसँ प्रभावति गै छठ आ तँ वसिाँढ़पन कथा गै ठपिाँ सकठा। जगदीश प्रसाद मास्ड ऐपन कथा ठपिठगह्हा जे प्रकाशति भेठ येतना समतिकि पान्किमे, मुदा कान्यकारी सम्पादक द्वारा वान्नी पत्रिाँनक कानस ओ मैथिलिमे गै वानस अवहट्ठमे ठपिठ वृहा पऽठ, आ ओतेक प्रभाव गै गऽ सकठ कानस व्रषिय नहै पाँटी आ वान्नी कान्ति से एकन पुनः ३- "गामक जगिगी" प्रकाशन अपन असठी नूपमे भेठ व्रदिहमे आ ३ संकठति भेठ ठटिनेयन टैगोन मास्डकेँ प्रसाद जगदीश पोथीपन ऐ ठेकथा संग्रहमे। कथायान मैथिलि ठेप्यनी मास्डकेँ प्रसाद जगदीश भेटठगि अवाँडाकेँ एकगगाह

हेवासँ वया ठेठक, आ मैथिलीक समागान्ता शहिसमे मैथिली साहित्यकें दू काठप्याम्हमे वाँटिकऽ पढ़ए जाए ठागठगदीश प्रसाद मम्हमेसँ पूर्व आ -
-वसिँढ ठेठकथा अछि प्रस्तुत तँ गगदीश प्रसाद मम्हमे आगमनक वादा अपन सुय्या स्वरूपमे।

एडिटर्स योशस सीरीज- (७३७७७७ ठिके)

एडिटर्स योशस सीरीज-७-

मैथिलीक पहिठि आ एकमात्ता दठति आत्मकथा सन्दीप सन्दीप कुमान साश्वी :
हिलिङि अछैत आकाशक ठेठु अपन अहाँकें जे आत्मकथा दठति साश्वीक कुमान
अ आ देतहाँक ई स्थितिकिऽ देत जे समागान्ता मैथिली साहित्य कतवो पढ़ू अहाँकें
अछौ गे हएत। ई आत्मकथा वदिलेमे ई प्रकाशति गेठक वाद ठेठकक पोथी-
मे संकठति गेठ आ ई मैथिलीक अपन धनकि एकमात्ता दठति "वैशाप्यमे दठनपन"
सन्दीप :आत्मकथा दठति पहिठि मैथिलीक अछि प्रस्तुत तँ आत्मकथा थकि
कुमान साश्वीक कठमसँ।

एडिटर्स योशस सीरीज-७- (७३७७७७ ठिके)

एडिटर्स योशस सीरीज-८-

गेगा मुटकाकें नागमि सुनेवा ठेठ कछि ठेठकथा ।(वदिले पेटासँ)

एडिटर्स योशस सीरीज-८- (७३७७७७ ठिके)

एडिटर्स योशस सीरीज-९-

मैथिली गणपन पनयिन्या ।(वदिले पेटासँ)

एडिटर्स योशस सीरीज-९- (७३७७७७ ठिके)

वर्द्धिह सम्मानः सम्मानसूची- (समानागत साहित्य अकादेमी, समानागत
००ति क० अकादेमी आ समानागत संगीत् गटक अकादेमी सम्मान-
(पुरस्कार नामसँ व्रप्पियात

मैथिलीक व्रन्तनी

१

मैथिलीक व्रन्तनी- वर्द्धिह मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रन्तनीमे पन्थापत व्रविविधता अर्था मुदा पन्थनपन्त देप्पठा अन्त
एक व्रन्तनी श्रून्त गमअ००१ सँ पन्तानि वृदाशन अर्था, से एक एक एक
उप्युहामे उगटा-पुगटा दियौ, तावे व्रन्तपन्थापत अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ०० सेहो ३ पन्थापत अर्था, से जे वर्द्धियान्थी मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ०० छथि से एक एकटा आन श्वास्त-नीउगि दोसन-
उप्युहामे कथि

शषामश्रुउ श्रून्त गमअ०-००१

थहेसे जे पन्तान-ोन-देमागद वौकस, सेगद यून टुनेसि
तो दन्तानिउसिताउउवर्द्धिहवामाठियोन थहे गौकस ०० सोमे ०० तहेसे जे
व्रविविधे जेन साठे जेन वौगठे श्रुवाय [(य) श्रुवन्त थहाकुन,
साठेसवर्द्धिहवामाठियोन], सेगद यून टुनेसि तो साठेसवर्द्धिहवामाठियोन थहे
योनतेगतस जगद दोयुमेगतसे-पुवठिसेहेद वय वर्द्धिह (सगिये २०००) शषाम

२२२२-५४७३ वर्यएहश्च (सगिये २००४) ले पेनीदियिअथ वेनिग यहेयकेद
जेन ।ययेससविठितिय सिसेस श्वेपठे गैतिह दसिावठितिसि सहेठद गोन हवे
दडिउयिठाय ।ययेससनिग गहेसे योगतेगतस् दैयुमेगतस

२मैथिली पोथी डाउनलोड मातिलिठि भोकस थौनठोद

वरिह पोथी

वरिह वरिह वरिह विदेह खानपःगौवदिहयोगि वरिह प्रथम मैथिली पाकषकि ई पानिका वरिह इसा मातिलिठि
ढोनगगिहाथे जोनगाठ वरिह प्रथम मैथिली पाकषकि ई पानिका गव अंक देपवाक ठेठ पृष्ठ सगके नखिनेस कर देपू अठौपस
नेउनेसह गहे पागोस जेन वीनिग गौ सिसेओ वर्यएहश्च

षोडशोऽपि नौकस (नियुद्धनिग शुद्धी- वसिष्ठ & षडिग डानुगुगो) नेधानिग नो मतिहृषि मतिहृषि

हानपसःवौकसगुगुगुयोम्



वद्विह श्रयहृषिोड मतिहृषि नौकस वद्विह मैथषि पोथिक श्रान्काश्च (पूनाम्नः
श्रयप्रसायकि उद्देश्य श्रान् एकेडमकि प्रयोगेण) सन पोथि पीडीएश्च
डाउनलोड एण क्मनागुसाम नीयाँक एकि सनपन उपवय अष्णि अण्ण तहे वौकस
ने। वाधिवधे डोम पदड दौगुगुगु। न तहे नेसपेयनवि ठनिकस वेधौ

ननिहृणा, नेवाडी श्रान् कैथी शुद्धी- वसिष्ठ डाउनलोड घुगुगु' स मीतो ढेगनस पनोपेयन घनिहृव

ननिहृणा नो वसिष्ठ	नेवाडी अष्टोत्तु	नेवाडी अष्टोत्तु	नेवाडी अष्टोत्तु	नेवाडी अष्टोत्तु
-------------------	------------------	------------------	------------------	------------------

हानपसःडोमनसगुगुगुयोम् (घुगुगु अण्ण ढेगनस दौगुगुगु)

थनिहृणा ओडडठनि प्पेयवोमद दौगुगुगु

प्पेयमान थनिहृणा वेदयि वेवागागानि प्पेयवोमदस दौगुगुगु

हानपसःमाधनपनोपेयनगतिधवातिनिहृणा (थनिहृणा प्पेयवोमद अण्णठनि)

वौद्य यन्प्रापद (सौगुगु- म म हनपुनसाद शास्त्री, १८०७, पयधानी सहि,
१८६८)

२३ कल्पि० टा यन्प्रापद संप्र्या [उरुपाद १, २८; कुक्कुनीपाद २, २०, ४८;
वसिष्ठपाद ३; गुग्गुनीपाद ४; यन्तुपाद ५; गुग्गुपाद ६, २१, २३, २७,
३०, ४१, ४३, ४८; कागुहापाद ७, ८, १०, ११, १२, १३, १८, १८, २४,
३६, ४०, ४२, ४५; कम्बुम्वनपाद ८; डोम्वीपाद १४; शागुगुपाद १५,

२६; महर्षिपाद १६; व्रीह्यापाद १७; सप्तपाद २२, ३२, ३८, ३८; श्वपाद २८, ५०; आनुप्रदेवपाद ३१; ढेगढगपाद ३३; दानिकापाद ३४; गार्देपाद ३५; नाडकापाद ३७; कर्कशापाद ४४; ज्यनगदीपाद ४६; यमपाद ४७; तंतीपाद २५]

१६ नाग ४७ यन्त्रापद संप्र्या- ३ टा यन्त्रापद संप्र्या -२४, २५, ४८ (इन्द्रनाथ २४; गीता- २५, पटह- ४८)- मे नाग अणुपव्य [पामन्त्राणी १, ६, ७, ८, ११, १७, २०, २८, ३१, ३३, ३६; गवड वा गौड २, ३, १८; आनु ४; गुन्त्राणा, गुन्त्राणी वा काग्ल-गुन्त्राणी ५, २२, ४१, ४७; देवकी ८; देशाया १०, ३२; कामोद १३, २७, ३७, ४२; यनाशी वा यगशी १४; नामकी १५, ५०; वण्डी वा वनाडी २१, २३, २८, ३४; श्वनी २६, ४६; मण्णानी ३०, ३५, ४४, ४५, ४८; माणसी ३८; माणसी-गावुना ४०; वांग ४३; मैत्री १२, १६, १८, ३८]

यन्त्रापद

महाकवि डाक (संकथन पं जीवागन्ध गकुल, १८५०)

डाकव्ययन

मैथिलीक आदिकवि व्रद्धियापति (ज्योतिषीश्वर पूनव) [सौजन्य- उजिठिठि
ठाश्वनेनी आंशु श्मडिया]

व्रद्धियापतिपद्यावृषि (सम्पादन गणेशनाथ गुप्त १८१०)

मैथिलीक आदिकवि व्रद्धियापति (ज्योतिषीश्वर पूनव)- गणेशनाथ गकुल

ज्योतिषीश्वर गकुल (सौजन्य- उजिठिठि ठाश्वनेनी आंशु श्मडिया)

व्रामन नागाक

मैथिली व्रामनसमागम

व्रद्धियापति गकुल: [(१३५०-१४३५) मैथिलीक आदिकवि ज्योतिषीश्वर-पूनव

व्रद्धियापतिं गणि, संस्कृत आ अवहट्ठमे ठेपण]

व्रद्धियापतिगणेशनाथ

गोमक्षव्रजियम्

वदियापातश्च श्रोत्रतियाथ अनाथससि- यम पहनकाय पुमान् ह्य

[सौमन्यं पं शशनिथ ह्य नामदेव ह्य]

शंकरदेव

पानिजानहाम

नामवजिय

दैन्यागिकु

श्यामं हाम यान्ना (शंक्या गट)

माधवदेव

गुमिठयि ह्युमा आ पम्पना-गुयुमा-ह्युमा

भक्ष्मीदेव

कुमानहाम गट शन सूक्ये नावाम वय (शंक्या गट)

जगत्पुनकाशम००

पुनगावतीहाम गटक

सद्वि गनसहिम००

गीतावठी सद्वि

जगत्पुन्योत्तम००

ह्यगौरी वविह गटक कुम्पवहिन गटक

ह्यपगाथ ह्य

माधवागन्ध गटक

उषाहाम

ह्यपगाथ काव्युगन्थावठी (संकथन अमनगाथ ह्य १८८७-१८५५)

नगपासा

उषाहाम गटक

श्रीकां

श्रीकषाम जगम नहस्य

गन्दीपति

कष्मकेठमिठा

गीतमाठा

काग्ल नामदास

गौरीसुवयंवन

ठाठा

गौरीसुवयंवन गटक

उमापति

पानिजान हाम

गानुनाथ

पुनगावती हाम

देवानन्द

उषाहाम

नमापति

कुमारी पनिय

उपाध्याय नामदास

आनन्द वजियानदिन गटिका

शविदन्त

गौरीपनिय सीतासुवयंवन दुनगावजिय

पानिजान गटक

कथा वैद्य सद्य मेहथपा (वाठा साहित्य केन्दति) मेहथमे ठेठा दर म सगल

नातिदीप जलयमे पठति कथा सगक संकठन

कथा वैद्य सद्य मेहथपा

सपुआवाठी (गानी वमिन्स केन्दति) गपटियाहिमे ठेठा दर म सगल नातिदीप

जलयमे पठति कथा सगक संकठन

सपुत्रावृत्ति

सम जी ए ग्नायिन्सन (१८५१-१८४१)

मैथिली ग्राम

मैथिली क्लेसटोमेथी एम्स ड वोकवुठेनी

मुंशी नधुनन्दन दास (१८६०-१८४५) (सौजग्य- नायाक ृषामन् दास)

सुगन्ना हाम

नासवहिननी ७७ दास (१८७२-१८४०) (सौजग्य- नमानन्द ह। "नमम")

सुमर्ता

हनिगन्दन दास (सौजग्य- नायाक ृषामन् दास)

सुदामा यति

पं नामजी यौधनी (१८७८-१८५२) (सौजग्य- श्नी श्नीमोहन यौधनी)

विविध गणनावृत्ति

आयान्य नामभेयन शमाम (१८८८-१८७१) (सौजग्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

पद्यगती-समानक ग्नायथ

धनुषधानी दास (१८८५-१८६५) (सौजग्य- पञ्जीकाम व्रद्धियानन्द ह।)

मैथिली मे वहिननी

हामोहन ह। (१८०८-१८८४) (सौजग्य- मैथिली साहित्य संस्थान गौरीनाथ)

अननिगन्दन ग्नायथ

अंकि। (हामोहन ह। वशिषांक)

डं नाम मनोस कापड़ी ग्नायथ (सौजग्य- नाम मनोस कापड़ी ग्नायथ)

महषिसुन मुन्दावाह एवं अग्य नाटक (१८८७)

वेक नाट्यः पट पटनि (२००७) (शोध)

हुगुठी उपन वहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

गुनगुन मैथिली दीर्घ कविति (हर्षिदी अगुवाह-अव वस गही) (२००८)

मैथिली ठोक संस्कृति (नेपाठी भाषामे) (२००८)

मैया अएठै अपन सोनाण (गाटक संग्रह) (२०१०)

घनमुहँ (उपन्यास) (२०१२)- ई वुक वृणन

घनमुँह (उपन्यास) (२०१२)- पुनटि वृणन

हेमेवुनह (२०२३)

अनहयिक याग (गाणठ संग्रह) (२०१३)

यीन जे हम देखैत (प्राग्ना संसमाम) (२०१४)

सूठी पन शोण एवं अगुय गाटक (२०१५)

सीमाके आन-पान (प्राग्ना संसमाम) (२०१६)

पुद्दयगुनकि एसगन योद्धा (कविति संग्रह) (२०१७)

एटीवायनस (कथा संग्रह) (२०१८)

कोनोगक संतासमे ओहनायठ जगिगी (ठकडाउन डायरी) (२०२०)

मथिथिक ठोकजीवन ठोकसगहन (२०२२)

सोहगान गनयक अगुवेषी डा पुनशुठठ कुमान सहि 'मौन'

मैथिली ठोक संस्कृति संगोष्ठी

समानिका (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सठेस वृशिपांक

आँपुन (अंक वृष ३६, अंक ३) सोमदेव वृशिष

गामघन-३०-०८-२०१८

गामघन-०४-१०-२०१८

गामघन-१६-०५-२०१८

गामघन-२७-०६-२०१८

नामनोस कापडि "गुमन"क कछि गटक

मुग्गाणी द्वाणा साक्षात्काम पृ ३२१-३२८

देसि वयगाक वहने नामोयन गकुन पुसंग पृ ३४७-३५७

हमन ज्ञान-पिपासाक सोनः शनदिदु यौधनी पृ ३१-३४

जट जटनि पृ ५६८-७०५

मैया, अरुँ अपन सोनाज पृ ५६८-७०५

आषेय कथा-शुँशैक पृ ८४-८८

आषेय पृ ५९७-९२५

आषेय पृ ९२७६-९२८०

आषेय पृ ८७-८८

नायपुन यात्रा पुसंग पृ ९५०-९५४

सहेस पनिय्या निपिट पृ ४१-४५

निपिट पृ २३१-२४३

निपिट पृ ४४५

निपिट पृ ५६८-६०५

निपिट पृ ५८३-५८५

गंगा पुसादक स्वायत्तता आ हुगुठीपन वैत गंगा पृ २२३-२२६

गीत पृ ९४४८-९४५०

गजग गीत पृ २११

अज्ञानक वृद्धि आ आजाद गजग पृ ६९८-६२१)

नामनोस कापडि गुमन (व्यक्तित्व एवं कान्तिव)- पुनोमशि मशिना

(सम्पादक यगुनेश)

वदिह नाम नोस कापडि 'गुमन' वशिषांक

वृषेश यग्द ७७ (सौजग्य- वृषेश यग्द ७७)

आग्दो७ग (कवति संग्रह)

ढे७क (वा७ कवति संग्रह)

सुमगमि (अग्दति उपग्यास)

मोदशिश्न (वीपीकोरना७क कथा)

मा७हे (कथा संग्रह)

गो७वा (कथा संग्रह)

पनमेश्वर कापडि (सौजग्य- पनमेश्वर कापडि)

दूआ-यणा

अंक ७

अंक १४

अंक १५

अंक १६

अंक १८

अंक १० पूग २०१२

अंक २४ पूग २०१२

२५ पूग २०१२

०५ अगस २०१२

२३ श्रवती २०१६

आसनि २०७३

सुजीन कुमान हा (सौजग्य- सुजीन कुमान हा)

नपिन्टन डयनी (नपिन्टाण)

यडि (७धुकथा-संग्रह)

जदिदी (७धुकथा संग्रह)

कोरवी घूनीआउ (वाँ उघु-वहिनिकथा संग्रह)

गण्य (उघु कथा संग्रह)

पुणुनीवाँ (उघु कथा संग्रह)

वुँवुँ (कथा संग्रह)

दूयमनी- (नेपाँी आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक ३५ अंक ३६ अंक ३७ अंक ३८ अंक

३९ अंक ४० अंक ४१

वनिदेश्वर गकुल

नेपाँक नी मनुमनि

वनीन गकुल (सौणय- वनीन गकुल)

वाँकी अघहिनम दूयक कृण

संतोष मशि (सौणय- संतोष मशि)

पोसपुन (उघुकथा-संग्रह)

उदास मोग (उघुकथा-संग्रह)

एगा-कए (कवनी-संग्रह)

अएगा (संपादन- कवनी-संग्रह)

कनकमामा दीकषति (मूँ नेपाँीसँ मैथिली अणुवाद नूपा धीनू आ धीनेण्डन

पुनेमन्षा, वाँ साहित्य) (सौणय- धीनेण्डन पुनेमन्षा)

मगना वेक देश-मामा

अपोदह्यागातह छहेदहाम (छोनीसय- अपोदह्यागातह छहेदहाम)

वानोदि वेसस (मानिहिली वेसस नि एगठसिह थानसठानी)

डॉ शशविन कुमनी आ सुपुन्या वेवी कुमानी

गुकम्प (पृ ६३८-६७४)

आमि सहि (सौजग्य- नयकिता)

शशि गीत प्ये

शमानी सहि (सौजग्य- नयकिता)

पुनम- एक कवति (अनूदति गटक)

अनुग्यती देवी (सौजग्य- १भागद ह्य "१मास")

मथिथिक वद्विषी महिथि

डॉ कमठा यौधनी (सौजग्य- कमठा यौधनी)

मैथिथिक वेश- नूषा- पुनसायन सम्वन्धी शवदावृषी २००८

समय- संकेत (कथा- संग्रह) २०१०

डॉ ७७ति ह्य (सौजग्य- ७७ति ह्य)

मैथिथिक नोपन सम्वन्धी शवदावृषी २०११

पुनमशि मशिना

नामनोस कापडि नमन (व्यक्तित्व एवं कर्तित्व)

सुसमति पाठक (सौजग्य- केदाय कागन)

पुनयिति (कवति संग्रह)

कनोपडि (कथा संग्रह)

नदनी पाठक (सौजग्य- केदाय कागन)

पाथक शहन (कवति संग्रह)

पुनगा ह्य (सौजग्य- ननेद ह्य)

अनुग्यति (उद्युक्था संग्रह)

कपुना ह्य (सौजग्य- कपुना ह्य)

गोसाउगकि गीत

नशामुकनहिति गावी गीत

ननियिं

यायावनी- शेषाथकि वन्मा (हनिदी अगुवाड कउपना ह्वा)

मुग्गी कामन (सौणग्य- मुग्गी कामन)

सुपुठ मन नसठ श्रॉप्यि (पद्य आ गद्य)

सुपुठ मन नसठ श्रॉप्यि (कवति)

अनन: (कवति संग्रह)

युकका (वाठ कथा संग्रह)

गीता ह्वा (सौणग्य- गीता ह्वा)

वठिइ मौसी (वाठ उठुकथा संग्रह)

शेषाथकि वन्मा (सौणग्य- शेषाथकि वन्मा)

यायावनी (यातनावन्नागन)

यायावनी (हनिदी अगुवाड- कउपना ह्वा)

अनथयुग (उठुकथा संग्रह)

एकटा अकास (उठुकथा संग्रह)

शावांजठि (गद्य गीत)

कसिन- कसिन जीवन (आत्म कथा)

आप्यन- आप्यन पनीत

गागश्वंस (उपन्यास)

भागापहास (२१ एगठसिह)

व्रिमा नागी

व्रिमा नागीक दूटा गटक (भागौ आ वठयन्दा)

सुशीला हा (सौणय- पुना प्पेतान् सुशीला हा)

छनिमसना- पुना प्पेतानक हनिदी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम गकुल

पुन्यावर्णन (आत्मकथा) (पृ ४५८- ५७२)

उां कामिनी कामायनी

वद्विहःसदेह ३१ (उां कामिनी कामायनी आ कुमान मगोण कक्षप- अंक १- ३५०
सां)

प्रीतिगकुल

गोण हा आ आन मैथिली यत्निकथा - पहि मैथिली यत्निकथा (वाठ साहित्य)

मैथिली यत्निकथा (वाठ साहित्य)

मथिलिक ठेकदेवता (वाठ साहित्य)

वद्वियापनकि पुनष पनीक्षा (वाठ साहित्य)

नेस (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

एवी सी डी- पुनकानि अक्षय पोथी (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

सम प्पान अर्षा (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

वो म्प्राउ वाह (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

नठ सम (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- वाठ यत्निकथा)

(०७) माँ-जाँ आ जागवत दसि देपू (अनुवाद- वाँ यतिनकथा)

(१७) हमन पनविान (अनुवाद- वाँ यतिनकथा)

जागवत (अनुवाद- वाँ यतिनकथा)

पोथी १३: १२३ (अनुवाद- वाँ यतिनकथा)

वाजाक अवाजा (अनुवाद- वाँ यतिनकथा)

११००० शुअडम डएअठ शुअमदर सभषछडरशुथरश्रोमष (वश्रोडउमए ३ थश्रो
सशरर) छेमपठिद, पयागगेद & छातावेगुद वय शुगेतिथहाकुन

गाजेगदर गकुन आ पनीतगिगकुन (समावेयगा)

गीतू कुमानी

मैथिी यतिनकथा (वाँ साहित्य)

कनिम यौधनी (अनूदति सयतिन मैथिी वाँ कथा)

हमन वाँ-वाँडी

आन्या कँकपटि मे

दीपा कनमाकन- सही संतुठन मे

पंगठ मे अहाँक स्वागात अर्षा

वृहेठ छथिआकास मे

गैया के मुस्कान के योनौठक

वीण संययक

अयंशति कन्य "शुविंगायी"

शौयाठयक पर्सिसा

वाँ वनसाती

गुण्ठीक जादुई पेटी

समीनाक वकिठ गोपग

व्रिाह मे जाई छी

पुन्रिका हा (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

हमन माँछ! मे हमन माँछ!

नश्मिपुन्रिया (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गहियी कऽ सकै छी

सुगीना गकुन (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

वाम्पटी आ ववठी

गोठमि यौधनी (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

हमन सगसँ गीक संगी

स्वास्तिका गकुन (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

गपू वुते गायठ मे हेइ छै

तूठिका (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

हमना ओ याही!

मधूठिका मशिन् (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

ओघाशन गीमा

ठकूपनी गकुन

जागवन सग संगे मेंट-घाँट

पूगम माम्पुठ

सुतौ काठक प्पसिसा

नाम र्कवाठ सहि ' नाकेश' (१८१२-१८८४) [सौजग्य- ई-पुस्तकाठय]

मैथिली ठेकगीत (१८४२, १८५५)

तेज गानायाम ठाठ ' शास्त्री' [सौजग्य- ई-पुस्तकाठय]

मैथिली ठेकगीतो का अयययन (१८६२)

डॉ संकन कुमान ह्य (सौजग्य- कीर्तनगिथ ह्य आन्कास्व डॉट ओआनजी)

वदियापानि अ श्लोतिथिअ अनाठयससि

नायाकृष्ण यौधनी (१८२१-१८८५) (सौजग्य- पुनगान कुमान यौधनी

इधामअ-अप३)

मथिलिक इतिहास

अ पुनवेयोड मातिहथि डतिनातुने

थहे श्लोतिथिअ गद छुठुनाठ हेतिगोड मतिहथि

मतिहथि नि गहे अगोड वदियापानि

पयकागन मसिन (१८२२-२००८) (सौजग्य- काश्मीर नसिन्य इन्स्टीट्यूट

ठास्वनेनी, आन्कास्व डॉट ओआनजी, इन्डियन कथ्यन डॉट जीओवी

डॉट इग, साहित्य-अकादेमी डॉट जीओवी डॉट इग)

वल्हन् मैथिली शवदकोश भाग-१

अ हसिनोनयोड मातिहथि डतिनातुने वोठ इ

इगतनोदुयगागि तो गहे ठेक डतिनातुनेओड मतिहथि

मेन गहे अगलेन

उपेगन् गकुन (१८२८-१८८१) [सौजग्य- डितिठ ठास्वनेनी ऑश्व इन्डिया

इधामअ-अप३]

हसिनोनयोड मतिहथि

षण्णुदेसि वि ह्यगिसिम । गद गृह्णसिम वि मतिहृषि

सोमदेव (१८३४-२०२२) (सौजग्य- नाम मनोस कापडी 'ग्रामन')

श्रौणु सोमदेव वशिष

पुनवास कुमान यौधनी (१८४१-१८८८) (सौजग्य- अशोक)

सन्धान पुनवास वशिष

०००१ पुनसाद गकुल (१८५३-१८८५) (सौजग्य- कुसुम गकुल)

वैगयि मनियाइ

गाटककान ०००१ पुनसाद गकुल समग्रान १यगावृषि (५ टा गाटक, ४ टा एकांकी

आ ३ टा गीतगाटकि सहति)

सुभाष यगुन यादव (सौजग्य- सुभाष यगुन यादव)

गाणकमठ यौधनी: भोगोनाशु

गति गवठ गाणकमठ

वगैत वगिडेन (०६कथा संग्रह)

गुठे

गुठे (हृदि अगुवाद- १मास कुमान सहि)

१मना जोगी

मडन

भोट

गुठे: कथा आ गाथा (सम्पादक नानागुद वयिगी आ केदान कागन)

गति गवठ सुभाष यगुन यादव (ऐपक गाणेगुन गकुल)

गति गवठ सुभाष यगुन यादव (मथिठिकषन)

अशोक (सौजग्य- अशोक आ शत्रिशंकन श्रीनवास)

यकनवृषुह (कवति संग्रह) (१८८६)

नानाकोस (कथा संग्रह) (१८८६)

- श्रीहर्षिकात्मिका गीता (कथा संग्रह) (१८८९)
मानव (कथा संग्रह) (२००१)
संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)
आँसु वसंत (प्राचीन कथा) (२०१३)
वात-वर्षा (आधुनिक) (२०१५)
डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)
अशोक-सेठकेशव (विविध)
अशोक-नव कविता
गीत दैनिक वास्तविकता (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)
कथा-पाठ (मैथिली कथाक आधुनिकतात्मक अध्ययन) (२०२२)
पुनर्निर्माण (सम्पादन)
कविता (पुनर्निर्माण गोष्ठी- सम्पादक मोहन शान्ति)
संख्या १ (सम्पादन)
संख्या २ (सम्पादन)
संख्या ३ (सम्पादन) पुनर्निर्माण विशेष
संख्या ४ (सम्पादन)
मुग्धा जी द्वारा साक्षात्कार (पृ ३८२-३८५)
वैशाली कमल विद्यालय वेसी (पृ २०२३-२०३१)
सम्पादक गणेशदेव शर्मा आ कर्माचार्य (पृ ११८-१२२)
गणेशदेव शर्मा कविता पद्य (पृ ३२७-३४१)
केदारनाथ यौवनिक उपन्यास (पृ १०१-१०६)
श्रीदशरथजी (पृ ७०-७३)
वैदिक न्यायकाल अशोक विशेषांक

नामदेव हा (सौभाग्य- शंकरदेव हा योगानन्द हा)

सव्यसायी (अग्निगदन गान्थ)

मैथिली शब्द संयु

द्वान-वृत्तिक वसु कौश

संकल्प शंकर-५ (सम्पादक डॉ नामदेव हा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द हा) १८८८

कीर्तनिथ हा (सौभाग्य- कीर्तनिथ हा आकाश्व डॉट ओआजी)

कुमठ: मैथिली भावगुवाह (मूठ नमठि आह-कवति निवृत्तवृत्त)

दूठ पाँपि (पठिठ पविनागक उपन्यास ' द वृोकन वृगिस' क मैथिली श्रुवाह)

कछि पुनाग गप्प, कछि नव गप्प (कथा संग्रह)

श्रुपम मशिप पाँडकास्ट एपीसोड ४० कीर्तनिथ हा

आशीष अग्यनिहान

संदन्म सहति (गणठ-श्रुथेयना)

कुमानि श्रुषा (गणठ संग्रह)

पंघाजोडी (गणठ संग्रह)

अग्यनिहान आप्यन (गणठ, नुवाइ आ कनाक संग्रह)

मैथिली गणठक वृत्तकाम ओ शहिस

मैथिली देव पानकानतिक शहिस (श्रुठग्नक: श्रुकि आठेपु:श्रुनृणाठ आ

मैथिली: गणठक गकुन)

मैथिली गणठक नेडी नेकोन

शब्द-अथ-शकृति

सुवन्तयेना- अश्रुगिह गकुन: वृत्तकानिव-कानिव (वृदिह अश्रुगिह गकुन

वृशिपंकक प्रामिट नृप) [सम्पादना

डॉ योगानन्द हा (सौभाग्य- योगानन्द हा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १८८६

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ. नामदेव हा, सहायक सम्पादक डॉ. योगानन्द हा) १८८८

आधुनिक समय २००२

मैथिली साहित्य- शास्त्रीय गणवती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पादन २००७

गहन गीत (संकल्प-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पत्रकारिता के जातीय व्यवसायक शब्दावली २००८

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव शकुन 'सुनेहना' कान सीतावनाम (सम्पादन) २०११

मंगल-पत्रिका गांधीजी (अनुवाद) २०१३

गोरे-गोरे (डॉ. ए. कीर्तिविरह्यक हिनदी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

नामानन्द व्रियोगी (सौजन्य- नामानन्द व्रियोगी सुभाष यन्दुन प्रादव)

पत्रिका नरसु (कविता संग्रह)

अकिमम (कथा संग्रह)

गेतौन गे थौ यामस (एगठसिह थानसठानि वय सुभावना हहा)

जैसे अंघे मे यँद (हिनदी अनुवाद- अनुमान सौन)

वयने का पत्र (जीवकाव)- (अर्थिसम्पादक नामानन्द व्रियोगी)

नामकमठ-जीवन कथा जयि (५१६४-२७४)

महर्षि की नामा

वृद्ध का दुप और मेना (हिनदी अनुवाद- अरुणिस)

नुमयि सायथि (हिनदी अनुवाद- केदान काव अरुणिस)

नामा-याथिसा

३ मेट्रॉ की मेट्रॉ

साप्पी (मैथिली दूध-कवित्त)

कवीन आ हुनक मैथिली पदावधि

यनासाप्पी हेवाक समय (कवित्त मे कोनोना काठ)

दुनिया घन मेहमान (प्रेम कवित्त)

अपन पुदक साक्षर (गण्ठ संग्रह)

छियागन (कथा संग्रह)

वहवयन (आठियन)

गुठि: कठि आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेप्पन यौधनी (सौजन्य-समदन्दि यौधनी)

शेप्पन नयति गण्ठ ओ गीत

समदन्दि यौधनी (सौजन्य-समदन्दि यौधनी)

पं हन गनतिहुँ (२००२)

वड अण्णन देप्पठ (२००५)

गोवनगामेश (२०११)

कन्या कककाक कोनामनि (२०१६)

वान-वानपन वान प्पम्-१ (२०१८)

मन्मानक-सवदागुनानि (वान-वानपन वान प्पम्-२) (२०२०)

हमन अगाग: हुनक गहि दोष (वान-वानपन वान-३) (२०२१)

साक्षरान (वान-वानपन वान-४) (२०२१)

वदिह समदन्दि यौधनी वशिषांक

काशीकागन मशिन् मधुप

वदिह काशीकागन मशिन् मधुप वशिषांक

नागनन्दन ठाठ दास

वदिह नागनन्दन ठाठ दास वशिषांक

पुणेमठना मशिन् पुणेम

वृद्धिह पुणेमठना मशिन् पुणेम वृशिषांक

नवीगृन् गाय गकुन

वृद्धिह नवीगृन् गाय गकुन वृशिषांक

मायागृन् मशिन् (सौजग्य- केदाय कागन)

अवांगन (गाण-गीण)

कणगृन् गट्ट (सौजग्य- केदाय कागन)

कागह पय ठवास ह्मन मैथिणी गाण संग्रह

अनुवाक-कोसी काँठीनी सँ कशिण कुटीन वरि

नामकृष्ण ह्य ' कसिण' (सौजग्य- केदाय कागन)

कसिण समग्र- १ (सम्पादक केदाय कागन आ नमस कुमान सहि)

कसिण समग्र- २ (सम्पादक केदाय कागन आ नमस कुमान सहि)

मैथिणीक गव कवति (सम्पादन)

वहुआयामी कसिणणी (सम्पादक महेगृन् आ केदाय कागन)

केदाय कागन (सौजग्य केदाय कागन छर्रड सुगाष यगृन् यादव)

अकष पय गयैत (संसमनासः जीवकागतक पनक वहागे)

वहुआयामी कसिणणी (सम्पादन)

गुठेः कण आ गाषा (सम्पादन)

कसिण समग्र- १ (सम्पादन)

कसिण समग्र- २ (सम्पादन)

अपना गणामि (सम्पादन)

सुण केन दीप पय (सम्पादन)

गानती मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेगृन् (छर्रड केदाय कागन)

पुत्रायुध कवकनी

वहुआयामी कसिगणी (सम्पादन)

वावा वैद्यनाथ (सौजन्य- वावा वैद्यनाथ)

पहना श्मानपन (गणेश संग्रह)

अनवगिद गकुन (सौजन्य- अनवगिद गकुन ४२२५)

पानी टूटिहण अर्था (कवति संग्रह)

सवद मतिनाथ वाय्या (कवति संग्रह)

जानाक पुनविद मे (सोव्हकन-दीडक आनोहम गाथा- दीव कवति)

वहुपयि पुदेश मे (गणेश संग्रह)

मीन तुसीपान पन (गणेश संग्रह)

अनलक वनीध मे (उध कथा संग्रह)

गोशनाइक ठोकपक्ष (कथेन गद्य)

सुजन के दीप पत्र (सम्पादन)

वदिह अनवगिद गकुन वशिषांक

सुवतानयेना- अनवगिद गकुन: वृकगतिव- कानतिव (सम्पादन आशीष

अनयनिहान) [वदिह अनवगिद गकुन वशिषांकक पुस्तिक नूपा

ननेण्डन हा (सौजन्य- ननेण्डन हा)

यपठ यन यति यंयठ नान

वकिस ओ अथतान

मतिहठि वसिनिग

नापेश्वर हा (मैथिली साहित्य संस्थान आकाश)

मथिलिषक उद्भव ओ वकिस

सुनेण्डन हा सुमन (आकाश ७०८ कोम)

दण-वती (मूठ)

गोवदि हा ((श्वामध अ पति आकाश)

मातिहवि-एगठसिह वयितीगानय

डो शैठेण्डेन मोहन हा (आन्कारव डोट कोम् छररड)

पनयिय गयिय

मैथिी गद्य संग्रह- सं

नमागथ हा (छररड पति आन्कारव)

पुनवग्य संग्रह

नमागथ मस्मि "महिनि" (आन्कारव डोट कोम)

मैथिी महावना एवम् ठोकोकतिपुनकास

आगण्ड मस्मि (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

मथिी भाषाक सुवोध व्प्राकनस

शुभ्रामागण्ड हा (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

मैथिी गीत यण्डेनकि

मैथिी संदेश (वनिगिण कवकि कवति-सम्पादति)

पं उक्ष्मीपति सिहि (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

हनिदी-मैथिी-शिक्षक

नवपुनीतानण्ड ओहा (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

पदावठी

गामगाथ-वनियुगथ पदावठी (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

गामगाथ-वनियुगथ पदावठी

नूपनानाम हा "नकेश" (सौणय- नमागण्ड हा "नमास")

मनमोहन उडू

गोठा ठाठा दास (आन्कारव डोट कोम)

मैथिी सुवोध व्प्राकनस

पुडा वरुण दास 'सुवण' (सौणय- हेमन्त दास "हमि")

सीता-शीत

७० मद्देश्वर मस्त्रि (सौण्डर्य- पञ्जीकान वद्विगणद ह।)

एक छठीह महानगी

प्राग्नी (गगान्पुन) (सौण्डर्य- मथिथि सांस्कृतिकि पनषिद)

वपयनमा

काठिकाग्न ह। "वूय"

कठगधि- कवति-संग्रह

उपेग्नगाथ ह। "व्यास" (सौण्डर्य- मयंक ह।)

नूवास्यान-ए-श्रीमन प्रैयाम (मैथिथि पद्व्यागुवाद)

पूनीक (कवति संग्रह)

संग्यासी (काव्य)

नमेश गानायाम (सौण्डर्य- श्रेष्ठाठिका वनमा)

पाथक गाव (उद्युक्था संग्रह)

गोपाठगी ह। "गोपेश" (सौण्डर्य- गोपाठगी ह। "गोपेश")

गुम्म गेठ गढ छी

व्रणिय गाथ ह। (सौण्डर्य- व्रणिय गाथ ह।)

श्रहिक ठेठ (गीन-गणठ संग्रह)

कामायनी (श्रगुवाद)

गगेग्न कुमन (सौण्डर्य- पूनसग्न कुमान ह।)

ससनश्वरी

पूवोथ गानायाम सहि (सौण्डर्य- नयकिता)

श्रगहेन गगनी (श्रगुवाद)

ययगकि (सम्पादन)

वैष्णवगी (कविति)

हथीक दँण

टटका गप (सम्पादति कथा संक७ग)

पुनमक गोग (गाटक)

मानक मैथिषि (हग्दी शोध पुनवग्ध)

अमनगाथ (सौणग्ध- अमनगाथ)

कषमकि- वृह्नि कथा संग्रह

पुनशु७७ कुमान सहि ' मोग'

पुनदेवोपासक गूममिथिषि पृ १००१-१०८०

७ां गंगेश गुणग (सौणग्ध- गंगेश गुणग)

गाथा (१-३०) पृ १३७३-१५८०

पुनथम-यौवटयि-गाटक (वुधविधयि)

गाटक आर गोन

कथा-संग्रह उयतिवकता

गीन-गाण७ दुपक दुपहयि

कम७धम दास (सौणग्ध- कम७धम दास)

मैथिषि क्ताम कायसथक गोन, पुनव, मू७ आ वैवाहिक सम्वग्ध

कीनगिनायाम मशि (सौणग्ध- कीनगिनायाम मशि)

वृसत हेरुन शान्ति स्तूप

सोमान

आदमीकें जोहै

अपन एकागन मे

सुनयिनाक एकागनमे

गाणगाथ मशि

योगेन्द्र पाठक "व्यंगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "व्यंगी")

वृत्तिभंगक वक्तव्य

वृत्तिभंगक वक्तव्य भाग-२

नगक वृत्तिय (सम्पूर्ण)

नगक वृत्तिय (संशोधति)

हमन गाम (वाठ उपन्यास)

पत्रिमडिक देशमे

अकटा मसिया (कथा संग्रह)

नोवोट (अनूदति सांस-शुक्लिन गटक)

कछु तीन मधुन (प्राप्ता वृत्तान्त)

सुशीठ (सौजन्य- सुशीठ)

घनाडी (उपन्यास) (१८७३)

गामवाठी (उपन्यास) (१८८२)

गामती (गटक) (पहिले मंथन १८८१, पुनकाशन २०१३)

असमति (उद्युक्था संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर हा 'कमठ' (सौजन्य- नवोनामाप्राप्त मसि)

कमठ-नाठ (गीत संग्रह)

नामथेयन ङकुन (सौजन्य- नामथेयन ङकुन)

जे कहव सँय कहव

आँपुमिगने आँपुपिठने (संस्मृता)

संस्मृति योप्यनठ नंग (संस्मृता)

अपूर्वा (कवति संग्रह)

शहिसहना (कवति संग्रह)

देशक नाम छठै सोन यडिया (कवति संग्रह)

ठाप्य पूरुण अगुत्तति (कवति संग्रह)

पूतयिवगि (वदिसी भाषाक कवतिक मैथिली नूपागतिस)

पद्मानदीक माही (अगुदति उपन्यास)

मैथिली ठेककथा

आणुक कवति (सम्पादति कवति संग्रह)

वेताठ कथा (हास्य-व्यंग)

देसठि वपुग (अपुवा)

वदिस नामठेयग गकु वसिषांक

उाँ देवसंक गवीग (सौभाग्य- देवसंक गवीग)

आयुगकि साहित्यक परिशिष्ट

उाँ वयेश्वर ह

गविग्य-गकुम्प

जगदीश यगुन गकु "अगठि" (सौभाग्य- जगदीश यगुन गकु "अगठि")

आप्यमि यति हो मैथिली के (आत्मकथा- जानी)

यानक ओर पान (दीर्घ कवति)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गणठ गंगा (गणठ संग्रह)

तोना अंगना मे (गीत संग्रह)

तोना अंगना मे (गीत संग्रह)- मूठ

वदिस जगदीश यगुन गकु अगठि वसिषांक

नाण कशिम मशिम

यागगि (कवति संग्रह)

सप्तपत्नी (कविता संग्रह)

नवीन्दु नानायाम भक्ति (सौण्डर्य- नवीन्दु नानायाम भक्ति)

गोसँ साँह यानि (आत्म कथा)

पुनसंगवक्ष (गविध)

सुवर्ग एतहि अर्घि (प्राणा पुनसंग)

शुसाह (कथा संग्रह)

गमसुतस्यै (उपन्यास)

विविधि पुनसंग (गविध)

महाना (उपन्यास)

उजकोट (उपन्यास)

सीमाक श्रोहि पान (उपन्यास)

समाधान (गविध संग्रह)

मान्गुमि (उपन्यास)

सुवर्गवोक (उपन्यास)

शंप्पनाह (उपन्यास)

इह थकि जीवन (संस्मनाम)

ढहैन देवाथ (उपन्यास)

पाथेय (संस्मनाम)

हम आवा निहथ छी (उपन्यास)

पुनथक पान (उपन्यास)

वीतगिथ समय (उपन्यास)

पुनविमिव (उपन्यास)

वदथ निहथ अर्घिसग कछि (उपन्यास)

गाष्टन मंदिनि (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

गायनिहृषि विसुधा (उपन्यास)

दीप जगैत नहर (उपन्यास)

डेहा पनक मौठाएत गाछ (उपन्यास)

गन्ध कुमान भस्मि ' गन्ध' (सौजन्य- गन्ध कुमान भस्मि ' गन्ध')

गामधन (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महानगी कैकेयी (पुनव्यगात्मक गविन्ध)

गुदगीक ठाठ (उपन्यास)

अगर्ग्या कुकुन (उपन्यास)

आडम्वन (कथा संग्रह)

दृष्टिक पानक (शब्द यति)

सुकन्या (उपन्यास)

सर्वनाम कमठ (वाठ उपन्यास)

काव्य सगिता (मैथिली काव्य संग्रह)

पुनविान (संस्मनात्मक उपन्यास)

प्रायक के गर्जा (मैथिली शब्द-यति)

सत्यागन्ध पाठक (सौजन्य- सत्यागन्ध पाठक)

हमन गाम (उपन्यास)

डॉ उदय गामाग्राम सहि "नयकिता" (सौजन्य- नयकिता)

गो एम्टनी : मा पुनवशि

आग्दोठन

एक छठ १।।।।

जगक आ' अग्याग्य एकांकी

गाटक क छेठ

गायक क नाम जीवग

पुन्यावर्णन

नामछेठ

पुन्यिबदा (एकांकी)

नयकिता व्रिधि (मैथिली, वांग्वा, हगिदी आ अंग्नेजी)

मैथिली कवति-न्यैमासकि (अपुनैठ १८६८)

मैथिली कवति-न्यैमासकि (पुणैठ १८६८)

मथिलि दसग माय २०२१

मथिलि दसग गवमव २०२१

नव्रिगुषाम पाठक

नहिसठ (गाटक)

वदिलःसदेह २८ (नव्रिगुषाम पाठक आ उाँ कैश कुमा १ मसि- अंक १-३५०

सं)

वदिलःसदेह २७ (गणेश गकु आ नव्रिगुषाम पाठक आग भाषासं अगुदति

गदय आ पदय- अंक १-३५० सं)

उाँ कैश कुमा १ मसि

वदिलःसदेह २८ (नव्रिगुषाम पाठक आ उाँ कैश कुमा १ मसि- अंक १-३५०

सं)

कुमा १ मगोण कस्यप

वदिलःसदेह ३१ (उाँ कामिणी कामायणी आ कुमा १ मगोण कस्यप- अंक १-३५०

सं)

डॉ शम्भु कुमार सहि

(नूकानाम नामा शेटक कोकामी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सहि द्वारा) पापथि

वर्दिहःसदेह रद (डॉ शम्भु कुमार सहि आ डॉ श्याम कुमार सहि अंक १-३५० सं)

डॉ श्याम कुमार सहि

वर्दिहःसदेह रद (डॉ शम्भु कुमार सहि आ डॉ श्याम कुमार सहि अंक १-३५० सं)

कुमार पत्रग (सौजन्य- अंकि)

पत्र (मैथिलीक सवशेष कथा)

दायनीक पाथि पत्रग

केशव नामद्वारा

अनूप अशुनीका (अशुनीका दायनी) पृ २१४-४६६

कछि पठे आ कछि सुने- ईदी अमीन पृ ४८८-५४८

पेठैना पृ ४६७-४८७

पैवने पृ ५४८-७८८

कछि कथा ५०-४६३

गोपाथ हा 'अभिक' (सौजन्य- गोपाथ हा 'अभिक')

आउ सवपत्र सादी कनी (कवति संग्रह)

आमोद कुमार हा (सौजन्य- आमोद कुमार हा)

वमिवक पथान (कवति संग्रह)

कशिन कानीगन (सौजन्य- कशिन कानीगन)

कछि सुना गेथ हमा

मुग्गाणी

मोकाम दसि (वीह्निकथा संग्रह)

पूनीक (वीह्निकथा संग्रह)

माँह आंगनमे कताशिए छी (मैथिली गणन संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्काम)

तीन टा वाठ गटक (मैथिली वाठ साहित्य)

पुनरुत्थी (मैथिली वाठ कविता- वाठ साहित्य)

घाह (हरकू-टका संग्रह)

सन्दीप कुमार साँधी

वैशाखमे दठनपन (पहिले मैथिली दठति आत्मकथा सहति)

ओम प्रकाश हा

कयौ वूह गै सकठ हमना (गणन, नुवाइ आ कता संग्रह)

अमति मस्ति

नव अंशु (गणन-हणन, नुवाइ संकठन)

यगदग कुमार हा

मोनक वान (गणन, हणन, वाठ गणन, नुवाइ आ कताक संकठन)

डॉ. अममोठ हा

समय साक्षी थकि (वीह्निकथा संग्रह)

इ जे समय अछि (वीह्निकथा संग्रह)

वनिप्र नूषाम (सौजन्य- आशीष अगयनिहाम)

उजना पनवाक प्योण (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार हा

टाकाक मोठ (गटक)

कठह (गटक)

वदथैत समाज (गाटक)

यथाज्ञ गवकी कर्णियाँक उवास (गाटक)

हगान् पनविमनग (गाटक)

मुक्तयिान्ना (गाटक)

शत्रि कुमान हा "टठ्ठू"

कषाम्पना-कवति-संग्रह

शंशु-समाधियग

देवांशु वत्स

गनाशा -मैथिी वाठ यतिशंप्पठ (कौमकिस)

डं व्रिगीत अपठ

हम पुष्टैत छी (कवति संग्रह)

नेहन पन गधू - काशीगाथ सहिक हगिदी उपग्यासक व्रिगीत अपठ द्वारा मैथिी

श्रुवाड

मगान्दपटाकष्यशुंङ्गा- ठेपक हसिकमशीवासनव "शठम" (हगिदीसं

मैथिी श्रुवाड व्रिगीत अपठ द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हगिदी उपग्यासक व्रिगीत अपठ द्वारा मैथिी

श्रुवाड

मोहनदास (मैथिी-देवगागी) मोहनदास (मैथिी-मथिीकषम) मोहनदास

(मैथिी-वनेठ)

जगदानन्द हा "मगु" (सौजग्य- जगदानन्द हा "मगु")

गढिया गुकैए हमन घनाडीपन (गजठ संग्रह)

गोहन कतेक गंग (व्रिगि कथा संग्रह)

योगहा- (वाठ उपग्यास)

वृथथा- (कवृति-गीत संग्रह)

गाणदेव माम्७७

श्रमवना-कवृति-संग्रह

हमन टो७ (उपन्यास)

वसुंधना(कवृति संग्रह)

गा७ (पटकथा)

७गा (एकांकी)

गा७ गंवन (उपन्यास)

नृविमीक गंग (वृह्निश्री ७धु कथा संग्रह)

पंयैती (७धु पटकथा)

वापसी

ढाणदौ माणद७- माणहृषि श्रीगतिन वपु धाणगेदना थलकुन

दुगाणगद माम्७७

संययकिा

कथा कुसुम (वृह्निश्री ७धु कथा संग्रह)

यकषु

गाम वृषिस साहु

शंकुन- ७धुकथा संग्रह

नथक यकका उ७ट यि७ै वाट (कवृति टनका संग्रह)

कनम वृषि गा सुगना (दोसन कवृति टनका संग्रह)

सकू७क पयिडी (वृह्निश्री ७धु कथा संग्रह)

दूधवेयनी (७धु कथा संग्रह)

मगक मै७

गामायम प्रादव (सौणग्य- उमेश माम्७७)

प्राणी घन

नामदेव प्रसाद मास्के "हानूदान"

हमना वरिण जगन सूना छै

गीतांजलि हानू

कपटेश्वरना नाउन

उठहन (वहिन- उधु कथा संग्रह)

गंद वरिस नाय

सपानी-पेटानी(उधुकथा संग्रह)

मदन श्रमन (दोसना उधु कथा संग्रह)

मनाजादक गोण (दोसना उधुकथा संग्रह)

गनदुनायि

छर्क उठा

हमना यानुयाम

श्रसठ पूजा

उठन कुमान कामन (सौजग्य- उमेश मास्के)

कछु वहिन श्रि उधुकथा

उमेश पासवान

वनासाति नस

वेयन गकुन

वेटीक अपमान श्रि छोगनदेवी (गाटक)

वाप मेठ पतिनी श्रि श्रयकान (गाटक)

वसिवासधान (गाटक)

ऊँय-नीय (गाटक)

गौट (गाटक)

उँ उमेश मास्के

जगदीश प्रसाद मासुडक काव्य संसार (अनुसन्धान वृत्तिवेषा)

अनुसन्धान (संकलन-सम्पादन)

हेतुवुक सँ श्लेषवुक यन्त्रि (संकलन-सम्पादन)

जोतए ने जाए कवि श्रोतए जाए अनुसन्धानी (संकलन-सम्पादन)

गन्धर्वकिर्ण (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान यन्त्रि (संकलन-सम्पादन)

गन्धर्वकी- कविता संग्रह

मथिषिक संस्कृत गीत, वृत्ति-वृत्तवहान गीत आ गीतगाह (संकलन)

मथिषिक वनस्पति स्रष्टाशु शो मथिषिक जीव-जन्तु स्रष्टाशु शो मथिषिक
जानिगी स्रष्टाशु शो

मतिहृषि श्रुतिगणित- मोहान अन्त- श्रुतेतोस

सगल गान्धीप जन्म- शक्ति

सगल गान्धीप जन्म- आन्ती कुमारी श्रुति

द्वय-पान्थि श्रुति-श्रुति (कथा एवं पाम्मुडुपि जगदीश प्रसाद मासुडक) - (छाया

एवं सम्पादन- उमेश मासुडक)

हृदयसंगीत मुसुमान और हृदयसंगीत - मूठ हृदय वेप- गीतेश शर्मा,

मैथिली अनुवाद- उमेश मासुडक

उमेश मासुडक द्वारा मैथिली वेपकक यन्त्र संसारसँ वीरु वृत्तियक पाम्मुडुकेक
पोथी

जगदीश प्रसाद मासुडक गान्धेव मासुडक ो शक्ति कुमारी प्रसाद गान्धेव

प्रसाद मासुडक "दानुदान" नाम वृत्तिस साहु गन्ध वृत्तिस नाम कपटिश्वर

गान्धेव प्रीतम कुमारी गणित

मथिषिक सगल गान्धेव आ यन्त्र संस्कृत, लोकगीत आ वृत्तवहान गीत :सौजन्य)

(उमेश मंसुडक)

१२ ३४ ५६ ७८ ९० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३

अन्नान्धवर्गि एवम् ययन -गोट वीछठ कथा जगदीश प्रसाद माह्मूडक १५)
(उमेश माह्मूड -सम्पादन)

जगदीश प्रसाद माह्मूड

गामक जगिगी (उद्युक्था संग्रह)

मथिथिक वेटी (गाटक)

मौठाइठ गाछक श्रुठ (उपन्यास)

जगिगीक जीत (उपन्यास)

अन्थान-पान (उपन्यास)

जीवन-मन (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

नरेगन (वाठ प्रेमक वहिगि कथा संग्रह)

पंयवटी (एकांकी-संययन)

अन्ध्यांगिगीसोजगी सुनदना गाश्क सगिह श्यादा (उद्युक्था संग्रह)

कम्पुनोमाश्न (गाटक)

हमेठिया वशिह (गाटक)

इन्दयगुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीन्ध कथा मस्टुगान, शंभुदास आ श्रुँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

नात-दिगि (कवति संग्रह)

सतमैया पोप्यनि (उद्यु कथा संग्रह)

तीन जोड़ एगामहम माघ (गीत संग्रह)

वज्रगता-वृहगता (वृहगि कथा संग्रह)

नानाकन डकैत (गाटक)

वडकी वहनि (उपन्यास)

नकमोड (उद्यु कथा संग्रह)

उठवा याउन (उद्यु कथा संग्रह)

सनाति (कवति संग्रह)

सुप्याए पोप्यनकि पाइड (गीत संग्रह)

नै याडैए (वाठ उपन्यास)

सवयंवन (गाटक)

पानहाड (उद्यु कथा संग्रह)

शुठलन (उद्यु कथा संग्रह)

गामक शकठ सूतन (उद्यु कथा संग्रह)

ठणवणि (उद्यु कथा संग्रह)

वटेसन काका (उद्यु कथा संग्रह)

श्रामक गाछी

श्रुपुन गाम

द्वितीक दीप

पंयदेव सीनीण

पंयदेव-१ पंयदेव-२ पंयदेव-३ पंयदेव-४ पंयदेव-५ पंयदेव-६ पंयदेव-

७ पंयदेव-८ पंयदेव-९ पंयदेव-१० पंयदेव-२० पंयदेव-३० पंयदेव-

४० पंयदेव-५० पंयदेव-६० पंयदेव-७० पंयदेव-८० पंयदेव-९० पंयदेव-१००

दुय-पाणि शुभाक-शुभाक (कथा एवं पाण्डुपि जगदीश प्रसाद

माण्डव)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश माण्डव)

जगदीश प्रसाद माण्डव जीक दप टा पोथीक नव संस्करण व्रदिहक २३३ (व्रदिह ०१ ०८ २०१७) सँ २५० (व्रदिह १५ ०५ २०१८) धरिके अंकमे धानावाहिके प्रकाशन नीयाँक ठकिपन पूढः-

वसन्त २३३	वसन्त २३४	वसन्त २३५	वसन्त २३६	वसन्त २३७	वसन्त २३८
वसन्त २३९	वसन्त २४०	वसन्त २४१	वसन्त २४२	वसन्त २४३	वसन्त २४४
वसन्त २४५	वसन्त २४६	वसन्त २४७	वसन्त २४८	वसन्त २४९	वसन्त २५०

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूठ पुनस्का २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद नामेश्वर प्रसाद माण्डव)

अप्पन साती (उद्युक्ता संग्रह)

मोडपन (उपन्यास)

सुयति (उपन्यास)

सेहना सेहने नहिगेठ (उद्युक्ता संग्रह)

डॉ शशधर कुमर

उडिगे सकी पन यडि छी हम (भाग १-२) (पृ १०५४-१०८५)

पसिसा आमाटाकटिका केन (पृ १०५४-१०८५)

वाठ कवति (पृ ८८३-१२१५)

वाठ कवति (पृ १००४-११७३)

सयतिन वाठ कवति (पृ ७४७-८३४)

सयतिन वाठ कवति (पृ १४६८-१८५०)

गणेश्वर गुरु

मैथिलीक आदिकिषि विद्यापति (ज्योतिषीश्वर पूव)

गणेश गुरु आ प्रीति गुरु (समाधेयना)

तेलु कथा आ ओडिया, तेलु, गुजराती, मोजपुरी आ कश्मीरी कविता

तेलु कथा आ ओडिया, तेलु, गुजराती, मोजपुरी आ कश्मीरी कविता

(मथिलिक्षण)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (निहना)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रवचन-विवचन-समाधेयना भाग-१

प्रवचन-विवचन-समाधेयना भाग ६ (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्गत-२)

प्रवचन-विवचन-समाधेयना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्गत प्प्रा०-८)

(संक्षिप्त)

गति गवत दगिश कुमान मशि

गति गवत दगिश कुमान मशि (मथिलिक्षण)

गति गवत दगिश कुमान मशि (कैथी)

गति गवत दगिश कुमान मशि (नेवाडी)

गति गवत दगिश कुमान मशि (इशुअ)

दूषम प्रज्जी- थहे गायक गौक

दूषम प्रज्जी- थहे गायक गौक (मथिलिक्षण)

प्रवत अपन गमना जो सूनत (वीहना, उधु आ दीनघ कथा संग्रह)

प्रवत अपन गमना जो सूनत (मथिलिक्षण)

प्रवत अपन गमना जो सूनत (कैथी)

पुनर्वत उपन गमना जे सुनठ (नेवाडी)

पुनर्वत उपन गमना जे सुनठ (इशुअ)

सुवपुनमे मणिहिन हेश

थहे पयोगिये १०७ श्रौमहस

ढाणहो मागदाथ- मातिहठि श्रौमति (मौगिह पुपपठेमेग ३ & ३३)

हथधयइपह शुठअपथय मशमथअड- मातिहठि श्रौमति

गति गवठ सुभाष यगहन यादव

गति गवठ सुभाष यगहन यादव (मथिठिकषा)

जगदीश पुनसाह मसुठ- एकटा वापोगनाशु

जगदीश पुनसाह मसुठ- एकटा वापोगनाशु (हनिदी श्रुवाह नामेश्वर पुनसा
ह मसुठ)

जंगा वृजि (गाटक)

उठकामुप (गाटक)

संकुषम (गाटक)

यांगविट वनेवाक दाम अगुवान पेने छँ (नुवाइ, कता आ गणठ संग्रह)

सहस्रजति (पद्य संग्रह)

सहस्रवादीक यौपडपन (पद्य संग्रह)

नवभ्याहभ्य आ असभजानिमिग (दूटा गीत पुनवग्थ)

सहस्रवाढगि (उपन्यास)

सहस्रवाढगि वनेठ-मैथिठि (मैथिठिक पहठि वनेठ पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गठप-गुयछ (वहनि आ ठु कथा संग्रह)

शवदशासनम् (ठुकथा संग्रह)

वाठ मसुठि कशोन जगन (वाठ गाटक, ठुकथा, कवति आदी)

कुमुक्षेत्तम् अन्तन्मनक

देवगागी वसुन निहना वसुन व्नेथ वसुन

डेनन मातिहथि पगिन डनगुगे

डेनन मतिहथिकसहन पयनपिन

डेनन मनाथिथे नह्युगह मतिहथिकसहन पयनपिन

डेनन इनेतेनगातीगाथ शुहेनेतयि पयनपिन नह्युगह मतिहथिकसहन पयनपिन

डेनन प्पातिह

डेनन मौन

डेनन छाथगिनापहयि मौन (ढनणागा)

डेनन उनदु पयनपिन

डेनन थवितान पयनपिन

डेनन हापनेसे पयनपिन डेन हाकि

डेनन मनाहर्मा

डेनन प्पहनोसहनर्ह

मथिथि नन् मथिथि यतिनकथ मथिथिक पावर्गतिहिन (कथा) आ मथिथिक संगीत

नथेदीप (वाथ-गाटक संग्रह)

अक्षमभुष्टकि (वाथ-थुक्थ संग्रह)

वाडक वडौना (वाथ-पद्य संग्रह)

गानासंसी (गीत-पुनवन्ध)

मयामुड (गाटक)

वाथ साहित्य (मूथ)- गणेश्च गकुन

मड पारव छू (मैथिलीक २०१२ मे पुनकाशति पहि क्वाइमेट-शुक्शिन पुथे-
मातिहथि स डनिसन यथमिने- डयितागि पवाय नेगिनिगाथथ पुवथसिहेड नि
२०१२)

कमठक गगना

नानामि पनीठेक

वेसी छुट्टी कम रसकूठ

वडए कपैए दाउन ने यौ

वाठ गणठ

शुनिसि ठाइन

अनूदति साहित्य (आन भाषासँ)- गणेश्वर गकुल

वदिएःसदेह २७ (गणेश्वर गकुल आ नवगुणाम पाठकक आन भाषासँ अनूदति

गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

वाठ साहित्य (अनुवाद- द्वाभिषकि- मैथिली-अंग्रेजी)- गणेश्वर गकुल

मसई केन पत्रिगतनकारी नेवेका

शेष ४० टा वाठ यति-पोथी नीयाँक ठिकपनः-

अंक	धन अर्थ	पकटा गीक दनि	अठुअन गीक छी नै	सो अहाँ ऐ यडि सगकँ देपने छी?
१५४	वडिया कलाथेका	पानम सन गीक छी	आनगिठक गणकमानि	आनगिठक गणकमानि (वगु अठुअन)
१५५	कसक- कसक	वृत्तमनक- नोमड	मन गीक छी नै नै नै नै	अठुअन आनगिठक गणकमानि
१५६	कपन गी- कपन गी	पानमनक आनव गीक	मिठ नाना पानम-दुववड ककड	कपन गी कपन गी नै नै नै नै
१५७	सन सन सन छी	छोट छोट-दुववड छी	अन गीक- वगु गीक	३ सनटा वकिठिक गीक कथी
१५८	सन टोठक गड	पानम अठुअन अठुअन	आन गीक आन गीक	आनगिठक गणकमानि
१५९	पानमनक-आन	ककडक पकटा दनि	आन गीक छी	आनगिठक गणकमानि
१६०	छोट वदिया	पानमनक गणकमानि	आन गीक छी	आन गीक छी

वदिए मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीक-अठुअन आँठुअन वुक

आनपस्वठोमठविनामयो गणपठयेन अठुअन अठुअन (मसई केन पत्रिगतनकारी नेवेका)

आनपस्वठोमठविनामयो गणपठयेन अठुअन अठुअन (यू हन गँ गीक छी ने!)

आनपस्वठोमठविनामयो गणपठयेन अठुअन अठुअन (एकटा गीक दनि)

आनपस्वठोमठविनामयो गणपठयेन अठुअन अठुअन (धन सन)

आनपस्वठोमठविनामयो गणपठयेन अठुअन अठुअन (की अहाँ ऐ यडि सगकँ देपने छी?)

मथअ- उधख उधपख मथपख मातिहठि ओपानिठ- गणेश्वर गकुल

मैथिली सभिकषाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (नलिहना)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुपयोग)

मैथिली पुनर्जागृति

[सुश्रुते ०६ मातृहृदि नि श्ने-सुोपोन उगुगो ढमठिय ओगिनि गद देवेवेपमेन ०६ मातृहृदि उगुगो
[षासकति, सुाकति, अवहान, मातृहृदि गोपिय भाषा पुनरिा मय्य मैथिलीक सथाग मैथिली भाषाक उद्गव
श्री वक्रिस (संस्कान, पुाकान, अवहट्ट, मैथिली)]

[छनतियिसि- यडिडेनेन उतिानय ढेनमस नि मोहेन एना तेसत ०६ यनतियाि वठितियो ०६ तहे यागदितेस)
[पुोतगीश्वर, वदियापति आ गोवर्गददास सठिवसमे छथि आ नसमय कवा यतुन यतुनगुण वदियापति किठिन कवा
छथि एय समीक्षा संपठक पुानमन कवासँ पुव यानु गोटक शवदावठी गव शवदक पुयय संग देउ जा १९९
अछा गव आ पुान शवदावठीक पुानसँ पुोतगीश्वर, वदियापति आ गोवर्गददासक पुसुगतानमे यान आओन,
संगहि शवदकोष वढासँ पाँटी मैथिलीमे पुसुगतान ठपिवामे यय आसते-आसते पान लेयत, ठपनीमे पुवाह आयत
आ सुयया गावक अगवियकति गय सकत।

[वदनीगथ द शवदावठी आ मथिलीक कष-मनस्य शवदावठी]

[वैठ्यू एडीशन- पुथम पान- ठेक गायामे समाज ओ संस्कान]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पान- वदियापति]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पान- पद्य समीक्षा- वागी]

[वैठ्यू एडीशन- पुथम पान- ठेक गायान गाय गटक संगीत]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पान- यानी]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पान- मैथिली नामायस]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पान- मैथिली उपन्यास]

[वैठ्यू एडीशन- पुथम पान- शवद वयान]

[नलिहना ठपिक उद्गव ओ वक्रिस]

अनुगक-१-२-३ अनुगक-४-५

[मैथिली आ दोस पुवयि भाषाक वीयमे समवग्य (वांग्वा, असमयि आ ओडयि) [यूपीएससी सठिवस, पान-१,
भाग-"ए", कान-५)]

[मैथिली आ हिनदी वांग्वा गोजपुनी मगहि संथाठी- वहिन ठेक सेवा आयोग (वीपीएससी) केन सठिवि सेवा पनीक्षाक

मैथिली (एय्छकि) वषिय ठेठ]

मैथिली

वांग्वा

असमयि

ओडयि

हिनदी

३१६

नेपाळी

संस्कृत

संथा

सथश्र उघष ससथ सतिहिति ०१- गजेगुन गकु

सथश्र उघष ससथ सतिहिति ०२- गजेगुन गकु

थसत थेनेसि- १- गजेगुन गकु

थसत थेनेसि- २- गजेगुन गकु

घष (शुने)

थोपयि १ - गजेगुन गकु

गजेगुन गकु (सम्पादन)

<p>वदिल-सदेह १-२५ वदिलियोगि वदिल ई-पत्राकिक शंक १-३५० सँ- मैथिलीक सन्वसनेषु गदुय श्र पदुयक एकटा समागानागल संकषण</p>	
देवनागरी	मथिलीक्षम
वदिलसदेह १	वदिलगिहना सदेह १ :
वदिलसदेह २ मैथिली पुनववध-नविगध-समाधियग	वदिलः सदेह २ गिहना
वदिलसदेह ३ मैथिली पदुय	वदिलः सदेह ३ गिहना
वदिलसदेह ४ मैथिली कथा	वदिलः सदेह ४ गिहना
वदिल मैथिली वदिल कथा वदिल सदेह ५	वदिलः सदेह ५ गिहना
वदिल मैथिली वदिल कथा वदिल सदेह ५२-संस्कृत-१	वदिलगिहना २-संस्कृत सदेह ५ :
वदिल मैथिली उद्युक्था वदिल सदेह ६	वदिलः सदेह ६ गिहना
वदिल मैथिली पदुय वदिल सदेह ७	वदिलः सदेह ७ गिहना
वदिल मैथिली नाटुय आसव वदिल सदेह ८	वदिलः सदेह ८ गिहना
वदिल मैथिली शसि आसव वदिल सदेह ८	वदिलः सदेह ८ गिहना
वदिल मैथिली पुनववध-नविगध-समाधियग वदिल सदेह १०	वदिलः सदेह १० गिहना
वदिलसदेह ११	वदिलगिहना सदेह ११ :

वर्द्धिःसदेह १२:	वर्द्धिःसदेह १२:
वर्द्धिःसदेह १३:	वर्द्धिःसदेह १३:
वर्द्धिःसदेह १४:	वर्द्धिःसदेह १४:
वर्द्धिःसदेह १५:	वर्द्धिःसदेह १५:
वर्द्धिःसदेह १६:	वर्द्धिःसदेह १६:
वर्द्धिःसदेह १७:	वर्द्धिःसदेह १७:
वर्द्धिःसदेह १८:	वर्द्धिःसदेह १८:
वर्द्धिःसदेह १९:	वर्द्धिःसदेह १९:
वर्द्धिःसदेह २०:	वर्द्धिःसदेह २०:
वर्द्धिःसदेह २१:	वर्द्धिःसदेह २१:
वर्द्धिःसदेह २२:	वर्द्धिःसदेह २२:
वर्द्धिःसदेह २३:	वर्द्धिःसदेह २३:
वर्द्धिःसदेह २४:	वर्द्धिःसदेह २४:
वर्द्धिःसदेह २५	वर्द्धिःसदेह २५ तनिह्नुना
<p>वर्द्धिः-सदेह २६-३६ तनिह्नुना</p> <p>वर्द्धिः ६-पान्नाकिक अंक १-३५० सँ- थीम आधानति मैथिलीक सन्वसनेषु मूठ आ अगूदति गद्दु आ पद्दुक एकटा समागान्ना संकठन</p>	
वर्द्धिःसदेह २६ (७० अमरा कुमान सहि आ ७० अमरा कुमान सहि अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २६ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह २७ (गणेश आ नवग्रह पाठक आग भाषासँ अगूदति गद्दु आ पद्दु- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २७ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह २८-अगूदति गद्दु आ पद्दु- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २८ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह २९ (नवग्रह पाठक आ ७० कैलाश कुमान मसिन- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह २९ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३० (सुकुण-कठिनक वर्द्धिःसदेह अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३० तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३१ (७० कामिनी कामायनी आ कुमान मनीषा कथन- अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३१ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३२ (नयनात्मक गद्दु-पद्दु अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३२ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३३ (नयनात्मक गद्दु-पद्दु अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३३ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३४ (नयनात्मक गद्दु-पद्दु अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३४ तनिह्नुना
वर्द्धिःसदेह ३५ (नयनात्मक गद्दु-पद्दु अंक १-३५० सँ)	वर्द्धिःसदेह ३५ तनिह्नुना

वर्द्धिः-सर्द्धिः उद्ध (नथनानमक गद्ध-पद्ध उधन)	वर्द्धिः-सर्द्धिः उद्ध नानिद्ध
गान-५- अंक १-३५० सौ)	

यूपीएससी आ आग पुननिधिगति पनीक्षा उध दैयुः

वर्द्धिः-सर्द्धिः १७	वर्द्धिः-सर्द्धिः २१	वर्द्धिः-सर्द्धिः २२	वर्द्धिः-सर्द्धिः २६	वर्द्धिः-सर्द्धिः २८
वर्द्धिः-सर्द्धिः ३०	वर्द्धिः-सर्द्धिः ३२	वर्द्धिः-सर्द्धिः ३३	वर्द्धिः-सर्द्धिः ३४	वर्द्धिः-सर्द्धिः ३५

वर्द्धिः- पाद्धिः

गानापाक - वर्द्धिः मैथिली नानक गाना आ मैथिली गाना सम्पादन पाद्धिः-१

वर्द्धिः पुनान अंकक आन्काद्ध

वर्द्धिः १- ५०

वर्द्धिः ५१- १००

वर्द्धिः १०१- १४८

वर्द्धिः १५०- २५०

वर्द्धिः २५१- ओगौनद्ध

शुद्धी अनयद्धिः ढेउद्धे

नानिद्धिः आनिनिधि- नोद्धेन अनान- शुद्धेनोद्ध

वर्द्धिः ओउद्ध ३ससुद्धे ढेउद्धे

वर्द्धिः छगससुद्धिः पानिस ढेउद्धे

गानेद्धुन गकुन आ आशीष अनयनिधन (सम्पादन)

मैथिलीक पुननिधिगाने

मैथिली गानेः आगन ओ पुनस्थान वर्द्धिः (गानेक आधेयना-समाधेयना-

समीक्षा)

गानेद्धुन गकुन, गानेद्धुन कुमान हान आ पञ्जीकान वर्द्धिःगानेद्ध हान (सम्पादन)

गानेद्धुन मैपानि (४५० एडिसं २००८ एडि)--मैथिलीक पञ्जी पुनवद्ध

जोगयिओजकिठ मैपगि (४५० एडीसँ २००८ एडी)--मथिठिक पञ्जी पूवन्व -

भाग-२

११००० शुश्रुतम उपश्रुत शुश्रुतस्य सम्पद्युत्सुथश्रुतस्य (वश्रुतुमए २ थश्रु

शशश्रु) छेमपठिह, पयानगेह & छानाठोगेह वय शुभेतिथिहकु

मश्रुथहसुड- एमघडुषह यश्रुथश्रुतस्यश्रुतस्य

मातिहठि- एगठसिह ययितीगानय व्रोठ

मातिहठि- एगठसिह ययितीगानय व्रोठ

एमघडुषह- मश्रुथहसुड यश्रुथश्रुतस्यश्रुतस्य

व्रदिह एगठसिह मातिहठि ययितीगानय

एगठसिह- मातिहठि छेमपुतेन ययितीगानय

दगिश कुमान मशिन् (सौजन्व दगिश कुमान मशिन्)

वन्दनी महनन्द

वागमती की सद्गता!

दुः पाटन के वीथ में (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घन

वगावत पन मज्जुन मथिठि की कमठा नदी

गुनही नदी श्रौन तकनीकी हाड-शुंक

थहे पामठा ढवैन नद श्रौपठे श्रौग छेठठिसीगि छेनसे

गुनहाहि गाठन- पतोनयोड । गलेसन नदिन नद नगनिनगिगौतियहयनाडन

ढेडुगोसोड नहे प्योसि एमवागकमेगनस

पानकि-पानठ-समानकि

मथिठि महिन (मथिठिउक) १८३६ (सौजन्व- सुनेन्दन हा सुमन् श्रीमगाथ हा)

मैथिठि कवति-नैमासकि (सौजन्व- नयकिता)

मैथिली कविति-न्यैमासिक (अप्रेत १८६८)

मैथिली कविति-न्यैमासिक (पुत्र १८६८)

कौशिकी (सौण्य- पञ्जीकान वद्विगण्ड हा)

कौशिकी (१८७१-७२)

देसठि वयग (अपवान) (सौण्य- नामवेयन गकु)

देसठि वयग (अपवान)

मथिठि दक्ष (सौण्य- गयकिता)

मान्य २०२१

गवमव २०२१

पोयतिथ थोदाय (सौण्य- सुमति आण्ड)

अंक ११

संकप (सौण्य- योगाण्ड हा)

अंक ५ १८८८

अंकिका (सौण्य- गौरीनाथ)

पुत्र-सतिमव २००८ (हमिहण हा वशिषांक) अक्टूव २०१०सँ मान्य

२०११ अक्टूव २०११ सँ मान्य २०१२

मानती मंडन (सौण्य- केदा कानन)

अंक-१६

सग्याग (सौण्य- अशोक)

सग्याग १

सग्याग २

सग्याग ३ पनमास वशिष

सग्याग ४

मथिठिगण (सौण्य मुकेश दान)

अपूर्वै-सतिम्पन २०२२

मैथिली (सौजन्य- प्रकाश हा)

अंक-३

दूआ-यणा (सौजन्य- पामेश्वर कापडी)

अंक ७ अंक १४ अंक १५ अंक १६ अंक १८ अंक १० पून २०१२ अंक २४ पून
२०१२ २३६वृत्तानुप्र०१६ २५ पुन१३ २०१२ ०५ अगास २०१२ आसनि २०७३

समाजिका (सौजन्य- नामगोस कापडी ग्मम)

समाजिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- नामगोस कापडी ग्मम)

आंगन अंक-४ (२०१२) सहेस वशिषांक

आँपुन (सौजन्य- नामगोस कापडी ग्मम)

आँपुन (अंक वृष ३६, अंक ३) सोमदेव वशिष

गामघन (सौजन्य- नामगोस कापडी "ग्मम")

गामघन-३०-०८-२०१८

गामघन-०४-१०-२०१८

गामघन-१६-०५-२०१८

गामघन-२७-०६-२०१८

दूधमती- (नेपाठी आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार हा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक ३५ अंक ३६ अंक ३७ अंक ३८ अंक
३९ अंक ४० अंक ४१

घन-वाहन (सौजन्य- येतना समिति)

अपूर्वै-पूण २०११

नयना (सौजन्य- सुभाष यन्दन दादर)

दसिम्बन "०५ मान्य "०६नाणकमठ यौधनी: भोगोर्नाशु

प००४ (सौणग्य- धीनेर्दुन पुनेमन्षा)

प००४- १ गण० अंक

पुनोर्नाग मैथिलि (सौणग्य- पुनेमकाग्न यौधनी)

अपुने०-गुण २०१० पु००३-सतिम्बन २०१० गणवनी सं मान्य २०११ अपुने०-गुण

२०११ पु००३-सतिम्बन २०११

००६३३ गावांण० सिमानिका २०२२ (सौणग्य ०ँ संजीव शमा)

कछु मैथिलि पोथी डाउनलोड साइट (श्रीपन सोन्स)

सखएदथ गहअपहअ पअसधअम

सखएदथ (मागिहिलि- एग००सिह- हनिद छोगवेनसागिगस)

मैथिलि- हनिदी वानगा०प (३ धसटा)

मैथिलि (मैथिलि संकेत गाषा सहति- मैथिलिमे पहिलि वेन)

हानपसःपुनवेथेमन्वदिहो पुनगा०

हानपसःपुनवेथेवुछ- ०१पसद

हानपसःगयेनगयिगिवस- २०२१पहप

पारिग्या अकादेमी

पुनकासन

उणिटि०- पोथी

छ३३३

अप्यिस० (१मागर्द ह्वा १मस)

पुआप० कगकनी- महेर्दुन

पुनवग्य संग्रह- १मागथ ह्वा (वीपीएससी सठिवस)

सुण केन दीप पुन- सं केदान कागन आ अमवर्दिद गकुन

मैथिलि गद्य संग्रह- सं शैलेर्दुन मोहन ह्वा

अनयहविश्रोग (व्रणियदेव ह्य)

वद्विह मातिहविश्रोगोक्तसो ह्योगाथसु अद्या- वद्वि अनयहवि

इधमधुअ

मातिहविश्रोगाथसिह ययितीगामय

व्रणिभाग १११११

मथिथि दृशग

तीनगुक्ता

ओडए सेपाथ' से - शुसताकाथाया

पोथीक थकि

इधमधुअ- अथइ (सोनयह केयौनद मतिहवि)

हसितोनयोड सावया- मयाया नि मतिहवि

पतुदेसि नि हानिसिम गद गुददसिम नि मतिहवि

मतिहवि नि गहे अगोड वद्वियापाता

छुथुनाथ हेतिगोड मतिहवि

मतिहवि गदेन गहे प्यानगतास

थेमपथे पुनवेय शुनोपेयन अथइ- एगगथसिह आ हनिदा

मैथिथि साहित्य संस्थान

दृशनीय मथिथि (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

गनोयहुने १ (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

गनोयहुने २ (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

गनोयहुने ३ (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

गनोयहुने ४ (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

गनोयहुने ५ (मैथिथि साहित्य संस्थान थकि)

वृद्धम वास्वनेनी मैथिली

अपिग स्वाउम्भेश्वर

शुभातहाम गोकस मातिलिषि पतोनयौवेन

मैथिली आँउयि वुक्स

वदिलि डेद अउद थाउकनिग मातिलिषि अदी गोकस (नियुदनिग मातिलिषि
पगिन डानगागे- इसन तमि नि मातिलिषि)

पोथी डाँट काँम

इ डेवे मातिलिषि (पोथी डाउनलोड ठकि)

गेननि मातिलिषि पुनगाठ

गेन इ डेवे मातिलिषि

पयाने मैथिलि येनठ कनिम यौधनी आ संगीता आननद

मथिलि येपटन

पयिसा- पहिनी नेना गुटका ठेठ

पानकी एशुएम समाया

आकाशवासी दनमंगा पू टपूव येनठ

• दामउ

मैथिली

मैथिली ठेक्सकिन

• वदिलि - डाननिगौथुवे छहाननेठ

वर्द्धि सम्मानः सम्मानसूची- (समानागत साहित्य अकादेमी, समानागत
००ति क० अकादेमी आ समानागत संगीत गटक अकादेमी सम्मान-
(पुरस्कार नामसँ व्रप्पियात

मैथिलीक व्रत्तनी

१

मैथिलीक व्रत्तनी- वर्द्धि मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रत्तनीमे पन्थापन व्रत्तियिता अर्था मुदा पन्थापन देप्पठा अन्त
एक व्रत्तनी श्रृंग ममअ००१ सँ प्रेरति वृद्धाश्र अर्था, से एक एक एक
उपग्रहमे उगटा-पुगटा दियौ, तावे यनि पन्थापन अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठे सेहे इ पन्थापन अर्था, से जे वर्द्धियाथी मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठेने छथि से एक एकटा आन आस-नीउगि दोस-
उपग्रहमे कथी

श्रृंगमओउ श्रृंग ममअ००१

थहेसे जे पन्थापन-देमागद वीकस, सेगद युन टुनेसि
तो दत्तिलीसिताउवर्द्धिहोगामाठियोम थहे गीकस १७ सोमे १७ तहेसे जे
वाठिवठे जेन साठे जेन घौगठे श्रृंग [(य) श्रृंगति थहाकुन,
साठेसर्वर्द्धिहोगामाठियोम], सेगद युन टुनेसि तो साठेसर्वर्द्धिहोगामाठियोम थहे
योगतेगतस १८ दियुमेगतसे - पुवठिसिहेद वय वर्द्धिह (सगिये २०००) श्रृंगम
२२२२- ५४७३ वर्यएहअ (सगिये २००४) जे पेनीदियिठठय वेनिग यहेयकेद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३ मैथिली आँउयि-व्रीउयि संकथन मातिहवि श्रुदासि- व्रदीस

व्रदिह आँउयि-व्रीउयि

व्रदिह व्रदिह व्रदिह विदेह हानपसूव्रदिहयोन व्रदिह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका व्रदिह इसा मातिहवि
बेनगगिहाय प्रोनाथ व्रदिह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका नव अंक देपवाक छे पृष्ठ संकथन श्रुतिश कए देपू अथौरस
नेउनेसह नहे पागेस ॐ व्रीउयि नौ सिसेउ व्रथरहश्र

षोडश ॐ श्रुदा-व्रदी नेउतेद विडेनमातानि (नियुदनिग श्रुनिग, श्रुदा-
व्रसिध & षगिन उनगुगो) नेउतनिग तो मतिहवि मातिहवि

हानपसूव्रीकसगुगुयेयोम



"व्रद्धि" रसत मातिहविठोतगगिहणथये पुोतगत अनयहविठोड शुद्धिसि-व्रद्धिस
'व्रद्धि' पुथम मैथिषि पाक्षकि ई पत्नकि आँडयि-व्रीडयि आन्काश्च
मैथिषि आँडयि-व्रीडयिक संकथन (पून्मतः अय्यवसायकि उद्देश्य आ मात्त
एकेडमकि पुयुग वेथ)आँडयि-व्रीडयि देप्पवाक वेथ सवयति ठकिके क्ठकि
कत्ता ठेन व्रीनिगुद्धिसि-व्रद्धिस यथयिक गहे तेसपेयति ठनिकस

मथिषिक सग जातिआ यन्मक संस्कान, ठेकगीत आ वृत्तवहान गीत (सौजन्यः
उमेश मंडे)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३

गुवाहटी व्रद्धियापतिपिन्व २०१०

पहठि गाग दोसग गाग तेसग गाग यानमि गाग पाँयम गाग

गुवाहटी अन्तन्नाष्ट्रीय मैथिषि सम्मेलन आ व्रद्धियापतिपिन्व २०११

०१ ०२ ०३ ०४ ०५ ०६ ०७ ०८ ०९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
२३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५
४६

मैथिषि श्रुतिम

ममता गावय गीत (सौजन्य- चानेगामा)

कन्यादान (सौजन्य- गणेशश्रीधर)

भातिहविभोवसिोन देगत

भाएदुश्रीय

गामक घन

युङ्ग

यौवटयिा (सौणग्य- धीनेग्दुन पुनेमन्षा)

यौवटयिा

सौणग्य भयिधि

७७का पाग भाग-१

७७का पाग भाग-२

भगिाप-१

वुययिान छौडा आ नाकूपस

भगिाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सधएदुथ गहशुपहशु षशुसधशुम

सधएदुथ (भातिहवि- एगउसिह- हनिद छेनवेनसागिस)

पं उक्पुमीपति सिहि (सौणग्य नमानग्दु हा "नमस")

हन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हन्दी वाचनालय (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिले वे)

हानपसःयुक्तवेयोमन्वदिलो ज्ञानगा

हानपसःयुक्तवेथेवुध- ७५५५८

हानपसःनयेननयिनिवस- २०२५५५

पुत्राने मैथिली येन- कनिम यौधनी आ संगीता आनन्द

मथिलीग ठेक नंग

मथिली यैप्ट

पुसिसा-पहिली नेन गुटका ठे

मनाप

मैथिलीग

मथिलीगन

गंगानि

मैथिली नंगमंय

कोकठि मंय

मथिली द्शन

मथिली मनि

समन्वित्पिण्डनमे

गण्डश्री

अथ यति

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

मथिलि पंकशर

मैथिली कथास

मैथिली समाया (पगता टैविवजिन)

मैथिली टाँक्स

अपुपन टित्री

टित्री टुडे, पगकपुन

दक्षम मीडिया

संस्कृत मथिलि

सातेगामा मैथिली

नवनस मीडिया

पुनोति इंटरनेट

शोनीया श्रुतिमस

अयोध्यानाथ यौवनी

नेडिया पगकपुन

मथिलि टित्री

मधुन मैथिली

मैथिली-नेपाठी सीपू

अपन मैथिी

मैथिी पाठ

सुनेद 1131

मथिीयथ

अमति ह।

पुवेश मठकि

आदित्य श्रुमिस एम्ड मयुणकि

गेपाठ टेथिीणिग

आकाशवामी मैथिी समाया1

आकाशवामी अमन महोत्सव

1श्मदिन

पुयि मठकि

अगामकि ह।

1शु कटस, गयकिना

कुम्ण वहिी

1ाम वाव ह।

व्री जे, वकिस ह।

नमिहुन मथिी

आरु एव मथिी

थेक कथ केद 1

१७गी प७७वी

पूगम मशि१

१७गा ह६

पू७ी ह६

मैथ७ी गकु१

अनुपम मशि१ पॉ७कासट एपीसो७ ४० की११गिथ ह६

वू७म ७ा३व१े१ी मैथ७ी

अ१पि१ श्वा७म७डेश१

शु१ा१हाम गोकस मा१िह७िषि१ो१यौ१े१

मैथ७ी ऑ७यि१ी वुकस

व६िह६ ढे६ अ७े६ था७क१ि१ मा१िह७िषि१ी श्रु६ी गोकस (१िय७ु६१ि१ मा१िह७िषि१ि
ष१ि१ ङ१गु१ो- ३स१ १मि १ि मा१िह७िषि१ि)

ह११पसु३व७ोम७वि१ा१यो११प७ये१श्रु६ी ७६७१५७७ (मसाई के१ प१वि१्ण१क१ी १े१ेका)

ह११पसु३व७ोम७वि१ा१यो११प७ये१प३अ६६१ग१ि (य७ू हॠ १ँ गीक छी १े!)

ह११पसु३व७ोम७वि१ा१यो११प७ये१७१६५७६७मो (एकटा गीक द१ि)

ह११पसु३व७ोम७वि१ा१यो११प७ये१व१७ोसश७प (ध१ स१)

ह११पसु३व७ोम७वि१ा१यो११प७ये१६अ७छ७ु६वा७ (की अहाँ ऐ यडि स१कँ दे५१े छी?)

७ा१की एशु६म सॠया१

आकाश१ामी द१गंगा यू ट्यूव यै१७

३ डे१े म१िह७िषि१ि

गोधने मातिलिषि प्रोगा

गोधने ३ ओवे मतिलिषि

वृषेश यन्द् १ ०९, णकपुनक सौणग्रसँ

हृदियि

ढेठ-पपिहे

पवनकाग्न हा (काश्रप कमठ), गटसमिनि, मधुवनीक सौणग्रसँ

सगयौकी

ब्रह्मिपनिगीन

नूठिका

गीन-गोव्रिन्ददास (गायन दीक्षा गानी)

गोव्रिन्ददास-१

गोव्रिन्ददास-२

गोव्रिन्ददास-३

गोव्रिन्ददास-४

गोव्रिन्ददास-५

गोव्रिन्ददास-६

मैथिली गणेश (गणेश- गणेश्चर गकुल, गायन दीक्षा माननी)

वहने मुनकानवि

गणेश-२

गणेश-३

गणेश-४

७१म सगल गानदीप गनए (०२ अक्टूबर २०१०), गाम वेनमा, जठि मधुवनी
(संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

दर म सगल गानदीप गनए, स्थान- गणेश्चर गकुल जीक गणि आवास, गाम-
मेहथ, जठि- मधुवनी। दनांक- ३१ मई २०१४ (शनि दिन), समय- संध्या छह
वजेसँ। गोष्ठीक नाओ- कथा वौद्य सद्धि मेहथपा सगल गानदीप गनए।
आयोजनक प्येप- दर म आयोजन, संयोजक- गणेश्चर गकुल। वशिषता- वाठ
साहित्यपन केन्द्रीति।

मैथिली-१ (सौजन्य- प्रकाश हा)

नयकिताक एक छठ गाना - भाग-१

नयकिताक एक छठ गाना - भाग- २

काठक ठोक- मेहेश्चर मंगलिया भाग-१

काठक ठोक- महेश्वर मण्डलिया भाग-२

मैथिली भाग-२

कोसी सेमीनार १२ सितम्बर २००८ भाग-१

कोसी सेमीनार १२ सितम्बर २००८ भाग-२

मथिलिगण

वद्विह मैथिली गद्य अन्वय

यू ट्यूव ठके

वद्विह मैथिली साहित्य गद्य कविता पत्रिका अन्वय

वद्विह समागण साहित्य अकादेमी सम्मान समारोह

जगज्जु- वद्विप्रापतिपत्र

जतिवद्विह द्वा. जगज्जु

जामवद्विह

सामा यकेव १

सामा यकेव २

मैथिली कवि सम्मेलन (मथिलि कथयिठ ऑन्गोनाश्लेखन, यूके)

नपिवठके डे २००८ (भाग)

सगल नानदीप जग, कवठिपुन, जून २०१०

भाग-१ भाग-२

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-८ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

रघुह सोवेमवेन २०१२ उगना दे- मय पहोवना सामायान (शुने ह्योतनिसिहौन
मोन मनाहमनि वदियापातिसि उडि एपसिोदे)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

उपम सगल नातद्विप जलए मे मुग्नापीक पहिठि वरिणि किथा पोसटन पुनदुसगी

मथिठिक मूडन- (नसगयौकीक सवमक संग)

हृदयगनायाम ह।

भाग-१ भाग-२ भाग-३

नंगन यौवनी आ हनी मशिन् (नवठा)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-८

ठठति नंग आ हनी मशिन् (नवठा)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीकषा मानती

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुपमा

वटगमनी

गण्ड कुमान भस्मिक गणध पाठ

गण्ड कुमान भस्मिक लोक कवता पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- गोलपुनी अकादमी, गई दल्लि

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- गोलपुनी अकादमी, गई दल्लि सेमीगल रट मान्य २००८

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- गोलपुनी अकादमी, द्वालका, गई दल्लि सेमीगल

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

वदिल सम्भाग: सम्भाग-सूयी (समागल्लन साहित्य अकादमी, समागल्लन
लल्लि कल अकादमी आ समागल्लन संगीत-गलक अकादमी सम्भाग पुनसुका
गलमसँ वल्लिपुल्लन)

मैथिलीक वल्लुगनी

१

मैथिलीक व्रतगी- व्रदिह मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाठ

२

मैथिलीक व्रतगीमे पन्नापन व्रविधिना अर्था मुदा पन्नापन देय्यता अन्त
एक व्रतगी श्रुत गमअ००१ सँ प्रेति वृदाश अर्था, से एक एक एक
उपग्रहमे उगटा-पुगटा दियौ, गवे वनापन्नापन अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठे सेहे ३ पन्नापन अर्था, से जे व्रदियान्थी मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठेने छथि से एक एकटा आन आस-नीउगि दोस-
उपग्रहमे कथि

इधामओउ श्रुत गमअ०-००१

अपन मंगल्ये दितोनीसनाउव्रदिहवाभाषियेन पन पशउ

४मैथिली शसि, वाँ आ कशौन साहित्य मातिहवि छहठिनेन डतिनातुने

वदिह शसि, वाँ आ कशौन अन्सव

वदिह ह वदिह वदिह विदेह हानपसूवदिहयौनि वदिह पुनथम मैथिली पाकषकि ई पानकि वदिह इसा मातिहवि
डोनागिहाउयेजोनगाँव वदिह पुनथम मैथिली पाकषकि ई पानकि नव अंक देपवाक छेउ पृष्ठ सगके नखिनेस कए देपू अथौपस
नेउनेसह गहे पागेस जेन वीनिग नौ सिसेउ वस्यएहथ

बेनयह जेन छहठिनेन डतिनातुने (नियुठुदनिग अुदी- वसिउ & षगिन
डनगुगो) नेठानिग तो मतिहवि मातिहवि

हानपसूवोकसगोगयेयोम



वदिह अनयहविउ मातिहवि छहठिनेन डतिनातुने वदिह मैथिली शसि, वाँ आ
कशौन साहित्यक आन्कास्व (पूनामः अव्यवसायिकि उद्देश्य आ मातृ
एकेडमिकि पुनयोग छेउ) सग पोथी पीडीएश्च डउनठेउ छेउ कमानुसान नीयाँक
ठिकि सगपन उपव्य अर्छा अठठ गहे वीकस ले। वाठिवठे जेन पदउ दौनठोद
न गहे नेसपेयनवि ठनकस वेठौ

मधएठथ गहअपरहथ षअमघअम

मधएठथ (मातिहवि- एगठसिह- हनिदी छेनवेनसागानस)

पं उकषमीपनि सिहि (सौजग्य नमान्द ह। "नमस")

हनिदी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हनिदी वान्ताठप (३ घसुटा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहठि वेन)

हानपसः योतुवेयोम्वद्विहो जोगा

हानपसः योतुवेथेवुध- ७१५५८

हानपसः गयेनगयिग्वस- २०२१५५

वद्विह मैथिी शशि अस्व

कथा वौद्य सद्य मेह्यपा (वा० साहित्य केन्द्राति) मेह्यमे मे० ८२ म सगम
नागदीप जग्यमे पगति कथा सगक संक०ग

कथा वौद्य सद्य मेह्यपा

गेगा गुटकार्के नागमि सुगेवा ७७ कछि ठेककथा

मो० ७७ दास (आन्कास्व ७०८ क०म)

मैथिी सुवोध व्वाकनाम

७०० नमगन्द् हा 'नमम' (सौजग्य- नमगन्द् हा "नमम")

नापू आ टाकाक गाध (अनुवाद)

योगेन्द् पाठक "व्यिगी" (सौजग्य- योगेन्द् पाठक "व्यिगी")

व्यिभागक वाकही

व्यिभागक वाकही गाग-२

गनक व्यिप्य (सम्पूनाम)

गनक व्यिप्य (संशोधति)

हमन गाम (वा० उपग्यास)

पनामडिक देशमे

नोवोट (अनुदति सांस-शुक्शिन गटक)

नामथेयन ङकुन (सौजग्य- नामथेयन ङकुन)

मैथिी ठेककथा

कीनगिथ हा (सौजग्य- कीनगिथ हा)

कुन०: मैथिी गावागुवाद

जगदीश यन्त्र गुरु "अनघि" (सौजन्य- जगदीश यन्त्र गुरु "अनघि")

वाच कविति

मुग्गाजी

तीन टा वाच गटक (मैथिली वाच साहित्य)

पुनरुत्थी (मैथिली वाच कविति- वाच साहित्य)

देवांसु वत्स

गताशा -मैथिली वाच यतिशंप्पठा (कौमकिस)

जगदागन्द् हा "मगु" (सौजन्य- जगदागन्द् हा "मगु")

योगहा (वाच उपन्यास)

जगदीश पुनसाह माह्द

ननेगन (वाच पुनक वल्लिगि कथा संग्रह)

गै घाडैए (वाच उपन्यास)

गन्द् कुमान मशि ' गन्द्' (सौजन्य- गन्द् कुमान मशि ' गन्द्')

सुवन्म कमठ (वाच उपन्यास)

वृषेश यन्त्र ठाठ (सौजन्य- वृषेश यन्त्र ठाठ)

ढेठक (वाच कविति संग्रह)

सुजीन कुमान हा (सौजन्य- सुजीन कुमान हा)

कोरुठी घुन श्राउ (वाच ठघु-वल्लिगि कथा संग्रह)

डॉ शशयिन कुमान

उडगि सकी पन यडि छी हम (भाग १-२) (पृ १०५४-१०८५)

पुसिसा आमाटाकटकि केन (पृ १०५४-१०८५)

वाच कविति (पृ ८८३-१२१५)

वाच कविति (पृ १००४-११०३)

सयति१ वा० कवति१ (पृ० ७४७-८३४)

सयति१ वा० कवति१ (पृ० १४६८-१८५१)

७० शशवि१ कुम१ आ सुप१यि१ वेवी कुमानी

शुकम्प (पृ० ६३८-६७४)

कनकमामा१ दीक्षति१ (मू० नेपा०सँ मैथि० अणुवा० नूपा धीनू आ धीनेण्ड१

पू०म०र्षा१, वा० साहित्य१) (सौ०ग०य०- धीनेण्ड१ पू०म०र्षा१)

शगता१ वे०क१ दे०श०-श०माम१

आमामि१ सहि१ (सौ०ग०य०- नय०किता१)

शशि१ गी० प्ये०

क०प०ना१ हा१ (सौ०ग०य०- क०प०ना१ हा१)

नशामुक्ता१ हति१ गा०वी१ गी०

न०नियि०

मु०ग०नी१ काम० (सौ०ग०य०- मु०ग०नी१ काम०)

यु०क०का१ (वा० क०था१ सं०ग०न०ह१)

प०नी०ता१ शि०कु०

गो०नू१ हा१ आ आ०न० मैथि० यति०क०था१ -प०ह०ठि० मैथि० यति०क०था१ (वा० सा०हित्य१)

मैथि० यति०क०था१ (वा० सा०हित्य१)

मथि०ठि०क० ठे०क०दे०वता१ (वा० सा०हित्य१)

व०दि०या०प०ना०कि० पु०नु०ष० प०नी०क्ष० (वा० सा०हित्य१)

ने०स० (अ०णु०वा०- वा० यति०क०था१)

ए० वी० सी० डी०- प०न०क०ना० शि०क्ष० प०थी० (अ०णु०वा०- वा० यति०क०था१)

स०न० प्या०श० अ०र्षा१ (अ०णु०वा०- वा० यति०क०था१)

वो० म०प्रा०उ० वा०ह० (अ०णु०वा०- वा० यति०क०था१)

१७ सग (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(०७) माँ-जाँ आ जागवऱ दसि देपू (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(१७) हमऱ पऱविऱ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

जागवऱ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

पोथी १३: १२३ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

वाजाक अवाजा (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

गीतू कुमारी

मैथिली यत्तिकथा (वाँ साहित्य)

गीता हऱ (सौजन्म- गीता हऱ)

वठिऱ मौसी (वाँ उद्युक्था संग्रह)

कनिऱ यौवनी (अनुदति सयत्तिक मैथिली वाँ कथा)

हमऱ वाँ-वाँ

आऱ्या कऱँकपटि मे

दीपा कऱमाकऱ- सही संतुठन मे

पुंगऱ मे अहाँक स्वागत अर्छऱ

वृहेँ छथऱ आकास मे

गैया के मुसकाग के योऱौक

वीण संयऱक

अयंनति कऱय "शुविऱगी"

शौयाँयऱक पऱसिसऱ

वाँ वऱसाती

गुँठीक जाँई पेटी

समीनाक वकिड गोणन
वविह मे जाई छी

प्रायिका हा (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन माँछ! गै हमन माँछ!

नश्मिप्रायिका (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गहयि कऽ सकै छी

सुनीता गकुन (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

वाम्पटी आ ववठी

गीठमि यौधनी (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन सगसँ गीक संगी

स्वास्नाकि गकुन (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

गपू वुते गायठ गै होइ छै

तूठकि (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमना ओ याहि!

मधूठकि मशिन् (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

ओघाशन गीमा

ठक्पमी गकुन

जागवन सग संगे मँट-घाँट

पूगम मम्मूड

सुतौ काठक प्पसिसा

गणेश्चरु गकुल

वाठ साहित्य (मूठ)- गणेश्चरु गकुल

वाठ मम्मूडवी कशौल जगत (वाठ नाटक, उद्युक्था, कवति आदी)

डोमन मतिहठिकसहन पयनपिन

जठेदीप (वाठ-नाटक संग्रह)

अक्षममुष्टिका (वाठ-उद्युक्था संग्रह)

वाडक वडौना (वाठ-पद्य संग्रह)

गड जारव छू (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशति पहठि क्ठाश्मेट-शुक्शिन पुठे-
मातिहठि स डनिसन यठमिते डयितानि पठाय लेगिनितठय पुवठसिहेड नि
२०१२)

कमठक गगना

नरहामि पनीठेक

वेसी छुटटी कम रसकूठ

वडड क्ठैए दाउन ने यौ

वाठ गजठ

शुगिसि ठाश्न

वाठ साहित्य (अनुवाद- द्वागिषकि- मैथिली-अंग्रेजी)- गणेश्चरु गकुल

मसाई केन पनविनानकानी नेवेका

सुन

धन सन

एकटा गीक दनि

यूँ ह्म तँ डीक छी ने!

की अहाँ ऐ यडि सगकँ देखने छी?

टोसट

वडीटा! कगयिटा!

एतऽ ह्म सग नहै छी

गामतोँठक गाणकुमारी

गामतोँठक गाणकुमारी (वगि शब्दक)

वुप्यो

कय-कय कयाक

युगन-मुगनक गहेगार

नेगा जे वैठनसँ उनाशन छथ

अद्वुगन श्रुवौगयी अंक-शंप्पथ

ह्म

अप्पन गै, अप्पन गै!

जगमदगिक आसव मोण

भोट गाणा पाणन-दुववड कुकुड

वययिा जे अपन हँसी गै नोक सिक्कैत छथि

अंग्नेणी

ह्म सँघासिकै छी

छोट ७७- टुहटुह डोनी

कलू गीक, गोगू गीक

ई सगटा वठिडकि दोग्य अछि!

योगा आम!

हमन टोठक वाट

पापन इकडू सूकूठ गेठ

माछी छेन आउ टटा!

अमायीक पुठुम मशीन सग

टगि टोग

पाउ- मयाऊ- वाह

कुकुडक एकटा दनि

हमना गीक ठगैए

गीताक गव- सूकूठमे पहिठि दनि

कनी हँसियौ ने!

७७ वनसाती

गान- पुनेक गाट्यशाठ

आउ पएन गागी

कानऽ अछि ई अंक ५?

वद्विह मैथिली-अंग्रेजी टॉकगि नीड-अउउड ऑडयिी वुक

हानपस्ववोमविवानसोनगपवयेनश्रीयडदुनपछेद (मसार् केन पविगनकानी नेवेका)

हानपस्ववोमविवानसोनगपवयेनपउअह्दैनगयि (यू ह्म णं गीक छी ने!)

हानपस्ववोमविवानसोनगपवयेनडण्टपखदह्दभो (एकटा गीक दनि)

हानपस्ववोमविवानसोनगपवयेनवरवपौसख्य (धन सग)

हानपस्ववोमविवानसोनगपवयेनदअडख्दुवग (की अहाँ ऐ यडि सगकें देयने छी?)

गणेश्द गकुन (सम्पादन)

वद्विह मैथिली शशि उन्सव [वद्विह सदेह टं

वद्विह: सदेह टं ननिहना

गणेश्द गकुन, गणेश्द कुमान ह्म आ पञ्जीकान वद्वियानग्द ह्म (सम्पादन)

एगवसिह- मातिहवि छेमपुतेन ययिगानिय

डॉ कमठा यौवनी (सौणग्य- कमठा यौवनी)

मैथिलीक वेश- गूषा- पुनसाधन सम्वन्धी शव्दावृषि २००८

डॉ योगानग्द ह्म (सौणग्य- योगानग्द ह्म)

मैथिलीक पानम्पनकि जातीय वृष्वसायक शव्दावृषि २००८

डॉ वृषिता ह्म (सौणग्य- वृषिता ह्म)

मैथिलीक गोजन सम्वन्धी शव्दावृषि २०११

गोवद्वि ह्म) (श्वाम्मअ पति आनकाश्व)

मातिहवि- एगवसिह ययिगानिय

गामदेव ह्म (शंकनदेव ह्म -सौणग्य)

मैथिली शव्द संयय

कछि मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)
वद्विह मातिलिथि मौकसे ह्येनगाउस अर्द्धा-वद्वि अयहवि

वद्विभाग नानाक

ओउए सेपाठ' से - सुसगाकाठाय

पोथीक ठकि

इधमधअ- अषर (सोनयह केयौनद मतिहथि)

हसिनोनयोड सावया- साया नि मतिहथि

षनुदेसि नि हानिसिम नद गुददसिम नि मतिहथि

मतिहथि नि नहे अगोड वद्वियापात

छुठनुनोठ हेनतिगोड मतिहथि

मतिहथि नदेन नहे पानगातास

थेमपठे पुनवेय सुनोपेयन अषर- एगठसिह आ हनिदा

मैथिली साहित्य संस्थान

द्वानुनीय मथिथि (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

नोनोयहुने १ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

नोनोयहुने २ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

नोनोयहुने ३ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

नोनोयहुने ४ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

मनोयहने ५ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

वृत्तम वास्वनेनी मैथिली

अनपिन शुआउशेन

शुआतहाम गोकस मातिलिषि पतोनयौवेन

मैथिली ऑडियो वुक्स

वदिल डेद अठुद थाठकनिग मातिलिषि अदी गोकस (नियुठदनिग मातिलिषि
पगिन डानगुगे- इसन तमि नि मातिलिषि)

पोथी डॉट कॉम

प्यसिसा-पहिली नेग मुटका ठेठ

जागकी एशुसमायान एम

आकाशवासी दनगंगा यू ट्यूव येनठ

वदिल सम्मान: सम्मानसूची- (समानागत साहित्य अकादेमी, समानागत
ठठि कठ अकादेमी आ समानागत संगीत् नाटक अकादेमी सम्मान-
(पुरस्कार नामसँ व्रप्पियान

मैथिलीक व्रन्तनी

१

मैथिलीक व्रतगी- व्रदिह मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाठ

२

मैथिलीक व्रतगीमे पन्थापन व्रिधिना अर्था मुदा पन्थापन देय्यता अन्त
एक व्रतगी श्रुत ममअ००१ सँ प्रेरति वृद्धाश्रम अर्था, से एक एक एक
उपग्रहमे उगटा-पुगटा दियौ, नाने वन पन्थापन अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन छे सेहे ई पन्थापन अर्था, से जे व्रिद्यान्थी मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन छेने छथि से एक एकटा आन आस-नीउगि दोस-
उपग्रहमे कथि

इधामओउ श्रुत ममअ०-००१

थहेसे जे पानि-न-देमागद वौकस, सेनद युन टुनेसि
तो दतिनाथिसनाउव्रदिहवामाथियोम थहे गौकस १७ सोमे १७ तहेसे जे
वाथिवे जे साठे जे घोगे श्रुत [(य) श्रुत थहाकु, साठेसव्रदिहवामाथियोम], सेनद युन टुनेसि तो साठेसव्रदिहवामाथियोम थहे
योगतेगतस गद दियुमेगतस - पुवसिहेद वय व्रदिह (सनिये २०००) इषाम
२२२२-५४७३ व्रथएथ (सनिये २००४) जे पेनादियाथय वेनिग यहेयकेद
जे ययेससविधिय सिसेस श्रुत गौतिह दिसावधिसि सहुएद गोन हवे
दडिउथिय ययेससनिग तहेसे योगतेगतस दियुमेगतस

पुर्वदिह सन्नी कोणा

वदिह सन्नी कोणा

वदिह ह वदिह वदिह विदेह हानपुर्वदिहयोगि वदिह पुनथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका वदिह इसा मातिलिधि
बेगानगिहाउपेपुनगाउ वदिह पुनथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका नव अंक देपवाक छेउ पक्ष सगके नखिनेस कए देपू अथौयस
नेउनेसह नहे पागेस जेन वीरिगिग नौ सिसेओ वश्यएहअ

षोनयह जेन श्रौनकस (नियुधनिग श्रुटी- वसिध & षगिग जगुगो)
नेषाननिग तो मतिलिधि मातिलिधि वय ठेमाछे श्रौनतिनस अतिसिनस

हानपस्वोक्सगोगयेयोम्



(पूनामः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मान एकेडमिक प्रयोग एव(सग पोथी पी डाउनलोड एव क्रमागुसा गीयांक एकि सगप एशुडीउपव्यव्य अर्था अएव गहे वोकस मे वाठिवठे डेन पदु दौगठोद न गहे नेसपेयतावे ठनकस वेठौ)

सपुआवाठी (गानी व्रमिन्स केन्दुति) गपटगिहिमे गेठ द्द म सग नानिदीप
नयमे पठति कथा सगक संकठन

सपुआवाठी

आमि सहि (सौगन्ध- गयकिता)

शशि गीत प्येठ

शानगी सहि (सौगन्ध- गयकिता)

पुनम- एक कवति (अगुदति गटक)

अनुवती देवी (सौगन्ध- नमान्द हा "नमम")

मथिठिक वृद्धि मठिठि

डं कमठा यौवनी (सौगन्ध- कमठा यौवनी)

मैथिठिक वेश- गूषा- पुनसाधन सम्वन्धी शव्दावठी २००८

समय- संकेत (कथा- संग्रह) २०१०

डं एठिठि हा (सौगन्ध- एठिठि हा)

मैथिठिक गोजन सम्वन्धी शव्दावठी २०११

पुनोमशिा भशिा

नामनोस कापडि गनमन (व्यक्तित्व एवं कान्तिव)

सुसमतिा पाडक (सौजन्य- केदाा कागग)

पुनयितिा (कवतिा संग्रह)

कनोणडिा (कथा संग्रह)

गन्दीगी पाडक (सौजन्य- केदाा कागग)

पाथक शहन (कवतिा संग्रह)

पगना हा (सौजन्य- गनेन्द् हा)

अनुगुणतिा (उद्युक्था संग्रह)

कल्पना हा (सौजन्य- कल्पना हा)

गोसाउगकि गीत

गशामुक्तातिा गीत

गनियिाँ

प्राप्रावनी- शेश्ठाठकि वनमा (हनिदी अनुवाद कल्पना हा)

मुग्नी कामन (सौजन्य- मुग्नी कामन)

सुपुठ मन नसठ आँपुतिा (पद्य आ गद्य)

सुपुठ मन नसठ आँपुतिा (कवतिा)

अंतनः (कवतिा संग्रह)

युक्का (वाठ कथा संग्रह)

गीता हा (सौजन्य- गीता हा)

वठिः मीसी (वाठ उद्युक्था संग्रह)

शेखावकी व्रमा (सौण्ण- शेखावकी व्रमा)

प्रायावनी (प्राणावन्ताग)

प्रायावनी (हर्दि अगुवाह- कल्पना ह्)

अथयुग (उद्युक्था संग्रह)

एकटा अकास (उद्युक्था संग्रह)

शावांजुषी (गद्य गीत)

कसिन- कसिन जीवन (आत्म कथा)

आप्यन- आप्यन प्रीत

गागश्वास (उपन्यास)

मागपहनस (३१ एगगुसिह)

व्रिमा नागी

व्रिमा नागीक हूटा गटक (शाग नौ आ वय्यगदा)

सुशीवा ह् (सौण्ण- प्रमा प्येताग् सुशीवा ह्)

छविगमसना- प्रमा प्येतागक हर्दि उपन्यासक मैथिली अगुवाह

कुसुम गकुन

प्रान्प्रावन्ताग (आत्मकथा) (पृ ४५८- ५७२)

उां कामिनी कामायनी

व्रदिहःसदेह ३१ (उां कामिनी कामायनी आ कुमान मनोण कक्ष्यप- अंक १- ३५०

सं)

प्रीतगिगकुन

गोण ह् आ आग मैथिली यतिनकथा - पहठि मैथिली यतिनकथा (वाठ साहित्य)

मैथिली यत्तिकथा (वाँ साहित्य)

मथिलिक ठोकदेवता (वाँ साहित्य)

वदियापतिक पुनष पनीक्षा (वाँ साहित्य)

नेस (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

ए वो सी डी- पुनकाशिकषण पोथी (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

सम पाश अछि (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

वो म्याउ वाह (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

१७ सम (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(०७) माँ-जाँ आ जागवम दसि देपू (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

(१७) हमन पुनविम (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

जागवम (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

पोथी १३: १२३ (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

वाजाक अवाज (अनुवाद- वाँ यत्तिकथा)

११००० शुअडम डएअठ शुअमदर समषदरशुथरओमष (वओडउमए २ थओ
ससदर) छेमपठिद, पयागवेद & छातावेगेद वय शुगेतथिहाकुन

गजेवदर गकुन आ पुनीतगिकुन (समावेयना)

नीनू कुमानी

मैथिली यत्तिकथा (वाँ साहित्य)

कनिम यौधनी (अनूदति सयत्तिन मैथिली वाँ कथा)

हमन वाँ-वाँ

आन्या कँकपटि मे

दीपा कनमाकन- सही संतुण मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

वृहेठ छथि आकास मे

मैया के मुसकाव के योनीक

वीण संययक

अयंगति कल्प "शुविनायी"

शौयाथयक प्पसिसा

ठाठ वनसाती

गुठ्ठीक जादुई पेटी

समीनाक वकिठ गोणन

व्रिहा मे जाई छी

पुन्यिका हा (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन माँछ! गै हमन माँछ!

नश्मिपुन्या (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गह्यो कऽ सकै छी

सुनीता गकुन (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

वसुटी आ ववठी

नीठमि यौधनी (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन सगसँ गीक संगी

स्वास्नाकिा गकुन (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

गपू वुते गायठ गै हेश छै

नूठकिा (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

हमना ओ याहि!

मधूठकिा मसिा (अगूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

ओघाशन गीमा

ठकूपमी गकुन

गानवन सठ संगे गैठ- घाँट

पूगम मम्मूठ

सुतौ काठक प्सिसा

कगकमम्मि दीकूपति (मूठ गेपाठीसं मैथिी अगूदति नूपा धीनू आ धीनेगूदति
पूमेनूषा, वाठ साहतिप्र) (सौगन्ध- धीनेगूदति पूमेनूषा)

गगना वेठक देश- गनमम्म

उाँ शशधिन कुमन आ सुपूयिा वेवी कुमानी

गुकम्प (पू ६३८-६७४)

ठेपकक आमंतिा नयना आ ओरुपन आमंतिा समीकूपकक समीकूषा सीनीण

१ कामगिीक पांय टा कवतिा आ ओरुपन मधूकान्ग हाक टपिपामी

वदिह ०१ ०८ २०१६

३ मुगूनी कामगक एकांकी आ ओरुपन गजेगूदति गकुनक "गदिगिीक मोठ"
टपिपामी

व्रथएरुश्च ३५४

पसुपुठेयी गीता

एउटिन्स योश्स सीगीण१-

मीना हा

एउटिन्स योश्स सीगीण२-

णगदीश यग्द्ग गकुन टा वाठ कवतिा णश्मे ३) २ टा कवतिा वेवी याश्उपन)

एउटिन्स योश्स सीगीण३-

वद्वियापनगीत

नूथकि

गीत- गोवर्निददास (गायन दीक्षा मानती)

गोवर्निददास- १

गोवर्निददास- २

गोवर्निददास- ३

गोवर्निददास- ४

गोवर्निददास- ५

गोवर्निददास- ६

मैथिी गणथ (गणथ- गणेश्गद्ग गकुन, गायन दीक्षा मानती)

वह्ये मणकानवि

गण-२

गण-३

गण-४

प्राये मैथिलि यैग- कनिह यौधनी आ संगीता आगद

सौम्या ह।

अक्षमिहिन

प्रायि मथकि

अगमकि ह।

अगनी पथवी

पूगम मशि

अगना ह।

पूथि ह।

दीपशिपि ह।

मैथिलि गकु

अनुपम मशि पाँडकासट

थहेसे ले पानि-न-देमागद वीकस, सेगद युन टुनेसि
तो दतिनाथिसनाउद्वदिविहवामाथियोम थहे गीकसोउ सोमोउ नहेसे ले। प्राथिवे
जेन साथेन घौगवे शुवाय [(य) शुनेति थहाकु, साथेसर्वदिविहवामाथियोम],
सेगद युन टुनेसि तो साथेसर्वदिविहवामाथियोम थहे योगतेगतस। नद दीयुमेगतसे -

पुवठसिहेद वय व्रदिह (सगिये २०००) १४५५५ २२२८-५४७३३ व३३५६३
(सगिये २००४) ।ने पेनीदिया३३५ वेगिग यहेयकेद डेन ।ययेससविठिगिय
सिसुस श्वेपठेगिह दसिावठिगिसि सहे३द गोन हवे दडि३यि३गय ।ययेससगिग
गहेसे योनोनगस् द्युभेगनस

६ व्रदिह ३- ठुनडिा

व्रदिह ३-ठुनडिा



[संघ लोक सेवा आयोग वहीन लोक सेवा आयोगक परीक्षा छैथ मैथिली (अनविद्यार्थी आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक वरिष्ठ आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामग्री] [एनटीए-यूपीसी-नेट-मैथिली छैथ सेहो]

मैथिलीक वृत्तनी

१

मैथिलीक वृत्तनी- वरिष्ठ मैथिली भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वृत्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि मुदा प्रश्नपत्र देखैत आन एक वृत्तनी शून्य नमअ००१ सँ प्रेरति वृद्धांत अछि, से एक एक एक उदाहरणमे उगटा-पुगटा दियौ, तावे वरिष्ठ पर्याप्त अछि यूपीएससी क मैथिली (कम्पठसरी) पेपर छैथ सेहो ३ पर्याप्त अछि, से जे वरिष्ठार्थी मैथिली (कम्पठसरी) पेपर छैथ से एक एकटा आन आस-नीडगि दोस-उदाहरणमे कथि

३६५५३ शून्य नमअ०-००१

मातिहिति (घोमपुठसोमय & ओपनीगाठ)

उशुषध मातिहिति ओपनीगाठ षयुठठवुस

मशुषध मातिहिति ओपनीगाठ षयुठठवुस

मैथिली पुनश्नपत्न- यूपीएससी (ऐयुषकि)

मैथिली पुनश्नपत्न- यूपीएससी (अगविान्य)

मैथिली पुनश्नपत्न- वीपीएससी (ऐयुषकि)

यू पी एस सी (मेन्स) ऑप्शनठ: मैथिली साहित्य वषियक टेस्ट सीनीण

यूपीएससी क पुनश्नपत्नी पनीक्षा सम्पन्न मऽ गेठ अछि। जे पनीक्षान्थी एहि पनीक्षामे उत्तीर्ण कएनाह आ जाँ मेन्समे हुनका ऑप्शनठ वषिय मैथिली साहित्य हेतुहैतँ ओ एहि टेस्ट-सीनीणमे सम्मति गऽ सकैत छथि। टेस्ट सीनीणक पुनश्नपत्न पुनश्नपत्नक नितिक नत्काठ वाद होयना। टेस्ट-सीनीणक उत्तर वदियान्थी सकैत कऽ दितो। नितिसना उद्वेगवदितो। नितिसना पन पऽ सकैत छथि, जाँ मेन्स पठवामे असोकन होइतँ ओ हमन ह्वाटसएप नम्बर टपड०टड०७२९ पन सेहो पुनश्नपत्न पऽ सकैत छथि। संगे ओ अपन पुनश्नपत्नक एडमिट कार्डक सकैत कए कऽ जाँ सेहो वेनीशुकिशन ठेठ पऽवथि। पनीक्षामे सग पुनश्नक उत्तर गहि दैमय पडैत छैक मुदा जाँ टेस्ट सीनीणमे वदियान्थी सग पुनश्नक उत्तर देनाह तँ हुनका ठेठ श्रेयस्कन गहनहैत वदितक सग स्कीम जेकाँ ईहे पुनश्नक: नितिसक अछि- गणेशक गकुल

संघ ठेक सेवा आयोग द्वारा आयोगति सविधि सन्वसिण पनीक्षा (मुप्य), मैथिली आ २९-पत्न-पुनश्न ठेठ टेस्ट सीनीण (ऐयुषकि)

थेसिस-१- गणेश गुरुकुल

थेसिस-२- गणेश गुरुकुल

मध्य- उद्योग उद्योग मध्य मातृशिक्षा- गणेश गुरुकुल

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (निबन्ध)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुपयोग)

मैथिली प्रयोगिता

[श्रवण ०७ मातृशिक्षा नि बन्ध- एकोपान उद्योगो दामयिपु ओगिनि १८६ देवेवेपमेगन ०७ मातृशिक्षा उद्योगो
[पाठसकृति, शुभकृति, अवलोकन, मातृशिक्षा मातृशिक्षा पत्रिका मध्य मैथिलीक स्थान मैथिली भाषाक उद्योग
श्री वक्रिस (संस्कृत, प्रकाश, अवलोकन, मैथिली)]

[छात्रियसिम- यडिडेगन उद्योगिय दानस नि मोहेन एकोपान ०७ यन्तियिथ वलितियो ०७ तहे यानददितेसा]

[प्रयोगिसिपन, वदियापति आ गोवन्ददास सचिवसमे छथि आ नसमय कवि यत्न यत्नगुण वदियापति कठिन कवि
छथि एतय समीक्षा संयुक्त प्रानमन कवासँ पूनव यान गोटक शवदावृत्ति नव शवदक प्रयाय संग देठ जा नह
अछि नव आ पुनान शवदावृत्तिक प्रानसँ प्रयोगिसिपन, वदियापति आ गोवन्ददासक प्रशन्नोत्तनमे यान आओन,
संगह शवदकोष वदिसँ प्यंटी मैथिलीमे प्रशन्नोत्तन ठपिवामे यय आसते-आसते प्रान होयत, एपनिमे प्रवाह आयत
आ सुयया ग्रावक अग्रविपकृता गय सकता]

[वदनीगथ ह्य शवदावृत्ति आ मथिथिक कषि-मनस्य शवदावृत्ति]

[वैद्यु एडीशन- प्रथम पत्र- ठेक गीथामे समाज ओ संस्कृति]

[वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- वदियापति]

[वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- वागगी]

[वैद्यु एडीशन- प्रथम पत्र- ठेक गीथ गायक गायक संगीत]

[वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- यानी]

[वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली नामायास]

[वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास]

वैद्य एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द प्रिया

गणितोपिके उद्भव ओ विकास

अनुगणक-१-२-३ अनुगणक-४-५

मैथिली आ दोस्र पुवर्गिया भाषाक वीयभे सम्बन्ध (वांग्वा, असमिया आ ओडिया) [यूपीएससी सविस्, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-५]

मैथिली आ हिनदी वांग्वा भोजपुरी मगहि संथाओ- वहिन लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के सविस् सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय छे

मैथिली-हिनदी वांग्वाओप (३ घण्टा)

मैथिली

वांग्वा

असमिया

ओडिया

हिनदी

उडू

नेपाली

संस्कृत

संथाओ

साथअ उघछ साथ मातिहिति ०१

साथअ उघछ साथ मातिहिति ०२

घष (सुने)

थोपयि १

यूपीएससी आ आन प्रतियोगिता परीक्षा छे देय:

वैदिक-अहंकर १७	वैदिक-अहंकर २१	वैदिक-अहंकर २२	वैदिक-अहंकर २६	वैदिक-अहंकर २८
वैदिक-अहंकर ३०	वैदिक-अहंकर ३२	वैदिक-अहंकर ३३	वैदिक-अहंकर ३४	वैदिक-अहंकर ३५

•
घेनेनाथ पणुदेसि

महएढथ- एगव्रिगमेगन छठासस ३२- ३३३

महएढथ श्रुयठ २- ३३३

षागसाह थव

हानपुःपनासानवहानागिोवनि

हानपुःगौसोनापियोम

•
श्रोतहेन श्रोपनागिास

इधमश्रोउे घप्रागकोसह

•
पेटान (नसिोस सेग्टन)

•
मैथिली महावना एवम् ओकोकानि पुनकाश- नमानाथ मशिेन महिनि (प्यांटी
पुनवाह्युकन मैथिली एपिवामे सहायक)

डॉ कमठा यौयनी- मैथिलीक वेश- शूषा- पुनसायन सम्वन्धी शव्दावठी (प्यांटी
पुनवाह्युकन मैथिली एपिवामे सहायक)

डॉ योगानन्द दा- मैथिलीक पानमपनकि जातीय वृपवसायक शव्दावठी (प्यांटी
पुनवाह्युकन मैथिली एपिवामे सहायक)

डॉ. भवति। हा- मैथिलीक भोजन सम्वन्धी शब्दावली (पाँटी पुनवाह्युक्त मैथिली भषिवामे सहायक)

मैथिली शब्द संयय- डॉ. श्रीमानदेव हा (पाँटी पुनवाह्युक्त मैथिली भषिवामे सहायक)

द्वान्त-वर्तीक वस्तु कौशभ- डॉ. श्रीमानदेवहा

पुनयिय गयिय- डॉ. शैलेन्द्र मोहन हा

एगठसिह मातिहथि छेमपुतेन ययितागिय (छेमपुतेन) - धाणेनदना थलकुन

मातिहथि एगठसिह ययितागिय- गोवृदि हा

श्रमामि सहि -शशि गीत प्येठ

श्रानन्द मसिन (सौजन्य श्री नमानन्द हा 'नमस') - मथिलि भाषाक सुवोध व्पाकनस

मैथिली सुवोध व्पाकनस- गोठ भठ दास

नायाक ्षम यौयनी- अ पुनवेपुड मातिहथि जितानुने

नायाक ्षम यौयनी- मथिलिक शहिस

पुनकागत मसिन- अ हसिनोपुड मातिहथि जितानुने व्रोठ ३

नाणेश्वर हा- मथिलिकपक उद्भव ओ वृकिस (मैथिली साहित्य संस्थान आनकाश्व) (पूपीएससी सठिवस)

द्वान्त-वर्ती (मूठ)- श्री सुनेन्द्र हा सुमन (पूपीएससी सठिवस)

पुनवन्ध संग्रह- १मागथ हा (वीपीएससी सचिवस) छ३३७ षति

सुभाष यन्त्र पादव-१।।कमठ यौवनी: मोनोग्राफ

शवि कुमान हा ' टिठ्ठ' अंशु-समाधेयना

उाँ वयेश्वर हा- गविन्ध-गकुम्भ

उाँ देवसंकर गवीन- आयुगकि साहित्यक परिशिष्य

पुनमसंकर सहि- मैथिली भाषा साहित्य:वीसम शताव्दी (आधेयना)

उाँ १मागन्ध हा ' १मास'

हथिअथेठ

अप्ययिसठ छ३३७ षति

दुगागन्ध मासठ-यकषु

श्वेन एहिमनठगू श्वाथ सगकें सेहे पठू:-

१।मधेयन ङकुन- मैथिली ठेककथा

कुमान पवन (सागान अंकि)

प३३ (मैथिलीक सन्वसनेषु कथा)

उपनीक प्पाठि पनना

केदानगाथ यौवनी

अवना गहिरन	यथेठिगाने	महान	कनीन	अथना	विना
------------	-----------	------	------	------	------

उाँ १मास हा

शीर्षक- अनुवृत्त	मैथिली काव्यमे अवलोकन	अनुवृत्त- शास्त्रिक	मैथिली काव्यमे प्रयोगी	अभिजातम-व्य	मानिपिन-मन्त्रिनी
---------------------	-----------------------	------------------------	------------------------	-------------	-------------------

प्रोगेन्ड्र पाठक ' व्रियोगी'

शीर्षक- वार्ता	शीर्षक- वार्ता	अवकाश- (कथा संग्रह)
वार्ता- (सम्पूर्ण)	वार्ता- (संशोधन)	कविता- (संग्रह)
वार्ता- (संशोधन)	वार्ता- (संशोधन)	कविता- (संग्रह)

अनुवृत्ति साहित्य (आग भाषासँ)- गणेश्वर गुरु

वृद्धि:सदेह २७ (गणेश्वर गुरु आ नव गुरुपाठ पाठकक आग भाषासँ अनुवृत्ति

गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

वाग साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गणेश्वर गुरु

मसाई केन पत्रिका

शेष ४० टा वाग यति-पोथी गीयाँक विक्रय:-

शीर्षक	व्यक्ति	प्रकाशक	अवकाश	को अहाँ ऐ यडि सगकँ देखने छी?
शेष	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन
वृद्धि	वृद्धि:सदेह	मसाई केन	मसाई केन	मसाई केन

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक (मसाई केन पत्रिका)

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक (यू एम गी छी ने!)

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक (एकटा गीक दनि)

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक (धन सग)

वृद्धि मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीउ-अउउ आँउयि वुक (की अहाँ ऐ यडि सगकँ देखने छी?)

कछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

मधुप्लथ गहश्रपहश्र पश्रमधश्रम

मधुप्लथ (मातिहवि-एगठसिह-हनिदि छेनवे-सागागिस)

पं उक्ष्मीपति सिहि (सौजग्य नमान्द ह्य "नमम")

हनिदीशकिषक-मैथिी-

मैथिी(घम्टा ३) हनिदी वान्ताप-

मैथिी (मैथिी संकेत गाथा सहति(मैथिीमे पहि वे -

हानपस्योतुवेयोमवदिहो जुनगा

हानपस्योतुवेथेवुष- ७नपस

हानपस्येनगयिनिवस- २०२१पहप

पाहिया अकदेमि

पुकासग

उजिठि-पोथी

छररु

अप्यासठ (नमान्द ह्य नमम)

पुआपठ कगकनी- महेन्द

पुवन्ध संग्रह- नमान्द ह्य (वीपीएससी सठिवस)

सुजग केन दीप पुव- सं केदान कागग आ अवनिद गकु

मैथिी गद्य संग्रह- सं शैठेन्द मोहन ह्य

अयहविश्रीगा (वजिपदेव ह्य)

वद्विह मातिहवि गोकसे ह्युनगाथस् शुद्धी- वद्वि अयहवि

इधमध्थ

मातिहवि एगगसिह ययितागिनय

वपिभाग नगाकन

मथिथि दनसग

तीनगुक्ता

ओडए सेपाथ' से - शुसगाकाथा

पोथीक ठकि

इधमध्थ- अषर (सोनयह केयौनद मतिहवि)

हसितोनयोड सावया- साया नि मतिहवि

षण्देसि नि हानिसिम नद बुददसिम नि मतिहवि

मतिहवि नि नहे अगोड वद्वियापाता

छुणुनाथ हेनतिगोड मतिहवि

मतिहवि नदेन नहे पानगातास

थेमपठे पुनवेय शुनोपेयन अषर- एगगसिह आ हनिदा

मैथिथि साहित्य संस्थान

दनसगीय मथिथि (मैथिथि साहित्य संस्थान ठकि)

ननोयहुने १ (मैथिथि साहित्य संस्थान ठकि)

मनोयहुने २ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

मनोयहुने ३ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

मनोयहुने ४ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

मनोयहुने ५ (मैथिली साहित्य संस्थान ठकि)

वृत्तम वास्वनेनी मैथिली

अनपिन शुआम्डेसन

शुनातहाम गोकस मातिलिठि पिनोयौवेन

मैथिली ऑडियो वुक्स

वृद्धि ठेठ अठुठ थाठकनिग मातिलिठि अठुठ गोकस (नियठुठनिग मातिलिठि
पगिन डागगागे- इसन तमि नि मातिलिठि)

पोथी डॉट कॉम

इ डेवे मातिलिठि (पोथी डाउनलोड ठकि)

गेनठनि मातिलिठि पिनोयौवेन

गौनेन इ डेवे मातिलिठि

पुयाने मैथिलि येनठ कनिम यौयनी आ संगीता आनठ

मथिलि येपटन

पुसिसा- पहिनी नेना गुटका ठेठ

पानकी एशुएम समाया

आकाशवाणी दमंगला यू ट्यूव यैग

आकाशवाणी मैथिली समया

आकाशवाणी अमन महेतस

सुनेद ११३१

दमउ

मैथिली

मैथिली ऐकसकिग

वदिलो - डानगिगौथुवे छहगने

वदिल सम्मान: सम्मानसुथी- (समानगत साहित्य अकादेमी, समानगत
एति कए अकादेमी आ समानगत संगीत् नाटक अकादेमी सम्मान-
(पुरस्कान नामसँ वपिया)

मातिलि वि गोकस् हेलगाएस् शुदासि- वदिस याग वे दौगओदेद
डोम: मातिलि वि गओओपप् हेलगाएस् शुदासि- वदिस

अपग मंतवधे दितिगिअसाडवदिलवामाठियोम पन पडाउ

वृद्धि सूयगा संपत्क अन्वेषण (नियुद्धनिग आनाउउउ उतिनातुने नि मातिहथि गद वृद्धि मातिहथि उतिनातुने मोवेमेगन)

वृद्धि सूयगा संपत्क अन्वेषण (नियुद्धनिग आनाउउउ उतिनातुने नि मातिहथि गद वृद्धि मातिहथि उतिनातुने
मोवेमेगन)

वृद्धि ह वृद्धि वृद्धि विदेह हानपसूवृद्धियोगि वृद्धि पनथम मैथथि पाकषकि ई पानकि वृद्धि इसन मातिहथि डेनगगिहानथे पुनगा
वृद्धि पनथम मैथथि पाकषकि ई पानकि गव अंक देपवाक छे पृष संगके नश्चिनेस कए देपू अथीयस नेउनेसह गहे पागेस डेन वृद्धिगि
गौ सिन्नेोउ वृद्धिहथ

षेनयह डेन इगडेनमानागि नेथानिग तो मतिहथि मातिहथि

हानपसूवृद्धिसंगोउथेयोम

थोपोउ डेनम

सूयगा

थो गोन पुद्धोयह दाय वय गहे हानवेसन थो गोप वुन वय गहे सेदस गहान थो पथगन

- द्वैवेन दुसि धोवेनसोन

वद्विहः मातिहविठिठिमातुने भोवेमेन

वद्विहो ह्येनगाथ (धनिकवद्विहयोनि) सि । मुठदिस्सियपिठनिमय नोठनि
जुनगाथ देदयिातेद तो तहे पनोमोतानि नद पनेसेनवतानि नोड तहे मातिहवि
ठिगुगो, ठिमातुने नद युठतुने श सि । पठातडोनम डोन सयहेठानस,
नेसोनयहेनस, नैतिनस नद पौतस तो पुवठसिह तहेनौनकस नद सहाते तहेनि
कनौठेदगे वोन मातिहवि ठिगुगो, ठिमातुने, नद युठतुने थहे जुनगाथ सि
पुवठसिहेदोठनि तो पनोमोते नद पनेसेनवे मातिहवि ठिगुगो नद युठतुने थहे
जुनगाथ पुवठसिहेस नतयिठेस, नेसोनयह पापेनस, वोक नेवौंसि, नद पौतय
नि मातिहवि नद एगठसिह ठिगुगोस श ठसो डेतुनेस नानसठानिसोड
ठिमातय नौनकस डोनोतहेन ठिगुगोस नितो मातिहवि श सि । पेन-नेवौंसि
जुनगाथ, नैहयिह मोनस तहान नतयिठेस नद पापेनस ने नेवौंसि वये शपेनस
नि तहे डेठिद वेडेते तहेय ने नययेपतेद डोन पुवठयिातानि

१

"वद्विहक जीवति ठेपक-सम्पादक, आन्दोठनी, सान्प्रजनकि जीवण
जीवहिा, कठ-संगीत-नगमंयकनूमी आ नगमंय-नदिदेशक पन वसिषांक
शंप्पठा"

वद्विह अनवदिद गकुन वसिषांक

सुवतंतयेता- अनवदिद गकुनः वपकततिव-कततिव (सम्पादक आशीष
अनयनिहान) [वद्विह अनवदिद गकुन वसिषांकक प्नासिट नूपा]

वद्विह नगदीस यन्दन गकुन अगठि वसिषांक

वद्विह नामठेयन गकुन वसिषांक

वर्द्धिह नागनन्दन ७७ दास वृशिपांक

वर्द्धिह नवीन्दन गाय गङ्गा वृशिपांक

वर्द्धिह केदाय गाय यौधनी वृशिपांक

वर्द्धिह प्रेमठगा मस्त्रिण प्रेम वृशिपांक

वर्द्धिह शनदग्निदु यौधनी वृशिपांक

वर्द्धिह कथा-वृमिन्स वृशिपांक (सन्दन-संगु दास, क्पाम कुमाय कश्यप, शशविवा, एससीसुमन आ श्वेगा हा यौधनी)

वर्द्धिह नयगाकाल अशोक वृशिपांक

वर्द्धिह नाम गनोस कापडि गनमन' वृशिपांक

वर्द्धिह अपन जीवति वेपक-सम्पादक आन्दोवनी, साव्रणनकि जीवग जीनहिन, गंगमयकमी आ गंगमय-गन्दिशक पय वृशिपांक शृंय्पठाक अनागान (१)अवग्निद गङ्गा, (२)गगदीश यन्दन गङ्गा अगवि, (३)नामवेयन गङ्गा, (४) नागनन्दन ७७ दास, (५)नवीन्दन गाय गङ्गा, (६) केदाय गाय यौधनी, (७) प्रेमठगा मस्त्रिण' प्रेम', (८) शनदग्निदु यौधनी, (९) नयगाकाल अशोक आ (१०) नाम गनोस कापडि गनमन' वृशिपांक गकिावने अर्थाए १० मे सँ नामवेयन गङ्गा, नागनन्दन ७७ दास आ नवीन्दन गाय गङ्गा आव हमना सगक वीय नै अर्था शेष ७ गोटे माने (१)अवग्निद गङ्गा, (२)गगदीश यन्दन गङ्गा अगवि, (३) केदाय गाय यौधनी, (४) प्रेमठगा मस्त्रिण' प्रेम', (५) शनदग्निदु यौधनी, (६) नयगाकाल अशोक आ (७) नाम गनोस कापडि गनमन' केन सट्टस वर्द्धिहमे 'वाश्चटाश्म श्वेवो' सग नहना ओ अपन नव नयगा कथा), कवृति वा कथेगन

गद्य-रंगमंच वा नव पोथी वा नव प्रोडक्शन (पद्य, सडक नाटक वा अन्य कोनो वणिअथ स-आँ डियी) हतिगकिथोक वादक हुअय वा वदिहपन जो वशिषांक [(प्रकाशन कनव आ ओरपन-ई सहति समीक्षा हम ओकन गे हुअय पठा सकै छथी पाठक, स्रोता, दृष्टाक मय्य समवादक प्रानमम ठेठ प्रसूता कनव

"वदिहक जीवति ठेपकसम्पादक-, आन्दोथनी, साव्रणनकि जीवण जीवहिन, कथा रंगमंचकमी-संगीत-आ रंगमंचक "पन वशिषांक शृंषुठा गदिहेशक- ययन प्रकृतियिक वधिनिमिण प्रकासँ अर्था

नश्चिम:

१) ठागग पाँय-छह मास पहिसँ वदिह अपन पाठककें सुहाव देवा ठेठ ठेठ सूयगा दैन अर्था

२) आपठ सुहावमेसँ वदिह मात्र जीवति ठेकक ययन कनैत अर्था

३) ऐ सग ठेकक ठेपनकाण एवं आयनसक साम्यता देपठ जाश अर्था जगिकन ठेपन काण ओ आयनसमे वेसी साम्यता (कम श्रॉक) गेटैए तेहन छह टा नाम ययनति होश अर्था

४) छह नाम एठापन ई तुठना कएठ जाश छै जो ई छहो गोटैकें ठेपनकाण् क एठामे समाजसँ की गेटैठगि

५) जगिका सगसँ कम गेटठ वुहाश अर्था तिन ठेककें अगिठि यनस ठेठ नाप्यठेठ जाश अर्था

६) ऐ तीन ययनति जीवति ठेकक नयना, काण आ उद्देश्य आदकि वीयमे प्रसूतन तुठना कएठ जाश अर्था

७) अंगमि नूपसँ वदिए द्वाला एकटा नाम युगसाथक अंगमे घोषणा कएए जाइत अछि आ गयित समयपर ई वशिषांक गकिठवाक पुन्यास कएए जाइत अछि।

पुनश्च उरसिकैएजे की उपनका गश्मि एहन छै जइमे अंगमि नूपसँ सग सुयोग्य जीवति ठेक केन ययन समयपर गऽ जोगति? नऽ एकन उगत छै गै। वदिएक पाठक एग सेहे अपन सीमा छर्ना मुदा अही सीमाक संगे हमना सगकेँ अपन वेस्ट देवाक अछि आ मैथिली ठेए एकटा एहन नसना वना देवाक छै जइसँ आवय वठ ५००६००- वन्यक साहित्य वदिएक ठेकसँ पुन्यासा पावय।

अही व्रियाक संग वदिए ओहन संस्था, पत्निका, ठेपक, कठकान, स्वयंसेवी वा साम्प्रदायिकी जीवन जीवहिनापर अपन वेशाव सेहे केदति कऽ नहए अछिजे सुयोग्य छथि मुदा जगिकापर वदिएक वशिषांक कोनो कामवश गै पुनकाशति गऽ सकथ। एकन नाम गेए वदिएक "गति गवठ सगीज", जकन व्रियाम नीयाँ "गति

गवठ सगीज"मे देए जा १हए अछि।
 - गणेश्वर शर्मा, सम्पादक वदिए, गौतमसापप गो
 +९१९५६०९६०७२९ हथथशुःवश्यएहअछश्रीशम् १५५५ २२२९-५४७५
 वश्यएहअ

२

"वदिए द्वाला एक वेनमे कोनो एकटा जीवति संस्था, पत्निका वा संस्था-पोथी-पत्निकासँ जुड़ए स्वयंसेवीक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

वदिए अंक ३७१ (०१ जून २०२३) "मथिली सूटुँट पुनयिन (एमएसयू)" वशिषांक

गश्मि:

१) संस्था कैटेगरी- संस्थाक काज भाग आदि पहिनाइ, पत्निका-समानिका आदि छपेनाइ, जे मात्र नेकँ नऽ वनेवाठे हुअय, गै हुअय। संस्था द्वाला

जातिविही कट्टाना नै वढाओठ जेवाक साना नहान, संस्था पॉकेट संस्था नै
हेवाक याही आ जीवति हेवाक याही।

२) संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुडै स्वयंसेवी कैटेगरी- ठेपक-प्रकाशकसँ शान
आन जे ठेक पोथी-पत्रिका केन विक्री कऽ अपन जीवत-प्रापक संग
मैथिलीक प्रयागमे सहायक छथि, संगमे संस्था (नंगमंय संस्था सहित) सगसँ
सम्बन्धति स्वयंसेवी, नगिको मूल्यांकन वऽिह वशिषांक नकिाँ कऽ कऽ।
३) पत्रिका कैटेगरी- मैथिलीक कोनो पत्रिकाक अपन वऽिह वशिषांक प्रकाशति
कऽ। मुदा ऐठे ओर पत्रिकाक सग अंक वऽिहपन डाउनलोड ऐठ ओर
पत्रिकाक संपादक वा कॉपीराइट धारक देना, से शान अछि।

यपन प्रक्रियाक नश्चिम "वऽिहक जीवति ठेपक-सम्पादक, आन्दोषनी,
सांख्यिकी जीवत जीवति, कथा-संगीत-नंगमंयकर्मि आ नंगमंय-नऽिदेशक
पन वशिषांक शृंषु"क यपन प्रक्रियाक नश्चिम सग नहान।

- गणेश्वर गङ्गुल, सम्पादक वऽिह, गौहाणसापन गो
+९१९६०६०७२९ हथथशुःवऽयएहअछओशु शषषम २२२९-५४७३
वऽयएहअ

३

"वऽिह मोनोग्राफ" शृंषु

वऽिह अपन जीवति ठेपक-सम्पादक, आन्दोषनी, सांख्यिकी जीवत
जीवति, नंगमंयकर्मि आ नंगमंय-नऽिदेशक पन वशिषांक शृंषुक
अनानुगत (१)अनवऽिह गङ्गुल, (२)जादीश यण्डुल गङ्गुल अगठि,
(३)नामठेयन गङ्गुल, (४) नाणनण्डन ठाठ दास, (५)नवीण्डुल नाथ गङ्गुल,
(६) केदा नथ यौधनी, (७) प्रेमठाना मशिन 'प्रेम', (८) शनऽिह

यौधनी, (ट) नयनाकाश अशोक आ (१०) नाम नमोस कापडा
'नमन' वशिषांक नकिाणे अर्था

अही सगुनमे हनिका सगपन "वदिह भोगोनाशु" शंय्पठा अगुनाग
"भोगोनाशु" आमनाति कयठ णा १६७ अर्था

"वदिह भोगोनाशु" शंय्पठाक वविनास नमिण पुकाश अर्था:

(१) श्युछुक ठेयक उपमे कोनो एक गोटेपन अपन भोगोनाशु ठपिवाक
श्युछो दतीनाठिसनाडवदिहवागमाठियोम पन पडा सकै छथा

(२) वदिह ठेयकक नाम भोगोनाशु ठपिवाक ठेठ ययनति कऽ ओकन
सावजगकि घोषमा कना

"वदिह भोगोनाशु" ठपिवाक नशिम:

(१) भोगोनाशु पुनास नूपे सम्वन्धति ठेकपन केन्दति हुअय। साहित्य
अकादेमी, एगवीटी आ कछि व्यक्तगिण नूपे ठपिठ भोगोनाशु वायोनाशुमे
ठेयक संसमनास आ व्यक्तगिण पुसंग णोडा कय सम्वन्धति ठेकक वहने
अपन-आत्म-पुसंसा ठपि छथा "वदिह भोगोनाशु" शीशु वृत्त कप सुटवाठ
सग नहना शीशु वृत्त कप सुटवाठ एहेन एकमात्र टुनामेसुट अर्थाणय कोनो
"ओपेगि" वा "कूठेगि" सेनीमनी अठासँ नै हेर छै, पहिठि आ अगुनामि मैयक
सठे हेर छै आ नकन कानास छै णे अठासँ कएठ "ओपेगि" वा "कूठेगि" मे
टुनामेसुटमे नै प्पेठ १६७ ठेक मुप्य अथि अथि हेर छथा आ शोकस
पिठिडी सँ दन यठिणार छै शीशु मात्र आ मात्र सुटवाठ पिठिडीपन केन्दति
नहैठ अर्था से ओकन टुनामेसुट "ओपेगि सेनीमनी" नै वन सोहे "ओपेगि
मैय" सँ आनमन हेरठ अर्था आ ओकन समापन "कूठेगि सेनीमनी"सँ नै वन
"श्वरुण मैय आ टनाशु"सँ पानम हेरठ अर्था आ शोकस मात्र आ मात्र पिठिडी
नहैठ छथा नहनि "वदिह भोगोनाशु" मात्र आ मात्र सम्वन्धति ठेकपन
केन्दति नहना आ कोनो संसमनास आदि णोडा कऽ शोकस अपनापन केन्दति

कनवाक अग्रमति नै नहान
(२) भोगोग्नाशु छे "वदिह पेटान"मे उपव्य सामग्रीक सन्दर्भ सहति उपयोग
कएए जा सकैए

(३) वदिहमे ई-पुकाशति नयना सगक कंपीनास्ट ऐपकसंग्रहकान्ता
ठेकनकि ठामे नहानहानि सम्पादक 'वदिह' ई-पुकाशतिमे पुकाशति नयनाक
पुनि-वेव आन्काइवक आन्काइवक अगुवाइक आ मूठ आ अगुइति आन्काइवक
ई-पुकाशन् पुनि-पुकाशनक अधिकान नपैत छथि ऐ ई-पुकाशतिमे
कोनो नॉयउटी पाश्चिमातिक पुनावयान नै छै

(४) "वदिह भोगोग्नाशु"क शुद्धमेः सम्वन्धति ठेकक पनियन (सम्वन्धति
ठेकक जन्म, नविस-स्थान आ कान्यस्थठक भौगोठकि-सांस्कृतिकि
वियन सहति) आ नयना कानक वविनास (समीक्षा सहति)।

घोषणा: "वदिह भोगोग्नाशु" शृंषुठ अगुनाग (१) नाजगुदन एठ दास जो
पु भोगोग्नाशु ननिमठ कान, (२) नविगुन गथ गकू पु नूगु कान आ
(३) केदान गथ यौधनी पु पुन मोहन मशि न्द्राना एपिठ
जायना शेष ७ गोटपु ननिमय शीघ्र कएए जायना

- गजगुन गकू, सम्पादक वदिह, नैहानसापु नो
+८९८५६०८६०७२९ हथथशुःवश्यएहअछश्रीशु शपाम २२२८-५४७श
वश्यएहअ

४ (१)

वदिहक "नति नवठ सनीज"

वदिह द्राना जो वशिषांक पुकाशति होइ छै नक संगे वदिह ओहन संस्था,
पुनाकि, ऐपक, कठकान, स्वयंसेवी वा सान्वाणकि जीवन जीनहानपु

अपन वेश्रान सेहे केंद्रति कनन जगिकापन व्रद्विहक व्रशिषांक कोनो कानामवस्र गै पुनकाशति गऽ सकथि एकन पुनक्यापि आ कान्याग्वयनक व्रविनास एना अर्घा

गश्मि आ कान्याग्वयनः

१) हम एकटा कोनो संस्था, पन्नाकि, ठेपक, कथाकान, स्वयंसेवी वा सान्प्रजनकि जीवन जीवहिनपन समग्र आठेयना कनव जकन भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी नहना ऐ पोथीक पहिठि नूप ई-वुक केन नूपमे ऐन आ पुन्यास नहना जे एकन पुनटि सेहे आवय जे पनस्थितिपिन गन्मन कनना

२) ऐ शृंष्यथमे:-

(i) सुभाष यंदन यादवपन केंद्रति "गति नवठ सुभाष यंदन यादव",

(ii) नाजदेव मंडोपन केंद्रति "ढाजदो मागदाठ- मातिहठि श्रौनतिन" आ

(iii) जगदीश पुनसाद मम्डो केंद्रति "दाजदसिह श्रुनासाद मागदाठ- मातिहठि श्रौनतिन" पुनकाशति गेठ अर्घा

पहिठि दुनु पोथीक ठेकान्पाम ३१ दसिम्बन २०२२ कें १११म सगन नातिदीप जन्म मे कएठ गेठ। तेसन पोथीक ठेकान्पाम २५ मान्य २०२३ कें ११२ म सगन नातिदीप जन्म मे कएठ गेठ।

(iv) "गति नवठ दगिस कुमान मसिन" आ

(v) "गति नवठ सुशीठ" जानी अर्घा

आगांक घोषमा ठेठ हानपःव्रद्विहयोनितिवेसगिगानिहम देपैत नही।

पुनवपीठकि "समय समाज आ सवाठ :मैथिली उपन्यास" कमठागनद ह्नाक पोथी : कछि उपन्यासकानपन सवनास कछि हुनकन ई क शीनषक ग्नामक अर्घा (२०२१) अर्घा संग्रह आठेपक समीक्षात्मक कथति समिडकेटेड, २६३ पन्नाक ई पोथी

हान्वाउम्मे अश्वनेनीकें मान् वेयथ जा सकत, जाऽ ई सङ्गि जायत,
अमेजगसँ हम ई यानिसय पाँय टाकामे कनिठौ मुदा एमे पाँयो पार्क सामगिनी गै
अर्था

एतऽ एकटा गूँ सुगाम अर्था, एकटा गएन सवन्मस ऐयक सुगाम यगद्न यादवक
उपग्यास 'गुठे' कें वनि पढ़ने ओ दू पाँति ऐयिठगर्हि आ गपिटा देठगर्हि, ओ दुगू
पाँति हम एतऽ अहाँक मनोअणगाम्थ पुनसुत कऽ रहै छी। अहाँ गुठे पढ़गर्हिये
हएव, जाँ गै पढ़ने छी तँ पहनि पढ़ाँ अि, कामस गप्यन वेशी मनोअणक अगुमव
हएत, गुठे सुगाम यगद्न यादव जीक अगुमति सँ उपव्य अर्था वदिह
आत्कास्वपन ऐ हानपुःवदिहयोगिपोतहहिम ठकिपन।

"उपग्यासक कमजोनी अर्था ऐयकक जाणगीतकि पुनवागुह जाणगीत विशिषक
पक्षयना नयनाक संग ग्याय गर्हि कऽ पवैत अर्था"

जऽ उपग्यासमे जाणगीत हूँ हूँ यनी गै छै ओतऽ- 'जाणगीतकि पुनवागुह' आ
'जाणगीत विशिषक पक्षयना' क तँ पुनसुने गै छै जाणगीतकि पुनवागुह वा
पक्षयनाक सोडन यमकेतु आ यान्नी पुनयुक्त केठगर्हि सुगाम यगद्न यादव
जीक 'गोट' जे रंरमे आयथ जे सुगाम यगद्न यादव जीक अगुमति सँ उपव्य
अर्था वदिह आत्कास्वपन ऐ हानपुःवदिहयोगिपोतहहिम ठकिपन, से
जाणगीतपिन अर्था मुदा ओतहुओ सुगामजीक गगना शैथिकें जाणगीतकि
पुनवागुह वा पक्षयनाक सोडनक आवस्यकता गै पड़ै पढ़ हमन पोथी 'गति
गवथ सुगाम यगद्न यादव' जे उपव्य अर्था
ऐ हानपुःवदिहयोगिपोतहहिम ठकिपन।

कमजगद्द हाक वनि पढ़ने सुगाम यगद्न यादवक वनिद्वय व्नाह्मसवादी
जातगित पुनवागुह एकटा यनाक घाम्ठी अर्था जऽ हिसावे व्नाह्मसवादकें
आगाँ वढ़वैथे कमजगद्द हा वामपंथक सोडन पकड़ै छथि आ सामाजिक ग्यायक
वर्ग यढ़वऽ याहै छथि, तकन पुनति समागान याना सयेत अर्था ई अपन
वायोडाटामे गएन सवन्मसँ छीनी कऽ, समागान यानाक ठेकक हककें माना

कऽ ठेठ साहित्य अकादेमीक मैथिलि अनुवाद असाइनमेन्टक गन्वसँ यन्या कनैत छथि आ ई असाइनमेन्टक हनिका मेन्टिसँ गै जातगित टाइटिसँ गेटठ छन्हि, अही सभ कनिदागीक एवजमे गेटठ छन्हि हनिका सभ ठेठ ठेठ मैथिलि वायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समागन्तन याना ठेठ जीवन्मनसक प्रश्ना-

आव अहाँ पुछव जे तक प्रतिक्रिया समागन्तन याना केना केक, ओ तँ कन्गानोहट गै कनैए, तँ तक उतन अछिहिन ३ टा पोथी जे १११म सगल गाना दीप जगज मे ठेकान्पति गेटठ ३१ दिसम्बर २०२२ कँ, वरह सगल गाना दीप जगज जकना साहित्य अकादेमी गान दस वन्यसँ गीर्डा ठेवाक प्रयास कऽ रहै अछि अहाँसँ ए तीन पोथीपन टपिपामी ई-पन सङ्केते दत्तगिरिसनाउद्वर्द्धिहोजामाठियेन पन आमन्त्रित अछि पहिठि दू पोथी मे गानदेव मन्डठ आ सुभाष यन्द्न यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमन तेस पौथी मैथिलि समीक्षाशास्त्रक सट्टियांक आयनपन कएठ गेटठ अछि तकना वाद जगदीश प्रसाद मन्डठ जी पन पोथी ठपिठ गेटठ (११२ सगल गाना दीप जगज मे ठेकान्पति) सगटा पोथीक ठिक नीयाँ देठ गेटठ अछि ' गति नवठ दगिश कुमान मन्डठ ' आ ' गति नवठ सुशीठ ' जानी अछि

ढाणदौ मागदठ- मातिहठि औनतिन (मौगतिह पुपपठेमेगन ३ & ३३)

गति नवठ सुभाष यन्द्न यादव

गति नवठ सुभाष यन्द्न यादव (मथिलिक्षन)

दशवधरुह शुद्धअषअध मशमधअठ- मातिहठि औनतिन

गति नवठ दगिश कुमान मन्डठ (जानी)

गति नवठ सुशीठ (जानी)

मैथिलि समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (मनिलुग)

संगम पद कमठागद ह्य क वनाहमाहवाएपन पुनहान:

दूषम पञ्जी- थहे गथायक गोक

दूषम पञ्जी- थहे गथायक गोक (मथिलिक्षम)

- गजगेद्वन गकुन, सम्पादक वद्विह, गैहानसापप गो
+ट्टंपदं०दं०७२१ हथथश्चु:वश्यएहश्चश्चश्चश्च ३षषम २२२ट्ट- ५४७श
वश्यएहश्च

४(२)

गति गवथ दगिश कुमान मसिन

दगिश कुमान मसिनक 'दुश् पाटन के वीय मे' कोसी नदीक ऐगहिसकि आत्मकथा थीक, ओ मथिलिक आग यान सगक ऐगहिसकि आत्मकथा सेहो छपिने छथा जेना वन्दगि महानन्द, वागमती की सद्गानि, दुश् पाटन के वीय मेंकोसी) (नदी की कहानी, न घाट न घन, वगावण पर मणवून मथिलि की कमठा नदी, गुनही नदी और नकनीकी हाडशुंक- थहे पामठा दग्गिन गद खेपठे और छोठसिगि छोनसे, गहुतारि गाथन- थनोन १७ । गहेसन गविन गद गगिनगिग गौतियहयनाडन, देडुजोस १७ गहे प्योसि एमवागकमेगनसा सारहिय अकटेमोक मैथिलि पामनसदान्नी समतिकि सदस्य पंकज ह्य पनाशन द्दाना हनिकन पोथी सगसँ पैनाक पैना मैथिलि अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपवाओठ गेठ अछा, जकना छद्म समीक्षक कमठागद ह्य ए योन ऐप्यकक नसिन्य कहै छथाद्विगू समीक्षक छद्म आ ऐप्यक योन ई जे दी कऽ सूपष्ट एगऽ ! कुम दगिश नसिन्य ई छथा वगिगमे हन्दी वद्वियाथक मुसुठमि अठिगढान मसिनक थीक, जे आऽटेक सविविध इगुनियनियठि मे वी प्पुडगपुनसँ टीआऽ १८६८मे आ स्टनक्यनथ इगुनियनियठिमे एमटेक१८७०मे केने छथा, आ ओऽ

नसिन्य ठेठ कुवाठशिखरु छथां जप्यन कोनो वषियमे नामांकन गै होइ छै जप्यन ठेठ हनथिकां हनिदीमे नामांकन ठरए-, गै तँ कमठानन्द हा कँ वुहऽ मे आवां ज्ञानगर्हि जे ई नसिन्य कोनो सविधि र्ज्ञानीनियेक गऽ सकैत अर्था, गऽ सकैए वुहठे होइगऽ हनिदी मूठ आ मैथिलीक स्क्नीनशॉट श्रॉगा संठग्न अर्था

दगिश कुमान मसिन मथिठिक गै छथां मुदा मथिठिक सग यानक कथा ओ ठपिने छथां, हम सग हुनका पुनकिं ज्ञान छी आ हुनका ऋतसँ मथिठिवासी कहियौ उक्तस गै गऽ सकता, मुदा मूठयानाक पुनस्कात आ पाइ ठेठुप ठेकसँ कृण्वन्ते गेटन से श्वेन सद्धि गेठ। ऐ ठेप्यकँ दस वानह वन्य पहनि सेहे नानानन्द वियोगी उद्यानक गेटठ छठपनिह जे ठपिने नहथनिह जे ओ कवतिमे पुनगावति गऽ अगायासे अपन नयनामे दोसनक सामगिनी योनि कऽ ठर छथां, एहेने सग आव ऐ कमठानन्द हा क आश्रय नकठगर्हि मुदा दुनगाग्रज हसिावे व्नाह्मासवादकँ ! आगाँ वढवैठे कमठानन्द हा वामपंथक सोऽन पकडै छथां आ सामाजिक न्यायक छथां याहै वठि यढवऽ, नकन पुनकिं समागानन याना सयेत अर्था सोठगिसँ वयवा ठेठ जमीनजन्थावठा ठेक कम्यूनिस्ट वगठ-। आ आव व्नाह्मासवाद वयेवाठेठ वामपंथक शानस, एहेन ठेक सगसँ कम्यूनिज्मकँ वहुन गुकसाग गेठ छै।

दगिश कुमान मसिनक सगटा पोथी आव हुनका अनुमतिसँ उपठव्य अर्था वद्विह आत्काश्चमे:

हानपुःवद्विहयोनियोनहहानम

एतऽ एकटा गप मोन पाड़िदी जे जप्यन वठि गेटसकँ पूछठ गेठगर्हि जे की ओ एकस वॉकस गानामे पारशेसीक ङनसँ देनीसँ आगि नहठ छथां? तँ हुनका उतान नहगर्हि जे माश्कोसॉश्ट पारशेसीक ङने कोनो उत्पाद देनीसँ गै उताने अर्था से वद्विह पेटानमे हम सग ऐ ननहक नसिक नहती एकना आन समुद्धि कयैत नहव, कानास समागानन यानामे सऽठ माँछ द्वाजे पोप्यनकि सग माँछ गै

सड़ैए, एगुका मठाह गोटछथि नहए गकिठैए माँछ सड़ैए गोट कऽ-, गकिठैए
नहए॥

सम्मिडीकेटेड समीक्षापन अगामि पुनहा।

मूठ दगिश् कुमान मशिः (२००६ दुः पाटन के वीय में) यह य्प्राण देगे की वाग है
कः १८२३ से १८४६ के वीय कोसी क्षेत्न में मठेयिा से ५, १०, ०००, काठागाः
से २, १०, ०००, हैजे से ६०, ००० तथा येयक से ३, ००० मौरै
(कुठ ७, ८३, ०००) हुई।

योग पंकज हा पनासः)साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामन्सदात्नी समतिकि
सदस्यः ([पठपुनाः २०१७ : (१०३ पृ)

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच में कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूठ दगिश् कुमान मशिः दुः)पाटन के वीय में:(२००६ मानवर्ष में वहिन में
कोसी नदी को वांधने का काम १२वीं शताब्दी में कसि गाजा एकप्रमस द्वितीय ने
कनवाया था और इस काम के लिए उसने पुजा से 'वीन' की उपाधि पाई और
नदी का नटवन्ध 'वीन वांध' कहलाया। इस नटवन्ध के अवशेष अभी भी सुपौठ
जि में भीम नगर से कोई ५ किलोमीटर दक्षिण में दृष्टि पड़ते हैं। डॉ
शुभासिसि वुकागन (१८१०-११) का अनुमान था कि यह वांध कसि कठि की सुरक्षा
के लिए वही वाहनी दीवान रहा होगा क्योंकि यह वांध यौस नदी के पश्चिमी किनारे
पर गिरिया से उसके संगम तक ३२ किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ
डब्लूडब्लू हंटन (१८७७) वुकागन के इस नक के साथ सहमत नहीं थे कि यह
वांध कसि कठि की सुरक्षा दीवान था। स्थानीय लोगों के हवाले से हंटन का
मानना था कि अधिकांश लोग इसे कठि की दीवान नहीं मानते और उनके हिसाब से
यह कुछ और ही चीज थी मगर वह नसियति रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं
थे। शनि भी जो आम यामा वगैरे है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे वगा
कोई नटवन्ध रहा होगा जिससे नदी की यात्रा को पश्चिमी की ओर पसिकने से

नोका जा सके। वेगो का प्रह गी कहना था कएसा ठागा था कइस नटवन्ध का
गन्मास काय एकएक नोक दया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमठागन्ध हा द्वागा यो उपन्यासकाक पीठ गोकव, देपू
छद्म समीक्षक कमठागन्ध हा द्वागा उद्युग यो पंकज हा पनाशन मैथिली)
उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ: (२५८-२५७)

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक
उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल
अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि
उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक
वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर
बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच
आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक
बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि।
पटुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़ात पटुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस
पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ
अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल
होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्यू. डब्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन।
ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल
होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

यो पंकज हा पनाशन)साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामन्शदात्री समितिक
सदस्य ([जलप्रांतर २०१७] : (३१ पृ)

पढ़ा कका पछिला गप के आगाँ बढबैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ा कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बेसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ा कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूठ दगिस कुमान मशिः (२००६. दुइ पाठन के वीय मे) कोसी के पुवाह का ग्यावहना की एक हठकश्चिगीणशाह गुगठक की शौण के सन् १३५४ मे वंगाए से दधिठी ठैटने के समय मथिती है। वनाया जाता है किणव सुठान की शौण कोसी के कगिने पहुँची तो देया कि गदी के दूसने कगिने पन हाणी शम्सुद्दीन शय्यास की शौण मुकावठे के एरि तैयान प्यड़ी है। यह वही हाणी शम्सुद्दीन थे जनिहोने हाणीपुन तथा समस्तीपुन शहन वसाये थे। श्चिगीण की शौण शायद कुनसेठा के आस पास कसिी जगह पन कोसी के-कगिने सोय मे पड गई। गदी की नश्चान उगहे आगे वढने से नोक नहि थी। आप्पनिकान शैसठा हुआ कि गदी के साथसाथ - उतान की शौन वढा जाय शौन जहाँ गदी पान कगने पायक हो जाय वहाँ पानी की पास के जयिान शौन गई अपन कोस सौ प्रायः शौण की सुठान थाह ठी जाये, जो कि उसी स्थान पन अवस्थति था जहाँ गदी पहाड़ो से मैदानो मे उतनी थी, गदी को पान कयिा। गदी की घाना तो यहाँ पाठी जान थी पन पुवाह शना तेज था कि पाँय जहाँ पाँय सौ मन के गानी पत्थन गदी मे तनिको की तनह वह रहे थे- हा ने सुठान शौन दोगो उसके ठगा मुमकनि कगना पान को गदीथयिी की कगान प्यड़ी कन दी शौन नीये व्राठी कगान मे नससे ठटकाये गये जसिसे कयिदि कोई आदमी वहना हुआ हो तो इस नससो की मदद से उसे वयाया जा सके। शम्सुद्दीन

वे कभी सोया भी न था कि सुभान की शौरो कोसी को पार करेगी और जब उस को इस वाग का पता लगा कि सुभान की शौरो ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

योग पंकज दा पत्रिका)साहित्य अकादेमीक मैथिली पत्रिकासंस्था की समितिके सदस्य([जगन्नाथ २०१७ : (१०५ पृ)

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ भोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौने रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफतार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कने कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कने शिकस्त बुझेले। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कने आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ बला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ बयो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचने छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(शीघ्र अही विकिपी आन सूक्तीगशाँट अपडेट कएल जायता।

वैदिक उद्देश्य म अंक दशक ०१ शुभवी २०२३ सँ पत्रिकासंस्था गति गवेष दशक कुमाय मसि।

हानपुःवैदिकयोगि वैदिक पत्रिका-पत्रिका मैथिली पाक्षिक ई :शषम २२२२-५४७३ वरधएह (सनिये २००४) पत्र।

- गणेश गङ्गा, सम्पादक वैदिक, गौणसापप गो

+९१९५६०६०७२९ हथथसुःवरधएहअधुशुशु शषम २२२२-५४७३ वरधएह

गति गवध सुशील

कमलागन्ध हाकें हम कएि छद्म समीक्षक कहलियनि?

कामाओ ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ एपिँ छथियनिनाक एगामग सय वृक्षक वाद मैथिलि -मैथिली उपन्यास" -
अन्तर्जातीय वृद्धिहक सपना, संघर्ष आ वृद्धिभवना पर गामियुक्त
उपन्यास एपिँवाक श्रेय गौरीनाथकें जाश छनि।"

तँ की कमलागन्ध हा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि छैनि? की ई हुनक वृद्धिहवादी
संस्कृतक अंकक -जे हम ककरो यदा सकै छएि आ ककरो उगानि सकै छएि -
केन पनाकाषु थीक, आक हुनक अय्ययनक अनावक पुनाओ?

यू अहाँकें ओ यथी कमलागन्ध हा केन स्वाथी दुनियँसँ दू, छठछद्मसँ -
दू सुशीलक जादूवला साहित्यक गच्छिछु दुनियँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियँमे।

पुनस्तुत अछि सुशीलक ' गामवाथी' (१८८२जे आव उपव्य अछि वृद्धिह (
आकाशमे ठिक हानपुःवृद्धिहयोगिपोतहहाम पना।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आनम्नसँ पहिलियि ' गामवाथी' उपन्यासक
सम्बन्धमे सुशील एपिँ छथि-

" वृद्धिह वृद्धिह आ अन्तर्जातीय वृद्धिहक समन्वयमे।"

ओ उपन्यास आनम्न।

गामवाथीक मूल्या आ नयने हमेला, गामवाथीक दाह संस्कृत के कतौ?
वृद्धिह समाज कजिजाद समाज?

मैथिलीक समितीकेटेउ समीक्षापर अन्तर्नि पुनहा।

वर्दिहक ३६३ म अंक दगिंक ०१ शुनवनी २०२३ सँ पुनानुन गति नवठ सुशीठ

हानपुःवर्दिहयोगि वर्दिह पतुनकि-पुनथम मैथिली पाकषकि ईःशषम २२२८-
५४७श वरुधएहअ (सगिये २००४) पुन।

- गणेश्वर गकुन, सम्पादक वर्दिह, गौहनसापप नो

+८९८५६०८६०७२९ हथथशुःवरुधएहअछशुःशुः शषम २२२८- ५४७श
वरुधएहअ

५

वर्दिहक "साहित्यकि नुनषुटायान वरुशिषांक"

वर्दिह "साहित्यकि नुनषुटायान वरुशिषांक" ठेठ नमिगठपिपिठि वरुषियपन आठेपु ई-
मेठ दगिठिठिसनठठवर्दिहवगामाठियेठ पुन आमंतुनति अछा

१ साहित्य, कठ आ सनकानी अकडेनी:-

(क) पुनसुकानक नाननीठि

(पु) सनकानी अकडेनीमे पैसेवाक गएन-ठेकठानुनकि वरुधियन

(ग) सनुगठ आ अकडेनी केन काठ कनवाक ननीका

(घ) सनकानी सनुगठ छडुन वरुनियेठे उपठठ नानुकाठकि समानानुन सनुगठ
कानुनपडुवठि

(ङ) अकडेनी पुनसुकानमे पारु शुकुठनः नथिक वा पुनथानुथ

२ वरुधकठगिठ साहित्य संसुथान आ पुनसुकानक नाननीठि

३ पुनकानुन नानुगठमे पसनठ नुनषुटायान आ ठेपुक

४ मैथिलीक छडुन ठेपुक संगठन आ शुकुठन पडुवठिकानी सवहक आयनम

५ सुकूठ-कठठेठक मैथिली वरुनियेठे पसनठ साहित्यकि नुनषुटायानक वरुधिय

नुनप-

- (क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) गणित
६ साहित्यिक पत्रकारिता, विज्ञान, मन-माँ-माँक आ ठेकापत्रक पत्र-
नमाशा
७ ठेका सवहक पत्र-नमाशा शताव्दी केन युगाव , कैठेडनवाड आ नकना
पाठ्यक्रम
८ दृष्टि एवं ठेका सवहक संगे गेड-गाव आ ओकन शोषणक वृत्ति नतीका
केनो आग वृत्ति

६

वर्द्धि वृत्तिकासुठ ठेका

वर्द्धि औ औ औ वृत्तिकासुठ ठेकासुठ सम्वन्धी सूचना ठेका अपन गौहाणसापप नमव
हमन गौहाणसापप गो +८९८५६०८६०७२९ पन पडाउ, ओकन पुनयोग मान्ना वर्द्धि
सम्वन्धी समाया देवाक ठेका कएठ जाएना।

- गौहाणसापप ठेका, सम्पादक वर्द्धि, गौहाणसापप गो
+८९८५६०८६०७२९ हथथथुःवृत्तिकासुठ ठेकासुठ शपषाम २२२८-५४७२
वृत्तिकासुठ

मैथिली आ मथिलीसँ संवन्धि कछि मुप्य साइत:- आग ठेका वृत्तिकासुठ
सूचना देना ठेकासुठ वर्द्धि ठेकासुठ ठेकासुठ केँ ई मेठसँ पडावी।

हानपुः वर्द्धि ठेकासुठ ("वर्द्धि" पुनथम मैथिली पाठ्यक्रम ई पत्रिका)

हानपुःगाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ (इंटरनेटपन मैथिली
भाषाक पुनयीगनम उपस्थति मैथिलीक पहि वृँग- मैथिली भाषा वृँगक
एग्रीगेटन, ५ जुलाई २००४)

हानपुःवद्विहयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ (इंटरनेटपन मैथिली भाषाक पुनयीगनम उपस्थति
मैथिलीक पहि वृँग- मैथिली भाषा वृँगक एग्रीगेटन, ५ जुलाई २००४)

भाउसकि गाछ जे सन २००० सँ ग्राहूसटीजपन
छठ हानपुःगाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७, हानपुःगाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ आदि ठिकपन आ अम्पनो ५ जुलाई
२००४ क पोस्ट हानपुःगाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ (कछि दनि
ठेठ हानपुःवद्विहयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ ठिकपन, सनो गौपवायक
मायहनि०७ हानपुःसुभैवानयहनि०७वद्विह २५८ यापुनो(स) डनोम २००४ गो
२०१६- हानपुःवद्विहयोम भाउसकि गाछ-पुनथम मैथिली वृँग, मैथिली वृँगक
एग्रीगेटन) केन रूपमे इंटरनेटपन मैथिलीक पुनयीगनम उपस्थतिकि रूपमे
वद्विहमाग अछि ई मैथिलीक पहि इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम वादमे १
जानवरी २००८ सँ "वद्विह" पडैतइंटरनेटपन मैथिलीक पुनथम उपस्थतिकि यात्रा
वद्विह- पुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका घनि पहुँच
अछि, जे हानपुःगाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ पन ई पुनकाशति हेत अछि आव "भाउसकि
गाछ" जाउवृँग 'वद्विह' ई-पत्रिकाक पुनवक्ताक संग मैथिली भाषाक
जाउवृँगक एग्रीगेटनक रूपमे पुनपुक्त नऽ रहै अछि वद्विह ई-पत्रिका
क्षपाम २२२८-५४७२२ वर्यएहअ पठवमथिथि (योगेन पुनमन्षा) २०५८
माघे संक्रानति- २००३ जानवरी मैथिलीक दोसरा इंटरनेट पत्रिका अछि जे ऐ
ठिके गाणोपेनानाहाकुनवठेगसपोनयोम२००४०२वहाउसानकि- गायह्कहाम७ पन छठ मुदा आव ई उपव्य गै अछि ई टिपिपसी मात्र
शाहिस सुद्वना ठेठ अछि

हानपूँवद्विहयोम् (स्टेनोटपन मैथिली भाषाक सगसँ पुनाग उपव्युपस्थितिविक्रमपुनियि वृत्तं)- मैथिली भाषा वृत्तंकाक एगोरोटन प लुगइ २००४ गौगोपेनदनाककुनववोसपोनयोम)

हानपूँसाभाद्वेवोसपोनयोम् (पुनम मंडव आ पुनयिका हाक पहि मैथिली गूण पोन्टव, दं अगस २००४ सँ)

हानपूँपनाकानागानववोसपोनयोम् (पुनकांनान मैथिलीक विक्रमपुनियि वृत्तं, अगवनी २००५)

हानपूँवद्विहयापागवोसपोनयोम् (मैथिलीक विक्रमपुनियि वृत्तं, अगस २००५)

हानपूँवद्विहयापागानिग (मैथिलीक विक्रमपुनियि वृत्तं, अगस २००५)

हानपूँरेवोमनिहिववोसपोनयोम् (हेवे मथिवि- योगेन पुनमन्था, सन्पादक-पुनकासक, नूपा हा, सन्पादन सहयोग, पृष्ठ, मैथिली साहित्यिक, ३ म २००६)

हानपूँपावववोसपोनयोम् (हेवे मथिवि- योगेन पुनमन्था, सन्पादक-पुनकासक, नूपा हा, सन्पादन सहयोग, पृष्ठ, मैथिली साहित्यिक, १७ म २००६)

हानपूँरेवोमनिहिववोसपोनयोम् (मैथिली गूण पोन्टव, सगिम्वन २००७)

हानपूँरेवोमनिहिववोसपोनयोम् (मैथिली गूण पोन्टव, सगिम्वन २००७)

हानपूँसहामपादकौनदपेससयोम् (मैथिली गूण पोन्टव, अगवनी-अगवनी २००८)

हानपूँसाभाद्वेयोम् (मैथिली गूण पोन्टव, अगवनी-अगवनी २००८)

हानपूँरेवोमनिहिववोसपोनयोम्

हानपूँपेमानसहोदपेससयोम् (योगेन पुनमन्था)

हानपूँगयहिववोसपोनयोम् (मैथिलीक विक्रमपुनियि गणक वृत्तं)

हानपूँमनिहिववोसपोनयोम् (मनिहिव चतुदेग उगाग)

हानपूँस्वगियागपनासागोवगियाग- नानाकान् (वगिआग नानाकान्)

हामउ

हानपूँसागसकानिगुयवमनिहिववोसपोनयोम्

हानपूँसागसकानिगुयवमनिहिववोसपोनयोम्

अउउ अमयदश दशयदश यशओदयदशयदश आकाशवामी दूददश

हानपूँपनासावहानागोवगि

हानपूँसोगानियोम्

हानपूँसोदोदसहानोवगि

आकाशवामी मैथिली पोडकसुट हानपूँपनासावहानागोवगिपोदयासपहप? उवोवगाना=मनिहिववोसपोनयोम्=१८४७-०८-१५६६नोमौप=२०२०-०८-२८६नो=२०५०-१२-३१६सोमयह=घश

आकाशवामी पदना दनगं मैथिली गेपनग गूण टकसुट उउगवोउ-१ हानपूँसोगानियोम्दमउ- मपय- अदो- अयविवि- पोमयहसपस

आकाशवामी पदना दनगं मैथिली गेपनग गूण टकसुट उउगवोउ-२ हानपूँसोगानियोम्दमउ- येसनासपस

आकाशवामी दनगं हानपूँपनासावहानागोवगिपोदयासपहप? यहनगेउ=२८२

आकाशवासी दनगंगा सू टयूव येनए हानपस्सौयुगुयेयोम्यहानगेउछवदमसेरुमवउपओओथिएमशवअ

आकाशवासी शगउपुन हानपुपनासानवहानगिगिगिपपयेनसुनयेपहप? यहानगेउ=३५८

आकाशवासी पुनसौयु हानपुपनासानवहानगिगिगिपपयेनसुनयेपहप? यहानगेउ=२५६

आकाशवासी पटना हानपुपनासानवहानगिगिगिपपयेनसुनयेपहप? यहानगेउ=१२२

अडड समयअ अथयअओ एमघडरुपह मएओप

अडड समयअ अथयअओ मएओप अदछरुवरए

अडड समयअ अथयअओ थअडपप आमय छउददुपमथ अददअरुदुप

दअहैअ पअशहअ थव मएओप यरुपछउपपअओमप

पअमपअथ थव

वउयएरुअ - डअदमसमधै ओउथउआए छरुअममएड

हानपस्सौयुगुयेयोमवदिले-ठानगिग

वदिले दद अछेद थअकगिग मातिहवि अदौ गोकस (नियछुदगिग मातिहवि चगिग डगगुगो- रसा नमि गि मातिहवि)

हानपस्सौयुगुयेयोमवदिले-ठानगिग

हानपुवनामहगौसवठेगसपोनयोम (मैथि समाथान)

हानपुमिहविठेकवाऱयोम (येपअक मैथि ६ पर्नाकि)

हानपुमिहविठेकयोम

हानपुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मथिथि आ मैथिक समाथानक सारु)

हानपुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मैथि १५ऱुगय दैगिक)

हानपुसुमपदविक्रियोम (मैथि पुनगुगानस पुनकास, मैथि दैगिक)

हानपुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मथिथि समाद, मैथि दैगिक)

हानपुगानाकपुनगौसवठेगसपोनयोम (मथिथि आ मैथिक समाथानक सारु)

हानपुमिहविठेकयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुमिहविठेकयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुसुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुसुमिहविठेकयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपुसुमिहविठेकसवठेगसपोनयोम (मैथि गूण पोऱुअ)

हानपस्कृतिगिरिविधेयसपोत्थोम् (कीर्तनगिथ हा वृत्तः)

हानपुण्यतर-श्रीवर्मातिहिविधेयसपोत्थोम् (जगदीश यद्गुण "अग्नि" क वृत्तः)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम् (वृषेय यद्गुण ७७)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम् (येतना समिति, पटवाक वेवसायः)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम् (मैथिली पोथी कीर्तः)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम् (श्रीमत् सौं ह यति)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम् (साहित्यपुरी)

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

हानपुनक्तिस्वविधेयसपोत्थोम्

- हानपुःमतिहविषाणविवेगसपोत्योम्
हानपुःमौयहामुगदागानपायहहयोम्
हानपुःकसिगसागकापवेकौनएपनेसस्योम्
हानपुःकसिगसागकापवेक्योन्
हानपुःमतिहविषोणगसहुवववेगसपोत्योम्
हानपुःमौनागनपापववयोम्
हानपुःमतिहविषोसगेनौनक्योम्
हानपुःमतिहविषोमिनोयोम्
हानपुःमौमतिहविषि
हानपुःयसासोनाग्नि (छपथथ)
हानपुःमौसामाधसाप्योम् (समथ साप)
हानपुःमौमतिहविषोनाग्नि (नेशन यौयनी)
हानपुःमौनवाकसागोनाग्नि (मसिग हूनवाकथन)
हानपुःमतिहविकसहानसहकिसहावहयिगनिगेत् (मथिविक्षन शक्तिषा अथयिग)
हानपुःमतिहविकसहानग्नि (मथिविक्षन शक्तिषा अथयिग)
हानपुःमसिसौवमतिहविकसहानववेगसपोत्योम् (सद्विनसुतु- मसिग मथिविक्षन धर्षि)
हानपुःमतिहविषोनाग्नि (मथिविषी)
हानपुःमौमतिहविषोमनयहग्नि (मैथिषि मंथ)
हानपुःमाहृववाग्यिग्नि
हानपुःमौपनेमकुमानावकिक्योम
हानपुःपागदावगौनएपनेसस्योम्
हानपुःमौमतिहविषोमएनक्
हानपुःमौमतिहविषयहौक्योम्
हानपुःमतिहविषोणगसगोतववेगसपोत्योम्
हानपुःनाधपनावहावहातववेगसपोत्योम्
हानपुःमतिमोहगणहृववेगसपोत्योम्
हानपुःमतिहविषोसिगहापापनयहववेगसपोत्योम् (मैथिषि सूत्रास्यथ पनयिन्था- नमाकन यौयनीक वृत्तं३)
हानपुःमतिहविषि-दानपागववेगसपोत्योम् (मैथिषिक वेकपुनयि वृत्तं३)
हानपुःमतिहविषोववेगसपोत्योम् (मथिविषोव मैथिषिक वेकपुनयि वृत्तं३)
हानपुःमतिहविषिगिमाववेगसपोत्योम् (मैथिषि श्विम्स)

- हानपुःमतिहविडिडिमसुवठोगसपोतयोम् (मैथिली शक्तिम्स)
- हानपुःमतिहवि-एनामावठोगसपोतयोम् (वदिह मैथिली गट्टु अत्सव-वेयन डकुनक वर्णग)
- हानपुःमपनकयोय्य (ई पनकपुन ग्युण, नान् म्ाँस, मथिलि इन्श्वेन्मेशन)
- हानपुःमौथिनासिपाठयोय्य (नान् रोपाठ मथिलि पनकपुन मयेस हाठयाठ अनयतामि अनयौहेने से)
- हानपुःमतिहविमतिहविठोगसपोतयोम् (मैथिलिक आ मथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमौमतिहविडागिकिन् (मथिलि दैगकि)
- हानपुःमौमतिहविमानयहवठोगसपोतयोम् (मथिलि मंय)
- हानपुःमतिहविसिगवठोगसपोतयोम् (मथिलि आ मैथिलिक समायानक वर्णग)
- हानपुःमतिहविडिगनागिठोगसपोतयोम् (मैथिली श्वाउन्डेशन)
- हानपुःमतिहविविहासहवठोगसपोतयोम् (काश्यप कमठक वर्णग)
- हानपुःनकपुनठोगसपोतयोम् (नूपेश कुमान हा "न्योथ"क वर्णग)
- हानपुःपानागिठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःसगिगानहानवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःसायलकौनदपनेसस्योम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमतिहविगिठुवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमतिहविसामायहानवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःपविकहौनवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःसविवायगावठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमतिहविप्रगणहवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःगाम- गहानवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमतिहवि- महिनवठोगसपोतयोम् (मैथिलिक ठेकपुनयि वर्णग)
- हानपुःमौमतिहविठिकहाकसागहवठोगसपोतयोम् (मैथिलि ठेक संघक पाठस्थठ)
- हानपुःमौमतिहविठियुक् (मथिलि कठ्यनठ आंगोनासठेशन, धुके)
- हानपुःमनिपानागाकपुनोम् (मनिप, पनकपुन)
- हानपुःमौनिदानवहनगोम् (आकाशवासी एनगोकाक सास्ट)
- हानपुःमतिहविगानोम् (मथिलिगानक सास्ट)
- हानपुःमौदिसविवायागयोम् (दिसवि वयना, हेदनावाए)
- हानपुःमौवमयमनि (वदिहपानि मैथिलि युवा मंय)

लनपुःपूँषाभिनिहवियेमु (मथिधि सङ्ग्रहा, संस्कृति, वृष्टि, गीत-संगीत आ वहुत नास जागकारीक ठेव)

लनपुःसोवहागामनिहवियेमु (सोवहाग मथिधि- पहिठि मैथिली येव)

लनपुःकासह्याप- भनिहविविगसपोत्येमु

लनपुःकासह्यापानसयहोत्तैरैणदपेसस्येमु (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिवािक साष्ट)

लनपुःभिनिहवियाभिनिहवियाभिनिहवियेमु

लनपुःद्वेषुनावावुभानिहवियेमु

लनपुःसेनुनाकशाभिनिहवियेमु

लनपुःभिनिहवियेमु

लनपुःकाविनिहवियेमु (कावि कांत हा "वृथ")

लनपुःसाकेतानसवविगसपोत्येमु (साकेतानसवविगसपोत्येमु)

लनपुःगुणानसवविगसपोत्येमु (गुणानसवविगसपोत्येमु)

लनपुःदानसवविगसपोत्येमु (दानसवविगसपोत्येमु)

लनपुःसोवहागनावावुभानिहवियेमु (सोवहागनावावुभानिहवियेमु)

लनपुःद्वेषुनावावुभानिहवियेमु (द्वेषुनावावुभानिहवियेमु)

लनपुःभिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

लनपुःभिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

लनपुःभिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

लनपुःपाननिहवियेमु

लनपुःभिनिहवियेमु

लनपुःपाननिहवियेमु

लनपुःभिनिहवियेमु

लनपुःपाननिहवियेमु

लनपुःभिनिहवियेमु

लनपुःसावयहियेमु (सावयहियेमु)

लनपुःसावयहियेमु (सावयहियेमु)

लनपुःमुअयियेमु (मुअयियेमु)

लनपुःभिनिहवियेमु

लनपुःभिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

भिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

लनपुःभिनिहवियेमु (भिनिहवियेमु)

हानपुःआरिहविस्त्रिभुजयेतेनगेन

हानपुःअसिसोः

हानपुःउदेनापनोपेयनोः

हानपुःउदेनाहोसोदेनाःकुर्विडिउ- मारिहवि

हानपुःअनगोमोःनगोःमसमा

हानपुःनगसवोःउदेनापनोपेयनोःअनगोःमसमा

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (मथिषि-मैथिषि पोथी अंगवसन क्रौं)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः-मारिहवि- पनोदुयानस-नववोःपहप (शुभ मारिहवि- मारिहवि वोकसोःनववो)

हानपुःमारिहवि- हाःनयोः (शुभ मारिहवि- मारिहवि वोकसोःनहे- मारोःनववोःनववो)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (अंकि प्रकाशनक सास्ट- मैथिषि प्रकाशक)

हानपुःअसहसपिःनकासहववोःगसपोःनयोः (अश प्रकाशन- मैथिषि प्रकाशक)

हानपुःपाववपुःववयानोःनववोःगसपोःनयोः (पववो प्रकाशन- मैथिषि प्रकाशक)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (नवानम- मैथिषि प्रकाशक)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः

हानपुःसापहोःनगः

हानपुःकानपुःनोःनववोःनयोः

हानपुःमारिहविःव्यदेः

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (मैथिषि वोकसोः ७०८ कंम)

हानपुःमारिहविःमननयहेः

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः

हानपुःमारिहविःवोकसोःनयोः

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः

हानपुःकमानयहेः (हेवो मथिषि काःनकःन प्रःनयेक शनकिं नोपाथी समधानुसान ११०० वःपोसं ११ वःपोथनी आ ११०००० वःपोथनी वःपिधवस्तुपःन केःनःनी योवःथिया काःनकःन प्रःनयेक सोमके ११०० सँ ११ वःपोथनी प्रःनसाःम)

हानपुःनकाःनपुःनयोः (हेवो मथिषि काःनकःन प्रःनयेक शनकिं नोपाथी समधानुसान ११०० वःपोसं ११ वःपोथनी आ ११०००० वःपोथनी वःपिधवस्तुपःन केःनःनी योवःथिया काःनकःन प्रःनयेक सोमके ११०० सँ ११ वःपोथनी प्रःनसाःम)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (नोपाथी टीवी-नमःप टीवी मैथिषि काःनकःन सूयवा)

हानपुःनकाःनपुःनयोः (नानकी एखःन, मैथिषि समाथान नःडयो)

हानपुःमारिहविःनकाःनयोः (मैथिषि नःडयो)

हानपुःवहिनवोःकमानयहेः (नानकी एखःन, मैथिषि समाथान नःडयो)नवे यहनवःव)

हानपुँीनदीमिहिवीनम् (मिथिनेडयो)

हानपुँीपानमिहिवीनम् (नेडयो अपुन मिथिनेडयु महु)

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीमादावपुनोदयुमम्

हानपुँीमादेसुहुमम् (एसोशिएशन अंश वेपावि मवेसीण वन युके)

हानपुँीमिहिवीनम् (स्त्रीमना पिना हाक सास्ट)

हानपुँीमिहिवीनम्

हानपुँीसुगासिपानम्

हानपुँीमिहिवीनम्

हानपुँीमिहिवीनम्

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीमेनानेनानिहिवीसु

हानपुँीसुध्यापनाकासध्यायम्

हानपुँीनानावाहणम्

हानपुँीनानावाहणम्

हानपुँीसुध्यापनाकासध्यायम्

हानपुँीमिहिवीनम्

हानपुँीगोपनेदियीनोवनेयम्

हानपुँीवहिनमिसुयम्

हानपुँीवहिनमिसु

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीकनानावठेगसपोनम्

हानपुँीदिमिहिवीनम्

हानपुँीमिहिवीनम्

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीपावकपुनोदयुमम्

हानपुँीयहिनमिसुयम् (देवनागरी धिपिकि वृंणक एनोरेटन)

हानपुँीपावकपुनोदयुमम् (मैवेनंग गत्य संस्थाक वृंणक)

हानपुँीपावकपुनोदयुमम् (मैवेनंग)

हानपुःमाथिनागयोम् (मैथिली)

हानपुःवानदागासगेतवठेगसपोतयोम्

हानपुःद्वैदानवहनगागाणवठेगसपोतयोम्

हानपुःमतिहठि सामायहानपिद्वैद्योममतिहठिसामायहम् (मथिठि आ मैथिलिक समायाक सास्ट)

हानपुःमथिठियेनपोनगेत्मासिमहाम

हानपुःमथिठियेनमतिहठिमिद्वैदेशासपस (मैथिली अश्रोणान आ अङ्गट)

हानपुःमतिहठिपानसयोम्

हानपुःमतिहठिपानिगोतयोम्

हानपुःमतिहठिगि (मथिठि-मैथिलि-मैथिलिक ठेकपुनियि सास्ट)

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम् (मथिठि-मैथिलि-मैथिलिक ठेकपुनियि सास्ट)

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम् (मथिठि-मैथिलि-मैथिलिक ठेकपुनियि सास्ट)

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम्

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम्

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम्

हानपुःसुनमासतयोम्

हानपुःमतिहठिगिद्वैद्योम्

हानपुःमतिहठिगि-मुसेमयोमावोतममद्वैदेशहामठ

हानपुःमतिहठिगि-गविनसतिद्वैद्योम्

हानपुःमतिहठिगि-सुवसुतिअउङ्गडेशनक सास्ट)

हानपुःमतिहठिगि-सामयोनितिनसयोम्

हानपुःमतिहठिगि-पमयमगोवणम्

हानपुःमतिहठिगि-गोवणम् (गोपठ सनकानक सास्ट)

हानपुःमतिहठिगि-वहिनियि

हानपुःमतिहठिगि-वहिनियि (वहिन सनकानक सास्ट)

हानपुःमतिहठिगि-गोवणम्

हानपुःमतिहठिगि-सहानियि

हानपुःमतिहठिगि-सहानियि

हानपुःमतिहठिगि-पिद्वैद्योम्

हानपुःमतिहठिगि-नयेतयोम्

हानपुःमतिहठिगि-विविहक सास्ट)

हानपूँमातिहवित्रविविधोम् (मैथिली वविहक सास्ट)

हानपूँकागयादागनेम् (मैथिली वविहक सास्ट)

हानपूँमातिहवित्रवाहमवित्रवाहवागदहागनेम् (मैथिली वविहक सास्ट)

हानपूँमातिहवित्रसहादियिम् (मैथिली वविहक सास्ट)

हानपूँकाव्यागडिगदागिनेम्

हानपूँमादह्वागियिम्

हानपूँमागवाकपुनेम्

हानपूँदानवहागगा- डनेगिदस्योम्

हानपूँहगिदसिगसाहागनेम्

हानपूँवहिनससोयोगिनेम्

हानपूँगागाविविनामपुगेवि (गेशगव वस्वनेगी कोठकाग)

हानपूँदपुगेवि (दिविषी पवठकि वस्वनेगी)

हानपूँयोगनेमानापुवठियिविनामपुवठेवगियिम् (कोनेमाना पवठकि वस्वनेगी)

हानपूँननगडुगेवि (नागा नाम मोहन नाम वस्वनेगी स्वाउंउशन)

हानपूँसाहगिया- कादमगोवि (साहगिय अकादमीक सास्ट)

हानपूँगवगिदगीनेम् (गेशगव वुक टनस्टक सास्ट)

हानपूँयसुयहियेदुगाहमिहवि

हानपूँवमाययोगेवागानमिभौवृष्ट्रौयवृष्ट्रमिहवि%४०अन%४०हामव

हानपूँसुगतहासिगसिगडिगिमिहविगिदसहामव

हानपूँमातिहवित्रवियिम्

हानपूँगहोवेयोमसहौ वगगावोसप?योद=मा

हानपूँवगुसिगसिगेगाडिमसवागसुडवेसयनपिगाियडम?योद=मा

हानपूँवगुवोसहमेयोमपगवसिह- मातिहविहाम

हानपूँगेसेगापनेगेयनेगायहविमा

हानपूँगेपावगोवगप

हानपूँमातिहवि- मपउ- सोवगसुडेठकमुसियिगियिम्

हानपूँयावियिम् (गानगीय गधा संस्थानक सास्ट)

हानपूँयाविविनामपुनेम्

हानपूँवसिगिगेगातिहविमिहविहामव

हानपूँगेगागेविगगावेसमातिहविदिदुगा- मातिहविहामप (नास्टनीय अगुवाह मसिग)

वद्विह प्रथम मैथिली पाक्षिके इ पत्रिका वीर्यो अन्कस

हानपुवद्विह- वद्विहवैगसपोतयोम्

वद्विह प्रथम मैथिली पाक्षिके इ पत्रिका भयिषि यतिनकष, आयुगकि कष आ यतिनकष

हानपुवद्विह- पाणिनिगस- पहोसववैगसपोतयोम्

वद्विह इ पत्रिकाक सभटा पुनान अंक-वद्विहो 'जुनवाव' स। १९७९ सिसेस

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो

वद्विह इ अंक पत्रिकाक पहिपि ५०-

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ अंक पत्रिकाक ५०म सँ १४८-

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

मैथिली पोथी जउववैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

मैथिली आडयो संकषण भातिहवि अद्विहो यौनवावस

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

मैथिली वीर्योकि संकषण भातिहवि वद्विहो

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

भयिषि यतिनकष आयुगकि यतिनकष आ यतिन भातिहवि आनिनिगु मोटेन अन गद अहोस

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-पाणिनिगस- पहोस

सभन भातिहवि पनस

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-पाणिनिगस- पहोस

हानपु-सोसगोवैगसपोतयोम्-वद्विहो-पाणिनिगस- पहोस

वद्विह मैथिली कृषि :

हानपु-वद्विहो-वैगसपोतयोम्

वद्विह मैथिली पाठवृत्त एनोटेन :

हानपु-वद्विहो-वैगसपोतयोम्

वद्विह मैथिली साहित्य अंगोनिमे अद्विहो

हानपु-माद्विहो-वैगसपोतयोम्

वद्विहक पून-नूप "आवस-निक गाव" :

हानपु-गाव-वैगसपोतयोम्

वद्विह इ अंक :

हानपु-वद्विहो-वैगसपोतयोम्

वद्विह आस :

हानपु-वद्विहो-वैगसपोतयोम्

भातिहवि पंगेन जउववैगसपोतयोम्-वद्विहो-मथहसि- पाणि-
वद्विह इ पत्रिकाक १५०म आ आगोकि अंक-

हानपस्मःभारिहवि-सगिन-अनगुणवधोसपोत्थोम्

वदिह व्नाहमी-व्नाहमी अपिभि मैथयिक पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-वनाहमविवोसपोत्थोम्

वदिह य्पोध्री-य्पोध्री अपिभि मैथयिक पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-कहनोसहनहविवोसपोत्थोम्

वदिह कैथी अपिभि-मैथयिक कैथी अपिभि पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-कारिहविवोसपोत्थोम्

वदिह नेवाड़ी अपिभि-मैथयिक नेवाड़ी अपिभि पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-गौरविवोसपोत्थोम्

वदिह आरपीए अपिभि-मैथयिक आरपीए पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-पिाववोसपोत्थोम्

वदिह-उन्टू नसूताविक अपिभि मैथयिक पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-नट्टववोसपोत्थोम्

वदिह-नाविनी अपिभि मैथयिक पहि व्ठंंग

हानपस्मःभारिहवि-नाविनाववोसपोत्थोम्

वदिह-सदेह : पहि नमिहना (मथियिकृषन) पाठवर्ण (व्ठंंग)

हानपस्मःवदिहा-सादेहाववोसपोत्थोम्

वदिहव्नेषः मैथयि व्नेषमेः पहि वेन वदिह द्वाणा

हानपस्मःवदिहा-वनाखिववोसपोत्थोम्

वदिह गूण-गुणप

हानपस्मःगुणपसगुणपयोमवदिहा

वदिह श्वेसवुक गुणप

हानपस्मःगुणपसगुणपयोमगुणपसु७४३६४८८०४३

हानपस्मःगुणपसगुणपयोमगुणपसु९०२८८३०४८०८

हानपस्मःगुणपसगुणपयोमगुणपसवदिहा

गणेश-शकुन उडेकस

हानपस्मःगणेश-शकुन१९३३ववोसपोत्थोम

नेवा शुक

हानपस्मःभावगान-कहावासववोसपोत्थोम्

वदिहा द्वादी वदिह नेडयोपोडकासुट सासु कवर्णा आदिक पहि-मैथयि कथाः

हानपस्मःवदिहा१९३१ादी१८५पेससयोम

हानपुःवद्विहासिगेरमध्यादीयोम्

वद्विह मैथिली वाद्य उत्सव

हानपुःआतिहासि-दनाभाववेगसपोत्थोम्

समद्विहा

हानपुःसामाद्वेववेगसपोत्थोम्

मैथिली शिल्पिस

हानपुःआतिहासि-उविमसवेगसपोत्थोम्

मैथिली हास्कू

हानपुःआतिहासि-हास्कुवेगसपोत्थोम्

मानक मैथिली

हानपुःआगाक-मातिहासिवेगसपोत्थोम्

वद्विहा कथा

हानपुःवद्विहाकानहावेगसपोत्थोम्

मैथिली कलागि

हानपुःआतिहासि-कावागिवावेगसपोत्थोम्

मैथिली कथा

हानपुःआतिहासि-काहावेगसपोत्थोम्

मैथिली समावेयवा

हानपुःआतिहासि-सामावेयवहावेगसपोत्थोम्

मातिहासि-उतिनात्ते वि एगवेसिह

हानपुःआद्वेववागि-नानवेगसपोत्थोम्

निहुरा-कैथी श्वांसट मैथिली व्नाहमासक पञ्जी आयागि इहासि

हानपुःसुपवेवुवुमथिह्वेवसिगतोमुहागद्वेर०२७४२९९०३४९पागद्वेय_१पद७?सेटुनये=१ (उत्तम-वद्विहाक मैथिली व्नाहमासमे पागि)

हानपुःसुभौनियेद्विनगाडर७२००००००३२००-मातिहासिपिद७ (यूनीकोड निहुरा श्वांसट वेग आवेदव ३० सगिम्बन २०००-वद्विहाक सहयोग)

हानपुःसुभौनियेद्विनगाडर७२००००००३२००-निहुरापद७ (यूनीकोड निहुरा श्वांसट वेग आवेदव ५ मई २०११-वद्विहाक सहयोग)

हानपुःसुभौनिहुरावपिधिनयोम् (देववागनी-निहुरा श्वांसट-वेसुटन्व आयागि)

हानपुःसुभौनिहुरावहयोयय (देववागनी यूनीकोड आयागि निहुरा श्वांसट-मथिली)

"वकिपोडयो"मैथिली

हानपुःनानगसठागौकिगिगौकिशिगेजेथनःथनगसठागेन

हानपुःनौकिमिद्वीनगौकिद्वेसतस ७०१ नौ एगगुवेसुअकिपिद्वी मातिहासि

हानपुःनानगसठागौकिगिगौकिपिपेयावथनगसठागे?नासक=नानगसठागेद्विहा-नोप=येने-मोसगुसेद्विहामिगि=२०००६९९नगुगे=मा

हानपुःनगुवतोनौकिमिद्वीनगौकिशिपुमा

मैथिली गणप हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

मैथिली वा७ गणप हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

मैथिली गणप हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

कसिु मैथिलि पोथि, अंतर्गत-वीडियो, कविकां ग्नी ट्पूव येन७ डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

मखपदथ गहअपहअ पअमघअम

मखपदथ (मानिहवि-पगधसिह-हगिह छेनवेनसागीगस)

मैथिली-हगिह वानागप (३ घमप्ट)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहि वेन)

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

पअहअथैअ अपअथपअह

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

छडड

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

अपयिस७ (नानगह हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७)

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

गुआप७ कनकगी- महगहन

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

पनवगव संग्रह- नानगथ हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

संग्रह केन दीप पनव- संकेतन कानग आ अनवगहन डाकुन

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

मैथिली गदथ संग्रह- संकेतन महगहन हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

अहअहअपअहअ (वपियदेव हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७)

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

वदिह मानिहवि ओकसुं हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

अमखअ

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

हानपसुःमार्गीकपिडोःगसुःडि७

मैथिली दनसग

हानपसुःमिहिलिखितसहानयोम (निगमे पदोऽ मातिहिलि) पुनगाथ

गीनशुक्ता

हानपसुःमयहिलिखितसहानयोमवहुकानि पुनगाथ

ओऽए मसुअशुड' स ए- शुउयथअपअशुडश्रैअ (हानपसुःमुसनाकावयोऽगो)

पोथीक विके

आइपीएनसोए- एअअइ हानपसुःगिनयगोवनिगदिसीगससासि- वोकसु

हानपसुःगिनयगोवनिअसि- एाणदददपपद (हिसिनोऽ) सावया- मयाया नि मतिहिलि)
हानपसुःगिनयगोवनिअसि- एाणदददपपद (अदिसि नि हानिसिम गद ददिसिम नि मतिहिलि)
हानपसुःगिनयगोवनिअसि- एाणदददपपद (मतिहिलि नि गे अगो) वदियापानि
हानपसुःगिनयगोवनिअसि- एाणददददपपद (छुणुनाथ हानिगो) मतिहिलि)
हानपसुःगिनयगोवनिअसि- एाणदददपपद (मतिहिलि गदे- गे पानगास)

एअअइअगुनेगी हानपसुःमसपासविहोपावगियेगिससेगसुपदुपुववियागानेगपवेसो- मतिहिलि- गवसिहपद

एअअइहनिदी हानपसुःमसपासविहोपावगियेगिससेगसुपदुपुववियागानेगपवे- मतिहिलि- हनिदपिद

मैथिली साहित्य संस्थान हानपसुःमिहिलिसाहित्यासावसाहानोऽगुनेसुनेयस

दुसनीय मथिथि (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

गनोयहुने १ (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

गनोयहुने २ (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

गनोयहुने ३ (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

गनोयहुने ४ (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

गनोयहुने ५ (मैथिली साहित्य संस्थान विके)

हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)

अनपिन आउसुडेशन (हानपसुःमिहिलिपावगुणगाणिगोऽगु)

शुदअथहअम गओओपप मअथहसुडद पथओदुओअवपद

हानपसुःमिहिलिखितसहानयोमवहुकानि? विसि- शुउअथउरगसयउमैओरदमदवअगुणदददद- दंउओवद (मैथिली आंउयो वुकस)

हानपसुःमिहिलिखितसहानयोमवहुकानि? विसि- शुउअथउरगसयउमैओरदमदवअगुणदददद- दंउओवद (मैथिली आंउयो वुकस)

हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)
हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)
हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)

हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)
हानपसुःवगोमविवानयोऽगुणगुणोऽमा (वृम अवनेगी मैथिली)

पोथी डंट कंम

हानपसुःमतोनेपोतहियेमवनोसुडे- वोकसु? गणगुणो=मतिहिलि

३- उओवप मथहसुडअ

हानपसुःमिहिलिखितसहानयोमवहुकानि- वोकसु- पद- उने- दौगवोद् (पोथी डाउनलोड विके)

हानपसूःमौषिभ्रमिहियोम् (भ्रमिहियोम्)

हानपसूःमिहियोम् (मिहियोम्)

मैथि श्रुति

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (ममता गायत्री, सौम्य- धनेगामा)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (कल्याण, सौम्य- श्रुति)

हानपसूःमौषिभ्रमिहियोम् (मिहियोम्)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिहियोम्)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिहियोम्)

प्याने मैथि

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (प्याने मैथि श्रुति, कल्याण योनी आ संगीता श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (प्याने मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (कोफि मंत्र)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मसमश्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मिथिया श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

हानपसूःयुतुवेव्रवृषणससौरुड्ड (मैथि श्रुति)

जागकी एखुएम समाया

हानपस्रौधुतुवेयोमुसेनहाकाडिमुवैस (जागकी एखुएम समाया)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमि हहा)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमखुओदहाए (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए & मुसयि)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

वदिहो - डानगिग

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

संघ ओक सेवा आयोग वहिन ओक सेवा आयोग पनीक्षा ओ मैथि (अनविद्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामग्री [एनटीए- यूपीसी- गेट- मैथि ओ सेवा]

वदिहो देह अवेड आरकगिग मातिहवि अुद्वी शोकस (गियुदगिग मातिहवि षगिग डानगुगो- रसन गिग वि मातिहवि)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

हानपस्रौधुतुवेयोमुअमिहहाओडडयिओ (अमिहहा ओदहाए)

- हानप्रीयुतुवेयोमुसेनाशयनः।
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामकनिसहवाप
हानप्रीयुतुवेउत्रिशिवपामऽउय
हानप्रीयुतुवेसहसपे- यकमो
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिहोहागण
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिहगथमम
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिह? व=- टंयाछटादिग
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामवविकरक
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामविदाससागयगए
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामममिह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामवेवेसहपाना
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामववसहा
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामकेसहपाना
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामाह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामासागण
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामाहा
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामक
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामोहा
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामकशप
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामवविकर
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामययुवासहेक
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामकसि
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामसहसागण
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिहवि
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिसह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामसहगण
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामसाहसागणसह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामपानसह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामपाने (धेग्न प्रेमन्थि)
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामववहापानवहा
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामययुवासहेक
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामिहविद्योगयेय
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामथयपअउकअगह
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामविहवापान
हानप्रीयुतुवेयोमुसेनामपानवहा

हानपौयुतुवेयोमुसेनमिसदानह

हानपौयुतुवेयोमुसेनपौगकसद१०२
हानपौयुतुवेयोमुसेनसाहायो
हानपौयुतुवेयोमुसेनसुगठिकुमानपौग

हानपौयुतुवेयोमुसेनवदिक

हानपौयुतुवेयोमुसेनवदिसजोपहट- द्युमेवनाय- कोसि- कानहा- सहोमनडिमस- डोममेवेद

हानपुववयकवुददहासयोम्

हानपुयुतुवेयोमुसेनपै१९६

अपन भनव्ये दतिनाडिअनाडवदिसाहाडिओम पन पडाउ

दशाना७७७ डतिनाडुने नि मातिहठिगद वदिसा मातिहठि डतिनाडुने भोवेभेन

शाना७७७ डतिनाडुने नि मातिहठिगद वदिसा मातिहठि डतिनाडुने भोवेभेन

इससे म्मो ट्ट (मोवेमवेन-वेयेमवेन २०१८) १७ मुसे इगदी
 1। हानपुःमुसेनिदियोम् दसिपथायस मातिहृषि धितानुने नि ।ने शतमेभय पौन
 धिहान मोवेन, ति नौनगय यथामिस तो वे । नेपनेसेनानादि नेवी १७
 मातिहृषि धितानुने, हैनोस तिौसोनय नि धिनौतिह तहे पाहिया अकादेमी,
 वेधः । मेने नेपनेसेनानानि १७ तहे सो-याधेद "दनेदि मानि दानि" इत
 सि सपेयतेद तहान मुसे इगदी १७ योनयेत तिसेध वय ।नगुनयनिग ।न
 सिसे शयधुसविधय देवोतेद तो तहे पानाधेध तनादतिनि १७ मातिहृषि धितानुने

थय श्रीमभेन नैतिस नि तहे "इनिगुसितयि धविनसतिय" छहापतेन १७
 "धोयीधेगय", १८८८, पागे २८९, म्मानािगध डौ धयहौध १७ इगदी
 उगविनसतिय मान छुनयधो १७ इगदी थुनसत वोकः " तहे मातिहृषि नेगीनि सि
 डुनद तो वै योनोमयाधेय ।नद युधुनाधेय देमनितेद वय नानामनिस ।नद डि
 । सेपानाते मातिहृषि धिताते सि डौनभेद, तहेय मायो ।सधिय गेते नतनेनयहेद ।स
 तहे पोधतियाधे धि ।धसो थहसि माय नोन वे तो तहे धकिनिग ।नद ।दवानागे १७
 सेवेनाध ।तहेन यासतेस, तहे तनादतिनिगधेय नतनेनयहेद ।न युनयेनधय
 ।सयेनदान यासतेस थहेनेधेने, नि ।धे पोससविधितिय तहे धानतेन गनुपस
 मायोपपोसे तहे डौनमानािग १७ । सेपानाते मातिहृषि धिताते ।धहृगह तहेय ।धसो
 वेधेनग तो तहे मातिहृषि सपेयह योनमुनतिय थहसि तयपे १७ ।पपोसतिनि
 ।दवेनसेध ।धडेयतस तहे देवेधोपभेन १७ सेवेनाध धनगुगेस"

थय श्रीभेन डुनतहेन नैतिसः "ेवेन हैन । धनगुगे सि पनोनुनयेद तो वे
 दसितनियत डौनम हनिद, ति माय वे तयोतेद ।स । दधियत १७ हनिद
 डौन शानपधे, वोनह धनेनिसोन हैनु नदेनतोक तहे यधससयि धनिगुसितयि
 सुनवेय १७ इगदी ।नद ष य छहानतेनधे, तहे नानािगध पनोडेससोन १७
 धनिगुसितयिस, सतानेद तहान मातिहृषिसि । दसितनियत धनगुगे नुन येन ति
 सि तयोतेद ।स । दधियत १७ हनिद" (श्वदि, पागे २८३)

यो गोन पुढगो यह दाय वय नहे हानवेसन यो गोप वन वय नहे सेदस नहान यो
पठान - दोवेन डोसि धोवेनसोन

वदिस: मातिहवि डितानुने मोवेमेन

शुनाएवे डितानुने

थहे नेडेनेयेस तो पानाएवे डितानुने ले डुनद नि वेदास, रैहने म्मानसहनसर्ह
सि नेडेनेद तो अस पानाएवे डितानुने

शुनाएवे डितानुने नि मातिहवि

थहे नेद डेन पानाएवे डितानुने नि मातिहवि मोसे हे तो नहे योगसतान
गेनसठुगहन गेन डितानुने नद दगिनतिय वय नहे शुवथिय नद शुनविते
अयादेमोसि, डेने शामपठे, मातिहवि- गहोणपुन अकादेमी ड वेठह, मातिहवि
अकादेमी ड शानगा, पाहिया अकादेमी ड वेठह, म्मेपाठ' स शुनाणगा
शुनातसिहनहन, एवे ड रैहयिह ले गोवेनमेन अयादेमोसि इन एदतिनि तो
नहेसे अयादेमोसि, नहे गेनसठुगहन गेन मातिहवि डितानुने नद दगिनतिय मोस
योगसतानतय दोगे वय नहे सो- याएवे डितानुने असोयतिनि स रैहयिह ले
नेयोगसिद वय नहे पाहिया अकादेमी नद ले नहे माति गोठ डेनु सुनपनिग एवे
नहे डितानुने सपाये मेनन डेन नहसि एनगुगे मेसदिस नहेसे, नहे डुनदनिग
तो नहेसे नद लेन पानोयहाठ असोयतिनि स नद लेन गानसिनि स एद तो नहे
पनेसेनतानिगो ड न गितेन डये नि नहे नामे ड मातिहवि, रैहयिह मोस मेदिये
नद गेन- नेपनेसेनतानि

थहे मोको ड गहिन डितानुने (अवहाय य एदतिनि)

थहसि वौक योगतानिस उवि तानसभानानिस उओम नोन-नेपनेसेनतातवि
 मातिहवि सहेनत सतोनेसि नितो एगठसिह वय व्रदियागनद हहा सागानपुन
 (मातिहवि सौताना) नद उसहा प्यनिग प्यहन ले उओम तहे हनिदियुता नहेगह
 वोनह गोन तहे पाहतिप्रा अकटेमि पनडि उओम तहे मातिहवि युता व्रविहा ढगर्ग
 नद ढाणकामाठ छहुदहानय ले उओम तहे मातिहवि युता नहेगह वोनहौनेते नि
 हनिदियुसो

थहसि वौक सिं दतिद वय श्रवहाय प्यौहे हास नेद पामसकनतिगठयु प तो हगिह
 सयहौठै न हे पनेनेनदस तो तानसभाने श्रनहासहासता दनियतय उओम
 पामसकनति नितो एगठसिह ३ म प्योवदि नि पामसकनति नद उओम तहे
 टुठतिय १० तहे तानसभानानि, ३ याग पनेसुमे तहान हे हासु सेद सोमे
 नितेनभेदियु ठगुगो नि तानसभानानिग पामसकनति तेसतस नितो
 एगठसिह ३१ सि । मातनेनोडे तहयिस तो ।यकनौठेदगे तहे सुनये

व्रदियागनद हहा' स तानसभानानि सि वेथौ पान, उने शामपठे, हे हास गो
 निकठनिगौहानौठे वे तहे एगठसिहौनद उेन 'गेठक सागना', नद तहेने ले
 पठेनतयोड सुयह निसतानयेस ३ हवे सोमे सुगगेसतानिस उेन हमि: ढनिसा,
 नेद अ नदिद' स एये व्रीनिग मतिहवि वय ढाणनातह मसिहना, ति मेनतानिस
 १०० तहे तेनमस उेनौहयिह यु युठे नोन उनिद एगठसिहे टुविठेनतस थहेन
 गो तो तहे व्रदिहा मयहवि (व्रीव्रदिहयोनि) नद वौक उेन उमेसह मानदाठ' स
 श्रयितुने ययितानानय योगतानिगिग वेगेतानानि, नमिाठस नद सकठिठ सेतस
 १० मतिहवि, हेने युठेठिठ उनिद तहे ।यताठ पहेतोगनापहस तौ ढुनतहेन, नदेन
 अ श्रानाठेठे हसितोनयोड मातिहवि डितानातुने (व्रदिहौव्रदिहयोनि), युठेठिठ
 उनिद सामपठे एगठसिह तानसभानानिसोड सोमे मातिहवि सहेनत सतोनेसि
 थहेनेउेने, गैहान व्रदियागनद हहा सि पनेसेनतानिग ।से शोतयि सि तहेनगिगिाठ
 तहनिगोड तहे मातिहवि डिनगुगे (वुन नोन तहानोड मातिहवि ठितानातुने, ।स
 गौस तौ देयादेस ।गो) इनेनेसतानिगठय हसि यहेयि १० सहेनत सतोनेसि
 नेमनिदस मेोड छेनतेमपोनानय मातिहवि सहेनत पतोनेसि (मातिहवि सहेनत

सतोनेसि तानसभतेद नितो एगभसिहो दतिद वय मुनामिादहुसुदान थहाकुन
।नद पुवभसिहेद वय तहे पाहतिपा अकादेमिा नि २००५ शत सेमस तहात तहे सतोनेसि
नि तहसि सेथेयानिा नि सेडतोवेन मातेनाथि उभोम तहात योथेयानिा ढपि वान
श्रौनिकथे गौके ।उतेन गौ देयादेस वुन वदियागानद हहा सि सताथिथ नि सभुमवेन
गोत गेथिथिग तहे यहागोस तहात हावे हापपेगेद हुननिग तहे पेनादि

३७ यु योमपाते तहे तानसभानिा नोड तहसि सेथेयानिा वसि-।-वसि तहे
एगभसिह तानसभानिा नोड डानि अमेनयिाग पपानसिह भतिनातुने, युगौथेद
वे।वथे गौ गदेनसतानद तहे दडिडेनेनये

गुन तहेसे तयपेस नोड सेथेयानिास नि गोत कगौन डेन तहेनि
भतिनातयु श्येथेनेनये, हापेन छेथेनिस पुवभसिहेस तहेसे तयपेस नोड
सेथेयानिास डेन उवि-सताम हतेथस ।नद अतिपोनत छेनगोस थहे पुवभसिहेनस
।नगुनयेद तहसि वौकोन मानयह २२, २०२२ थो, नि द-७ भोगतहस, युगौथिथ
गेतोथेद मातेनाथिसोनेनय

थहे नमदि: थहे मातिहथि छेवाससयि प्पानयादान वय हाभिमिहाग हहा (१८०८-
१८८४) तानसभतेद नितो एगभसिह वय डभति पुमान (असससितागत
शुनोडेससोन, थेपानतभेननोड एगभसिह, थेन थायाथ उपादह्याया छेथेथे,
उगविनसतिथोड थेथेथि) - हापेन श्चेनेनगाथि (हापेन छेथेनिस शुवभसिहेनस)

३ हाद पने-नदेनेद तहे वौक, गैहयिहौस सयहेदुथेद तो वे देथेनेनये तो मय कनिदथे
।ययुगेन नो तहे १सत नोड थेथेमवेन २०२२, वुन तहे देथेनेनय दाते गौस
पोसतपोनेद, ।नद तिगौस देथेनेनये तो मय ।ययुगेननो तहे १४^{नो}ड थेथेमवेन
२०२२

श्रौहेन मातिहथि गौस नेयोगनसिद वय तहे पाहतिपा अकादेमिा (सातानिाथ
अयादेमयोड डेतनेनस-नोड श्गदा) गौय वायक नि १८६५, डाने ढामागानह हहा

सनातेद तहात हसि मातिहथि ठगुगो सि सावेद नौ (मातिहथिके वानतमान
षामासया, ढामागातह हहा)

षह हासिह थनविदि हास योममतितेद तहे सामे मसिगाके षन हसि डेगौनद
हासिह थनविदिगिस- "षन हनिदि, तहे ठगुगो तोहथिह मातिहथिसि तहे
यथेसेसात (।नद ोडौहथिह तिौस निदेद ।न नितेगताठ पातनु गतथि तिौस
गतागतेद तेयोगनतिगि ।स । सेपानाते ठगुगो वय तहे योगसततिगि नि
१८८३) "

हासिह थनविदि तेडेस तो तहे नियुसुगिोड मातिहथिनि तहे गिहाह सयहेदुठे
ोड तहे योगसततिगिोड षनदिहेते तहे येन मेनगागिद सहुठद वे २००३ गिसतोद
ोड १८८३ मोगेवेन, मातिहथिगिस । सेपानाते ठगुगो नि २००३, १८८३, ।नद
१८६५ ।नद दुनगिग तहे तमिोड पे- ह्योतमिसिहौना व्रदियापात थहे सतातुस
गतागतेद तो मातिहथिवय षाहतिया अकटेमिगिद तहे छेगसततिगिोड षनदि,
गेन तहे गेहेन हागद, सतनेगताहेगेद तहे हागदस ोड तहे
वेसयुनागतसिते ठेमेगतस ठकि ढामागातह हहा, षहादगागद हहा (हे सि गोन
। डामुस पेसोन वुतौह्य ३ हावे ताकेन हसि गामे, शौथिठे शपठानि ति ठातेन)
।नद गेहेनस तैहे गासठगिहतेद हासिमिहाग हहा हासिमिहाग हहा' स षहातगान
प्पाकाक थानागग, शुनागामया वेव्राना, ढगगसहाठ ।नद छहायहागिठठ तहेसे
वौकसौमे ठगिविठे डेन तहे षाहतिया अकटेमि औनद गितिगिेद नि १८६६ डेन
मातिहथि (वेयुसोड तेयोगनतिगि गविन तो मातिहथिवय षाहतिया अकटेमिनि
१८६५ गुन । पहथिसोपह्य तयोतसिगौस गौनदेद तहे पनठि नि १८६६, तहसि
पहथिसोपह्य वौक तिसेठड सि । हेनडियोने, ।नद डिने हास गेद तहे वौक
तौ गदेनसतागद तहे गुनयेसोड षनदिनि शुहथिसोपह्य, तहेन हे गौथिठ हावे
तौ गठेनन डनिसत तो वे।वठे तो गतासप तहे पहथिसोपहयाठ योगयेपतस डनोम
। नौ वौक गेन षनदिनि शुहथिसोपह्य षन १८६७ नो गौनद गौस गविन डेन तहे
मातिहथि ठगुगो

दामानाह हहा' सोवस्युनागतसिम व्रसि-।-व्रसि श्वानासि व्रद्विगत उभोम
 नेशामपठे (वेयुसे ड़ाठति पुमान्। असो सेमस तो हवे ड़ेठठौद नि हसि
 ड़ीतसतेप, तहेगह हे गव्रिस यजेदति ड़ेन हसि गिनोनागये तो सोमे तहेन
 नैतिस) हौस यासतेसित, योगसेनवातव्रि। नद योगड़ुसेद थहे गितेन- यासते
 मानागि नि श्वानासि। सौ७७ कनौन तो हसि (वुन हे यहेसे तो केप तहे यौसहन
 श्वानासियेन- रैहिये हस वेन तेठेसेद वयु सोन गौगठे वौकस नि २००८),
 नद तौस। पपायेनत तहत तहे गयेन नावया- नयाया पहिठिसोपहेन घागोसह
 उपादहयाया मानेदि। "छहानमकानि"। नद तौस वोन ड़ि येनस। ड़ेन तहे
 दानह ड़े हसि ड़ातहेन (से। न श्वानासि गौकस व्रे७ ३ & ३३। व्राठिवठे
 न। हानपुःव्रद्विहयोनपोतहहिनम)। पह यनिसह छहनदना गहनतायहनया
 नैतिस नि तहे "हसितोनयोड़ सावया- सयाया नि मतिहठि" -

"थहे ड़मठिय रैहिये हौस निडेनानि नि सोयाठि सतातुस सि नौ शानियत नि
 मतिहठि- घागोसह' स ड़मठिय सि योमपठेठय गिनोयेद नद तौ। ते
 नोते शपेयतेद तो कनौ व्रेन हसि ड़ातहेन' स नामे", रैहिये सि। तोताठ ड़ेठसेहौद
 हौनतिस ड़ुनतहेन तहत। ७७ तहसि नि ड़ेनमानानि। तौस गव्रिन तो हसि वयु श्वनोड़
 ड़ हहा पो हौठौ७८ तहसि यासतेसित- योगसेनवातव्रि- योगड़ुसेद। ७७ तहे तौनद
 तो वे गव्रिन तो पह हानमिहन हहा? पो, तहे पाहिया अकडेमि सावेद तहे
 मतिहठि ड़ानगागे वयु तेयोगनठिनग ति,। स। ससेनतेद वयु श्वनोड़ ड़ हहा, सि
 नैनग। नद सो सि तहे। ससेनतानि मादे वयु पह हानसिह थनविदि।

मन ड़ाठति पुमान् सि। युनग पेनसोन, वुन हे सि वेनिग मसिसेद वयु सोमे
 वेस्युनागतसिते ठेमेनतस, रैहे गासठिगितेद हानमिहन हहा हानमिहन हहा
 सतोपपेदैनतिनिग नि मतिहठि ड़ेठठौनिग तहे तेयोगनतिनिगोड़ ति वयु पाहिया
 अकडेमि। नद तौस तौनदेद तहे पाहिया अकडेमि पनठि ड़ेन हसि। तोवागिनापहय
 नि १८८५,। ड़ेन हसि दानह, रैहिये मेनस नोतहनिग।

मम उाति पुमानौनिस- 'गौगागद हहा' स गहाभागुसहा (१८४४) गद
 पहानदागद हहा' स हायावाना (१८४६) गतायक सुयह सोयाति दविशिसिगस
 गहात पठायेद । देयसिदि गोठे नि मानगिस' 'गौगागद हहा' स गहाभागुसहा
 (१८४४) गौस गिदेद । पातहवोकनिग गोवेठ, वुत पहानदागद हहा' स गोवेठ
 गौस गेयगानिय सुगोड ढादहा प्यसिहना छहेदहाय गिहणय वेसेवेस-
 'गौगागद हहा' स ' गहाभागुसा' दोउस गौतिह गहे सोयाति पनोवठेमस
 योगेयतेद गौतिह गहे पनोवठेम गेड मानगि अस । गेपय तो गहसि गोवेठ,
 पहानदागद हहा गौते । सेयोगद- गते गोवेठ ' हायावाना, ' हावनिग ठतिठे
 ठतिगय मेगति (ढअयहअपढअपहसअ छहओउयहअढे अ पुनवेय गेड मातिहठि
 उतिगाने)

मम उाति पुमान उेन हसि श्वगजि-गेठतेद गिनोानये गविस यनेदति तो मम
 श्वामेसहौम हहा' स ' ' मतिहठि थातगवा- वमिगसहा" सुगोड ढादहा प्यसिहना
 छहेदहाय गिहणय वेसेवेस- "मम श्वामेसहौम हहा' स ' मतिहठि
 थातगवा- वमिगसहा' सि गहे हसितोयगोड मतिहठि नि मातिहठि पनोसे गद सि
 वासेद मागिठय गेन गानातिगि मम मुकुगद हहा गोकसहा' स
 ' मतिहठिवहासहामाया शहिस' गविस ग ययोगत गेड गहे प्यहणदौठा
 दयनासगय ढगोम गहे पोगित गेड वी गेड मोदेन मातिहठि पनोसे, गहेसे गौ
 गौकस मे मिपोगानत, गहेगह उगोम गहे हसितोयगिठ पोगित गेड वी,
 मे गेठविठे (ढअयहअपढअपहसअ छहओउयहअढे अ पुनवेय गेड मातिहठि
 उतिगाने)

थहे उेठठौनिगे शयेनपगत उगोम श्रुग श्वगजि श्वागद ((पागत ३४३) सि
 वेनिग गेपनोदुयेद वेठौ उेन गेदय- गेडेनेयः -

महानाण हसहिदेव मथिठिक क्मासट वंसक ग्योगानिसवग गकुगक वगस
 गगकमे हसहिदेव गायक आक गिग छठाह १२८४ ई मे गगम आ १३०७ ई
 मे गगसहिसग घयिसुददीन गुगठकसँ १३२४-

२५.३ मे हानकि वाद नेपाथ पठाउन मथिथिक पञ्जी-

पुनवन्धक व्नाह्मास, कायस्थ आ कृषान्ति मय्य आयकिकि स्थापक, मैथी
थ व्नाह्मासक हेतु गुणाकन ह, क्नास कायस्थक छेथ संकनदन, आ कृषान्ति
यक हेतु व्रजियदन एहि हेतु पुनथमया गयिकन मेथिह हसहिदेवक पुनेमा
सँ आ ई हसहिदेव नागपदेवक वंशज छथि, जे नागपदेव कान्हाट वंशक १०
०८ शाकेमे स्थापना केने रहथि गन्दैद सुगयं सशशिक व्रषे (१०१८ शाके)
मथिथिक पम्पति ठोकन शाके १२४८ नदगुसा १३२६ ई मे पञ्जी-

पुनवन्धक व्रजमाग सवूपक पुनममक गन्तिय कएथहनि पुनः व्रजमाग स
व्रूपमे थोडे वुदय विषिसी ठोकन मथिथिस महाना मायव सहिसँ १७६० ई मे
आदेश कनवाए पञ्जीकानसँ शाय्या पुसकक पुनमयन कनवओथहनि ओकन वा
द पाँजामि (कयनो काथ व्रमागि १६०० शाके माने १६७८ ई वासनावमे मायव सहि
क वादमे १८०० ईक आसपास) शान्ति गामक एकटा गव व्नाह्मास उपजागि
क मथिथिमे उपजागि मेथ

षो, तहे पनोतियिस अस। सुव-यासते मोसे। नुनद १८०० छए। स पेनु। तहेगतिय
पागजा विषिस

पह अगसुहमान श्वगदेय। घाणेनदना थहाकन १०५ मी वेथहि पनोवदिद मे गिह
दगितिउद योपेसि १०५ तहे गेनोवोयाथिथ नेयोदस १०५ तहे मातिहथि मनाहमनिस
थहे पागजाकाना- स गेसे डामथिसि हवे मागिगिद तहेसे नेयोदस जे
गेनोतानिस। नेोडने नेयुतानन तो। एथो। तहेस तो पुनसे तहेने नेयोदस श
सि। मातने १०५ ' गितेथेयुताथ पनोपेनय' तो तहेम शोस जेनतानो गोगह तो
नेयेवि। योमपथेते दगितिउद सेतोड पागजा नेयोदस डोम घाणेनदना थहाकन
१०५ मी वेथहि नि २००७ [देयासगिग तहे मनाहमनि नि मेदेविथ मतिहथिः
ओगिगिस १०५ छसते इदेनतिय। मोनग तहे मातिहथि मनाहमनिस १०५ मोनतह
गहिन वय अगसुहमान श्वगदेय, अ दसिसेनतानि सुवमतिनेद नि पागजा
डुवविमेन १०५ तहे नेटुनिमेनस जेन तहे देगने १०५ योयतो १०५ सुहथिसोपहय

(हसितोत्तर) नि तहे उन्निवसतिप्रोड मयिहगिान २०१४। डोतेन तहेसे श्वान्ता
 मानुसयनपितसौने पठोदेद तो गौगठे वौकस नि २००८)

थहे सो-याउठेद माहानाणास ोड यानवहनगा ैने पेनमानेनत सेततठेमेनत
 डामनिदानसोड छोनगौउठसि, नद तहेनेने सो मानय नि ननतिसिह श्गदा,
 वुन नि सेपाठ तहेनेने नोने श्ग तहे ननेशुनेोडुन वौक (श्वान्ताश्चिवावगदह व्रोठ
 ३४४३), ै हवे नानायहेद योपेसि ोड गेनोठेगय- वासेदु पगनादानाणि नोदेनस
 (पनोडोडु पगनादानाणि डोन यासह) षो, वेडेने १८०० छप, तहेनेने सो नो
 सनोतनयिा सुव- यासते नि ननतिसिह श्गदा। नद तहेने सि नो सुयह सुव- यासते
 ैतिहनि मातिहठि ननाहमनिस नि सेपाठ पानतोड मतिहठि व्रेन तोदायु षनोतनयिा
 वेडेने तहत नेडेनेद तो डेठठौनिगा सोमे दुयाताणि सनोतन नि ननतिसिह
 श्गदा, नि सेपाठ ति सतठिठ हस तहत मोननिगा।

मन डोठति पुमान डुनतहेन तनेसि तो पुन हसि गेनदा वयौनतिनिगा- " हानमिहान
 यहोसे । मदिदठे गनुगद नि हसि नेडेनमसिग गेनदा" हे गविसि उगुहावठे
 नेसोवस डोन हसि योगतेनताणि व्रडि "हे सपुसेस तहे सगिनडियानयोड ठेयाठ
 ननादताणिस, ठानगुगेस, सयनपितस, ेदुयाताणि सयसतेम, नद मोनाठ
 व्रठेस" तहेनेवय मोननिगा तहत तहेसे ने योगसेनवातवि व्रठेस।

(अउठ तहे नेडेनेद वौकस ने। व्रठिठेठे डोन डेने पदड दौनठोद डोनम तहे
 ठनिक हानपुःव्रदिहयोनियोतहहिम)

**व्रथएहश्च मअश्थह्स्डस् डश्थएठश्थउठए मश्रोवएमएसथ श्मथ अ
 श्चअठश्चउउएड ह्स्पथश्रौठे श्रौठ मअश्थह्स्डस् डश्थएठश्थउठए**

थहेनेडेने, तहे मसिसनिगा पोनाणिस, तहे गिनोनेद नद नोन-नेपनेसेनतेद
 ।सपेयतसोड सोर्येतिप्र, सतानतेद तो वे यहनोनयिठेद श्ग ठेद तो तहे देपयिताणि
 मानकेद वय तहे नयिहनेसस ोड व्रोयावुठानय नद श्चपेनेनियेस नद ौस ।
 नेव्रोठताणि नि ठतिनातुने नद नान ।स डन ।स पोपठे सपोकनिगा मातिहठि ने

योग्येनवेदं थहे दुःप्रतिप्र गौ हस गोन नेमानिद मेदायिने थहे गो० पौ० १०७ तहे
 मातिहृषि० अगुगो० गौस गो० असेद वप्र तहे गातवि सपोकेस, मेदायि० प्रतिप्र गौस
 नेप० अयेद वप्र शये० अयेने थहसि । गतेमपत । तहे गौ० तिनिगो० हसिगोनप्र १०७
 श्वाना० अये० उ० ति० ना० तुने उ० तहे मातिहृषि० अगुगो० । गोसे । स तहे मेदायिने । गेनयप्र
 (प० वि० गे । गद गो० वे० नमेगता०) उ० गदेद सो- या० अये० मा० नि० स० नो० म० अ० ति० ना० तुने,
 गैहियिह हस गो गोदे० स० ह० पि, । गद गो । ययेपता० गये । मो० ग० तहे सपोकेस १०७
 मातिहृषि० योग० नि० द० तो वे पनेसेगते० वप्र तहेसे अ० क० दे० मे० सि । स नेपनेसेगता० ति
 अ० ति० ना० तुने थहे मेदायिने नि० ते० न० उ० यो० १०७ मातिहृषि० अ० ति० ना० तुने गौस पनेसेगते० वप्र तहे
 गो० वे० नमेगता० । गदो । गद ते० अ० व० सि० नि० स० ता० गौ० नि० स० । अ० सो० उ० ति० ना० तुने प्र० गो० न० ग० अ० स० अ० कि
 मु० से० नि० दा० (गौ० मु० से० नि० दा० यो० म०) & शु० व० अ० सि० हे० स० अ० कि० ह० न० पे० न० अ० यो० अ० अ० नि० स० गौ०
 । अ० सो० से० उ० तहे० नि० स० नि० सि० ते० न० दे० स० गि० न०

श्रुतेऽ- य० ति० यि० सि० म० नि० मा० ति० हृषि० । गद तहे या० से० १०७ प्पामा० अ० ग० गद० ह० ह०

थहे त० ति० अ० १०७ प्पामा० अ० ग० गद० ह० ह०' स० वौ० क० "मा० ति० हृषि० । सि० वे० अ० थ० मि, पो० यो० ति० प्र० । गद
 दु० स० ता० नि० स०" (२०२१) सि० म० सि० अ० वे० द० नि० ग० श० सि० । यो० अ० अ० य० ता० नि० १०७ सो० मे
 स० प्र० गद० यि० ते० द० सो- या० अ० अ० य० ति० यि० अ० । त० यि० अ० स० गे० न० सो० मे० १०७ ह० सि० या० स० ते
 गो० वे० अ० सि० त० स० थहे २६३-पा० गो० वौ० क० या० ग० गे० अ० प्र० वे० सो० अ० द० नि० ह० न० द० वु० गद० तो
 अ० वि० ना० ने० सि० गै० हे० ति० गौ० अ० अ० नो० त० हे० ये० सि० । यो० न० य० ता० नि०, । गो० न०- या० स० ते० गौ० ति० न०' स०
 गौ० न० क०, ।, पु० व० ह० स० ह० अ० ह० गद० नौ० । दा० व०' स० गो० वे० अ० 'धु० अ०', ह० स० वे० न० द० अ० गौ० ति० ह० व० प्र
 ह० मि० नि० गौ० अ० नि० स०, १०७ यो० न० से० गौ० ति० ह्ये० न० गो० द० नि० ग० ति० ३ । म० पनेसेगता० नि० ग० तहेसे० गौ०
 अ० नि० स० हे० ये० उ० त० यो० न० गे० न० ता० नि० मे० गता० मु० स० त० ह० वे० गो० द० धु० अ०, उ० ति० यो० ह० वे० न०' त०
 । अ० यो० द० प्र०, गो० द० ति० उ० नि० स० त० वे० यो० से० तहे० न० यो० गौ० अ० अ० ह० वे० ।
 मो० ने० गे० न० ता० नि० नि० गो० श० पे० ने० नि० ये० धु० अ० सि० । प्रा० वि० व० अ० गे० व० दि० ह० अ० न० य० ह० वि० गौ० ति० ह० तहे
 पे० न० म० सि० सी० गि० १०७ पु० व० ह० स० ह० अ० ह० गद० नौ० । दा० व० । त० तहे० सि०
 अ० नि० क० ह० त० त० प्र० व० दि० ह० यो० नि० पो० त० ह० ह० त० म०

"थहे गौकनेसस गेड तहे गोवेध सि तहे गुणहेन' स पोषतियिध वसि थहे पानतसिगसहपि गौमदस । पानतयिधन पोषतियिस दौस गोन दो पुसतयि तो तहेगौमक"

३१ । गोवेधोहेने पोषतियिस सि गोन नेमोतेधय निवोवेधेद, तहेने सि गो टुसगानि गेड ' पोषतियिध वसि । गद पानतसिगसहपि गेड । पानतयिधन पोषतियिस' धुमकेतु । गदै । तनुसेद पोषतियिध वसि । पानतसिगसहपि पुवहासह छहागदना । 'दाव' स ' व्रोते' गैहयिह यामेगुन नि २०२२ । गद सि । व्राधिवधे गौतिह पेनमसिसीनि गेड पुवहासह छहागदना । 'दाव' गेन व्रदिहा अयहवि । त तहसि धनिक हानपःव्रदिहयोनपोतहहिम, सि गेन पोषतियिस वुन वेने तहेने पुवहासहपि' से गयहागनिग सतयधेवव्रातिस तहे गेदोड । गय पोषतियिध वसि देद मय वौक ' साति साव्राध पुवहासह छहागदना । 'दाव' गैहयिह सि । व्राधिवधे । त तहसि धनिक हानपःव्रदिहयोनपोतहहिम ओन तहे गेतेन हागद, मय पामागनागद हहा सुगदस धके । सपोकेसपेनसोनेड सोमे पोषतियिध पानतय गेन । यासतेसितो गानसिगानि गानहेन तहन । धितानय यनतियि पामागनागदा हहा' स गनाहमनिसितयि वसि । गानिसत पुवहासह छहागदना । 'दाव' सि । ग । धानम वेधेधे थहे पानाधेधे सतयेम सि योगसयुसि । ड हौ पामागनागदा हहा गानेस तहे धेडतसित सतानये तो पनोमोते गनाहमनिसिम । गद गौगतस तो सायनडियि सोयाधे पुसतयि ३१ हसि वीदिता, हे पनुदधय मेगानिस तहे मातिहधि तानसधानि । असगिगमेगत वेसगौदोन हनि वय तहे पाहतिपा अकादेमि, । गद तहसि । असगिगमेगत गौस । धेतेतेद तो हनि गोन गेन । ययुगत गेड मेति वुन सोधेधेधे तहे गनुगदोड हसि यासते ततिधे । गद नि धुी । तहेसे देदस डोन पौपधे धके हनि, मातिहधि-नेधतेदौमक सि मेनेधय । धनि नि तहेनि युनतियिधम व्रति, वुन ति सि । टुसगानिगेड धडि । गद दोतह डेन तहे पौपधेधे तहे पानाधेधेधे सतयेम । औहय ददि ३ याधेधे पामागनागदा हहा । पसेदो- यनतियि? गेयुसे हे सि । पसेदो- यनतियि हेनतिस: " अडतेन गोनधय । हुनदेद योनसोड पुोनगेय, धुनगितह सि यनेदतिह गौतिहोनतिगिग । दगिगडिदि गोवेधेधे तहे दयेमस, सतनुगधेस

।नद निनेसिोड निनेन-यासते मानागिणे षो, ददि प्यामाथानागदा हहा ताके गौय
 नहसि यनेदति उनोम पुसहठि? इस नहसि नहे युमनिगानिोड नहे ।नोगानये
 ोड हसि मनाहमनिगिगिपु पवनगिगिगिगि (" थहनुोगह मयुरैहमिस ।नद उगयोसि इ
 यान पथाये सोमे अतिनातुने नोप ।नद यान दौनगानादे सोमे नो नहे वोनतोम")
 ोम सि नहसि नहे वृदिनयेोड हसि आयकोड सतुदय? उेन मे ताके यु गौय उनोम
 नहे सेउडसिहौनउदोड प्यामाथानागदा हहा, गौय उनोम देयेपनीगि ।नद दसिगुसि
 नो नहे सनियेनेगौनउदोड पुसहठि' स मागियाथ अतिनातुने श्रौथयोमे नो नहेगौनउद
 ोड पुसहठि' स अतिनातुने हेने सि पुसहठि' स ' घामवाथि' (१८८२) गैहयिह सि
 गौ ।वाथिवठे नि नहे वृदिह अयथहठि ।न नहे अतिक हतपःवृदिहयोनियोनहहिम
 इन नहे उमिसन अगिोड नहसि नोवेठ, वेन वेउने नहे नोवेठ वेगानिस, पुसहठि
 गैनतिस ।वुन नहे नोवेठ ' घामवाथि' : "इन सुपपोनतोडौदौ मानागिणे ।नद निनेन-
 यासते मानागिणे" ।नद हेने वेगानिस नहे नोवेठ थहे दानहोड । वृथिअगेगौमान ।नद
 नहेन नहे ननुवठे नसुस, गैहो गैथिथ यनेमाते नहसि वृथिअगेगौमान? मनाहमनि
 योममुनतिपुने ।दाव योममुनतिपुोड नहे वृथिअगे? यनिसह पुमान मसिहना' स
 ' युश्चिआन पे मयिह मे' सि । हसितोनयिथ वीगिनापहयुोड नहे प्योसि ढव्रिन हे
 हास ।असो गैनतितेन हसितोनयिथ वीगिनापहसिोड नहेन नव्रिनसोड मतिहठि
 अकि ' मानदनि माहानागदा, ' ' मागमानि प्पि पादगाता!', ' युश्चिआन पे
 मयिह मे (पनोनयुोड नहे प्योसि ढव्रिन)', ' सा घहान सा घहान, प्यामथ ढव्रिन,
 ' महुनार्ह ढव्रिन ।नद थेयहनयिथ हेनवाथिसिम', थहे प्यामथ ढव्रिन ।नद श्लोपठे
 ने छेउअसिनि छुनसे, महुनार्ह माथान- पनोनयुोड । घहोसन ढव्रिन ।नद
 एगानिनगिगि श्रौतियहयनाउन, ढेडुगेसोड नहे प्योसि एमवानकमेगनस
 श्चानकाण हहा श्चानासहान, । मेमवेनोड नहे मातिहठि अदवसिनय छोममतिनेोड
 नहे पाहतिप्रा अकादेमि, वेठह हास पथागानिसिद पानागनापह ।उनेन पानागनापह
 उनोम हसि वोकस ।नद हास पुवठसिहेद । नोवेठ नि मातिहठि नि हसि नामे, गैहयिह
 पसेदो- यनतियि प्यामाथानागदा हहा मेनगानिस ।स नेसोनयहोड नहसि नहेडि
 नुनहोन श्चानकाण हहा श्चानासहान! उेन मे यथानडिय हेने नहान वोनह नहे नहेडि

गैतिलि । गद तहे पसेदो- यनतियि मे नि तहे हनिदि देपानतमेगनोड अथगिगह
मुसठमि उगविनसतिय थहसि नेसोनयह सि दोगे वय धनिसह पुमान मसिहना,
गैहे सि । गनादुतोड इस्थ, प्पहानागपुन नि छविठि एगगिनगिग (नि १८६८)
। गद म थेयह नि पानुयतुनाथ एगगिनगिग (नि १८७०) । गद सि टुअडिदि डेन
तहान नेसोनयह इग हनिदि, तहे युन-०७७ डेन । दमसिसीग सि तहे ठौसन
। यनोससु गविनसतिसि, गेहेनौसि, प्पामाठानगद हहागुठेद हवे कनौग तहान
तहसि नेसोनयह युठेद वे दोगे वय । यविठि गगिनगिग थहे हनिदिगिगिगिग
। गद मातिहठि सयनेगसहेतस मे । गनायहेद वेठौ धनिसह पुमान मसिहना सि गेन
डनोम मतिहठि, पुन हे हासपुनहेनेद तहे सतोनयु ०७ । ०७ तहे सतोनयु ०७
मतिहठि श्रौ मे गनातेडुठ तो हमि, । गद तहे पौपठे ०७ मतिहठि गैठिठ नेमानि
निदेवतेद तो हमि डेन तहसि थहसि तहेडिगैतिलि श्वगकाण हहा श्वानासहान सि ।
हवतिठोडडेनदेन मोने तहान । देयादे । गो हे डुगद । साव्रुगि नि मय थानागद
व्रियोगिगैहे गैतोते तहान हे (तहेडि गैतिलि श्वगकाण हहा श्वानासहान) गेनस
निडठेनयेद निवोठुगनानठिय सतोठेतेहस' मातेगिठि नि हसिगौनकस म्मौ हे हास
डुगद । गेनहेन साव्रुगि नि प्पामाठानगद हहा थहे पानाठेठेठ सतोनयु सि
योगसयुगिसि ०७ हौ प्पामाठानगद हहा ताकेस तहे ठेडनसिग सदि तो पनोभोते
गनाहमनिसिम । गद गैतिलि तो सायनडियि सोयाठि पुसतियि छेममुगसिम हास
सुडडेनेद । ठेन डनोम पौपठे गैहे वेयामे योममुगसिगस तो सयापे तहे ठानद
येठिगिग।

अथ वोकस वय धनिसह पुमान मसिहना मे गौ । व्राठिवठे नि तहे व्रदिह अययहवि
गैतिह हसि पेनमसिसीग:

हानपुःव्रदिहयोनपोतहहिनम

डेन स नेयाठेठ हेने तहान गैहग गठिठ घातेसौस । सकेद गैहेनेन हौस देठायगिग
तहे गिननोदुयतानोड तहे स- मोस नि इगदी डेन डेनोड पनायय हसि । गसौन
गौस मयिनोसोडन नेवेन देठायस तहे ठुनयहोड पनोदुयतस डेन डेनोड पनायय

श्री गौरीय योगनिर्णयनिर्णय वद्विहा अयहवि
 (हानपुःगौवद्विहायोगनिर्णयहविहानम), देसपति सुयह नसिकस वेयुसे गोन १७७
 गहे उसिह नि गहे पोगद गोन वप्र सोमे गोगतेन उसिह नि पागा७७७ सगोमस थहे
 उसिहेनमेन हेने हवे वेन गदगौरीय योगनिर्णय तो गेमोवे सुयह गोगतेन उसिह

थहे उगिा वधौ तो सप्रनदयितोद पसेदो- धितानप्र यनितियसिम नि मातिहधि
 श्रीगिगिा धनिसह पुमान मसिहना (युश्चिाग प्पे गेयह मे २००६): श सि
 गोगीनगह्य गहान वेगौन १८२३ गद १८४६, ५, १०, ००० पौपठे दैदोड मागानि,
 २, १०, ००० उगोम पाठा अडान, ६०, ००० ोड छहेधेना गद ३, ००० ोड
 समा७७पोश नि गहे प्पोसि गेगानि (७८३, ००० गोगा७ दोगहस)
 थहेडि श्चानकाण हहा श्चानासहान (मेमवेगोड मातिहधि अदवसिोमप्र छेममतिगे
 ोड पाहतिप्रा अकादेमि, वेधहा) [हा७पगानगहान २०१७ (५ १०३)]:

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब । 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
 से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
 सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल ! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

श्रीगिगिा धनिसह पुमान मसिहना (युश्चिाग प्पे गेयह मे २००६): श्रीग गहे
 प्पोसि ढिविन नि गहिन, श्चदति, । दामगौस वुधिन वप्र प्पनिग डशमान ३३ नि गहे
 १२गह येगनुप्र गद डोन गहसि, हे गेयेविद गहे गतिधेड ' गनि' उगोम गहे
 पौपठे गद गहे मवानकमेगगोड गहे नविगौस या७७६ ' गनि याम' थहे गेमानिस
 ोड गहसि मवानकमेगग मे सगि७ वसिविधे नि पुपुा७ दसितनयिन, ।वुन ५ कम
 सुगहोड गहमि सागान यन ढगानयसि गयहगान (१८१०-११) सपेयुधोद गहान
 गहे दाम मुसग हवे वेन गगुतेन गौ७७ वुधिन तो पगोतेयन । डोन ।स ति
 सगतेयहेद वेन । दसितानये ोड ३२ कथिमेगनेस उगोम थधियुगा तो तिस
 योगडुधेनये गे गहे गौसतेन वानक ोड गहे यहुस नविन यन श्रीश्री हुगतेन
 (१८७७) ददि गोन गगेगौतिह गयहगान' स योगतेगगानि गहान गहे दामगौस गहे
 पगोतेयनविगौ७७ ोड । डोन गुननिग वेया७स, हुगतेन वेधेविद गहान मोसग
 पौपठे ददि गोन योगसदिन ति । डोननेससौ७७ गद ।ययोगनिग तो हमि तिगौस

सोमेतहनिगे ठसे वुत हौस गोन नि। पोसतिनि तो साय। गयतहनिगौ त तहे योमभोग
मिपनेससीनि सि तहात ति मुसत हवे वेग। ने मवानकमेगत वुषित। ठेगग तहे प्योसि
ढ़विन तो पयेवेगत तहे 'विन' स युनेगत उओम सधदिनिगौसतौ। नदस श्लोपठे
। ठसो सादि तहात ति सेमेद तहात तहे योनसानुयतीगोड तहे मवानकमेगत हद
सुददेगठय सतोपपेद

थहे पसेदो- यनतियि पामाठागागदा हहा' स साव्रुनिगोड तहे हवति। ठोडडेगदेन
तहेडि श्वगकाण हहा श्वानासहा। टुगेद तहे पठागानिसिद गौनक। स डेठठौसः
(मातिहठि। मोवेठ, थमि, पोयेतिय। गद डुसतानिस पप २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर' (2017) शोधपरक
उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल
अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि
उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक
वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ 'ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर
बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच
आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक
बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि।
पुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़ात पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस
पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ
अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल
होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्यू. डब्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन।
ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल
होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

थहेडि श्वगकाण हहा श्वानासहा। (मेमवे। ठोड मातिहठि। श्रद्वसिओनय छेममतिने
। ठ पाहतिपा श्रकादेमि, येठहा) [हाठपनागतहा। २०१७ (प ३१)]:

पदुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पदुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूढ़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पदुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

श्रीगणेशाय नमः पुमान् भस्मिन्ना (युि श्वाताग पे मेयह मे २००६): श्री
गणपिपसोड तहे होनगोसोड तहे प्योसिढिविन याग वे सेन नि तहे वेगतौहिन तहे
लमयोड डेयोड पहाह थुगहण्ट नेतुनगेद तो वेधहि उओम मेगगाए श स सि सादि
तहातौहिन तहे तगोपसोड तहे पुठनाग नेयहेद तहे वागकसोड तहे प्योसि, तहेय
सौ तहातोग तहेतहेन सदिोड तहे रविन, तहे तगोपसोड हाणपिहामसुददनि
धय्यासौगौतिनिग, नेदय उेन। वाततणे थहिसौस तहे सामे हाणपिहामसुददनि
गैहे डुनदेद तहे यतिंसिोड हाणपिु। नद पामासगपिु। डेयोडे' स तगोपसौमे
सतगदेदगे तहे वागकसोड तहे प्योसि सोभौहेने। नुनद पुनसेठ। थहे सपेदोड
तहे रविन गौस पनेवेगतनिग तहेम उओम मोवनिग उेनौनद श गौस उनिाएय
देयदिद तो पनोयेद गोनगहौनद। वेगग तहे रविन। नद तो वेयाते तहेतौतेनौहेने ति
गौस गाव्रगिावणे थहे तगोपसोड तहे पुठनागौनतु प। वुत। हुनदेद क्रोसागद
यनोससेद तहे रविन गोन मनिाग, सतिातेद। न तहे सामे पठयेौहेने तहे रविन
देसयेनदेद उओम तहे भुगतानिस गितो तहे पठानिस थहे रविन गौस तहनि, वुत
तहे उठौगौस सो उासत तहात होवप्र सतोगेसौगिहनिग उवि हुनदेद मानासौमे
उठौतनिग ठकि सतगौस नि तहे रविन। श्रीने तिहेन सदिोड तहे रविनौहेने तिगौस
डुनद पोससविणे तो यनोसस ति तहे पुठनागे नेयतेद। गौोडेपहागतस, नद

नोपेसौने हुंगग नि तहे वोततोम नौ सो तहत डि । माग वेसेस योगतनोठ हे यु०६
वे नेसयु६ नौतिह तहे हे०प ०७ तहेसे नोपेस पहामसु६दनि नेवेन तहेगहन तहत
पु०तान' स तनौपसौ०६ वे । व० तो यनोसस तहे प्योसनि६हेन हे यामे तो कनौ
तहत पु०तान' स तनौपस ह६ मागागे६ तो यनोसस तहे प्योस, हे ७०६

थहेडि श्वानकाण ह६ श्वानासहान (मेमवेन ०७ मातिह०ि श्र६वसौनय घोममतिने
०७ पाहतिपा श्र६क०डेम,ि ये०ह०ि) [हा०पनागतहान २०१७ (प १०५)]:

'वेश, तँ सुनु । 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली
घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै । तुगलकी सेना जखन कोसी के
किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना
तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल । ई वएह
हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौने रहथि । फिरोजशाह
तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच
मे पड़ि गेल । पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत
नहि भ' रहल छलै । अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनार-
किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय । जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य,
ओतय पानिक थाह लेल जायत । एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल । कुरसेला
सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पैठ कनेँ शिकस्त बुझेले । कोसी ओतहि
पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि । पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे
पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खड़ जकाँ बहि रहल छल । तुगलकी सेनापति
केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी
केँ टाढ़ क' देल गेल । नीचाँ बला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे
जेँ बयो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत । एहि तरहेँ
फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल । हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि
सोचनेँ छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत । जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता
लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल । तँ एहि
कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन ।'

श्वाना०००० हसितोनयो०७ मातिह०ि डितिानुने

३

श्वानोदुयगांग

ठ०पथ३३श्र० श्र० ३०थथ००ष श्र० ००पथ३३श्र० श्र० ००पथ३३श्र० श्र० ००पथ३३श्र०

प०श्र३३थैश्र श्र०प०श्र०प०म३ श्र०म०य तहे यश्र०श्रौम०ठश्र०३३ श्र० ३०म०य३श्र०म
३श्र०म०घ३श्र०घ०प (३०म ०श्र०प०घ३श्र० ०श्र०म०थ०प०श्र०थ श्र० ० म०श्र०थ०ह३३३
३श्र०म०घ३श्र०घ०प)

श्रौहेन मातिहृषि गौस तेयोगनसिद वय तहे पाहतिप्रा अकादेमि (सातागिाँठ अयादेमयोड डेतोनस- १७ श्गदा) गौय वायक नि १८६५, डोते ढामागातह ह्हा सगातेद तहात हसि मातिहृषि ठगगागे सि सावेद गौ (मातिहृषिके वानतमान धामासया, ढामागातह ह्हा)

हौसौनोगोन तहसिोन गौ युगतस श्रौहात हे तेडेनेद तो।स।पपथियावठे, डि ति।पपथेदि।त।१७७, गेनथ तो तहे पातत १७ मातिहृषि सपोकनिग।गो, गौगनापहया७७५ ठेयातेद नि श्गदा मातिहृषि सि सपोकेन, गातविठय, नि श्गदा।गद सेपाठ अडतेन तहे तयोतयोड सुगाुठा (गातडिदि नि १८१६), गैहयिह गौस नि तहे।डतेनमातहोड तहे अगठे-सेपाठेसेगौ।१७७१-१६, तहे हृषिठय गेगाँनस गौे नियोनपोनातेद नि गनतिसिह श्गदा, नियुठुदनिग तहे सेपाठेसे-सपोकनिग धानपेठनिग अयो धमिठि।ठय नि १८१६।गद १८६०, तहे गनतिसिहेनस येदेद सोमे थेना गेगाँन तो सेपाठ अस। तेसुठन, पातत १७ मातिहृषि सपोकनिग अयो, गैहयिह गौसो।गठेनि नुठेद वय माठठा प्पनिगस (गौहेन मातिहृषि गौस।गोडडयिाँठ ठगगागे।ड तहे गेगाँन), गौस येदेद तो सेपाठ एवेन तोदाय सोमे मातिहृषि सयहेठानस (!!) तेडेन तो तहे गौठेन पेनाँदि १७ मातिहृषिस तहे पेनाँदि १७ "सेपाठ (!!)" माठठा प्पनिगस (ढामागातह ह्हा, श्गतनोदुयतीनि तो मातिहृषि पाहतिप्राक शहिस वय धन धुनगागातह ह्हा "पहयेसह")

ढामागातह ह्हा हमिसेठड।दमतिस तहात दूननिग हसि व्रसिति तो "व्रि डविनाय" १७ सेपाठ (प्यातहमागदु) हे यामे तो कनौ।वुत तहे सेपाठ ठेगायय (हसि मोनोगनापहोन कनितागयिाँ साताक, गैहयिह हे गौनोगाठय पतेसेनतस।स प्पनितागयिाँ सायह) नि तेसपेयत १७ मातिहृषि षो, हे यानगत वे वठामेद डोन हसि ठायकोड कनौठेदगे नि तहसि तेसपेयत हे गौसौनोगोन तहे सेयोगद युगत।७सो,।गद तहसि सेयोगद युगत गौस।ग।ग।तडियिाँठ यनोतीनि हे वेगाण। तनादतिाँनोडे ठतिसिम।गद योनसेनवातसिम नि पाहतिप्रा अकादेमि,।स तहे डनिसत योनवेनेनोड तहे मातिहृषि ठगगागे थहे तनादतिाँन गोन सतनोगोन

। गद सतनोगोन नि तहे एसत पप योनसोड तहे एक्षसितेनयोड मातिहथि नि तहत अकडेमिषो, हे गसुमेद तहत एविनाथौनतिस, एके पर हानमिहान हहा, । तनायकनिग यासतेसिम । गद योनसेनवातसिम ददि गोन गोन तहे गौनद, वेन तहुगह तहे योन १८६७ गौनतु गौनदेद । गद तहे इसन गौनद नि १८६६ गौस गविन तो । गोन- एतितानय वोक नि मातिहथि (। यादेमयि वोकोड शुहथिसोपहय!!!)

हौस यासतेसित, योनसेनवातवि । गद योनडुसेद थहे नितेन- यासते मानगि नि शुगणिसौ७७ कगौन तो हनि, । गद तितोस । पपानेगन तहत तहे गोन गाय्या- गय्या पहथिसोपहेन धानगेसह उपादह्याया मानदेदि । " छहानमकानिनि" । गदौस वोनग डवि योनस । डतेन तहे दोगहोड हसि डतहेन गुन हे निडोनमेद पर धगिसह छहानदना महानतायहानया नि । दसितोनगेद गौय पर धगिसह छहानदना महानतायहानयाोनतिस नि तहे " हसितोनयोड सावया- सयाया नि मतिहथि" ।

" थहे डमथियौहयिहौस निडेनानि नि सोयाथि सतातुस सि गौ शतनियत नि मतिहथि- धानगेसहा' स डमथिय सि योनपथेथय गिनगेद । गद गे । गे गते शपेयतेद तो कगौवेन हसि डतहेन' स गामे", । गद हौनतिस डुनतहेन तहत । ७७ तहसि निडोनमानगौस गविन तो हनि वय शुनोड ढ हहा थो हौगौ७६ तहसि यासतेसित- योनसेनवातवि- योनडुसेद । ७७ गे गौनद तो वे गविन तो पर? हानमिहान हहा थो, तहे पाहतिया अकडेमि सावेद तहे मातिहथि डगगुगे वय नेयोगनडिनिग ति, । स । ससेनगेद वय शुनोड ढ हहा, गौसौनोगोन तहसे गौ योनतस

सौ योमे तो सेपाथ, तहे शुनाणना शुनातसितहान । गद तहेनोनगागडिनिगिस । डतेन नेयोगनडि इनदनि मातिहथिोनतिस, वुन पाहतिया अकडेमीड इनदा दौस गोन नेयोगनडि सेपाथसे मातिहथिोनतिस, वे ति तहे सेमनिगसोन तहे पौतसमेत, वे ति । ग । गतहेथोगयोड पौमसोन पनोसे पुवथसिहेद वय तहे अकडेमि देगानदनिग तहे तनोनमेनतोड सेपाथसे मातिहथिोनतिस वय पाहतिया अकडेमि पर ढाम महानोस प्पापानि " महानमान" । गमेनतस तहत तहेने सि देमानद नि

भेपाठ तहान तहेय सहुठए । असो गोन गौनए इगदीन मातिहठिगौनतिनस् पुवठसिह
तहेम नि तहेमि । नतहोठोगोसि । स नेयपिनोयतिप्र देमाणदस तहसि

थहे गानगौ- भनिदेदनेससोड तहे मातिहठि । दप्रसोनप्र वोमए ोड तहे इगदीन
पाहतिप्र । अकदेमि हास तिस नोगिनि नि तहे नोगानडितीनिस तहान । ने
नेयोगनडिद वप्र तहे पाहतिप्र । अकदेमि, तहे वाससि ोड गैहयिह सि शतना-
ठितानप्र यनेदेनताठिस थहेसे । ने पसेदो-नोगानडितीनिस नुननगिगोन पापेन,
पोठतियाठनोगानडितीनिसोन यासतेसिनोगानडितीनिस पोयकेन- नुन वप्र ।
डौ थहे योमपठेते ठसिन सि:

मअस्थहइडइ डइथएठअठे अपपअठइअथइश्रीमस (!!!) ढएछश्रीधामइअएय
वप्र पअहइथैअ अपअयएमइ

१ थहे भेयनेतानप्र, अठठ इगदी मातिहठि पाहतिप्र । पामति, थनिवहुकति, १११,
पनि श्रुछ गानेनणे ढोद, अठठाहावाद- २११ ००२

२ थहे घेनेनाठ भेयनेतानप्र, अकहठि महानातिया मातिहठि पाहतिप्र । श्वानसिहाद,
छो यन घागापाति भिसिहा, ड़ाठवाग, यानवहागगा- ८४६ ००४

३ थहे भेयनेतानप्र, छहेनगा पामतिप्र, व्रदियापाति महौन, व्रदियापाति मानग,
श्वानगा- ८०० ००१

४ थहे भेयनेतानप्र, मतिहठि पागसकनतिकि श्वानसिहाद, द ग, प्पाठिसह पाहा
ड़ाने, प्पोठकाना- ७०० ००७

५ थहे भेयनेतानप्र, व्रदियापाति भेवा पागसतहन, मतिहठि महानाग श्वानसिहाद,
यानवहागगा- ८४६ ००४

६ थहे भेयनेतानप्र, छेनने ड़ोन तहे पनुदय ोड इगदीन थनादतिगिस,
थानतानावाति घेना महानाग; ढ़ानतिहोसे, ढ़ानति, मादहुवाग- ८४७ २११

सौ तहे इतिनाय अससोयतिनि वसितस गेद ।सु गदेन पेनाथि नो १ & ६ ।वोत्रे हवे वेग देयेयोगनसिद ।नद हास वेग नेपथयेद वय ।नोहेन नोन-वतिनाय ।ससोयतिनिस ।न सन नो ५, ६ & ७ वेथौ

(१) थहे घेनेाथ पेयनेनाय, अकहथि महानायिा मतिहथि पाहिया ।श्वानसिहाद, शुनोडेससोनस' छेथेनय, यगिाह श्रौसन, श्रोपपोड शुनमिनाय ।पयहौथ, यानवहागगा-८४६००४, (महिन)

२) थहे पेयनेनाय, छहेनगा पामति, वदिय्या श्वान महान, वदियापानि ।मानग, श्वानगा-८००००१ (महिन)

३) थहे पेयनेनाय, मतिहथि पागसकनतिकि श्वानसिहाद, दम, प्पाथिसह पाहा ।डगे, प्पोथकाना-७००००७, (श्रौसन गेगगाथ)

४) थहे पेयनेनाय, वदिय्या श्वानि पौ पागसतहाग, मतिहथि महान श्वानसिहाद, यानवहागगा-८४६००४, (महिन)

५) थहे पेयनेनाय, अनागद, पामाणकि पागसकनतिकि पाहियाकि मानयह, ।डाकुमानगागण (मनिडापुन छहौक), यानवहागगा-८४६००४, (महिन)

६) थहे घेनेाथ पेयनेनाय, मतिहथि पागसकनतिकि श्वानसिहाद, ।सेवेनय ।५०३२, पाहाना घानदेन छति, अदियापुन-२, हामसहेदपुन-८३१ ०१४, (हहानकहागद)

७) थहे घेनेाथ पेयनेनाय, अकहथि महानायिा मतिहथि पागगह, घ-६, हागस महान, श्रौनिग २ इथश्रौ, गालहुनसहाह माडान मानग, सौ वेथहि-११० ००२, (वेथहि)

श्रौहात सि तहे वतिनाय यनेदेनगाथोड तहे छेनने डोन तहे पनुदयोड इगदनि थनादतिनिस (नौ नेयोगनसिद ।नद नेपथयेद वय ।नोहेन पोयकेन ।ससोयतिनि)? छहेनगा पामति ।नद वदियापानि ।पेवा पागसतहाग ।ने यासतेसिन

पोषितियाधुतडतिस, वेहेमेनतय्य दसिपय्यनिग तहे यासतेसित ।ततमिोड । गमोत ।नयनिग पोत, गैहोसे यासते सि सतपिठु नयेतानि (वश्यैश्वथथथ), वुत गैहोस येतानिधुत गोन मनाहमनि अठठ श्गर्दी मातिहथि पाहतिप्रा पामति (गौ दैयेयोगनसिद ।नद नेपययेद वय । गोन-धतिनानय ।ससोयातिनि) वेयामे गोन-शसितेगतोवेन द्दुननिग तहे धडितमिोड तहे ड़ाते ह्यप्रकागत मसिहना, सामे सि तहे यासे गैतिह अकहथि महानतिया मातिहथि पाहतिप्रा श्वानसिहद मतिहथि पाणसकमतिकि श्वानसिहद हास दोगे । यमि तहनोगह ।न निवेसततिने येमेभोगय ोड तहे गमोत वदियापात, तहेय तनेदि तो योगवेन वदियापातानिद "मातिहथि" धनगुगे तो तहे धनगुगेोडनय्य तहे मनाहमनिस (तहे गामेोड तहे ।ततसित गैहो सकेतयहेद तहे वदियापात हास सतपिठु गोन वेन दसियथेसेद वय तहसि ।नगानसितानि) श्रौहेन तहेसे गोन-शसितेगतोनगानडितानिसे सेनयसि वोननिग पौनस गानतेद वय पाहतिप्रा अकडेमनिगद यहेसे । योगवेनेन, ति सि गोन । योनियदिये तहत डेन सुययेससवि तमिसोनय्य योगसेनवातवि पोपठे ।भोगग तहे मातिहथि मनाहमनि यासते, मे यहेसेन थहे योमपठेते धसित सि:

- १ ढामागातह ह्हा, २ ह्यप्रकागत मसिहना, ३ पुनेगदना ह्हा पुमान, ४ पुनेसहौन ह्हा, ५ ढामदो ह्हा, ६ छहानदनागातह मसिहना श्रमान, ७ वदियागातह ह्हा वदिति, ८ वेना थहाकुन, ९ शुमेम मोहन मसिहना, १० असहेक श्वप्रियहाठ

थहे नेसुधन सि गौ डेनेवेनय्यवोदय तो से थहे योमपठेते धसितोड पाहतिप्रा अकडेमनिगदस (तपिठ २०१८) सि:

थोताध वोनय्य दसितनविनिग- ५० तमिस, मातिहथि मनाहमनिस- ४२ तमिस, प्याप्रासतहास- ६ तमिस, ढाणपौतस- ३ तमिस; श्रोतहेनस- ० तमिस!!! (मौ नि २०२१ षह हागदसिह श्वानसाद मानदाध हास वेन गौनदेद तहसि पनडि डेन हसि गोवेध "श्वानगु", सो तहे युगत सि गौ गोन डेनो वुतगे

थहे नेसुधन सि गोन वासेदोन तहे दुधतिप्योड तहे वोकस वुत सोधेधु पोग तहे यासते- वासेदोनहेन योगसदितानिगस ।नद तहे दसिसे हास तिस गौत नि तहे

डुभनय सेदधनिग तहत तहे पाहतिप्रा अकादेमीड श्गदाि डुगद तहनुगह तहे
डुभनय धतिनाय अससोयानिगिस

श्रौहातौने तहेवजेयतविसोड तहे सेतनिगोड तहसि अकादेमी?

पाहतिप्रा अकादेमीसो सतावधिसिहेद (सातानिगिअ अयादेमयोड डेततेस तो वे
याधेद पाहतिप्रा अकादेमी) वय धोवेनभेगतोड श्गदाि तेसोएतानिगि सो ६-६-
४५१६र(अ) दातेद धेयेमवेन १८५२ " तो सेत हगिह धतिनाय सतागदामदस, तो
डेसतेन गद यो-नदगिते धतिनाय यतवितिंसि नि।७७ तहे श्गदािगि धगुगोस
गद तो पनोमते तहनुगह तहेम।७७ तहे युधनुनाधु गतिपयोड तहे युगतनय; तो
पनोमते गौद तासते गद हेधतहय नेदनिगि हावतिस, तो केप।७७ तहे गितमिते
दाधेगु।मोगग तहे वानुसि धनिगुसितयि गद धतिनाय डेगेस गद गनुपस
तहनुगह सेमनिगस, धेयतुनेस, सयमपोसा, दसियुससागिस, नेदनिगस गद
पेनडेनमानयेस, तो गियनेसे तहे पायेोड मुताध तानसधतानिस तहनुगह
गौनकसहेपस गद गिदविद्विध।ससगिगभेगतस गद तो देवेधेप। सेनुसि धतिनाय
युधनुने तहनुगह तहे पुवधियातानिसोड डुनगाधस, भोगगनापहस, गिदविद्विध
यनेतवि गौनकसोड वेनय गेगने, गतहेधेगोसि, नेययधेपेदासि,
दयितानिगोसि, वविधानापहेसि, 'हे' सौहेोड गैतिस गद हसितोनेसोड
धतिनातुने"

थहे अकादेमी वीसातसोड पुवधिसिहनिग "गे वीके वेनय तहनिनय हुनस" गद
हेधदनिग "।त धेसत तहनिनय सेमनिगसेवेनय येन" ।त नेगानिगि, गानिगि,
गद गितेनगानिगि धेवेधस, "।धेगगौतिह तहे गौनकसहेपस गद धतिनाय
गातहेननिगस-।वुत तौ हुनदनेद नि गुमवेन पेन येन।"

थहे अकादेमीनेयोगनसिस " नेसदिस तहे तौगतय-तौ धगुगोसे गुमेनातेद नि
तहे धेगसतानिगोड श्गदाि", एगधसिह गद दाजासतहगिस धगुगोस
पाहतिप्रा अकादेमी हास योगसतानिगेद तौगतय-डुन धगुगो अदवसोनय

गोमदस "तो नेगदेन ।द्वयि डेन मिपठेभेननिग एतिनाय पनोगनामभेस नि नहेसे २४ एगुगोस".

थहे अकादेमिगविस पनठिस नि तौनतय- डुन एगुगोस नेयोगनसिद वय ति डेनोनगिनिग ।नद नानसएतेदौनकस शन गविस " सपेयाथि तौनदस याएथेद नहसहा पाममान तो । सगिनडियिनत योगनविनिग तो नहे एगुगोस गोन डेनमाएथय नेयोगनडिद वय नहे अकादेमि ।स ।एसो डेन योगनविनिग तो यथाससयिथ ।नद भेदेविथ एतिनातुने"; "शन हस ।एसो । सयसतेम ।डेथेयनिगो मनिगतौनतिस ।स डेथेस ।नद हेनोनतय डेथेस ।नद हस ।एसो सतावथिहेद । डेथेसहपि नि नहे गामेसोड यन अगनद छौमानासौमय ।नद शुभेभयहनद".

दएथश्चअड श्रोठ डएथथएदष (पहश्मए)!!!!

शन डेवुनतये व्रेनय योन, पाहतिपा अकादेमि" हेथदस तौक- एनग डेसतविथोड डेततेस; शन वेगनिसौतिह नहे येनेमोनय तो पनेसेनत नहे अकादेमि स अगुगो श्रौनदस डेन योनविनिग".

शन डेवुनतये व्रेनय योन, नहेने सि । नेद तो शामनिहेनहेन पाहतिपा अकादेमिसि डुथेथेनिग तिस ।वजेयतवि ।नद हेनहेन पाहतिपा अकादेमिसि तौने ।डे नहे नयिह युथुनाथ ।नद एनिगुसितयि वानेतिय पनेवाएनत नि शनदा।

श्रोग सयनुतनिय ति सि नेवोथेद नहान पाहतिपा अकादेमि वेथेविस नि " डेनयेद सतानदानसितानि ।डे युथुने नहनोगह । वुथेथेथेनिग ।डे थेवेथस ।नद ।नततिदेस" ।नद ति सि गोन " योगसयुसि ।डे नहे देप निनेन युथुनाथ, सपनितिथ, हसितोनयिथ ।नद शपेनेनिगिथ एनिकस नहानु गडिय शनदा। स दविनसे मानडिसतानिसोड एतिनातुने".

थहे अकादेमि वीसतसोड पुवथसिहनिग "नेने वीके व्रेनय नहनिनय हुनस" ।नद हेथेनिग " ।न एसन नहनिनय सेमनिनसे व्रेनय योन" ।न नेगीनिग, गानिनिग,

।नद नितेनगातीनाथ वेवेथस, "।थेनगा तीतिह तहे तीनकसहेपस ।नद थतिनाय
गातहेनगिस-।वुन ती हुनदयेद नि गुमवेन पेन योन" ३७ ती से तहे दाना नि
नेसपेयतोड मातिहथि ति योमेसुत तहतो वेनय योन ।नुनद तीथे वीकस सहेथद
हवे वेन पुवथसिहेद नि मातिहथि ।नद तहे मातिहथि तीतिनस मगिहण हवे
।ततेनदेद तहनिनय सेमनिनस वेनय योन ।। नेगीनाथ, गातीनाथ, ।नद
नितेनगातीनाथ वेवेथस ।नद मगिहण हवे पानतयिपितेद नि गिहण थतिनाय
गातहेनगिस वेनय योन थहे गुमवेनोड मातिहथि वीकस पुवथसिहेद वय तहे
अकडेमासि पानहेतयिथेय थौ, ।नद तीहती से तहे ।ससगिनमेनतस, तहनुगह
तीहयिह तहेसे वीकस गेन ।।तडियिथेय पनेपानेद (वे ति तानसथीनाग,
।नतहेथेगयोन मोनोगनापह), तहेन तहे पौपथे गेनतगिग तहेसे ।ससगिनमेनतस
।नेोडतेन नेथतेद तो तहे मेमवेनसोड तहे ।दवसिोनय वोनद (।स तहे ।नसौन तो
दथर ।पपथितीनाग वय थह वनिति उतपाथ वनगिस डोनतह) थहे टुथतिय
सुडडेनस, ।नद ।स ।नेसुथन, तहेने सि गो नेदेनसहपि

हौ तहसि अकडेमा डथिद? अनद तीहय तहसि अकडेमा डथिद? अनद तीहण
।यतीन सहेथद वे ताकेन ।गानिसन अकडेमा डोन तिस नितेनगातीनाथ डथिने?

दिसनथय, अकडेमासि गेन तहे गामेोड । मानोन तीमान अकडेमा तीन तिस
मेमवेनोड तहे ।दवसिोनय वोनद योगससिनसोड पेनसोनस, ।नद डि तहे गनुप
ोड पेनसोनस सि डथिनिग तहे अकडेमा, तहत थनगुगे तिसेथड सि तो वथमे!
गुन ।गानि, तहे थनगुगे सि गेन तहे गामेोड । मानोन तीमान थो, तहे पौपथे
सपोकनिग तहत थनगुगे ।ने तो वे वथमेद डोन तहे डथिनेसोड तहे अकडेमा
देथेय!!

एवेन डि ति सि पानतीथेय त्ते, तहे थहतिया अकडेमय यागगेन सहनिक तिस
नेसपेनसविथितीसि हौ ।न ।दवसिोनय योममतिने याग वे योगसदियेद
नेपनेसेनतातविोड मातिहथि-सपोकनिग पौपथे (वेन तहतोड थदती), तीहण तहे
थेनवेनेनोड तहत थनगुगे सि गोमनिनेद वय ससि ।नगानसितीनस

(नेयोगनसिद वय तहे पाहतिपा अकादेमी डोन नेसोनस वेसन कनौन तो ति),
हावनिग नो नेमोते योगनेयतानिगौतिह एतिनातुने? पाहतिपा अकादेमी सौद सेदस
ोड अयायाि नदं शपेयतेद मानगो डुनुति हावनिग सादि नहान ति सि ।७सो नुने
नहान तहे अकादेमीन ।नय ।नगानसिातानि याग नानसडोनम तिसे७७, वुन
।न७य्रैहिन तहे योगसेनवातवि पौपठे नेपनेसेनतनिग तहेसे डनिद पनेससुने डोनम
तहे एतिनाय डनातेनगतिप्र, यहागगे तहेमसे७वेसोन ।ने नेप७येद

श्रीहान सि तहे सो७ुतानि?

थहे एतिनाय डनातेनगतिप्र हास ।७नेदय ताकेन नितिातिवि वये सताव७सिहनिग
पाना७७७ पाहतिपा अकादेमी ।नदस ।नद पाना७७७ एतिनाय मेतस शन सहु७द
वे ताकेन डुनतहेन अ७७ ठेगा७ मेगस सहु७द वे शप७नेद तो ताके तहे अकादेमी
तो तहे तासक श्रोन ।७७ ।वा७िवठे डेनुमस, तहे डायन सि मादे य७ोन नहान तहे
एतिनातुने वेनिग पनेपातेद वय पाहतिपा अकादेमी तहनुगह ।ससगिनमेगनस सि
गोन गनानमानयाि७७य योनयेयन, नहान ति सि गोनु प तो मानक ।नद सिोड
निडेनीन टु७तिप्र श्रोन ।७७ ।वा७िवठे डेनुमस, ति सहु७द वे मादे य७ोन नहान
तहे तहनि, यासतेसिन-७ौकनिग (टुनततिातवि७य ।नद टु७तिातवि७य) ।नद
पाठे मातिह७ि एतिनातुने, तैहयिह सि वेनिग सहौन वय तहे पाहतिपा अकादेमीोड
शुनदीतो तहे ।न७द, हास नो नेदेनसहपोन नेसपेयन नि तिस नातवि सपोकनिग
।नोोड शुनदी ।नद सेपा७ अनद नहान मातिह७ि हास मोवेद गोन वेयुसेोड पाहतिपा
अकादेमी वुन देसपति ति

वेमानद

थहे सशिोनगानसिातानिनस नेपनेसेनतनिग मातिह७ि सहु७द वे देनेयोगनडिदौतिह
मिमेदीतिो डडेयन ।नद ।न निटुनिय नितिातिद तो ।सयेनतानि तहेनि गेनुनिनेसस
अ योममतिने सहु७द वे सेनु प तो सयनुनतिडि तहे ।नक दोने वय तहे पाहतिपा
अकादेमी (नि नेसपेयनोड मातिह७ि) नि तहे वासन ५५ योनस थहे ।नदस

सहोष्ठ वे केपत नि वेपानये तथिष्ठ तहे नेसुठानसोड तहे निटुनिय मे माहे पुवठयि
नद योनयेयतवि सतेपस मे नाकेन

६६

थहए छएडएगढअथश्श्रीम गएधश्मप

वद्विहा ३सत मातिहवि ढोनतगिहाएय शनतेनगानिाठे - पुोनगाठ हासे -
पुवठसिहेद मोने तहाग तहने हुनदनेद सिसेस तो दाते मेनौहवि, गौठिठे गुमेनाते तहे
पनोवठेमस डयेद नद तहे सोठुगानिस डुनद वयु स थहे ह्येनयेय वेगान नि तहे
योन २००० न य़ाहो धौयतिंसि- तहे डनिसतगौनदसोन तहे नितेनगेत नि मातिहवि
गौनितेन वय मेन तहे य़ाहो धौयतिंसि सतिस (गौ य़ाहो हास दसियेनगविद
धौयतिंसि) गौनदस तहे नदोड २००० गैहन ३ सुडडेनेद । माणोन ।ययद्विगतौहयिह
केपत मे योगडविद तो युनयहेस डोनगे नद । हाठड योनस नुन तहाग सहापेद
मय देसतनिय ३ युष्ठ योगयेननाते गेन मय मातिहविगौनतिनिगस नद मय
नेसोनयहगेन थनिह्णाना मागुसयनपितस श्रोन पतह हुठय २००४, तहे डनिसत
वठेग नि मातिहवि यामे (गाणेनदनातहकुनवठेगसपोनयोम) ।स "गहाठसानकि
धायहह", गैहयिह गौस नेयहनसितेनेद ।स वद्विहो पुोनगाठ डनोम १सत हागुनय
२००८ डनोम ३सत हागुनय २००८ ति यामे तो वे पुवठसिहेद ।स । डोनतगिहाएय
पुोनगाठ थहे डनिसत नेयहनसितेनेद सिसे वनोगहन तहे सतोनयोड तहे ठिडि नद
यनेगानिसोड । डोनगोनतेन मातिहवि पौत डते ढामण छिहेदहाय (१८७८-
१८५२)

थठिठ तहे गिहाह सिसे गेड वद्विहा तहे योठुमनस गेन मुसयि, मतिहवि
श्वानिगिग, छहठिडेनेग योठुमन, ठेनग सामसकति तहनोगह मातिहवि गोन
सतनेगनहेनेद मोनेवेन, तहे पनोयेयतस गेन दगितिाठिसानिाठे गेड मातिहवि
छठाससयिस नद श्वानणामागुसयनपित- ठेडस गोन सतानतेद थहे सोनयहावठे
दयिगानिय (मातिहवि-एगठसिह-मातिहवि) गौस देसगिनेद नद
सतनेगनहेनेद डनोम तहे गिहाह सिसे, । ठातेसतु नपुवठसिहेद मातिहवि श्वाय

०७ सायहकिता "मो एतानय मा शुनावसिह" वेगान तिसे - पुवथियातीनि नि
 व्रदिस सायहकिता, तहे गयोतेसत दनामातसित ०७ मातिहथि डितातुने तौस
 सथिनत डोन तहे एसत रप योनस, तस डान तस तहे दनामातौस योनयेनदे

थेयहणेथेगय हस तौ तसपेयतस, वाद (तिस यहनयेसोड मसिसे) तद गौद
 (तिसे उडेयतविसे) शत सि । गयोत थेवेथेन; ति यहाथेनगेस सतातुस दु
 डोनयेस शत सि । पपथियावथे नि । एथ तौसोड कनौथेदगे थो, सयहोथ-गोनिग
 यथिदयेन तोदाय हवे । यथेनेनु गदेसतागदनिगोड तहे गविससे तद । तोमस
 तहन तहे अयावहतातोन थनि इससाय म्भौतोन हद अडतेन मासस- सयाथे सोड
 पनितनिगो द्युयातीनि तद एतितानुने शपानदेद तिसौनिगस, वुतोनथय । डतेन
 तहे "शतेनगेत तदथेयतोनयि तानसडोनमातीनि ०७ तौथसोड कनौथेदगे",
 ति हस वेयोमे गविससाथ, ति हस पुमपेद गौगनापहियाथ वुनदानसि अथ
 सहायकथेसु गडुनथेद, तहेतौक थनिकसोड तहे यहनिते दितनडिदि, तद तहे
 यहनिते हथिह तनेदि तो यापतुने कनौथेदगे, तैहथिह तनेदि तो तहौतन
 तिसे शपानसौनि, सतातदेद वनोकनिग दौन अतद तहे गयोतेसत वेनेडयितिय
 वेयामे तहे मातिहथि डितातुने श्रौहान सि व्रदिस, गोनहनित, ति सिनोनथय तिस
 योममतिमेगत तो तहे मातिहथि डिगुगो, तैहथिह हेथपेद ति शपानद तिस वासे,
 तद व्रदिस वेयामे तहे मेनस तहानते । वथे तो वनिद तोगेतहेन तहे मातिहथि-
 सपोकनिग तौस नि वोनह पानतसोड तहे वुनदानय (शददा & म्भेपाथ) व्रदिस
 गावे मातिहथि वातयहोड योममतिदेदौनितिस तद । वातयहोड योममतिदेद
 नेदेनस शत यहाथेनगेद तहे सतातुस दु । तद यासतेसित डोनयेस शत
 यहाथेनगेद योनडुसेदौनितिस, तैहोनेनु सनिग मातिहथिस । तौथ तो तदि तहे
 एददेन ०७ हनिदा थहे थयक ०७ यनितियसिम, तहे थयक ०७ तेतह नि
 यनितियसिमौस तहे नेसोन तहान सोमेनितिस तद दनामातसितसौने सनिग
 हनिदा-मसि मातिहथि डोन यहाप पोपुथानिय, तहेयनेनु सनिग देनोगातोनय
 थनगुगो डोन तहे सो-याथेद थौन यासतेसोड तहेनि सोयेतिय (सोमेने
 डनिदनिग पथे नि सातयासहसतना- तैहणेवेन तहे मोदेन-दाय थामसकनति

धनामा सि गोतु सनिग शुनाकनति नय! !), नद डेन तहेनि मभियिनय, तहेसे यासतेस सतागतोद केपनिग दसितानये गौतिह तहसि कनिदोड ठतिनातुने अगद नये तहे योणडुसनिगोड तहे योणडुसेद तहनिगेद, । गौ नयपेोड गौकेगेद ठतिनातुने, सतागे, नद दनामा (तोप-यथासस) वेयामे तहे गोम

वदिस सि गेगुठानय गेगननिग सोमे शयेठेठेन वनानिस पनिये तिस नियेपतानि, वदिस, तहे दिा डयतोमय, सि देपेनदेगतु पोन तहेम अस डान।स तहेनि वेनसागठि टुठतिंसि।ये योणयेनगेद, पोपठे।ससोयातिद गौतिह वदिस।ये दडिडेपेनत अठठ।ये कगौन डेन तहेनि पेनसेवेनानये।नद नेसठिनिये अठठ।ये कगौन डेन तहेनि।दुसौनक अठठ।ये कगौन डेन तहेनि टुठतिनयौनक अठठ।ये कगौन डेन तहेनि दसियपिठनि अगद।ठठ।ये योमभतिगेद; योमभतिगेद तो मातिहठि।नद तहे मतिहठि थहे युमुठानवि डेनये नेसुठेद नि। गानुनाठ नेवोठुतानि अ नेवोठुतानि नि तहे डेठिदोड मातिहठि डतिनातुने,।न, मुसयि, यनाडन, सतागे, नद दनामा थहेनठय नितेनगातानिाठे-पुनगाठ नि मातिहठि सतागतोद तहसि टुठतिनय मोवेमेनत नि मातिहठि।मोतहनिग ठेसस तहनगौनठेद सतागदानद गौस।ययेपतावठे थहे गौनदस गौने निसततिगेद तो नेयोगनठि तहे पानाठेठे डेठिदोड मातिहठि डतिनातुने,।न, मुसयि, यनाडन, सतागे, नद दनामा अगठय तहे वेसत गौस सेठेयतेद, तहेने गौस गो सयोपे डेन तहे सेयोगद वेसत थहे पानतयिपितानिगोड गेदेनस नि तहे देयसिनि-माकनिग पनोयेससेस गौसे नयुनागेद थहे गेदेनस गोन डुठठ।ययेसस तो तहे दगितिाठसिद मातिहठि डतिनातुने मोने तहन डवि हुनदनेद मातिहठि वौकस।नद।नुनद ११००० पाठम-ठेड मतिहठिकसहन।मानुसयनपितस गौने दगितिाठसिद।नद।मादे।वाठिवठे नठनि गदेन तहे "वदिस अयहवि" सेयतानिगोड गौवदिसयनि (।नद तहे गुमवेन सि नियेनासनिगे वेनय दाय) थहे।दौ-वदौ-पानिगनिगस-पहेतोगनापहस गौने।यहविद,।नद।ठठ तहेसे।यहविद "।न।नद।ठडिसतयठे"।ये तहे पोपठेोड मतिहठि गौने तहेन पठायेद नठनि थहे वदिस अयहवि सि।नुनटि गडिन तो तहे गौनठे

षो, गैहान सि तहे दैवोगप्रोड पोपठे ।ससोयातिदौतिह व्रदिहा? इस ति योउठेयतवि
 तहनिक्निग? सो, ोड युनसे गोन इग व्रदिहा ।७७ ।मौ७योमे हेने ।७७ ।मौ७योमे तो
 दसियुसस तहेनि नेसपेयतवि दैवोगप्र हवनिग सादि तहसि, ति गेदसे मपहाससि
 तहान तहेने ।ने सोमे वासयि हुमान पनियपिठेस गैहेने गो योमपनोमसि सि
 पोससविठे थहे यासतेसितस, तहेसे हवनिग गेनेतयि सुपेनानितिय योमपठेश
 (तैहयिह सि।गोतहेन गामे डोन।ग निडेनानितिय योमपठेश), तहे पनायततिगिनस
 ोड पठागानिसिम, तहेसेौहे ।नेु नावठे तो ताके पानत नि ।हे७तह्य दसियुससनि
 ।गद पेनसोनस गैहे ।ने गोन ।वठे तो गैतिहसतानद तहे यनतियिसिम ोड तहेनि
 योनागि, व्रदिहा सि गोन । पठातडोनम डोन तहेम थहे दैवोगप्र ोड पोपठे
 ।ससोयातिदौतिह व्रदिहा माय हवे दडिडेनेगत तनिगेस, गोन ।७७ गेद तो तो तहे
 ठनि ताकेन वय ।गय मेमवेन ोड तहे दतौनाठि वोनद व्रदिहा वेठेवेस नि तहे
 निदविद्विठतिय ोड दिस ।गद तहे दतौनाठि वोनद गेवेन मिपोसेस तिस
 दैवोगप्रु पोन तिस मेमवेनस अत तहे सामे तमि, ति सि वेनिगे मपहासडिद
 तहाने ।यह मेमवेन ोड तहे व्रदिहो दतौनाठि वोनद हास । सतनोग दैवोगप्रियाठ
 ठेननिग, तहे दैवोगप्रोड हुमानसिम सि पनायतसिद वय ।७७

व्रदिहा- मातिहठि डतिनातुने मोवेमेगत हास तिस गोनस नि तहे योन २००० गैहेन ३
 सतानतेद माक्निग मातिहठि श्रौवसतिसोनै ।हो घोयतिंसि अडतेनै ।हो छठेसेद
 घोयतिंसि तहेसे सतिसौने ।तोमातयि।७७५ देठेतेद हौवेन, तहे ।१७५ डोनम ोड
 व्रदिहा "गहाउसानि घायहह" गौस सतानतेद गेन ५ हु७५ २००४, ।गद ति सि
 तहे ।१७५सित पनेसेनयो ोड मातिहठि।न तहे गितेनगेत व्रदिहा ।गद तिस व्रविनागत
 मेमवेनस ददि तहेनि ।नमोसत नि तानसठातनिग ठायस ोड गौनदस गेन
 श्रौकिपिदि। ।गद तहेय सुययेससडु७७५ पोपठेसेद तहे गोमेनयठानुने "गहिनानि
 डगगुगोस" (घेनानद म ।ययेपतेद तहे गोठे ोड उमेसह मागदाठ, तहे यो-दतौन
 ोड व्रदिहा, गो तो घेनानद म' स वठेग ।गद यठयिक तहे वासपित अनपिन पहेतो
 डोनम व्रदिहा ।यहवि (शुनेतथिहकुन) पठायेद ।त हसि वठेग, युगौठिठे गायह
 हतपुःव्रदिहायोनि) इग घोगठे तानसठाते श्रौकिपिदि। ठेयाठसितानि दनवि, नि

थनिहुना । नद प्पातिहसियनपित नेसोनयह । नद तहे वेयावसितीनीड ननाविठे नि
 योगसोनागये गीतिह तहे मातिहवि डिगुगुगे, व्रदिहा सहुठदेनेद तहे
 नेसपोगसविठितिय । स । पागिन नि तेयहनोवेगय व्रडि-।- व्रडि मातिहवि डिगुगुगे
 शनौस । पागिन नि मानय नेसपेयतस शन सतामतेद डेन तहे डनिसन तमि ।
 मातिहवि श्रौवसतिस अगगनेगातो । न हतपुःव्रदिहा-
 गगनेगातो नववेगसपोतयोम, तहे डनिसन वनाविठे सति नि मातिहवि, तहे
 डनिसन मतिहविकसहन सति नि मातिहवि भोगगोतहेनस (तोताव वसित)

व्रदिहा हासोनगागसिद सेवेनाथ दोडेन मातिहवि वीक डनिस तो दाते थहे १६तह
 व्रदिहा मातिहवि वीक डनिस हेठद । न पागान ढाताधिप हानाय, श्वातगोन १०-
 ११तह येयेमवेन २०११ । नद तहे १७तह व्रदिहा मातिहवि वीक डनिस हेठद । न
 द्यौहाता, गेन २२- २३ येयेमवेन गेशन येन । न तहे व्रदियापाता श्वातवोनगागसिद
 वय मतिहवि पागसकनतिकि पामानवाय पामति थहे देताविद वसितोड । १७७ तहे
 वेगुस (दातौसि) व्रदिहा । १७सोनगागसिद । पाना७७७ पाहतिया अकदेमि प्पाव्रि
 पाममेठान, वेसदिस गौनदनिग पाना७७७ पाहतिया अकदेमि पनडिस, । स
 योनयेयतवि मोसुनेस, । स तहे गौनदस । नद प्पाव्रि पाममेठानसोड पाहतिया
 अकदेमि गौनददोनगागसिद नि । गठितेनाथ मानगेनौहेने मेरति तौक । वोननिग
 व्रदिहा हास, तहुस, दुठडविठेद तिसोववगितानि वय नितेनडेननिग नि तहे
 मुनकय । ७७डनिसोड गोवेननमेगनोनगागसितीनस व्रदिहा यागनोन नेमानि ।
 सठिनत सपेयतातो, वे ति पठागानिसिमोन योपयनगिहन व्रिठितानिस पो, तहे
 गुतहेनस ठकि श्वाककाण श्वासासहन, । नद असहेक पाहु, गैहे गैने गगागेद नि
 वडितनिगोतहेन । नतयिठेस सतोरिसि पोमसौने वानगेद । ७७ोन वेनडियनिग तहे
 सुनयेस । नद तानगेतौनतिनिगस

डतिनातुने नि तानसठातीनि सि । माणोन सिसे गीतिह व्रदिहा डायक ७७
 तानसठातीनि नि अमेनया नेसुठतेद नि अमेनयानस ठागगनिग नि टुठतिय
 वतिनातुने श्रौ पनायतसि वतिनातुने नि तानसठातीनि नि वोनह दनियतीनिस-
 ७७ोन मातिहवि नितो एगवसिह । नद ७७ोनोतहेन ठागुगुगेस नितो मातिहवि

अस उा नानसभानिस उोम तहेन भगुगोस नितो मातिहृषि ते योनयेनदे एगभसिह, सेपाथि, धानसकृति। नद हनिदि दुनयतीन। स वुडडेन भगुगोस नि तहे पनोयेसस धमियत नानसभानिस नितो मातिहृषि ते भमितिद; नद ति सि दोगे दमियतभ्यो नभ्य उोम एगभसिह, धानसकृति, हनिदि, सेपाथिनद भेगगाथि,। भल्लेगह तहेने ते सोमे श्येपतीनस अस उा नानसभानिस उोम मातिहृषि नितो तहेन भगुगोस सि योनयेनदे, दमियतेद नानसभानिस ते। गानि भमितिद; नद ति सि। गानि दोगे दमियतभ्यो नभ्य नितो एगभसिह, हनिदि, धानसकृति, भेगगाथिनद सेपाथि, वाननिग सोमे श्येपतीनस वृदिह योनयतेद सोमे गोतावठे पेसोनाथिसिोड यथासस भतिनातुने, तौक पेसिसिसीनि, नद नानसभानिस तहात भतिनातुने नितो मातिहृषि मोसतोड तहे तमि एगभसिह।। सु सेद। स। वुडडेन भगुगो नद नानसभानिस तौक उोम एगभसिह, हनिदि, योवकानि, थेठुगु, धुजानानि, श्रोदि, पानगादा, सेपाथिनद थेठुगु नितो मातिहृषि।। स योमपठेतेद; नद तहेसौनकसौने नेगुभानभ्य पुवभसिहेद नि वृदिह। मातिहृषि गोवेभस, पौमस, नद सहेनत सतोनेसि, गे तहे तहेन हनद, ते नानसभानिस उोम मातिहृषि नितो एगभसिह। नद ते पुवभसिहेद नेगुभानभ्य नि वृदिह।

वश्यएहश्च वेयामे। मातिहृषि इतिनातुने भोवेभेन। सो, वश्यएहश्चौस उोम दाय गोत तहे मातिहृषि इतिनातुने भोवेभेन। मानये सतावभसिहेद मसियोनयेपतीनस गोत यथेतेद तहनोगह वश्यएहश्च थहेौभ- कनौन उायतस, तहे गोत- सो-गेववृसि पठेतोड सोमे पौपठे तो कठिभ मातिहृषि तहनोगह तिस तौनि निसततितीनस तहे धाहिया अकादेमिनद तहे छस्ड।। सु गोतनहेद थहे ढगिहन तो इनडोनमानि यामे नि हनदय धनि वृतिगिति उपाठ। सकेद डोन निडोनमानि उोम धाहिया अकादेमि तहनोगह हिसि ढथश्च।। पपभियातीनि दातेद २३०८२०११ (७७ गो ढथश्च- १२५)। नद सुगहन निडोनमानिगेन "अससगिभेन। अससगिभेद वय मातिहृषि अदवृसिोनय गोतनद, धाहिया अकादेमि नदने तहे योनवेनेन सहपिोड धनि

वदियागानह हहा ' वदिति' " थहे निडोनमातीनि नियुठुदेद । पनोपोसाथ नेयेविद, । पनोपोसाथ नेजेयतेद, । गद । पनोपोसाथ केपत नि वेयागये" थहे सतातुतोमय मागदातोमय निडोनमातीनि सुपपवेदि वय तहे पाहिया अकडेमि गोमतेद । वरियुसि यनियठे ०७ मातिहवि-सपोकनिग सो-याठेद एतितेमातेमस, हेठठ-वेगतु पोन माकनिग मातिहवि। ठगुगुगे- "०७ तहे मातिहवि मनाहमनि, डोन तहे मातिहवि मनाहमनि । गद वय तहे मातिहवि मनाहमनि" मोने तहान टं०%०७ तहे ।ससगिनमेगतसौगत तो तहे डनेगिदस, नेठातविस, । गद । यटुगितानयेसो७ तहे १०- मेमवेन मातिहवि अदवसिोमय मोमद सो ।ससगिनमेगत तो पर हागदसिह शुनासाद मागदाथ, पर ढाणदो मागदाथ, पर मेयहान थहाकुन (तहे गयोतेसत पहेमन-सतोमय-गेवेठ नैतिनो७ मातिहवि, तहे गयोतेसत एविनिग पौनो७ मातिहवि। गद तहे गयोतेसत एविनिग मातिहवि देनामातसित; नेसपेयतविठय), पर उमेसह श्वासौग, पर उमेसह मागदाथ, पर ढामदेव शुनासाद मागदाथ " हहापुदान", पर युगगागद मागदाथ, पर पागदेप पुमान पाडीम तो पर अगानद पुमान हहा श्रौहगे वेमय मेमवेनो७ तहे मातिहवि ।दवसिोमय वोमद सि हानद नि गठेवैतिह तहे पाहिया अकडेमिो कठिठ तहे मातिहवि। ठगुगुगे तहेन गैहेने ठेसि तहे होपे? थहे देमगद डोन मतिहवि सताते वय तहेसे पौपठेठिठ से तहान १० मातिहवि मनाहमनि डमठिसिठुठद ठौत तहे मतिहवि सताते थहेन गैहेने ठेसि तहे होपे? हेने ठेसि होपे पर मेयहान थहाकुन हास ययोतेद । पानाठेठेठ मातिहवि सतागे । गद तहेतने, । सठाप गेन तहे शसितनिग सठापसतयिक हुमुनसितयि मातिहवि तहेतने पर उमेसह श्वासौग सि । दसियोवेमय ०७ तहे श्वानाठेठेठ पाहिया अकडेमि शौतमय डेसतविठ नोगानसिद वय वदिया पर हागदसिह शुनासाद मागदाथ, पर ढाणदो मागदाथ, पर हहापुदान, पर पागदेप पुमान पाडी। गद पर उमेसह मागदाथ हवे पुमपेद तहेने नेमय, गौठान, । गद तमि नितोम मातिहवि। ठगुगुगे थहसि ठगुगुगेठिठ एविपनो७स मे गविन वेठौ: -

घौगठे थनागसठाते:

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन

नहेन श्रीकिपिदा नानसओने:

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन?नासकृणनानसओनेदुपुप=योने- मोसुसेदुदुमिति=२०००६६अगुगो=मा

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन:थनानसओनेन

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन:थनानसओनेन हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन:थनानसओनेन

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन?नासकृणनानसओनेदुपुप=योने- मोसुसेदुदुमिति=२०००६६अगुगो=मा
हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन:थनानसओनेन

हानपूँगीगोयिभनानसयोनसोद्युयिष्यहोसिथनोपेयन:थनानसओनेन

[मोणदाय, मायु ंद, २०११

थहे नमहिनानि श्रीकिपिदा सिनितितेन नि नमहेणपुर्ना

थहसि सि नहे कनिदोड नानयिषे नहान हस मानय पौपथे' सेयेस गणडेदोवेन
शन सि ।वुन सनानदानदस नद सयोनितडियि द्युमेननस, नद ति सि ।वुन
अगुगोस मोसगोड मय नेदेनस हवे नेवेन होनद ।वुन दोन नहे पौपथे नहान दो
सपोकगेोड नहे अगुगोस नहान ले योनसदिनेद नहिनानि, ति सि शनयेमेथय
नेथेवानन, नद ति हस निपथयितीनस डेन श्रीकिपिदा

थहसि सि निडोनमानानि पनोवदिद वय उमेसह मानदाथ नहाने शपथानिस नहे
"नहिनानिगुपुपुड अगुगोस" नितिह नहे मानिहथि अगुगो:

पेथेगग (१८७६१८८३) नद हेननथे (१८८०) नेगानदेद मानिहथि ।स ।
दाथियनोड एसतेनन हनिदा; मोमेस (१८७२नेपनित १८६६: ८४- ८५),
नेगानदेद मानिहथि ।स । दाथियनोड नेगगाथि, घनेनिसोन हस दोगे । गनेान
सेनप्रयि नो नहे मानिहथि अगुगो, हौवेन, हे नयेदौहेन हे गावे । डअसे नोतीनाथ
तेनमोड "नहिनानि" अगुगो ।डतेन नहान निसतेनन अविगुसितस सनानतेद
यातेगोनडिनग मानिहथि ।स । दाथियनोड "नहिनानि" अगुगो; ।अनहेगह नहेने
सि नोतहनिग कनौन ।स "नहिनानि अगुगो" नद वोतह मानिहथि नद नमहेणपुर्ना
ले सपोकेन नि नहिनानि (ोड शनदा) ।सौथे ।स नि सेपाथे

उमेसह सिौनकनिगोन तहे वेयावसितानिोड मेदाश्रौकि डोन तहे मातिहवि
अनगागे। नद। स तहसि अनगागे सि युननेगनअय नि तहे शनयुवातो, तहे अनगागे
योमभतिगे दोस तिस हे दधिगिनये। नद तनयनिगा तो गदेनसतानद डि मातिहवि
याग हवे। पअये नि तहे गहिन श्रौकिपिदा थहे निडोनमातानि पनोवदिद वय
उमेसह माकेस ति टुति यथोन: " गो"

थहसि सतविठ वेवेसु सौतिह तहे मसिनोमेन तहान सि तहे गहिन श्रौकिपिदा
थहे अनगागे सेद डोन तहे वेयावसितानि। नद तहे। तनयिठेस सि गहोनपुना
गहोनपुना हास तहे श्पश्रो- द३८- ३ योदे " वहे"

अने यु सतविठ डेठवौनिगा। ७७ तहसि? श्रोक, तहेने सिगे टुसतानि ३। म गोन
। सकनिगा: हौ। वोन तहे प्पातिहसियनपिन?

थहगकस, वेनामदम]

एशयेनपत डोन। मातिहवि- जुनगाठ पुवठसिहेद। स श्वथ (डोन वदिह २०११:
२२; वदिह: अ डोनतगगिहणअय मातिहवि- जुनगाठ ३ससे ८० (अपति १५,
२०११), घाणेनदना थहाकुन। [द] हतपुः वदिहायोनि" घाणेनदना थहाकुनोड म्मौ
वेठहगिनायुसिअय मेतौतिह मे। नद योननेसपोनदेद। त वेगगतह। वोन मातिहवि,
ोडडेनेद व्राठुवठे सपेयभिनसोड मातिहवि। मानुसयनपिनस, पनितेद वौकस,
। नदोतहेन नेयोमदस,। नद पनोवदिद डेदवायक नेगानदनिगा नेटुनिमेगतस डोन
तहे गयोदनिगोड मातिहविनि तहे उधष" - अगसहुमान श्वगदेय। ।

थइहउथअ उमइधश्रोयए षे तहे डनिठ उमइधश्रोयए मतिहविकसहाना
अपपठियातानि (माय ५, २०११) वय षह अगसहुमान श्वगदेय। त श्वगे २३ोड तहे
वदिह ८०तह सिसे (थनिहुना वेनसीनि) सि। तनयहेद" ढगिने ११: एशयेनपत
डोन। मातिहवि- जुनगाठ पुवठसिहेद। स श्वथ (डोन वदिह २०११: २२"। नद
। त श्वगे १२ वदिह सि नियठुदेद नि ढेडेनेगयेस वदिह: अ डोनतगगिहणअय
मातिहवि- जुनगाठ ३ससे ८० (अपति १५, २०११), घाणेनदना थहाकुन। [द]

हान्तपूःवृद्धिहयोनि । नद नोषोऽ वृद्धिह' से दतीन सि । यकगौषेदगेदोन श्वागे १२
" घाणेनदना थहाकुनोऽ मौ वेधहगिनायुसिष्य मेतौतिह मे । नद योनसपोनदेद
। न वेगगह । योन मातिहृषि, ोऽडेनेद व्राणवषे सपेयमिगस ोऽ मातिहृषि
मानुसयनपितस, पनितेद वोकस, । नद ोतहेन नेयोदस, । नद पनोवृद्धिद
उदवायक नेगानदनिग नेटुमिभेगतस डोन तहे नयोदनिग ोऽ मातिहृषि नि तहे
उधष"]

थहे मातिहृषि सपोकनिग । नो सि सहनिकनिग । न सि सहनिकनिग हे तु ।
योनसयुसि- सुवयोनसयुसि पोषयिय ोऽ तहे घोवेनभेगतस ोऽ नददी । नद
मेपाथ, । नद तहे सतितानि वेयामे यनतियाथ हे तु तहे निव्रासीनोऽ हनिदनिग
मेपाथि मेदी । नद तहे वसिदे द्युयानिगथ सप्रसतेम नि मातिहृषि- सपोकनिग
। नोस, । नद हे तु तहे धानगे- सयाथे मगिनातानि, ैहियह हस हपपेनेद नि नो
सनिगथे गेनेनातानि थहेटुसतानोऽ हनिदिसौ तो ति तहान व्राणजकि, अगगकि
। नद गौ थहेनह, पुनजापुनानिय धनगुगोस सहैषेद गोन तहे नायति सुपपोनोऽ
सुपपोनतेनसोऽ हनिद, डनिसन नि तहे नामोऽ नेधगिनि । नद सेयोनद नि तहे
नामोऽ यासते थहनोगह तहसि तहेय ददि नोन सुपपोन व्राणजकि, अगगकि,
थहेनहीन पुनजापुनानि; वुन तहेय तनेदि तौकैन मातिहृषि, ैहियह नेसुषेद नि
तहेकैनिगोऽ व्राणजकि, अगगकि, थहेनहीनद पुनजापुनानि । नद तहसि,
तहे मातिहृषि- सपोकनिग पोपथे, मोने सो तहेोऽडयिषिस (शैषिषे शपथानि ति
धतेन), । नद । नद नेसपोनसविषे, । नद तहेय तनेदि तो देधमिति मातिहृषिीतिहनि
तहे तौ यासतेस । नद डुन दसितनयितस अथेोतहेन पोपथे । नद । नद, तहन
तहेसे, ैने योनसदिनेद नोनतहेन, सुतहेन, े। सतेन, । नद ैसतेन
देव्रानिगस ोऽ सो- याथेद पुने मातिहृषि, ैहियह ौस डयितानिसिष्य
योनसदिनेद । नद वेनिग सपोकेन वय तहेसे मातिहृषि ननाहमनिस् प्यानगा
प्यासतहासोऽ मादहुवानि, यानवहनगा, पाहानसा । नद पुपुथ दसितनयितस
धेन तहे धासत ४५ योनस तहेोऽडयिषिस, येस, ३ याथे तहेमोऽडयिषिस,
तहेोऽडयिषिसोऽ तहे मातिहृषि धेपानतभेगतोऽ पाहतिपा अकादेमि, ददि नोन

तत्र तो ।ययोमभेदतो तहे पौपथेत्तसदि तहसि उयिततिस्सिष्य देवमितिद दोमनि
 भुत तहे माजोत पनोवथेम थेसि सोमौहेते थसे थहे सथौ पौसिगनिगौस गविन नि
 मान्य दसिगुसिस, वे ति तहे दुधतय तोप-हेवप्र द्युयातीनि सप्रसतेम, रैहियह
 नेगथेयतेद पनमान्य ।नद मदिदथे सयसौथे द्युयातीनि तहनोगह तहे मोतहेन
 डगगुगे मातिहथि, ते वे ति तहनोगह तहे योनयेपत तेद दधिथत, रैहियह
 नितिीथथय योनवेगेनतथय देयथतेद थगगुगेस थके मातिहथि ।स दधिथतस
 एथेभेनतान्य द्युयातीनि तहनोगह मातिहथि ।स । गोन-सतानतेन वेयुसे तहे
 मातिहथि वौकस पुवथसिहेद वय तहे गहिन थताते थेशतवौक शुवथसिहनिग
 छोनपोनतीनि डमितिद सेभेद तो वे नि अत्राहातत, ति ।स गोन उति डोन
 थहथिदेन डुनतहेन, तहे ।तहेनस ।नद सुवथेयतस सेथेयतेद डोन तहेसे वौकस
 हद । यासतेसित वसि मातिहथि वेयामे । तौथ डोन यासते- वासेद पोथतियस,
 ।सोनये हनिद हिन वेन । तौथ डोन तेथगिनि- वासेद पोथतियस थतथिथ, तहेसे
 तेदडयिथिस, तेद तहे मातिहथि थेपानतभेनत तेद थहतिथ्या अकडेभा, ते
 तेसदिनिग नि तहेनितौन वुथित गहेततो, वेनेडततेद ।नय तहनिकनिगोन वसिीनि
 अगोनहेन तेसोन डोन तहे पनेसेनत पथगिहत तेद मातिहथि सि तहे
 पोथयिथु नदेनताकेन वय तहे तस थोथेथेतोनस तेद मतिहथि (पेनमानेनत
 सेततथेभेनत भामनिदानस तेद छोनगौथथिस), रैहोम तहे सप्रयोपहनतस याथथ
 थनिग तेन तहे गतेन कनिग (ढाणा माहानाणा) तेन मतिहथिसह (थनिग तेद
 मतिहथि) तहेसौते भेने तस थोथेथेतोनस, तहे गिहत डोनरैहियहौते गविन तो
 तहे हगिहेसत वदिदेनस पेनमानेनतथय; ।नद तहेते ।स गोनते सुथह मतिहथिसह
 (तस थोथेथेतोनस), वुत मान्यरैहिन तहे वोनदेनस तेद मतिहथि थहेसे तस
 थोथेथेतोनसे मपथेथेद मोसतथय तहेसे तौ यासतेस डोनम डुन दसितनयितस
 नि तहेन तेनयहनदसि वेनतुने, ।नद ।स तहे सेथेयतीनि ।स वासेद तेन
 सप्रयोपहनयय, सो तहेतौनक सुडडेनेद थो, तहेय मिपोनतेद तहे थतहथिथस
 डोनमुत्तसदि तहे मतिहथि तेगीनि थहे माससेस तेद मतिहथि सुडडेनेद । वथौ
 डोनम तहे द्युवथे-दगेदौपोन ढनिसत, डोनम तहेन पौपथेते हदि गोन योनसदिन

तहेम ।स तहेनि गौन ।नद सेयोनद, तहेतुनसदिनस ठौतेद तहेम म्मौ ।उतेन सोमे
 तमि तहेसे तुनसदिनस, तहे गोन-मातिहृषि सपोकनिग पौपठे, डुनद ति
 योनवेगेनिग तो देयठाने तहे माससेस (गोन वेठेनगनिग तो तहे तौ यासतेस उओम
 डुन दसितनयितस) ।स गोन-मातिहृषि सपोकनिग पौपठे, ।नद तहेउडयिथिसू
 सप्रयोपहनतस उओम तहेसे तौ यासतेस उओम डुन दसितनयितस तायतिथ्य
 ।गतेद तो ति म्मौ तहेसे तुनसदिनस, तहे गोन-मातिहृषि सपोकनिग पौपठे,
 डोनमेद । माजोनतिय नि मानय पठयेसोड मतिहृषि, ।नद तहेय ठेद तहे तुमुन
 तहान मातिहृषि, ठकि धामसकानि, सि ।गुपपेन-यासते पहेगेमेगेन, ।नद तहुस
 तहेय ठेगतिमिडिद तहेनि ।नति-मातिहृषिसिनागये (।७७ तहेसे उयतस हवे वेन
 वनठिठानिगठय दोगतौतिह नि तहे मातिहृषिसोवेठसोड षह हागदसिह शुनासाद
 मानदाठ) ।नद तहेय पनोपागातेद तहे यासोड हनिद, उनिसत वासेदोन मेठगिनि
 ।नद सेयोनद वासेदोन यासते तुनौह्युन पौपठे उ७७ गितो तहेनि तनाप, तैह्य
 तहेसे तश-योठेयतोन माहानाणस ददि गोन योनसदिन तहे माससेस ।उ
 मतिहृषि ।स तहेनि गौन ।नद मिपोनतेद तहे पेनपेनानातोनस तो ठौत तहेनि
 माससेस? थहे समिपठे ।नसौन सि तहान मेनति तौक ।दौगौनद ठेप नि ।यतानि-
 वासेद तश योठेयतानि नगिहानस ।७७ेयतानि

श्रौ सतानतेद उओमोने ।नद नेयहेद तुमवेन तह्ये, तहेन तहिनतय ।नद गौ तह्ये
 हुनदनेद!! ।नदौ मे गनौनिग- ।नद मे तह्ये हुनदनेद गोनतुन ।नद मे यनोतनिग
 । गनानद हसितोनय हानपःवृदिहयानि वृदिह इसन मातिहृषि
 डोनतगिहानठय - ह्योनगाठ इषषाम २२२२-५४७श हस -पुवठसिहेद तिस
 ३००तह सिसु नेयेनठय श्रौहेन ३ वेगान तहसि वेगनुने नि तहे योन २००० गौतिह ।
 धामसुनग थव गेन ।पपठानिये, ।नदौहेन तहे शसितनिगौस पोसतेदोन पतहोड
 हुठय २००४, ३ मोवेद ।७७ ।ठेने थहेगेन इसन हागानय २००७, ३ सुददेनठय
 तहेगहन तो नियठुदे तहे पुवठयि, ।स ।उतेन सोमे गनौनदौनक शौस नेदय डोन
 ति ३ देयदिद तो -पुवठसिह वृदिह ।नद ददि पुवठसिह ति, गेन । डोनतगिहानठय

वाससि, तहे डनिसा सिसे तहात यामेग १सा हानुनय २००८ तनेदि तो नियुठे १७७ तहे पनेवृसि पोसास

ढोम १७७ योनेनसोड तहसि पठनेतो।तह, तहे पौपठे तनेदि तो यहागो तहे देसतनियु १७७ मतिहषि। तह मातिहषि।सौ पहे असहसिह अगयहनिहा, पहे मुनगाजा (मानोण पुमान प्यान), ले पानतोडुन तोम; तह तोगेतहे। ले तहे हुनदेद गोनो गौ श्रौतिह तहे हुनदेद पठुस सिसेस, ३०, ००० पागेस १७७ मातिहषि। तने हुनदेद अयोनदस योनपो। योनोनि। तह ११००० थनिहना। मानसयनपित तनसयनपितानि। मानिनिह। ५००००-१। तह मातिहषि-एगठसिह वोयावुठानय दातावासे सौ। ले ३५० सानोग, तह ३५० गुनहेस

वदिह हास डयेद यहाठेगोस। तह हास तहिसतोद तहेम श्रौ नेवेन सहसिक डोम। तह टुसतानि। तह पनोवठेम थहे टुसतानि। तहे सतातोड मतिहषि। सि ले सुयह टुसतानि। तहे होडतेन योमेस याठेनिग। श्रौ। ले नि डवुनोड तहे सतातेस १७७ मतिहषि। तह सोवेनेगिन वोनदेसोड श्रद्धा। तह सेपाठ श्रौ। ले नि डवुनोड मतिहषि। गुन तहियह तयपे १७७ मतिहषि, तहात तयपे तहात। तह हद हुरनिग तहे आमनिदानि दाण, तहे मेगस १७७ सुसतेगानये। तह वेनेस १७७ शसितेनये नेमानिह। तनेदि डेन। डै यासतेस? श्रौ। तहात युठुने तहात शसितेद तहिसि "अनयावानता-श्रद्धानि सातानि गौसपापेन"। तह तोहेन श्रद्धुसतनेसि हुरनिग तहात दाण श्रद्धेन डमठिसि १७७ मतिहषि। गाठेपेद १७७ तहेसे मोसतय डोम। सनिगठे यासते!! सौ, ले गोन नि सुपपोनोड तहात मतिहषि, तहात मतिहषि। तहे मातिहषि। तहे वे सौठेद,। स ति सि वेनिग सौठेद वय तहे पाहिया अकादेमि। तह तहे छरुड, सौठेद वय। तहे होडेन डमठिसि श्रौ। ले गोन नि डवुनोड तहात मतिहषि। तहे तहे पनोयेदनिगोड तहे वेगसिठानि। ससेमवठु तहे वे हेद नि। तह गोगोतहेन तहात मातिहषि। थठे तहे मसिगनिगसोड तहे पौपठे १७७ मतिहषि। ले। तहनेससेद, तह यानगोन सुपपोन। तह मतिहषि। सताते मोवेनेग। थो तहे पौपठे सतनिगिग हाद डेन

मतिहृषि सताते सहोष्ठ सतिग। पनोतेसत वेउने तहे। इवसिोय वोलद मेमवेनस
 ोड तहे पाहतिपा अकडेमि छरुड। गद सनिग पातगीतिय सोनगस नि उनगतोड
 तहेनि ह्येसस, गद पनेससुनसि तहेम गोन तो मसिसे गोवेनगमेगत उगदस
 वयु नसयुपुष्ठेसथ गौनदनिग उगयतीगसोड अकडेमिगसदि मतिहृषि। गद
 गोन तो मसिसे तहे पौनोड। ससगिगनिग तानसठातीग। गदोतहेन गिहस तो
 तहेमसेथेस। गद तो तहेसे पोपथे गेहे। मे हेथ-वेगनु पोग देसतनोयनिग। गुन
 ठगुगुगे थहे दथर। पपथियातीग वयु पहे वनिगि उतपाथ हस तहौनतेद। ग
 । ततेमपत तो सतानगुठते मतिहृषि, वुन डि तहे सुपपथेमेगतायगौनक सि गोन
 दोगे तहे सगिसिगेन देसगिग। गेसुनउये। गानि औ गेटुसत तहे मतिहृषि
 । इवसिोय वोलद मेमवेनसोड पाहतिपा अकडेमि मिमेदीतिथय गेनुनग तहेनि
 । ससगिगमेगतस ताकेन नि तहेनि गामे। गद तहे गामे। उ तहे मेमवेनसोड तहेनि
 उमथिय औतहेगौसि, पनेससुने सहोष्ठ वे मुगततेद तो उनये तहेसे १०-मेमवेन
 मतिहृषि अदवसिोय गोलद मेमवेनस तो व्रोठुगतामथिय गेसगिग उनोम तहेनि
 मेमवेनसहपि नि तहे ठानगेन गितेनेसतोड मतिहृषिषे, गैहान सिो। गसौन व्रिडि-
 । व्रिडि देमागदोड मतिहृषि सताते: ति सि। यातेगोनयिाथै स

थहे तेयह्णोठोगय- येगतायि वेगनुने याथेद वदिह वेयामे। सुययेसस थहे गातवि
 सपोकेनसोड मतिहृषि गेसदि नि गहिन। तोड र्णदी। गद धुनह- एसत मेपाथ
 थहे गेन योगनेयतवितिय हद वेगे सतनेमेथय पौन नि तहेसे मोस थहेन हौ तहे
 गुनहेनस, गौ। गदोष्ठ, सतानतेदु सनिग उगथिोदे उनौनतिनिग। उन वदिह थहे
 मेपाथ थदि। उड मतिहृषि हद वेगु सनिग शुनेति, प्यानपिुन, हमाठोतय
 उगतस, तहे प्योठकाना मतिहृषि-सपोकनिग पोपुठानिग हद वेगु सनिग तहे
 मानातर्ह उगतस। गद तहे नेसत हद वेगु सनिग तहे उगतस वासेदोण तहेोष्ठ
 देमनिगतोन केयवोलद अथथ तहेसे तहेने तयपेसोड उगतस। मे अषछरु उगतस
 औ गेसोनयहेद तहेसे उगतस। गद पनोवदिद उगत योगवेनतेनस तो। मेपाथ-
 वासेदु। गहोनस औ। उसो पनोवदिद पहोनेतयि। गद देमनिगतोन- वासेद उगथिोदे
 नतिनस तो। उथ मतिहृषि। गहोनस, गेहे। सकेद उन तहेम औ। सकेद तहे। गहोनस

डि तहेय माय सेनद तहेनि यनोतानिस नि नय डेनत, वुत न तहे सामे तमि,
 नयुनागेद तहेम तो से उगयिडे डेनतस थहे तेयहनियाथ सुपपोन तहानौ
 पनोव्रदिद नेसुगेद नि गुमेनुस नेयेपितसोड तयपेदे नतनेसि डनोम पेनसोनस
 थके पर धानगेसह धुनजान, गैहे नि नोतने सतागेस हद वेन सेनदनिग तहेनि
 यनोतानिस नि तहेनि हनदौनतिनिगस अस पर धानगेसह धुनजान गौस गौथ
 वेनसेद नि देमनिगतोन केयवोनद तयपनिग, सो हे मादे गौनदेनडुनु सेोड तहे
 देमनिगतोन उगयिडे तयपौनतिन हे सेनत तहान सोडतौने तो सोमेोड हसि
 डनेनदस तौ नद हौस युनतौसे गोगह तो निनमिते वुत तहसि तो स, एतह्युगह
 तहेगौस गो गेद डेन तहान पर पाकेतागनद एसु सेद तहान सोडतौने नद सेनत
 हसि सहेनत सतोनय काथनानसिय दानुसा नि उगयिडे, नद गौस पुवथसिहद
 निगेोड तहे सिसुसोड व्रदिह थहे तेयहनोथेगय- येनतयि वेनतुने याथेद व्रदिह
 वेयामे । सुययेसस वेयुसौ मादे ति समिपथे नद नितेथेगिविथे न । तमिहैने वेन
 तहे तेयहनोथेगसितसौने गोन सुने वुत तहे डुनुनेोड तहसि उगयिडे थहे व्रनिताथ
 मेदुमिगौस वेनिग सेनौतिह नशेतिय वय तहे एतिनानय डनोतनतिय, नद तहे
 योपय- पासते सयसतेमोड तहेडनौस नामपानत नि तहेसे दायस नुनौ ।ससुनेद
 तहे नहोनस तहानौतिह व्रदिह तहेय माय नेसा ।ससुनेद तहान तहे योपयनगिहन
 तहेवेसुथुथेद गोन वे सपायेद, गैथि न तहे सामे तमिगौने डनिम, तहानोनथय
 डेन डेनोड मसिसुनेोड तेयहनोथेगय सहेथेद गोन सतोपुन वेनतुने मदीय
 श्रौतिह तहे नितेनगेत नद तेयहनोथेगय, तहे गोगनापहयि वाननेनि वेयामे
 गोन-ससितनिग थहे नदोड तहे पनोवथेमोड दसितनविनानि नि मातिहथि
 एतिनानुने वेयामे पोससविथे दे तौन तेयहनोथेगय- डनेनदथय नततिदे नद ति
 पनोवेद । वौन डेनतुन मातिहथि एनगुगे शनद ति मादे तहे तेयहनोथेगय-
 येनतयि वेनतुने याथेद व्रदिह । सुययेसस श सिस तहे सुययेससोड तहे
 पानाथेथे मातिहथि एतिनानुने मोवेमेनत

हश्रीमश्रीउठ षरुडुशमघ श्रीठ घश्रीमघएषह उशुश्रयहैश्रैश्र (ठरुडुषथ गै
ठश्रमश्रीमश्रथह ह्रश्र, थहएश्री गै उथश्रैश्रीमश्रथह ह्रश्र 'श्रषहश्रीम' (श्र
शुश्रठश्रुडुएड ह्रषथश्रीठे श्रीठ मरुथह्रुडुश्र श्रीमथ मश्ररुथह्रुडु
डुश्रएठश्रथउठए श्रीहे थश्रीथश्रै रथष मएएथ गएरुमघ ठएडथ मश्रीठए
रुमथएमषएडे?)

श्रीस गीत सुनपनसिद, गह्रुगह र मुसत हवे वेगहैग र सौ । मोगोगनापहो
घागगेसह उपादह्याया, गैहसे योपयनगिह सि वेगिग हेउद वय पाहगिया
श्रकटेमि, गहेगुगहोड गहे मोगोगनापह सि उदायागातह ह्रह 'श्रसहेक' र
गह्रुगह गहान उदायागातह ह्रह 'श्रसहेक', गैह हास वेग गविग गहासहा
षाममान ।उसो, वय गहे सामे पाहगिया श्रकटेमि, गौउद दो सोमे पुसगिये गुन
गुनह गद रेसोनयह सेमे उरुसवि गि पाहगिया श्रकटेमिमोगोगनापहस, ग ठेसत
गहान र उेगद गि गहसि मोगोगनापह

र सोनयहेद गद सोनयहेद गह्रुगह यहापोनस, गहान गौ गहेगुगहोडसहौ
युनागे गुन गहेगुगहोड ठके ढामागातह ह्रह सेमस ।सहमेदोड गहे गौतस गद
डुडसपनगिगोड घागगेसह उपादह्याया हे गनेसि तो योगडुसे गहे सिसे, वुन
गहेये सि गो योगडुसागि गौ ग ठेसत सगिये र००८ गुन गि र०१६ पाहगिया
श्रकटेमि सेमस तो यानय गुन गहे यासतेसिग गेगद उदायागातह ह्रह
मोयकगिगठय पनेगेगदस तो सोनयह हसि गामे, ठगिगैतय, गैहेये गीतहगिग सि
गहेये तो सोनयह डेन, येत हे युउद गीत मुसतेन गहे युनागे, तो गेउठ गहे
गुनह, गद गेदसुप पुसत रेपोनगिग गहे डायतस गि र०१६ गहान
थगिसहयहनदना गहानतायहानया ।उयोदय हास पुवठसिहेदौय वायक गि १८५८

थहे हेगोन कठिठगिगोड घागगेसह उपादह्याया वय शुनोड ढामागातह ह्रह सि
वेगिग गाकेन डेनौनद वय पाहगिया श्रकटेमि, येठहगि । मोसत हयपोयनगियाठ
गौय

ढामागातह हहा' स ओवसयुनागतसिम व्रसि - व्रसि श्वागण सि व्रदिगत ओम
 गै शामपठे थहे गितेन- यासते मानागि नि श्वागणिसौष्ठ कर्णौन तो हमि (वुन
 हे यहेसे तो केप तहे यौसहन श्वागणसियेत- गैहयिह हास वेन गेठसेद वधु स
 नि २००८), गद तिौस।पपायेगत तहत तहे गतेत गावया- गयाया पहिठिसोपहेन
 धागोसह उपादहयाया मानोदि । "छहामकानगि" गदौस वोन उवि योनस
 ।उतेन तहे दोगहोड हसि उगहेन (सेुन श्वागण गौकस वी७ ३ & ३३।वाठिवठे
 ।। हगतपुःव्रदिहयोनियोतहहिम) पहे यगिसह छहनदना गहतगायहनया
 गैतिस नि तहे " हसितोनयोड सावया- सयाया नि मतिहठि" (१८५८)

" थहे डामठिय गैहयिह गौस गिडेगानि नि सोयाठि सगातस सि गौ शगनियत नि
 मतिहठि- - - - - धागोसहा' स डामठिय सि योमपठेठेय गिनोयेद गद गै ।ने
 गते शपेयतेद तो कर्णौ वेन हसि उगहेन' स नामे- - - - - अस तहेने सि गोगहेन
 नेडेनेनये तो धागोसा गै याग ।ससुमे तहत तहे डामठिय दौगिदठेद गितो
 निसगिनडियानये ।।गानि गद वेयामे शगनियत सौन ।उतेन हसि सोग' स दोगह'
 [१८५८, छहापतेन ३३३ पागेस ८६- ८८), गैहयिह सि । तोता७ उठसेहोद हे
 गैतिस डुगतहेन तहत ।७७ तहसि गिडेनमानागिगौस गविन तो हमि वय श्चोड ढ
 हहा, गद हे सेमेद तहनकडु७ तो हमि

थहे उठठौगिगे सयेनपत ओम श्रुन श्वागण श्वावागदह (पागतस ३४३३) सि
 वेगिग नेपनोदुयेद वेठौ डोन गेदय नेडेनेनये:

-

महाराज हसहिदेव- मथिठिक कर्माट वंसक ज्योगिनीश्वर गकुनक व्राम-
 नाकाकमे हसहिदेव गायक आकागाजा छठाह १२८४ ई मे जन्म आ १३०७ ई
 मे गजसहिसन धयिसददीन गजकसँ १३२४- २५ ई मे हकि वाद नेपा७
 पठावन मथिठिक पञ्जी-पुनवन्धक व्रामस, कायस्थ आ कषणायि मय्य
 आधिकारिक स्थापक, मैथिलि व्रामसक हेतु गुमाकन ह, कर्मा कायस्थक

येथे संकलनात, आ कृषानायिक हेतु व्रजियदनात एव हेतु प्रथमतया नयिकाना
 मेवाह ह्यसहिदेवक पुत्रेणमासं- आ ई ह्यसहिदेव नाग्यदेवक वंशजा एवाह, जे
 नाग्यदेव काण्माट वंशक १००८ शाकेमे स्थापना केने नरथ- गन्दैद शूद्रयं शशा
 शाक व्रुषे (१०१८ शाके) मथिषिक पम्पडति ठोकना शाके १२४८ तदनुसा १३२६
 ई मे पञ्जी-पुनवन्वक व्रजमान स्वूपक पुनानमक नान्मय कएवगर्हा पुनः
 व्रजमान स्वूपमे थोडे वुदय व्रिषिसी ठोकना मथिषिश महानाण माधव सहिसं
 १७६० ई मे आदेश कएवाए पञ्जीकानसं शाय्या पुसकक पुनमयग कएवओवगर्हा
 ओकन वाद पाँजमि (कप्यनो काठ व्राम्माति १६०० शाके माने १६७८ ई वासनावमे
 माधव सहिक वादमे १८०० ईक आसपास) श्रौतानयि नामक एकटा नव व्राम्माम
 उपजातिकि मथिषिमे उपपत्ता मेव

षो, तहे श्रौतानयिसास । सुव- यासते । मोसे । नुनद १८०० एए । स पेनु । नहेनयि
 पाणजा उषिस पह अगसुहमान श्वानदेय । घाणेनदना थहकुन १०८ मी येवर्हा
 पनोवर्दिद मे गौतिह दगितिउिद योपसि १०८ तहे गेनेवोगयिाथ नेयोमदस १०८ तहे
 मातिहवि मनाहमनिस थहे पाणजाकिना- सौहोसे डामविंसि हवे मागितानिद तहेसे
 नेयोमदस डोनगेनेनागानिस । नोडनेन नेयुयानान तो । एवौ । तहेस तो पुनसे तहेनि
 नेयोमदस श सिस । मातने १०८ ' नितेवयेयुताथ पनोपेनय' तो तहेम ३ गौस
 डोनतुनाते नुगह तो नेयेवि । योमपथेते दगितिउिद सेतोड पाणजा नेयोमदस डोनम
 घाणेनदना थहकुन १०८ मी येवर्हा नि २००७ [देयासगानिग तहे मनाहमनि नि
 मेदेव्राथ मतिहविः श्रौगिनिस १०८ घासते इदेनतिय । मोनग तहे मातिहवि
 मनाहमनिस १०८ मोनतह महिन वय अगसुहमान श्वानदेय, अ दसिसेनागानि
 सुवमतितेद नि पाणजा उषिसमेन १०८ तहे नेटुमिमेनस डोन तहे देगने १०८
 योयतो १०८ श्वविषिसोपहय (हसितोनय) नि तहे उगविंसतिय १०८ मथिहगान
 २०१४]

डोनेन तहेसे श्वानजा मानुसयनपितस गैने पवोदेद तो वदिह श्रौतर्हा
 । नौवदिहयानि । नद गौगथे वौकस नि २००८]

थहे सो-याउठेद माहनापास ोड धानवहनगा गैरे पेनभागेनन सेततठेमेनन
 डामनिदानसोड छोनगौठठसि, नद नहेगैरे सो भागय नि ननतिंसिह र्गदा,
 वुन नि सेपाठ नहेगैरे नगे र्ग नहे नगेसुगेोडुन वौक (श्वागणश्चिवावागदह व्रोठ
 ३४३३), गै हवे ननायहेद योपेसि ोड गेगेठेगय- वासेदु पगनादातीनि नदेनस
 (पनोड ोडु पगनादातीनि डेन यासह) षो, वेडेने १८०० छए, नहेगैरेस गो
 सनोनयिा सुव- यासते नि ननतिंसिह र्गदा नद नहेगे सि गो सुयह सुव- यासते
 गैतिहनि मातिहठि ननाहमनिस नि सेपाठ पाननोड नतिहठि व्रेन नोदाय पनोनयिा
 वेडेने नहान नेडेनेद नो डेठठौनिगा सोभे द्रुयातीनि सनोम नि ननतिंसिह
 र्गदा, नि सेपाठ ति सतठिठ हास नहान भोगनिगा

श्रीऋषिसमश्रु शुभ्रामहर् ढएढएढएसमछएष अढए शुऋअछएष नएऋश्रीः

यश्रीश्रीषहश्राम शुभ्रामहर्- थहए नऋअछएषनश्रीश्रीपु

४८

१८८२	यन्मकानिमी	मासुडन	वजनयिाम	छादन
नन्वयतिामसा कानकगेश	छादनगेशक	गौई	नन्वाकनक- भाक (अपुआन)	गेश
	वृषणा	नवाइ	माहेश्वन	
			जीवे	

२१० छादनसँ नन्व यन्तामसा कानक नगद्गुनु गेश

छादनसँ नन्व यन्तामसा कानक

गेशक वृषणा यन्मकानिमी पतिः पनोकषे पन्थ वृष वृतीते नन्व यन्तामसा कानक
 गेशोनन्वति- यन्मकानिमी मेधाक सन्तानक ठागमि छठ्ठह

छादन सँ नन्व यन्तामसा कानक मठमठ गेश

' ' नन्व यन्तामसा कानक न न पा गेशक वृषियक ठेप्य पुनायीन पन्जीसँ उपव्यव ॥

पतिः पत्नीकृषे पंथं व्रज्यते व्रज्यतीति गंगेशोत्पत्तानिःशा पिनायीन ठेपनीयः कृत्वापा

देवानन्द पत्नी ३८-२ छादनसं जगद्गुरु गुं गंगेश सुनाय व्रजयामसं जगद्गुरु सुनायक पत्नी

देवानन्द पत्नी ३३८-३ जगद्गुरु गंगेश सुना सुपन दौ गम्भोजसिमसं ह्यादित्य दौ। पुत्र सुनाय गोना जगद्गुरु सं जीवे पत्नी ए सुना सन्दर्भ विवेक्षण अन्तस्थाने सुपनगान् ह्यसिन्मम दानाति क्वयति जगद्गुरु गानाम

देवानन्द पत्नी ३०=५ छादनसं उपायकामक मम पा व्रज्यमान सुनाय यम्भुवरासं व्रज्यमान सुना शक्तिनाथ पत्नी गंगेश- मम व्रज्यमान सुपन ह्यसिन्मम

घातगोसह, गहे। गहे। गहे थाततवायहनितामाना, गैतोतेते तेशते टुविठेगत तो १२, ००० तेशतसं माँ योमे तो गहे डायत मेगतीनेद वि गहे श्वाना- ति यथेनथय सतातेस गहात घातगोसहोड थाततवायहनितामानास वोतन डवि योतस । डतेन गहे दोगहोड हसि डानहे। गद हे मानोद। गानगेन, सोह्य ददि ढामागातह हहा हदि गहसि डनोम यनिसह छहनदना गहातवायहनाया? वामदहामागा, सोगोड घातगोसह, याथस घातगोसह सुकावक्रिनिवाकानानेगदह गुन गहे योगसपनाययु गदेनौहियह गहे पौमसोड । डामोस सयलेषान ठकि घातगोसह मे गोन। वाथिवेते तोदाय सि यथेन डनोम गहे शामपठे गविन। वोवे वासुदेवोड मेगगाथ गौस । यथससमातोड श्वाकसहादहान मसिहनाोड मतिहथि, हे यामे तो सतुदय वि मतिहथि, पाससेद गहे सहाथकोशामनितानि। गद मेयेवेद गहे गतिठे । ड सामवावहाम वासुदेवा मेमोसिद गहे ताततवायहनितामानाड घातगोसह। गद गहे गयायाकुसुमानाथ कानक्रिोड उदायागा श्वाकसहादहान। गदोतहेन मतिहथि तोयहेनस ददि गोन। थौ गैतिनिग (योपयनिग) ताततवायहनितामाना ढागहनातह पहनीमाना, । दसियपिठे । ड वासुदेवा, गौक गहे गिहान । ड येनडियितानि। डतेन हे देडेतेद हसि गुनु श्वाकसहादहान मसिहना वि । सयनपितुनाथ देवाते (सहासगानातहा) थहे मावया मयाया सयहौथौस डुनदेद वि मावदवपि वय वासुदेवा-ढागहनातह श्वाकसहादहान मसिहना गौस ।

योगतेमपोनामयोऽ व्रद्धियापात्ति (दसितनियत उन्म तहे श्वादाव्राणीतिनीहौस
 ०७ तहे पने- ह्योतनिसिहौम पेनीदि) गैहौनोते नि पागसकृति। गद श्रवाहातता
 श्रगद तहे। मन्विथोऽ मतिहृषि सतुदेगतसोऽ मेगगा७ उन्म मेगगा७ सतोपपेद
 । उतेन ढागहुनातह पहनौमार्ग घागोसह उपादह्यायो गजोपेद ' पानाम गुनु'। स
 १००। स ' जागाद गुनु' ततिथेस, तहे हगिहेसत ततिथेसोऽ तहे तमि। गद। स पेन
 श्वागजागिगय व्रायासपात्ति मिसिहना ३३। स तहे। तहेन पेनसो गैहौ गजोपेद तहे
 ततिथे ०७ ' पानाम गुनु' थहे सतनियतानि ०७ सावया- सयाया पयहौ७ उन्म
 मतिहृषि,। स देसयनविद। वोवे, गौस। मेवेगो ०७ गानुने। गानिसत तहे हेगुन
 कठिठनिगोऽ घागोसह उपादह्याया। गद हसि उमथिय।

[थनागसथागि ०७ तहे मातिहृषि पहेनत पनोय, ' पहावदासहासतनाम
 (वासेदोन तहे तुने श्वागजागियोनदसोऽ घागोसह उपादह्याया) गौस दोगे वय तहे
 गु। तहेन घाजेगदना थहाकृन हमिसे७ऽ पुवथसिहेद। स ' थहे पयोनिये ०७
श्रीनदस श्रगदनि उतिनातुने व्रो७ पद, म्मो २ (२८०) (मानयह्श्रपनाधि
 २०१४), पप ७८- ८३ (१६ पागोस) शुवथसिहेद गयः पाहतिया श्रकादेमा]

३

पामथागगद हह हसौनतितेन। वौकोन सागातपुन (मातिहृषि सौ। तनी) गैहे
 हे यनेदतिस हमि गौतिह गविनिग। गौ दनियतानि तो मातिहृषि उतिनातुने
 छहागदनादहन पहानमा घुथेनौनोते ' उसने काहा तहा', । मानवे७थुस सहेनत
 सतोय नि हनिद, तहे वेसतोगोऽ तिस तमि गुन हसि उतिनाय योनपोना सि
 वेनय उतिनथे नि टुनततिय, सो डि। नयोने तनेदि तो गवि हमि यनेदति उेन
 गविनिग दनियतानि तो हनिद सहेनत सतोयनौनतिनिगौ७६ माके हमिसे७७।
 उगुहनिग सतोयक श्रगदै। तनी स मातिहृषि उतिनाय योनपोना सिवेन तहनिगेन
 तहन घुथेनौ स मोगोवेन, ढाणकामा७ छहुदहनय या७७स हमि०७ तहे मेदेवि७
 गो (ढाणकामा७ मोगोगनापह, पुवहासह छहागदना। दाव, श्वागे गो १४) हैनोते
 छहतिना (२५ पौमस) हैनोते, नातहेन हुननेदि७य पुवथसिहेद हसि ' श्वातनाहनि

भागवत धार्यह' (४४ पौमस) ओत पाहतिप्रा अकादेमि श्रौतद नि मातिहृषि,
 रैहियह हे गीत नि १८६८ अडोत तहत हे सतोपपेद नैतिनिग नि मातिहृषि, सो
 हौ याग हे निडुणये गयवोदय रैहिन ।डोत गीतनिग तहे गौतद ने सतोपस
 नैतिनिग नि तहत ठगुगो? थहसि सिगे श्रामपठेड हसि निसतावधितिय सो
 डन ।स हसि दैधेगय सि योगयेनदे हे वेयामे । गृहहसित भोगक रैहिन हे ठेडन
 डोत पना डगका गद वेयामे । गनाहमनि ।गानि रैहिन हे नेतुनदे ।डोत । रगद
 सायदे तह्येदे येभोगय पेडोतमेद नि हसि वधेठगे थहसि सि गीतहे श्रामपठे
 डेड हसि निसतावधितिय सो डन ।स हसि दैधेगय सि योगयेनदे पामठागद
 हृषा दौस गीत कगौ मातिहृषि ठतिनातुने हसि योमभेगतस सहुठे वे शपोसेद,
 ।स हे तनेसि तो गवि । वाद गामे तो तहे गीत तनादतिनिगेड मातिहृषि ठतिनातुने
 थहेगैने मानिसतोम नैतिनस, वुन तहेगैने नैतिनसोड पानाठेठे तनादतिनिग
 ।ठसो (से वेठौ अगेशुनेस १ & २) हे हस योगडुसेद तहे पागसकति गद
 अवाहात वदियापाति थहककुनाह गीति तहे श्रदावार्थ नैतिन पे-
 ह्योतिसिहौन वदियापाति हे सहुठे गेद तहे नैतिनिग डेड वणिय पुमान
 थहक, । ठेडतिसि हसितोनिग, रैहे हस गविग ।मपठे ठगिह तन पे-
 ह्योतिसिहौन वदियापाति [मय ।नयिठे तन वदियापाति नि श्रुवागदह
 भाविगदह पामाठेयहना व्रोठर (।वाधिवठे नि वदिया अयहवि) योवेनस ।ठे
 तहेसे तहे ठेगो डेड वदिया सि तहे पहोतोगनापह डेड श्रुने ह्योतिसिहौन
 वदियापाति सकेतयहेद वय श्रुगाक ड।ठ मागदाठ, नेयपिनिगोड वदिया पाममाग
 डोत डनि ।नस।

अगेशुने १

यगदा हा (१८३१-१८०७), मूठगाम यगदुनाथ हा, गुनाम-
 पामिडानुष, दनगंगा कवीश्वर, कवियिगदुन नामसं वधुषति। गुनसिंसनकें
 मैथिलीक पुसंगामे मुप्य सहायता केगहिना कृति मथिठि भाषा

नामाग्राम, गीत-सुधा, महेश्वामी संग्रह, यद्गुण पदावली, एकध्वनीश्रवण
वृत्तिस, अहधियायति आऽवदियापनियति संस्कृतपुत्र-पनीकषाक गद्य-
पद्यमय श्रुवादा

१

ग्यायक गवग कयहनी गामा
सग अग्याय गनग तेहिसामा
सग्य वयग वनिठे णग गाषा
सग मग वगक हग अगठिषा
कपट गनग कग कोटके कोटा
ककग ग कग म्यादा छोटग
गग कवा 'यद्गुण' कयहनी घूसा
सग सहमग ककग के दूसा

२

गग्या दगि दगगग्या हे गेग
गैया णगगक मैया हे गेग
कटय कसैया हाथ
हकमि गेग गगदैया हे गेग
कगय गगयव माथ
वगसा गह गेग सगसा हे गेग

असा कए गेथ मेह
नयिा दनि दुगनयिा हे मोथ
जग नग जगिन संदेह
मुपयिा वड वड सुपयिा हे मोथ
अग्वक दुपयिा ओथ
के सह काग कगपयिा हे मोथ
सुपयिा वनिा टोथ

३

असून असून नोक आव मामथिक मानि
भाइ भाइकेँ पढैछ गति्य गति्य जानि
ऽकक ठेक हकक पाव सायु केँ उजानि
दैव जे ठाट ठेप के सकैछ टानि?
याही गहचिन, ठगिवाभ, पकवान जठिवी,
मगोवगौदक हेतु अमनपतिसदन ग टेवी।
ई अगून अगथिष हमन कनुसामयिा दिवी
गकगिावा सँ सगत अहकि पदपंकज सेवी॥
अग्न महग, उगमग अघगिान, हयन कोना गसिाना
उगून पश्यमि नूनमि अगम्या पवून असह तुषाना॥

यन्म-व्रिगीधी सहसह क१३४, कुमन कथा व्रिस्तिना।

क१थु कॄपा णगणनगी देवी महसीव्राठी ना।।।

मथिषि की छठी की गय गेठी,

प्राणवत्क्य मुनि, णनक गॄपनवि१

ण्माग गक१ासौ गेठी।

वायस्पति भिस्तिनादि णगद्गुनु

गन्ति णि वैद्य हमेठी

से शानदा स्व१ग णगि गेठी

व॒ठ॒ठ कुव॒दि॒या के॒ठी।

व॒त्मा॒श॒म व॒धि॒क॒क॒हु॒ नु॒य॒ग॒र्हा

शू॒नु॒गि॒ श॒न्दि॒याँ॒ ठे॒ठी

पू॒जा पा॒ठ य॒ज्ञा॒ग व॒क॒मु॒द्गा

स॒ग॒टा व॒य॒न पे॒ठी।

क॒ह क॒व॒यि॒ग॒द्ग॒ क॒य॒ह॒नी ग॒दि॒नि

व॒हु॒न ग॒ोग क॒१ णे॒ठी,

क॒थ॒ह क॒ना॒य य॒न्म य॒न ग॒ासे

क॒थ॒कि॒ द॒न्दि॒ना ये॒ठी।

४

मय केहन मेठ घोर हे शवि!

गोधन व्रपिना, वनम अवगताद्विष्कित हयि कनव कयेन॥

सायु समाज नाजसँ पीडति अतहिषति-यति योन।

अकुठनि ठेकेँ वनासिपिपूति कुठनि समादन थोड॥

वनम सुगीताप्रीतिककनहु गहि, यथहकि यथश्छ जोन।

कन्द-मूठ-शुठ सेहे अव दुनठन अग्न गेठ देसक ओन॥

कछि सुन सायन वनिगहिपडश्छ थाकठ मन, मतिभोन।

कह कवि यगद्न हमन दुप्य मेटन होयन कृपा शवि तोन॥

५

सुमनु सुमनु मन! शंकन समय गयंकन जागति॥

ककन हृदय गहि कुठपति शासन कठनिप पागति॥

केवठ शवि कुमाकन सेवयति गहि जग हगति॥

गकति कठपठति जागह पनम पनसमनपिपागति॥

कनहु व्रपियमे न ठागह त्यागह अनुयति मागति॥

सुप्यसौ अग्न व्रविसवह 'यगद्न' यूड नजयागति॥

आमाससउडर २

१

शुनीठाठक अकाठी कवतिअकाठी कवतिन्

श्रुतीगोत्रक श्रुसती वृष्य १२८१, ३ ७४-१८७३)सगसाठक अकाठी कवति। (

[गृन्धिनसग [(मैथिली कृनेसुटोमैथी एम्सड व्रोकवठेनी)

साठ एकासकि वृन्मन सुनूयौदसि पडठ अकाठ्
मेठ वृन्सिाग प्पनिग ऐ साठककहँ ठगवृन्गौ हाठ्
नोहसिाि आदिथीक वृन्सिागक् जोहँ एठा तेहँ गेठा
मृन्गिसिािा मन पुनठ मनोथदै हीसा कछि गेठ्
अनदडा आडम्वन गानोगानाग है यहु ओन्
पुप्य नुप्य नाप्यठ यनी केनमेठ वृन्पा केन ओन्
पुनवृन्सु थकि वड पुनीगाओहे वडा कसेस्
वशिा वडिाक जो कछि उपठठयन वृन्सिठ असेस्
मघा मेठ मंगालशिा कठ्ठानागानाकि गै जाग
पुनवा पून पछ गै नाप्यठककना कनव वप्यान्
उत्तना आर जाय घन वैसठसपतौ ठै गै वृन्
हथशिा शृंग मुँड दै मृन्गनगकौ ठागठ घृन्
यतिना यति मति गै नाप्यठओहे मेठ डाकू याती
गाक नंगौठनहसिा सभै गघनानदोम नुकौठनहसिािा
जोतषि पढसिाथिा मृन्गोठ-साथिा पढिा जो जाग ऐठाह-
नेप्यागासति वीजसौ श्रोआकश्चिागकौ कय्यी वोठ्
श्रीनाम कृपागतिओहे गै जागथकिाग सग जाहिकृपा
पागकि पुनसृग कवौ जाी पुछएिगहसिाहो कहैा होइगहैाग
जोहपिन गदी गाठ गै नानठेठेहपिन नौदी सनी
वनिा जठे जाग कछि गै उपजठदगध मेठ छथिा यनी
ते गन नौदीक आगम वृन्कसिाग जो छठ कृष्
दैव वेपय्छ पय्छ गै नाप्यठजडा कटौठक याग

कोदो मडुआ एको ने उपजठगै उपजठ कछि साम्
गम्गडी गद्दनी प्येनहिसुप्याएठमेठ व्रधियाता वाम्
मन्गुव्रगमे के कन नय्छाकहाँ जाइ केँ मागा
सुप्यठ पनाठ हाठ गै ओतहुँठगठ आगा सगनहुँ
य्क जीवग ओर नृपना र्गद्दनीकेँजे नोकठ गहपान्
जीवाजन्-नु व्रकिठ पुहमीमेताकेँ हे गै आगा
नवीने प्येढी औ यीन् नाय एको गै उपजठ-
घनद्दनी मेठ अवन वीन् गानी-घन सोय कनै गन-
यगकि ठोक सग मगहमिगन छथिनाप्यथि वहुतो ठेनी
हसोथि नुपैया घन केँ नाप्यथिसिन महगी मेठ अवन
केओ कुनथी प्येन मासु वेसाहठजाह कौड़ि छठ अपगा
कठोक जगा हनिसिन गनठमान वहुन केँ सपगा
कठोक जगा मठि जनेन वेसाहठनियन वैसठ नकस्
मेठ यनन्तनि दूइ श्रुसठि जगानहड़ि आओन मकस्
काठ पडठ ननिहुनमि गानीकेँ ३ वहगिठ हावा
घनश्रुंकि मकस् केँन ठावा गानी-घन मगन कनै गन-
माठकि औन महाजग सगकेँघन ठेनी अन्न-घन
ठोक वुहाओन ओहे नकेँ छथिमुँह गनीवक सग
समै देप्यविगशिं सग सगकठउरै ठगौठक टट्टी
सुन्न दोकान सहनमे पनी गिठसुन्न मेठ सग यट्टी
सूप्यठ गात वात मौ ठटपटकठोक वात अवन सहना
गन गानी सग साग तेआगठवकिनी मेठ अवन गहना
मँगटीका प्युटी औ नडकीनकमुग्नी गै नाक्
कटसनि विधिआ औ हनिहमिशिंवाजवगद औ वाक्
यग्दनीहान, हैकठ औ सकिडीऔन घनौनकि दाना
सूना, नवगानह औ पयप्यंड़ीठशुनी मेठ नदिना

नापन दन्वजात नै वयथेकम मेथ नपिट्ट
नमधैथ, अद्वैथा श्रौ पकिदागीनै नसथा श्रौ नटू
वाटी, वट्टा श्रौ पनवट्टामोणन कनैक थानी
मायव सोहिसहति सोवनगनै वयथे घन हाडी
धन संपाधिघन कछि नै वयथे सनटा पडिगोथ वंयक
तैश्रो नूप्य छुटथ नै ककनोरहन पेट मेथ पंयक
द्वैव अंश अवनतथ कम्पनीजा पन नाम सहाए
मथिथिपुन वूडन जव थागयसे सुनपिहुंयथ थाए
प्यनदि अनाज नहाजही वोहथमनी कनिकनीवोना
सदन नथिगा श्रौथा पन मनतीश्रौन श्रौथाशनीगोना
हाजीपुनमे थाप्य हजानमकै थाप्यन ह्स् पटना
वाजतिपुन सुथानपुन गोथनै जागत हौ केतना
गाडी, वैथ, छकड, ऊंट वहिनेउवहन ह्स् सन दाना
मसिन कनहैथा कँ पोप्यन मेपहठिक अडी डेकाना
श्रीनै थकषमीश्वन सहि नृपामिहानाज मथिथिश्
अथथ नाज दडिगिगाश्रीपति हनहिकथेश्
गाडी वैथ थाप्यन हजाननताकँ पने घडेन्
पहठिक गोथ मधुवन, मौडाजशुना श्रौन अडेन्
वेनीपट्टी, श्रौ पयमहथाकुम्हनौथ श्रौ कमतौथ
हनहिनपुन, पडिनुघ वनगौकानाज केतेकाँ वनश्रौथ
वानापिप्यन, वनिसायन वनगौपाम् डौथ को नै जाग
नवह्द, सनिसो श्रौ नटपुना, ना सौ दकषमि उजाग
हंदापुन, महनैथ, कनहैथिमयेपुन ह्स् प्यास्
वेनीपुन, कमान, ननैहिश्रौवनगौ श्रुथपनास
हमना ह्स् जगजानति जगमेमहथा श्रौन वघौन्
दुह्वी श्रौ महनिथपुनश्रौन जैगान नक ह्स् दौन्

वधेवपुन श्रौ ढगा वनौमनिजापुन उधु हाट्
सीवीपटी श्रौ कपसीआसदन गोठा सौनाड्
गुनवाकें पनवसी हाकमिकन गनिहुनमे आके
गै तो मनते कन नन गानीवाठे वये सुप्या के
कन मुनदा गनदा मै मठितेशसंय जीव यथ जाना
सन समधी कें संगा ने उम्नगनै वयते जठदाना
सगकें सग उपछै गै गेठयुन पोप्यन श्रौ सडक्
नहिगेठ व्नाह्माम सोती पाम्डतिकायथ पछमि डकुन श्रुनक्
केशो श्रोनसिश्चिन नाम उप्पिआओठमैट केशो मोहननि
यन्ममकायमे उटथा नुपैआतें मेठ सग केन मेट्
केशो जमानन टैकें वयथाहजानिका श्रमठा गेहि
ककनो मानि केंन पडि तो डैगहउतगैगह जगमक डैहि
ककनहुं गानन गान सुप्याओठवहुनो हेअय यथाना
मानुपतिा घन पनजिन नोवयवावू गेठाह जहठप्याना
ककनहुं घन मेठ प्यागानठासीमेठ मोहननि घौंछ
केशो अदाठामि उडिश्चिइ छथकिकनहुं उपगैगह मौंछ
एतना सुगि हाकमि नसिश्चिआओठें ठागठ जग गीका
गाक नंगौठगह सभै मोहननिठागठ युनक टिका
जोग, वकौआ, ठौककि वंशककनिश्चिभंग सुकूठ्
गाछी, वांस, वैठ श्रौ महसिजिगह कैठ नकश्रुठ्
नारि नुपैआ सौ कना गजनीन ठै कोनट सौ
तें कानन वहुनो घन ह्गाडगार नगीजा गीन्
आए ठाट वहाहुन श्रौ दडगिंगा याम
वावू श्रौ ववुआन सहति मठिकीगह कुमैटी प्यान्

एह सग संग वैठि कैजाय कुमैटी मेठ्
अणव काग सगकाग केगनिहुग पुहुंयठ मेठ्
वाणनिपुनसँ सडक गकितैआये दौडहि दौडी
हेहया गंडक पुठ वगहाएआए यौनहि यौनी
यन्ममयीन, वठवीन, कम्पनी जागन ह्ज् जागदीसग
ठछमी सागन के पोप्यनमिगार्ह कीगह रसटीसग
वडा ठाट कठकानेवाठेश्नीहुगा होए संग्
आगना के छोटा ठाठ वहाहुनवैठे सग एकगंग्
जुटे कमसिगन औन कठट्टनवोठहिवाग नेअंठ्
एह पायो रणठास पन वैठेएह जंट संग जाग
प्यवगिए अय्यवान मौमैथिठि के एह हाठ्
सुगहु श्चिगी अय्यस दैकैमेठहु दुप्य के जाठ्
हुकुम दीगह दोउ ठाट कोसुगहु हमाने वैग्
मदगकिगहु नेआआगकोक्या वैठे हौ यैग्
वडा ठाट दोउ वीन उगाएसाहेव औ जागैठ्
मेजान मजसिठन औन कठट्टनसंगाजाग कनगैठ्
देस देससौ अग्न मंगाओठदीगह सगनके दाम्
महामूंग, गहुम औ याउनवजडा औन वदाम्
डोठी, पटना औ गटसागेदीठी औ अजमेन्
आगना औन कागहपुन ढाकाजहाँ अग्न के ठेन्
गए नमाना अग्न गनिहुगमिठदिगाडी औन वैठ्
गाज, तुंग, गदह औ छकडसंग सपिहि छैठ्
छन्नी औ पैगन मोगठ सगवाँकावीन नजपून्
सोमा वनगनिजाग ह्ज्जैसे हगुमगन दून्
आगे सश्चन औ मैनापठन वीन जमान्

वनछी औ नुआगिहैकन गहै तीन कमान्
 यढ़तिंग पन कनै कवाशनमादान होए संग्
 सोमा वनगिन जान ह्देष्यनिपुणक नंग्
 कनन काम सन यामनेट्ट अट सन ठूट्
 ढहनिडी गछी सहनिवाग्यै सडक औ पूठ्
 जठि पटने औ गटसानेपुनगनगा महसौन्
 नहँ वसहँ एक सज्जगतोहँ घन जा ठकूपमी दौड्
 श्नी द्वागिका पुनशादतिवन्ममधीन वुद्वमिगन्
 नहसोठदान कोनट के प्यासाजानहँ सकठ जहान्
 वावु रसनी पुनसाद दियौटीसो मधुवनमे आए
 हुकुम दीन्ह सुपनगडेटकेंटोठे टोठे होए जाए
 मन पँया मनगन भै ठएप्यैनाग वहुनो ठए
 यग्य यग्य अंगनेज वहहुनसगकें पूटठ गान्
 गनवि, गनी, गुनवा, कनु जै, जैव्नाह्माम देन असीस्
 श्नी नधुनाथ वढे वदसाहीगदी ठाप्य वनीस्
 श्नुनी ठाठ कवविनगन हँएह नौदी के हाठ्
 गौनभटि गौनगठ वहहुनानिहुनि नाप्यहँ वहठ्

२

नाथाकृष्ण यौधनी (मथिठिक शहिस) (वदिह पेटानमे उपठव्य(

"१७७० क अकाठ मथिठिक शहिसमे अद्वितीय छठ आ मथिठिक जगसंप्य्या
 घटकिँ एक दम्न कम्न गऽ गेठ छठ १८७३मे पुनः एकटा ओहने अकाठ ७४-
 मथिठिमे मेठ छठ जकन वविनाम हमना श्नुनी ठाठ कवकि अकाठी कवतिनसँ
 गेटश्यै, अकाठी कवतिन अपनकाशति अछा अकाठकें दून कनवाक हेनु आ मजूनकें
 नोणी देवाक हेनु नहँ काठ नेठगाडीक योजना यथाओठ गेठ जकना सम्वन्धमे
 श्नुनीठाठ ठप्यैन छथा-

' कम्पनी अजान जान कठगको वनाय शान
पवन को छकाय मैदानमे बनायो है।
छोडा है अडादान वडा वीय थाय थाय
समेठोग हटाजान केगाजान पडा है।
नामकी अपानकान पवनदिन वान वान
येन गयो टकिसदान नेठ की उवाई है।
कान है अनोन शोन पीछे कान ठान छोना
जोन की वमाक से मशीन की वडाई है।
कम्पूसन पहनदान कोथी सव अजवदान
कोशेठ म न कन कान यूआंसे उडायो है।
वाजा एक वजान ठान हाथी असा
पकिन ठान जैसा जो यदनदान वैसावन पायो है।
जंगाके म न ठ वान अनगियो शून पान गाडीकी
अजवकान कवतिन यह वनाया है। "

- धाजेनदान थहाकन, दतिन, वदिह (वे पान नोड वदिह वदिहयोनि - सेनद
योन औहागसअपप नो नो + द्दं१८५६०८६०७२१ सो नहाग नि यान वे ।ददेद नो नहे
वदिह औहागसअपप मनोदयासन डसिन)

अपन मंगवये दतिन।।।सगाडडवदिहवगामाठियोम पन पडाज

द्विदिह मथिषिक प्योण

द्विदिह मथिषिक प्योण

द्विदिह ह द्विदिह द्विदिह विदेह हानापूर्वद्विदिहयोनि द्विदिह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका द्विदिह इसाग मतिहिलि
दोनगगिहानथे जोगनाथ द्विदिह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देपवाक ठेठ पृष्ठ सगकेँ नखिनेस कए
देपू अथौपस नेडेसह गहे पागेस जेन वीरगिग गौ सिन्धेओ वस्यएहअ

प्रसूतन अछि द्विदिह मथिषि, गीनगुक्ता आ गिहवाक नामसँ विय्याग वनानमान गाना आ गेपाथमे पसए माटकि प्रयाग आ नव
स्थापनाथ यतिनाकनि अगठिप आ मूनाकिषिक एकटा छोट संग्रह ऐ संग्रहकेँ पूना कवाक हेतु अपन वृहमध्य
संग्रहे दानिगिषिसागडद्विदिहवागिषियोम केँ पठाज आनकाइवक सनवायकान नयनाकान, समवगयति श्योटीगनाथन आ संग्रहकानाक
ठामे छगही श्योटी सग पठेवा ठेठ वगयवाह पाठकासा सागाना वशिष वत्रिनास देपवा ठेठ कठिके कू, **दसनीप मथिषि, मनोयुले**
१ मनोयुले २ मनोयुले ३, मनोयुले ४, मनोयुले ५ (मैथिली साहित्य संस्थान ठिके), श्वसथ अथर (छुवाग हेमिगो) ड
मतिहिलि सोनयह केयोह मतिहिलि), **थेमपठे पुनवेस श्योपेया अथर एगठिसिह आ हगिदि पूनासाग** अथरवसायिक उद्देश्य आ माग
एकेडमिक प्रयोग ठेठ



शुवनेश्वरी गगवतीपुन
(माहृवागि, गहिल)
गहिल) वैद्य गाना सँ



सून्य गगवतीपुन
(माहृवागि गहिल)



वषिसु गगवतीपुन
(माहृवागि, गहिल)

समागत गोकमे
कुम्भदेय



दुर्गा, पोपनसिं
भेट, ओतही वहेनी
मन्दिर (वज्रासं
दक्षिण)मे स्थापित



हनुमान मन्दिर
घण्टाघर
(दरवाजा)- योनि मंड
पै



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी,
मधुवनी



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी, मधुवनी



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी,
मधुवनी



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी,
मधुवनी



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी, मधुवनी



गौरीशंकर, जमथना, हैडी वाठी,
मधुवनी



वास्सी-
वसैटी, अनया मथिषिकुषन नाम्
नये



वाइसी-
वसैटी, अनया भयिठिक्षन नाम्नेय



धनहा, वगमगपी, पूनासियाँ, ननसहि
श्रवण

वाइसी-
वसैटी, अनया भयिठिक्षन नाम्नेय



धनहा, वगमगपी, पूनासियाँ, न
नसहि श्रवण

वाइसी-
वसैटी, अनया भयिठिक्षन नाम्नेय



पूनासदेवी, पूनासियाँ



वडिश्वन स्थाण अगठिय, मयुवनी



अग्यागढी अगठिय, मयुवनी



वुद्य अष्टयागु, ससिव वसंगपुन,
वगहा



१२ शागाव्दी, कोइय, मयुवनी



अग्नविडिश्वन स्थाण, मयुवनी वु
द्य, मुंगेन



अहठिया स्थाण



अग्यागढी, मयुवनी



अशोक संगन, वसाढ, वैशाठी



वुद्य



अवलोकितेश्वर नाग, रागवपुर



वसाह, वैशाखी



वुद्ध भूमसिपन्श



वुद्ध, नाम्न



वुद्ध मस्कक, सुवनागंगण



वैशाखी भूमन्गि



यामुम्डा नाग-
नागार्गि, मुंगेन



मुकुटयानी वुद्ध, अंगीयक, रागव
पुर



नाथेन गामेश,
१०म शनाव्दी, दनगंगा



दनगंगा भूमणयिम



दनगंगा भूमणयिम



दुग्गा, कार्णकिय



१०म शनाव्दी, शीट रागवपुर, अग्ना
गढी



गामेश वुद्ध



गौतम वुद्ध, वैशाखी



हलहिन वुद्ध



यडिके पुआवेन महिषि, नाजमह



वैनप्रिया गण्डगण्ड, अशोक संग्र



वामश सुदामा गुष्ठा



मुंगेन



गागनाण तीर्थंकर



कुमानाधि गट्ट शुकेश्वर, गाण्डा



वक्रिमशवि वसिष्ठवर्द्धिप्राय, गा
गण्डपु



गण्ड वुद्ध



पाम्बनी



नामाग्राम



नामपुत्रा वृषभ



नामपुत्रा



वुद्धक अवशेष



संकसि



सप्तमातृका



सर्वगो गद्ग मम्मड



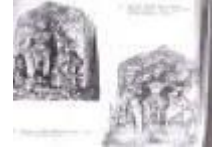
सूय



सूय



सूयक संगी



सूय, मयवती आ गणधुन



सूयगि



सूयगि



सूयगि, वैशाठी



उमा माहेश्वर, कल्याणसुगद्ग



वैशाठी वृषभ शीष



वैशाठी, शाठगणिका गणधुन



वृषभु वुदया



पाँपयुक्ता महि



अहिया



अष्टयोगिनि मन्दिर, सहसा



वगंगा



दरगंगा



दरगंगा गगन, १८३४



दरगंगा मेडिकल कॉलेज



दुर्ल्लुहनि मन्दिर, जागकपुर



गाम्डीश्वर



गंगासागर पोखरि, मधुवनी



हनुमान मन्दिर, मधुवनी



हलिनिस्थान



मधुवनी हॉस्पिटल



जागकपुर जागकी मन्दिर



जागकी मन्दिर



जागकी मन्दिर, सोतामढी



जागकी मन्दिर, सोतामढी



जति स्वास्थ्य कान्यालय, गणवगाण, गेपा



कठेश्वर वावा



कपेश्वर



कोषेयाकान्यालय, गणवगाण, गेपा



मथिवा विश्वविद्यालय, दगंगा



कृष्णेश्वर पैठेस, १८३४



मायमकविद्यालय, गणकपुर



महेन्द्र चौक, गणकपुर



गणकपुर मंडप



मथिवा, १८८८ शकम्प



पगवावा चर्मशाळा, गणकपुर, गेपा



पंडौठ अहृया



मधुवनी वस स्टैड



गाण हेड ऑफिस,
१८३४



गाण हॉस्पिटल, दमंगला,
१८३४



सौगाड सभा



शिव मन्दिर, १८३४



शिवशंकर सभामा, मधुवनी



श्यामा मन्दिर



वदियापानभूमिता, वसिन्धी



उगातामा, गानासथाग, महर्षि,
सहसा



वदियापानसिमानक, वसिन्धी



वसिन्धी, उदगा महदेव



वसिन्धी, वसिन्धीश्वरी गगवती



अहर्षा मन्दिर, अहर्षानी







अशोक संग, वैशाषी



सूप अशोक संग, वैशाषी



वर्धनाण्डपुर कवि पूर्वो गेट	वर्धनाण्डपुर कवि भोगा	यम्ही स्थाण, वर्नाटपुर, सहन सा
		
गाँधी पोष्णा, ढाका, भोतहिनी	गाँधी वरिद्यालय, ढाका, भोतहिनी	गनिजा स्थाण, मधुवनी
		
हलहिन मण्डनि, सोणपुर	जैण मण्डनि, गागणपुर	जैण मण्डनि, वैसाथी
		
कमलादत्तिय स्थाण	कपठिस्वण शवि मण्डनि	वैनायि गण्डगढ
		
मदणेश्वण शवि मण्डनि	मण्डान पत्तण, वाँका	भोतहिनी सत्प्राग्नह स्मानक
		

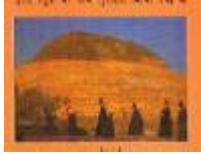
पद्मेश्वरी मन्दिर, गढी, मधुवनी



शांतिस्तूप, वैशाखी



सधिश्वर स्थान, मधेपुरा



वैशाखी स्तूप



वृषभ शील, नामपुरवा



नामजागकी मन्दिर, सीतामढी



उद्यैठ बागवती



सूर्यधाम, पनसा



वकिभशवि व्रशिववहियाथ, बा
गठपुर



सहि शील, नामपुरवा



सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी



उद्यैठ मन्दिर



उग्रनागा मन्दिर, महर्षि, सहल
सा















वनिटपुर मन्दिर, मधेपुरा



शमश, वेपाथ



<p>पाँपयुक्ता देवी, वैशाखी</p>	<p>वावा वडेस्वरा, देवना, वनगाँव</p>	<p>वट वक्ष, वनगाँव</p>
		
<p>मगवान वशिष्ठ, देवना, वनगाँव</p>	<p>शास्त्रान्तर स्थल, नानास्थान महर्षि</p>	<p>शास्त्रान्तर स्थल, नानास्थान महर्षि</p>
		
<p>नानास्थान महर्षि</p>	<p>माना नाना, नानास्थान महर्षि</p>	<p>उग्रनामा (प्याहन वामी नाना) मूर्ति महर्षि</p>
		
<p>वसिष्ठ मुनि, नानास्थान महर्षि</p>	<p>आवर्धति काठी उग्रैः</p>	<p>वैद्यदेवी नाना वानी समस्तीपुर</p>
		
<p>मगवती देकुषी</p>	<p>मगवती गनिजा सुवह</p>	<p>मगवती म्मभूतगिन्धवारि</p>
		

<p>शगवती वागी समस्तीपुन</p> 	<p>शुवनेश्वरी कोथ</p> 	<p>देवीकाठी कोथ</p> 
<p>जंगामूनी गगनडीह दनशंगा</p> 	<p>गोसाअगमिन्दनि कोथ</p> 	<p>हेह्ट देवी हावीडीह</p> 
<p>काठी उय्यैड</p> 	<p>महषिसुमन्दनी वहेनी दनशंगा</p> 	<p>महषिसुमन्दनी हावीडीह</p> 
<p>महषिसुमन्दनी गहन- शगवतीपुन</p> 	<p>उमा म्छेय्छमन्दनी मन्जिणापुन द नशंगा</p> 	<p>प्रमुना शैव वथियो मधुवनी</p> 
<p>शैव, शैव-वथियो</p>	<p>गटनाण, नानाथही</p>	<p>शवि- पावनी मन्दनि, कपथिस्वयस्था न</p>



शिव-
पार्वती मन्दिर, कपटेश्वरस्थान



शिव मन्दिर, सगिया, वसिपी



उमाहेश्वर, महादेवरम



उमाहेश्वर, गिहण



वसिष्ठ, शवागीपुर



वसिष्ठ, गौड शवागीपुर



वसिष्ठ, जयगंग



वसिष्ठ, उदहो



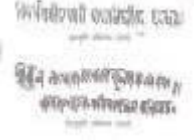
वसिष्ठ, साहे-
पानी, हावीडीह



शेषशायी वसिष्ठ, सवास, मुण्डेश्वरपुर



ब्रह्म मूर्ति, गणेशेश्वरस्थान



मथिलिक्षण श्रमणिय, वसिष्ठ बुद्ध
मूर्ति



<p>शगवती उग्र्यैः, वेणीपट्टी</p> 	<p>शगवती वामेश्वरी, शंङगीसम</p> 	<p>यामुम्डा मन्दिर, कटना, मुण्डु शुण्डु</p> 
<p>अष्टशुण्डु गामेश, हावीडीह</p> 	<p>अष्टशुण्डु गामेश, कोथ</p> 	<p>गंगा, आग्च्या-गढी</p> 
<p>महषिसुमन्दरिणी, दुर्गा</p> 	<p>भृष्ट्युष्मन्दरिणी मन्दिर, मन्जिणापु न, दनगंगा</p> 	<p>गटना</p> 
<p>नाममन्दिर, अहठियास्थान</p> 	<p>सेहनी, वैशाठी, वषिम्मु गठिक- यण्ओपवीतयानी</p> 	<p>नूपनगल शक्ति मन्दिर</p> 
<p>सूय, देकुठी</p>	<p>सूय मूर्ति, उठिही</p>	<p>सूय मूर्ति, वषिम्मु, वनूआन</p>



उमाभाहेश्वर



यमुना, आग्ना-शक्ति



समिनौगागढ़ मूर्ति



आदि काशी, यैगुन सहसा

यैगुन सहसा- भयिषिक एकमात्र गीठ कंड मन्दिर, संगमे आदि काशीन मय्य का धी- मन्दिर सेहे एहि गाममे अछा महाशक्तिना त्नी आ काशीपूजा वड यमयामसँ यैगुनमे होश अछा



त्योथागढ़क स्वामी मायवानन्द कौ धायान्य काशी मन्दिर

त्योथा गढ़ एगो पुनाग गढ़ा एकन पू वमे वनहमपुनाक वावा हलिनगथ महादेव मन्दिर आ दक्षमिमे उय यैड मगवती छथा



त्योथागढ़क दसमुष्पी काशी

त्योथा गढ़ एगो पुनाग गढ़ा एकन पू वमे वनहमपुनाक वावा हलिनगथ महादेव मन्दिर आ दक्षमिमे उय यैड मगवती छथा



कोशुप्य (मधुवनी) देवीक मन्दिर



अकौन, वेनीपट्टी, मगवती दुगा , मगवतीपीड



अकौन, वेनीपट्टी, मगवती दुगा , मगवतीपीड



अष्टगुण गामेश, कोन्थ रशवि मन्दिर, सधिया, वसिष्ठी



वैद्य देवी नाना, वानी, समस्ती पुन रउगानाना मन्दिर, महर्षि, सहसा



मगवती, वानी मगवती, देकुठी



१ गगवती गानिजा, सुभल रकाषि, उय्यै



१ गैव, गैव वरिया र उमाभाहेश्वर, महादेवमठ



१ देवीकाषि, कोन्थ र गुसाउगसिथ मन्दि, कोन्थ



१ गामेश, धेनयिसनाय र उमाभाहेश्वर र गटनाण, ४ वषिसु, गषिक, जगउ यानी, सेहण, वैशाषि



१ गंगा मूर्ति, गगडीह, दनगंगा र गगवती मूर्ति, गन्धवानी



१ हैहट्ट देवी, हावीडीह र गगवती मूर्ति, कोन्थ



१ कथि काषि, उय्यै, र अष्टगुण गामेश, कोन्थ



१ महषिसुन मन्दिनी, हावीडीह, र उमा, म्थेय्छमन्दिनी, मन्िजापुन, दनगंगा



१ महषिसुन मन्दिनी, गगवतीपुन, गाल, महषिसुन मन्दिनी, वहेनी, दनगंगा



१ म्थेय्छमन्दिनी गगवती, मन्िजापुन, दनगंगा र गाम मन्दि, श्रधियास्थान



१ म्थेय्छमन्दिनी गगवती, मन्िजापुन, दनगंगा र सहिस्वर स्थान, मधेपुना



१ गटनाण, गानाषि र उमाभाहेश्वर



१_शेषसाथी, सव्रास, मुण्डसुश्रुतपुत्र, २_ गटनाण_नालाभाही ३_ शगवती ४_ उमा माहेश्वरी



१- शक्ति पानवती मन्दिर, कपटेश्वर स्थान २_ सूत्र्य मूर्ति उषिही



१_ सूत्र्यमूर्ति, वषिष्ठ वृत्तान २_ गंगा, आग्यना शक्ति



१_ उग्रयैठ शिवावती, वेणीपट्टी २_ महषि सुनमन्दिर, दुर्गा ३_ यामुण्डा मन्दिर, कटना, मुण्डसुश्रुतपुत्र ४_ शगवती वागे श्वरी, शम्भुनासिभ



१_ वराहमूर्ति, गणिकेश्वरस्थान, रवषिष्ठ, शगवतीपुत्र



१_ वषिष्ठ, जयगण रवषिष्ठ, शीठ शगवतीपुत्र



१_ वषिष्ठ, उदले, रसूत्र्य, देकुषी



१_ वषिष्ठ_साहे पनडी, स्थापति- हाजीडीह रवुद्य- वषिष्ठ मूर्ति श्रमिष्य



१_ वषिष्ठ, सेहग, २_ वराह ३_ ग मेश ४_ शक्ति मन्दिर_रूपगण



१_ यमुना, आग्यना शक्ति, रश्मिपुत्र ग मेश, हाजीडीह



१_ यमुना, शैव वशिष्ठ, २_ शेषसा थी, सव्रास, मुण्डसुश्रुतपुत्र, ३_ गटनाण_नालाभाही ४_ शगवती ५_ उमा माहेश्वरी



कथि, काषी, उग्रयैठ, वेणीपट्टी



मृत्पात्र (मथिषि
क्षेत्र)



सम्भवतः सूत्र



वेसुगोपाथ, मथिषि



वशिष्ठ, जाधे, दमंगगा



वशिष्ठ



वशिष्ठ, श्रोहीथ, दमंगगा

मथिषिक प्योण

इ आठेप्य हमन दशकसँ उपनक मथिषिक प्यात्राक उपनागक सूत्र-वृत्ताग्न
अर्था आ एमे ऐ सभ स्थागक स्थागीय गविासी आ गाइड सभक अकथगीय
योगदान छन्हि। कपनो काठौँ गाड़ाक गाड़ीक उनाइवत ठोकनी सेहो नीक गाइड
सद्विध मेठा-गणेशक गकुल

"मथिषियदयस्य मय्यंतो नपितो शान्तिमथिषि गगनी" - मथिषि जाइ शत्रुकें
मथै जाइ अर्था- पामनीक वविनासा

कवि आ गढ़

वठनाणपुन कवि- मधुवनी जाठिक वावुवही पुनप्यसुडसँ ५ कविमीटन पूव
वठनाणपुन गाम अर्था एक दक्षिण दक्षिणमे एकटा पुनाग कठिक अवशेष अर्था
कवि यात्रा कठिमीटन नमगन आ एक कठिमीटन याकन अर्था दस शीटक मोट
देवाथसँ इ देवथ अर्था

असुनगढ़ कवि- मथिषिक दोसन कवि मधुवनी जषिक पूव आ उन्त सीमा पर
नषियुगा यानक कानमे महदेव नऽ एग ५० एकड़मे पसनै अर्षा

जयनगन कवि- मथिषिक तेसन कवि अर्षि मानन नेपाँ सीमा पर पुनायीन
जयपुन आ वन्तमान जयनगन एग ६१मंगा एग पंयोन गामसँ पुनापुन नाम्
अर्षिप्य पर जयपुन के वन्तमान अर्षा

नन्दनगढ़- वेनयिसँ १२ मीँ पश्यमि-उन्तमे ३ कवि अर्षा तीन पंक्तमि १५
टा ऊँय डीह अर्षा

वैनी-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उन्त स्थिति अर्षा, एनऽ अशोक संग आ
वैद्य रूप अर्षा

देकुषीगढ़- शिविन जषिसँ तीन कषिमीटन पूव हरवे के कानमे ६ टा कषिक
अवशेष अर्षा यानु दसि प्यार अर्षा

कटनागढ़- मुजश्चुपुनमे कटना गाममे वशिँ गढ़ अर्षा, देकुषी गढ़ जकाँ यानु
कान प्यार पुनै अर्षा

गौँगढ़-वेगूसनायसँ २५ कषिमीटन उन्त ३५० एकड़मे पसनै ३ गढ़ अर्षा

जयमंगलगढ़- वेगूसनायमे वनयिनपुन थानामे कावन हीँक मय्य एकटा ऊँय डीह
अर्षा एनऽ ३ गढ़ अर्षा नाओकोठी (महौँ) गाम एग ३ गढ़ अर्षा

मंगलगढ़- समसुतीपुन जषिमे हसनपुन व्ँकमे दुयपुना वजान एग देओढ गाम
एग गगान वुद्यक उपदेश एनऽ मेँ, स्थानीय नाजा मंगलदेवक आगहनपन
वुद्य कछु दनि एनऽ नविस सेहे केँर्षा

अवैषीगढ़- प्यगडयिसँ १५ कषिमीटन उन्त अवैषी गाम एग १०० एकड़मे
पसनै ३ गढ़ अर्षा

कीयकगढ़- पूनासिया जमिमे डेगनघाटसँ १० कठिमीटन अन्तन महानगदा गदीक पूवमे ई गढ़ अछी।

वेगूगढ़- टेढ़गाछ थागामे कवठ यानक कागमे ई गढ़ अछी।

ब्रजनिगढ़- वहदुनगंजसँ छह कठिमीटन दक्षिणमे ठेगसवनी यानक कागमे ई गढ़ अछी।

गेऊनी- दनगंगाक वनीठ पून्यासुडसँ १३ कठिमीटन पश्यमिमे एकटा गढ़ अछी जे ठेगकिक मागठ जाश अछी।

बुद्ध

कुन्दगाम- हाजीपुरसँ वन्तीस कठिमीटन अन्तन-पूवमे वसाढ़-वैशाषी आ ठामे वासोकुसुड ठग गाम गढ़-टीठासँ २ कठिमी अन्तन-पूव अछी कुन्दगाम, जगस जौगक रचम तीर्थक महवीनक जग्म मेठ छठगही एत बुद्धक छाउ, अगधिक पुषकामी (नाजा अगधिकसँ पूव एत गहाश नहथी), असोक समुग आ संसद-गवग (नाजा वसिठक गढ़) अछी।

पजेवागढ़ वगही टोठ- एत एकटा बुद्ध मूर्त्ति मेठ छठ, मुदा ओकन आव कोनो पना नै अछी ई स्थठ सेहो नपवानी गामक ठगे अछी।

मंगठगढ़- समस्तीपुर जमिमे हसनपुर वठ्ठकमे दुयपुरा वजान ठग देओठ गाम ठग। गगवाग बुद्धक उपदेश एत मेठ, स्थागीय नाजा मंगठदेवक आग्नहपन बुद्ध कछि दगि एत गविस सेहो केठगही।

मुसहनगियां डीह- अचना गढ़ीसँ ३ कठिमीटन पश्यमि पसुठ गाम ठग एकटा ऊँय डीह अछी बुद्धकाषीन एकजगियां कोठि, वौद्धकाषीन मूर्त्ति, पाइ, वन्तनक टुकड़ी आ पजेवाक अवशेष एत अछी।

अकौन- मधुवनीसँ २० कठिमीटन पशुयमि आ उतनमे अकौन गाममे एकटा उँय
डीह अर्छा, एतऽ वैद्यकाक मून्तऽ अर्छा

वैनाथि-गन्धगढ- गन्धगढसँ उतन स्थिति अर्छा, एतऽ अशोक संग आ
वैद्य सूतऽ अर्छा

वकिमशुषि- गगणपुनमे स्थिति पुनायीन वशिष्टवदियाथऽ गगणपुन णठिक
अंतीयक गाममे गगण यन्मपाक वनाओ वुद्य वशिष्टवदियाथ अर्छा १०८
व्याप्यगण ठेठ नहवाक स्थान आ वाहनसँ पढ्य वरा ठेठ सेहे स्थान एतऽ
गन्ति अर्छा

यन्पागण- गगणपुनक पशुयमिमे, आव गगणसँ सटा गेठ अर्छा ई ठेठ
ठेठक एकटा पवतिस्थठ अर्छा, एतऽ महावीन तीगटा वससावास केने नहथि
दू टा ठेठ मगदनि एतऽ अर्छा, जे ठेठक वाहन तीथंकन वासुपुण्य गथकें
सम्पति अर्छा महावीन वदिहमे छह टा वससावास वतिठहलि वन्पा ऋतुमे यानि
मास एक गम गवासकें वससावास कहठ जाइ छठ वुद्य एकोटा वससावास
वदिहमे ने वतिठहलि, मुदा वैशाखी गगणमे आम्नपाठिक उद्यगमे थियिष्वीगामकें
सन्देश देने छठ। आम्नपाठिसँ गकिषा गन्हस कऽ वुद्य गेठ वसुमती कन्य
यानिमासक वससावास।

अठिप्य

गौनी-शंकन स्थान, मधुवनी णठिक णमथनि गाम आ हैडी वाठी गामक वीय ई
स्थान गौनी आ शङ्कनक सम्मिति मून्तऽ आ ऐपन मथिठिषनमे ठिपिठ
पाठवंशीय अठिप्य। वदिश्वनस्थानसँ २-३ कठिमीटन उतन दिसिमे ई स्थान
अर्छा

गौ-गगणपुन अठिप्य- गगण गगणदेवक पुतन मठेदेवसँ संवथति अठिप्य
एतऽ अर्छा मधुवनी णठिक मधेपुन थानामे ई स्थठ अर्छा

मगीनथपुन- पम्डौठ एग मगीनथपुन गाममे अमठिप्य अछि जइसँ ओइगवान वंशक अंगमि दुनू शासक नामगद्देव आ उक्खनीनाथक पुनशासनक वषियमे सूयना भेटैत अछि।

मंदाक पुनवत- वांका स्थिति स्थलमे मथिठिक्षक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अमठिप्य अछि। समुद्र मंथक हेतु मंदाक पुनयोग भेट छैत। नकिटमे वौसीमे पौनक वानरुम तीर्थक वसुपुण्य नाथक दूटा मूर्ति अछि, पैघ मूर्ति एत पाथक अछि। दोस कौसाक एक सोहँ दूटा पद्यगिह अछि। पौनक वानरुम तीर्थक वसुपुण्य नाथक जन्म यम्पागामे आ नित्वास एतै भेट छैत।

वदिस्वर- मधुवनी जठिमे ओहनाओड सुटेशन एग स्थिति शिविधामक स्थापना महानाज माधवसहि केत। १२ युगक मथिठिक्षक अमठिप्य सेहो एत अछि।

वसैटी (वाइसी-वसैटी), अनिया अमठिप्य - पूसायिंमे श्नीगाम एग मथिठिक्षक ३ अमठिप्य मथिठिक पहि महि शासक नागी इनावतीक नाथक एक वसुपुण्य कौन अछि। नागी इनावती (१७८४-१८०२) जे अकाक समय सुड-सुँ-वक आ अग्र कय्यासकानी कान्यक पुनान्म केने रहथि।

जयगाम कठि- मथिठिक तेस कठि अछि। मान गेपाओ सीमा पुन पुनायीन जयपुन आ वन्तमान जयगाम एग। दमंगा एग पंयोग गामसँ पुनान्म नाम अमठिप्य पुन जयपुन के वसुपुण्य अछि।

वषिसु

हुवासपटी- मधुवनी जठिक सुठपनास थागाक जागेश्वर स्थान एग हुवासपटी गाम अछि। कानी पाथक वषिसु मगवानक मूर्ति एत अछि।

पपिनाही- ठैकहा थागाक पपिनाही गाममे वषिसुक मूर्तिकि यानू हाथ मग मऽ गेठ अछि।

मधुवन- पपिनाहिसँ १० कठिमीट ७७१ गेपाठक मधुवन गाममे यतुगुण
व्रिष्मिक मूर्त्ति अर्छा

कमठादित्य स्थाग- अंयना गढी ठामे कमठादित्य स्थागक व्रिष्मि मंदिर
कम्माट ११११ गान्प्रदेवक मन्त्री श्रीधर दास द्वारा स्थापति भेठ।

हंदापुन अगुमाडठक १५५१ गाममे वृक्षक नीयाँ १५५१ व्रिष्मि मूर्त्ति,
गांयानशैथि मे वनाश्रोठ गेठ अर्छा

मटहिनी- व्रिष्मि मन्दिर

जगकपुन- वृहद् व्रिष्मिपुनाममे मथिठिमाहात्म्यमे जगकपुन क्षेत्रक व्रामन
अर्छा सन्तुहम सतावदीमे संत सून कशोरकें अयोध्यामे सन्यु यानमे नाम आ
जानकीक दू टा गव्य मूर्त्ति भेटठगर्ह, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जगकपुनमे
स्थापति कऽ देठगर्ह। व्रत्तमान मन्दिरक स्थापना टिकमगढक महानागी द्वारा
१८९९ ई मे भेठ। गजक यानूकान यमुनी, गेनुप्या आ दुग्धवती यान अर्छा नाम
गवमी (यैतु सुकूठ गवमी), जानकी गवमी (वैशाख सुकूठ गवमी) आ व्रिहा पंयमी
(अगहन सुकूठ पंयमी) पर एतऽ भेठ। ठगौर।

अंयना-गढीक स्थानीय वायस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक प्रक्षमिक गव्य
मूर्त्ति एतऽ १५५१ अर्छा

गौतम तीर्थ- कमठाठ स्टेशनसँ ६ कठिमीट १ पश्यमि व्रह्मपुन गाम ठग एकटा
गौतम कुम्ड पुष्कामी अर्छा

मुंगेक पूव 'सीता-कुम्ड' गन्म कुम्ड अर्छा, सीता जी एतै पृथ्वीमे
समाहति भेठ छथी। उंढा जठक कुम्ड 'नामकुम्ड', उक्षमस कुम्ड, गान
कुम्ड, आ शतुघ्न कुम्ड सेहो अर्छा, गैयानीमे वड्ड मठिग से मठिग वावू
गढ गानकिठमे सेहो छै, वेसी पढठ ठपिठ गाममे से आव कहाँ?

हठावर्तन- जगकपुरासँ ३५ कठिमीटन दक्षमि पश्यमिमे सीतामढी गगामे हठवेश्वर शिवि मन्दनि आ जगकी मन्दनि अछि एतसँ उठ कठिमीटन पन पुम्डगीक क्षेत्रमे सीताकुम्ड अछि हठावर्तनमे जगक द्वारा हन यथेवा काठ सीता भेटछि छथि। नाम गवनी (यैतन शुक्ल गवनी) आ जगकी गवनी (वैशाम्य शुक्ल गवनी) पन एतसँ मेथ छथि।

शुभहन-मधुवनी जठिक हठाप्यी थानामे शुभहन गगामे जगकक पुष्पवाटकि छठ एतसँ सीता शुभ भेटै छथि।

यगुषा- जगकपुरासँ १५ कठिमीटन उत्तरन यगुषा स्थानमे पीपक गाछक नीयाँ एकटा यगुषाकान पम्ड पडै अछि नामक गोडै ३ यगुष अछि ऐसँ पूव वामगंगा यान वैहए जे क्षेत्रमे द्वारा वामसँ उद्घाटनि भेट छथि।

सुग्गा- जगकपुरा एग जठेश्वर शिवियामक समीप सुग्गा गगामे सुकदेवजीक आश्रम अछि सुकदेवजी जगकसँ शक्ति ठेवाक हेतु मथिथि ऐठ छथि- ऐ गम हुनका ठेवाक वप्रवस्था भेट छथि।

सहिश्वर- मधेपुरासँ ५ कठिमीटनपन गौरीपुर गगामे सहिश्वर शिवियाम अछि।

कपठेश्वर- कपठि मुनि द्वारा स्थापनि महदेव मधुवनीसँ ६ कठिमीटन पश्यमिमे अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरासँ उत्तरन-पूव, ठेनियीसनायसँ ६० कठिमीटन दक्षमि-पूव आ सहसासँ २५ कठिमीटन पश्यमि ३ एकटा पनसद्वि शिविस्थान अछि। एतसँ यडि-अग्र्यानाम्न सेहो अछि एतसँ उत्तरन आ कानी गैवनी, गठसनी, दधौछ, मैठ, नकटा, गौरी, गगन, सठिथि, अयानी, हनश्रिठ, याहा, कनन, नतवा यडि सठ गवम्वनसँ मान्य वनद्विप्वामे अछि।

समिन्दह- थवना सटेसन एग शविसहि द्वाणा वसाओ शविसहिपुन गाम एग
ई शविमन्दनि अर्था

सोमनाथ- मधुवनी णठिक सौनाड गाममे सनागाछी एग सोमदेव महादेव छथी

मदनेश्वर- मधुवनी णठिक अंधना गढीसँ ४ कठिमीटन पूव मदनेश्वर शवि
स्थान अर्था

याम्देश्वर- हंदापुनमे हनडी गाम एग याम्देश्वर गकुल द्वाणा स्थापति
याम्देश्वर शविस्थान अर्था

शठिनाथ- णयनगल एग कमठा यानक कानमे शठिनाथ महादेव छथी

उगनाथ- मधुवनीसँ दक्षिण पाम्डौठ सटेसन एग मवाणीपुन गाममे उगना
महादेवक शविठिगि अर्था वदियापतिकिं प्यास एगठर्हा तँ उगनापुी महादेव
णटासँ गंगाणठ गकिठिणठ पयिठप्यनिहा वदियापतिकि हठ केठापन ऐ स्थान पन
उगना हुनका अपन असठ शविनूपक द्शन देठप्यनिहा

उय्यैठ छनिमस्तकि मगवती- कमठौठ सटेसनसँ १६ कठिमीटन पून्रोत्तन
उय्यैठमे काठदिस मगवतीक पूजा कयैत छथी मगवतीक मौठिके मूर्त्तमिस्तक
वहिन अर्था

उगनाना- माम्डन मसिनक णममूमि महिषीमे माम्डनक गोसाउनि उगनाना
छथी

मदनकाठकि- मधुवनी णठिक कोरुप्य गाममे मदनकाठकि मंदनि अर्था

याम्माडा- मुणश्चुचुपुन णठिमे कटनागढ एग ठक्षमासा वा ठप्यनदेर यान एग
दुगा द्वाणा याम्माडा-मुम्माडाक वय कएठ गेठ ओर स्थानपन ई मन्दनि अर्था

पनसा सूत्र्य मन्दिर- हंदापुनमे सगुनामसँ पाँय कठिमीटन पूर्व पनसा गाममे साढ़े यानि श्वेटक मव्य सूत्र्य मूर्त्ता गेटथ अर्छा।

यैगपुन सहसा- मथिषिक एकमात्न गीठकंठ मन्दिर, संगमे आदिकाषीन मव्य काषी-मन्दिर सेहे ऐ गाममे अर्छा महाशविनात्ना आ काषीपूजा वडू यूमयामसँ यैगपुनमे होश अर्छा।

यनहा, वनमगप्पी, पूनासायिँमे ननसहि अवनानक स्थाग अर्छा, एकटा प्योह जाकाँ पैघ पाया अर्छा जसमे जो कछि शुकवै तँ वडि काठ यनगिगो-गौ अवाज होश नहा ई स्थाग आव ननसहि मगवानक मूर्त्ता आ मन्दिरिक कामसँ वेस वकिसति मऽ गेथ अर्छा एतौ ननसहि पाया श्वाङ्ग अवनानि गेथ छथ।

वसिश्ची- मधुवनी जाषिक वेनीपट्टी थानामे कमतौथ गेथे स्टेसनसँ ६ कठिमीटन पूर्व आ कपठिस्वन स्थागसँ ४ कठिमीटन पश्यमि वसिश्ची गाम अर्छा ज्योतगिस्वन पूर्व महाकव वदियापतिक जन्म-स्थाग ई गाम अर्छा।

मथिषिक वीस टा सद्वि पीऽ- १।गिगिस्थान (शुभन, मधुवनी), २।गुगास्थान (उयैऽ, मधुवनी), ३।हेश्वनी (दोपन, मधुवनी), ४।गुवनेस्वनीस्थान (मगवतीपुन, मधुवनी), ५।मन्दिकाठिका (कोरुप्य, मधुवनी), ६।यमुमाडा स्थान (पयाही, मधुवनी), ७।सोनामार (जगकपुन, गेपाथ), ८।योगद्विना (जगकपुन, गेपाथ), ९।काठिका स्थान (जगकपुन स्थान), १०।जोस्वनी देवी (जगकपुन, गेपाथ), ११।छनिमस्ता देवी (उजान, मधुवनी), १२।वगदुगा (प्यनप्य, मधुवनी), १३।सविस्वनी देवी (सनसिव, मधुवनी), १४।देवी-स्थान (अचना गढी, मधुवनी), १५।कंकाठी देवी (मानन गेपाथ सीमा आ नामवाग प्ठेस, दनगंगा), १६।उगानाना (महषी, सहसा), १७।कात्यानी देवी (वदघाट, सहसा), १८।पुन देवी(पूनासायिँ), १९।कंकाठी स्थान (दनगंगा), २०।मंगलास्थान(मुंगेन),

पर णगकपुन पनक्तिमाक १५ स्थथ आ श्रोतुक्का मुप्य देवता १ हनुमानगगन-
हनुमानजी, रकथ्यामेश्वर- शक्तिगि, इगनिणि-स्थान- शक्ति, ४मटहिगी-
वसिष्ठु मन्दिनि, पण्णेश्वर- शक्तिगि, दमनई- माम्पुव ऋषि, ७ श्रुव कुम्पु-
युव मन्दिनि, दकंयन वन- कोनो मन्दिनि गै मात्न मनोम द्क्षु, दंपुव-
पांय टा पुव, १०यगुषा- शक्ति यगुषक टुकड़ी, ११सगोप्यड़ी- सपुनपकि साग
टा कुम्पु, १२हनुषाहा- वसिष्ठगंगा, १३ कृमा- कोनो मन्दिनि गै मात्न मनोम
द्क्षु, १४ वसिष्ठ- वसिष्ठामत्न मन्दिनि आ १५णगकपुन।

दरगंगा कैथेठकि यन्य- १८८१मे स्थापति ई यन्य १८८७ केन गूकम्पमे
कषागिनसुन गऽ गेठा एकना हेथी गेजेनी यन्य सेहे कहठ णाशु सैट शंससि
ऑसिसी यन्य गुणशुशुपुनमे अछा।

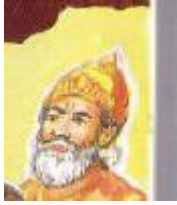
गपिा सगमी मणान- गंगासागन पोपुन दरगंगाक महानपन ई मणान अछा।
मकदूम वावाक मणानःठति गानायस मथिठि वसिष्ठवदियाथ आ कामेश्वर
सहि संस्कृान वसिष्ठवदियाथ दरगंगाक वीय स्थति ई मणान हनिदू आ मुसुठिनि
मनावठम्वीक एकटा पावन स्थान अछा। दरगंगा टावन मसुठि इस्ठाम
मनावठम्वीक एकटा गव्य मसुठि आ यान्मकि स्थथ अछा।

द्वदिह मथिठि नग

वैदिक मथिषि गान

वैदिक ह वैदिक वैदिक विद्वद् हानप्रायःवैदिकयोगि वैदिक प्रथम मैथिली पाक्षिके ई प्रायिकी वैदिक इतिहास माण्डिकी
 ढोनागगिहानये जोगाव वैदिक प्रथम मैथिली पाक्षिके ई प्रायिकी गव अंक देववाक उठ पृष्ठ सगके नखिनेस कए
 देपू अथीयस नेउनेसह गहे पागेस डो वीगिग गौ सिनेओ वस्यएहअ

गान आ नेपावक माटमि पसमठ मथिषिक यनी प्रायोग काठेसँ महान पुत्रप ओ महिषि लोकिक कर्मगुमिहए अछा पनसुता अछा
 मथिषि गानक एकटा छोट संग्रह ऐ संग्रहकेँ प्राम कनवाक हेतु अपन वृहस्पति संग्रहकेँ दगिगिहिसगाउउवैदिकवाभावियोग केँ पगाउ
 आकाशक सन्वायकाल गनकाक, सम्पन्धति अटोगासुन आ संग्रहकानाक ठामे छगहो अथी सभ पठेवा उठ यन्धवाए
 पाठकगाम सागा प्रामाः अय्यवसायिक उद्देश्य आ मान एकैउमके प्रयोग उठ वसिष वसिष देववा उठ कृषिके
 कू वस्यएहअ ३४६, वस्यएहअ ३४७, वस्यएहअ ३६६, वस्यएहअ ३७४ आ मथिषि गानमथिषिक पावग मथिषि यतिकष
 आ मथिषिक संगीत (कथा) गहिन।



वैदिक गणक

'वैदिक गाना' ऋग्वेदिक काठक गमी
 सप्याक गानसँ छगह, यजुम कनैग
 सदेह सुवगा गेगह, ऋग्वेदेमे
 वगमन अछा ओ इगदक संग
 देउगहो असुन गमुथीक वनिद्वय आ
 गहमे इगद हुगका
 वयओउगहोसपथ वगहामक
 वैदिकमाथव आ पुनामक गमिद्वग
 गोटक पुनोहति गौतम छथी से द्दग
 एके छथी आ एगसँ वैदिक गानक
 पुनामना माथवक पुनहति गौतम
 मतिवविद्व यजुमक वषिक
 पुनामना कएगहो आ पुनः एक
 पुनःस्थापना उठ महागणक- र क
 समथमे याजुमवक्त्र्य द्दवाना गमि
 गौतमक आसुनमक उा पधग आ
 मथिषि- गानिका मथिषि गानसँ सेले
 सोन कए गान
 छगहो, मथिषि गानक गनिमाम
 कएगहो गमिक पधगपुन
 वनगमान गणकपुनमे छए, मथिषिक
 मथिषिगानिक स्थाव एयन यनी
 गनिथानि गहो गए सकए
 अछा, अनुमानति अछा गणकपुनक
 उा। सोनयवग गणक सोनाक
 पति छथी आ एगसँ मथिषिक
 गानक सुद्व पनपना देववामे
 अथैग अछा क्ति
 गणक सोनयवगक वादक गन्म
 पुसामे उठ छगह क्ति



वाग्भोका



सीतापतिगाम

हिन्दुधर्मग्रन्थक पुर्ण छथि आ जनक
वृद्धाश्रमक पुर्ण छथि।
याज्ञवल्क्य हिन्दुधर्मग्रन्थक शिष्य
छथि, हुनकासँ योगक शिक्षा लेवे
छथि। कर्नाठ जनक द्वारा एकटा
व्याहामस पुस्तकक शोध-अपह्नासक
प्रयास जेठ आ जनक गणेश
समाप्त जए जेठ (संस्कृत
अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-
अर्थशास्त्र)।



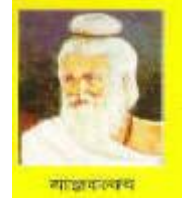
ठल कुश



वद्विध माथव

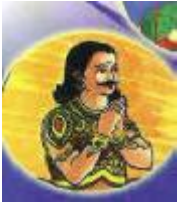
शापथ व्याहामसक वद्विध माथवक
वद्विध आगम, आगिक सदादीनासँ
आगौं रहिबैवाक यन्त्र।

शापथ व्याहामसक वद्विधमाथव आ
पुनासक गभौ हुनू गोटिक पुनोहनि
गौगम छथी से हुनू एके छथी आ
पुनसँ वद्विह नाप्यक पुनामना।



व्याजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मथिथिक दानुशकिक
नापा कर्नाठ जनकक दानुवासे छथि।
हुनकन माताक वा पतिाक नाम
समभवतः व्याजसनी छथि। ओना
हुनकन पतिा देवनागकेँ मानव जास
छथि। याज्ञवल्क्य १ शुक्ल
याज्ञवल्क्य, २ शापथ
व्याहामस, ३ बृहदारण्यक उपनिषद
आ ४ याज्ञवल्क्य स्मृतिकि
दृष्टव्यमक छथी।



अंगनाप कर्मा



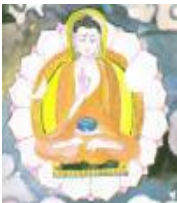
वैशेषिकि दानुशन कर्माद

वैशेषिकि दानुशन कर्माद



महावीन जैन पदद-
पर७

महावीन वद्विहमे छह टा वसुवावास
वनिषथी।



यासक्य जेठ ३५०- २८३



गौतम बुद्ध ऋषि
५६३- ४८३

शोना रँ महावीर ब्रह्मिणे छह टा वसुसावास वणिषण्हे मुदा बुद्ध एकोटा गै मुदा भयिषिमे वौद्ध धम्मक पुनराव पखानि वद्धे बुद्ध वैशाखि गगगोमे आमनपाथिक उद्घाणने वियेखवोगासके सन्देश देवे छथिह



आनन्दभट्ट वैज्जानिक
४७६- ५५०

पञ्चमीने आनन्दभट्टक वनिनाम- (२७) (३४०८) महिपिनायि: भंगलौगी भासुडेन से पोगामव १ सुग दामु दौ भासुडेन से वीपी गीविधयभट्ट: ए सुगो **आनन्दभट्ट:** ए सुगो उदयभट्ट: ए सुगो वणिधयभट्ट ए सुगो सुवेथयभट्ट (सुवपयभट्ट) ए सुगो भट्ट ए सुगो धम्मजयीभिसिन ए सुगो धानाजयी भिसिन ए सुगोवृहजणी भिसिन ए सुगो गीपुनजयी भिसिन ए सुगो वट्टिजयी भिसिन ए सुगो अणयसहि: ए सुगो वणिधयसहि: ए सुगो ए सुगो आदिसिनाह: ए सुगो महेशनाह: ए सुगो हुन्धोयन सहि: ए सुगो सोढन जयसहिन्कायान्धासुगस महासुग वदिया पानजान महामहोपाय्या थ: ननसहि॥



धम्म आ वधिक कथेणने कौटखियक अनथशासुगन आ यागभत्रक्य सुग्गामि वडड समागना अछाणे यासक्यक भयिषिवासी होधवाक पुनाम अछा

अनथशासुगने(१६ वणिधायिकानिके पुनथमायिकामे पडोऽयथाय: बुद्धेयिजये अनिषिडवग्गुधायग:) कनाए जगकक पागक सेहे यन्या अछा

गद्वणिद्वयव्णानिवसयेव्दयिसुयागुनवोऽपी नाणा सह्यो वणिशुधानि यथा दामुडक्यो गाम योण: कानाद् व्नाह्मम कवधायनमनिधयमाण: सवग्गनाप्टेणो वणिवास कनाएस्य वेदेह: ।



सद्धि सनहपाए ७००- ७८०

सनहपाए-७ सद्धिनिधु मरु पद्धमे पद्धिउ, भासुड पविणी विसिनउ एमरुउ भयिषिमे अकधनामन सद्धिनिसुगुणकन पुनवने सद्धिनिसुगु, गामेशणीक अंकुस आँपी, वियिष पाकन अछा भयिषिमे ई यानामा जे भाँड पविसेँ सुमनाम सकुनी कधीम होत्र अछा: ई सनहपाएक भयिषिवासी होएवाक पुनाम अछा



कृष्णामात आ हाथी सुवन

यग्द्विगुपुन मौन्य यासक्यक शिष्य ऋषि
३४०- २८३

यासक्यक शिष्य



आदिशंकराचार्य ७८८- ८२० मंडन भिसिनसँ शासुगान्थ



वंशीयन व्नाह्माम

भूमगोत्र हा १०५०-११५०

कनभे सोनकरियासि गोगू हाक वामन पत्रागिमे अछि- महामहोपाध्याय युननापा गोगू पत्रागिक अनुसाम पीढीक गामना कएलासँ गोगूक पत्राग (गोगूक सोनकरियासि कनभे-वामन रचम पीढी यथानिहए अछि) आनयभट्टक वाए (आनयभट्टक माम्दान-काश्यापमे उट्टम पीढी यथानिहए अछि) आ वहियापाकि पहनि (वहियापाकि वशिष्ठाम वसिष्ठी-काश्यापमे १४म पीढी यथानिहए अछि) उगना १०५० ईमे सहिय होरा अछि। कामस सहिनिहए एक पीढीकेँ ४० सँ गुमा केला सँ आनयभट्टक पत्राग उगना ४७६ ई आ वहियापाकि पत्राग उगना १३५० ई अछि। अछि। ओ शहिससम्भन अछि।

भयिषिक धाएव (गुआन) पाकि वेकदेवना क्पमानाम अपन हाथी सुवननपन सवाम।



छेछन महनाप

भयिषिक वेम पाकि वेकदेवना



दीना- गदनी

भयिषिक मुसहन पाकि वेकदेवना



पुत्रोतिपंजयिाम



गाजा सभहेस

भयिषिक दूधवंसी (दुसाध) पाकि वेकदेवना



दुठना द्याए

गोगू हाक गाम गनौडाक गाणकुमान, "बहुना गोठनि गट्टुआ द्याए" वेककथाक मगह कथागाधका गनौडामे एपनी हनिकन गह्वन छगुहो।



काठदास



वोधिकायस्थ

वहियापाकि पुनुष-पनीक्षामे
मन्तुयुकावमे गंगा गदीक आयव आ
वोधिकायस्थके अपगामे समेवाक
प्यसिा वनासाति अछाणि वादमे
वहियापाकि ७५ कः सेहे पुनयवति
शेव



गायिकाक्षम आ कनानाम मठिके

मथिथिक अमना वनेगक पुनानमगकि गवैयसा



महानाग गान्धेव

मथिथिक कनासाट वंशक १०८७ ई मे
स्थापना ११४७ ई मे मन्तुयु



मठेव

मथिथिक कनासाट वंशक संस्थापक
गान्धेवक पुनाना मथिथिक
गंधवनीया नागपूग मठेवके अपग
वोणोपुनुष मागेन छथी



महानाग हनसहिदेव

मथिथिक कनासाट वंशक
पुनोनीश्वर १३कुनक वनास-
नागनागने हनसहिदेव गायक आका
नाग छवहा १२८४ ई मे पणम
आ १३०७ ई मे नागसहिदेवना
घयिसुहदीग तुगवकसे १३२४-
२५ ई मे हानके वाद गेपाव पठावना
मथिथिक पन्नी-पुनवगधक
वनाहनास, कायस्थ आ कृषानधि
मध्य आधिकारिके स्थापक, मेथि
वनाहनासक हेतु गुमाका-१ ह। कनास
कायस्थक छेठ शकगदण, आ
कृषानधिक हेतु वणिधदण एहे हेतु
पुनथभनाया गयिकना शेवहा
हनसहिदेव पुनेनासासे- आ ई
हनसहिदेव गान्धेवक वंशग
छवहा, पो गान्धेव कनासाट वंशक
१००८ शाकेमे स्थापना केगे- गह्या-
गवहैद शुवयं शशा शाक वन्षे (१०१८
शाके) मथिथिक पासुडति ठिकनी
शाके १२४८ गदगुसा १३२६ ई मे
पन्नी-पुनवगधक वनामाग
स्वतन्त्रक पुनानमगक गनिमय
कषवहली पुनः वनामाग स्वतन्त्रमे
थोडे वुदथ वणिसी ठिकनी मथिथिस
महानाग मायव सहिसै १७६० ई मे
अदिस कनवाप पन्नीकानसे शाप्या
पुसुनाकक पुनासवग कनवओवहली
ओकन वाद पाँजामि (कप्यवो काठ
वनासाति १६०० शाके मागे १६७८ ई
वासुवामे मायव सहिक वादमे १८००
ईक आसपास) शनोत्तनधि गामक



मन्नी गामेश्वर

मथिथिक कनासाट वंशक ननेश
हनसहिदेवक मन्नी सुगानिसोपामे
मथिथिक सोवैयाविके शहािसक
वनासग



भीमां साहेव

भयिषिक मुसुवनि वोकनाकि वीय
पुनसद्वि वोकगाथाक गायका

एकटा नव वनाहमस उपजाकि
भयिषिके उपपत्ता श्रेष्ठ



अभन वावा

भयिषिक भवह जाकि वोकदेवता॥



गनीवन वावा

भयिषिक घोवा जाकि वोकदेवता॥



ठाठवन वावा

भयिषिक यनमकान जाकि
वोकदेवता॥



वंश यमान



कानपि पजायिन



वेनकि



नाय नामपाठ



अयायी भसिन

पगुनहम शतावदीक यवनगथ भसिन
वड पैव नैययाथकि छवह आ कहियो
ककनोसं कनो वसुगक यायना गह
कएवगह, गह छिठ सन हुगका
अयायी भसिन कहए जावगहो



शंकर भसिन



पक्षयन भसिन



"वाचोर्हं ऽग्रादावगृहं न मे वाचा
 सनस्वती। अपूर्नामे पथमे वृत्तपे
 वनामसामा ऽग्राग्रात्तन्मन् ॥" क
 वक्ता। पण्डितरुहम श्राव्दीमे शत्रुवाथ
 भोसिनक धनमे मधुवनी ऽग्राधिक
 सनसिच ग्नाममे शकन भोसिनक
 ऽग्राध मेघशंकर भोसिन महाना
 शैतव संहिक कनपिड पुत्र नाना
 पुत्रुषोर्नामदेवक आसोर्गि छवाह
 एकर वनामव नसानामव ग्नाथमे
 शेटेन अछा शंकर भोसिन
 कवा, गटककान, वनमशासोर्गी आ
 ग्याय- वैशेषिकिक व्याप्याका
 नह्यासिक भोसिन
 ग्नाथावधि- १गौगी दगिभवन
 पुनहसव रकधुस वगिद गटक
 इमगोशवपनाशव
 गटकनसानामवपुनगा-
 टीकादवादिगोह उवैशेषिकि सूत्र
 पन उपसकानककुसुमांजलि पन
 आमोदकपासुडनपासुड- पादय टीका
 १०छगदोगाहगकिद्वयान १सुनाद्वय
 पुनदीप १रपुनायस्यति पुदीपा

वहियापाकि समकषीव ऽग्रादेव
 भोसिन, ऽगे अपन अकाट्य नत्कक
 कानाम पकषय भोसिनक गामसं
 ऽग्राध गेवाह

**भैथषिक आदिकवा वहियापाकि (ऽग्राग्री
 गोस्वत पुनव)**

भैथषिक आदिकवा वहियापाकि (वहियापाकि योर्नः वहिह
 योर्नकषा सम्मानसं पुनसकः ऽग्रा पनकषाठ मामुडव दवाना)

करीस्वत ऽग्राग्रीस्वत (ऽग्राग्री १२७५-१३५०)सं पुनव
 (कानाम ऽग्राग्रीस्वतक ग्नागथमे हगिक यन्य अछा),
 भैथषिक आदिकवा संसकः आ अवहट्टक वहियापाकि
 ऽककुनःसं शोर्गि सम्भवाः वसिंश्री गामक वानव कासुटक
 श्नी महेश ऽकुक पुन समावागान पनमपाक वदोपा
 गायमे वहियापाकि पदावधीक (ऽग्राग्रीस्वतसं पुनवसं)
 ग्नाथ-अशोर्गि हेश अछाऽग्राग्रीस्वत पुनव वहियापाकि-
 कसुमीनक अशोर्गि ग्नाप (दशम श्राव्दीक अग्न आ ऽग्राहम
 श्राव्दीक पुनमन्ना)- ग्नागथ ६स्वत पुनव्याशोर्गिआ-
 वशिन्शीमी ६ मे वहियापाकि उवृष्प कने छथी श्नीयन
 दासक सटुककिामांन, (नयना ११ श्नीवगी १२०६,
 मधुपकषीव मथिधि, वृकि ऽकुक)- श्नीयन दास वहियापाकि
 पांय टा पद उवृष्प कने छथी ऽगे वहियापाकि पदावधीक शोषा
 छी।

६ऽग्राव न माओ कन पनगामस

नावे न गहरी मधुकन वषिसा ६ आ

६मुगवैषा मुकुष कनय मकनगवै ६

ऽग्राग्रीस्वत (१२७५-१३५०) ५५६ कवृषेठ ॥अथ
 वहियावगान वनामना ॥ अष्टमः कवृषेठ ॥अथ नाऽग्रा वनामना ॥
 मे उवृष्प।



महानाग शवि संहि
 मथिधि नपेश वहियापाकि
 आसुनयदागा ओरुगवान वंशक
 महानाग शवि संहि



उगागा महोदेव
 महोदेव वहियापाकि अहोमि गीत
 सुगवा उउ उगागा गोकन वगि नैहा
 छवाह



**महाकवा वहियापाकि ऽकुक १३५०- १४३५
 (भैथषिक आदिकवा ऽग्राग्रीस्वत-
 पुनव वहियापाकिं शोर्गि, संसकः
 आ अवहट्टमे ठेपग)**

महाकवा वहियापाकि ऽकुक १३५०- १४३५
 वहियापाकिऽकुकः १३५०- १४३५ वषिष्वा वसिंश्री-कासुप
 (नागा शविसंहिक दनवानी) आ संसकः आ अवहट्ट ठेपक
 कोनाविना, कोनापिका, पुनप पनीकषा, गोनकषवापिथ
 वषिष्वावषि आदिक ग्नाथ समेग वषिष्ठ संप्रधामे काषाठो नयना ३
 भैथषिक आदिकवा वहियापाकि (ऽग्राग्रीस्वत पुनव)सं शोर्गि
 छथी।

(यात्रिक आचार मधिवि संस्कृतिक पत्रिका, कोठकाना
द्वारा कोठकानासँ वनवाओठ, कोठकानक नाम ६०-७०
साथसँ अप्पाना कामससँ गुप्ता न्यापठ गेठ अछी)



शंकरदेव १४४८-
१५६८

पानिजातहनासा



जगज्ज्योतिमठ १६१३-
३७

हनागौनी वसिह वाटक, कुआन वसिह
वाटक



डाँ सन आशुतोष मुष्नागी १८६४-
१८२४

मैथिली पुनेमी कठकाना वसिहवदियाठयमे
अपन कुठपानिवमे मैथिली अध्यापन सुनूसँ
सनाकोतान यनी, पुनिसापिठ आ
सवसठियिनी दुगू वषिक नूपमे, सन-
१८१७-१८ सँ पुनानमन केठगहा मैथिलिक
पहठि वेन वसिहवदियाठयमे अध्यापन सुनू
गेठ



मदन मोहन माठवीध
१८६१-१८४६

मैथिली पुनेमी काशी हगिदू
वसिहवदियाठयमे अपन
कुठपानिवमे मैथिली
अध्यापनक पुनानमन
केठगहा कठकाना
वसिहवदियाठयक वाद ई
दोसन वसिहवदियाठय गेठ
जानः मैथिलिक अध्यापनक
पुनानमन गेठ



पुददी हा १८६७-
१८२७

जाम कोठय्या कठकाना
वसिहवदियाठयमे मैथिलिक
अध्यापनक १८१७-१८ सनमे
पुनानमन गेठपन गाडगापनी सहि
पहठि अंगेपी गपिठ मैथिली
पुनानमनक आ पुददी हा पहठि
संस्कृत गपिठ मैथिली पुनानमनक
गपिठ गेठ



वलुआ मसिन १८८१-१८५८

जाम कोठय्या वलुआपी मसिन (सुनिकृषम
मसिन), ज्योतिषि
नित्य (कठकाना), ज्योतिषियानय (वनानस)।
कठकाना वसिहमे पुनानमन याननीय अहिस आ
संस्कृत वसिहमे हगिदू गामति आ ज्योतिषिक
पुनानमनक, संगे कठकाना वसिहवदियाठयमे
सन १८१७-१८ सँ मैथिलिक अध्यापनक
पुनानमनक पछाना मैथिली वसिहमे सेहे १८४६
यनी अध्यापन सुनी कुमान यटनी सठि
ज्योतिषिस्व कविसिपनियानयक ' वनान
नानकन ' क सम्पादन (१८४०)।



सुनीता कुमान यदवी १
८८०- १८७७

मैथिली प्रेमो ववुआ
मसिा (ववुआणी
मसिा) सउ ण्पोागिासुव
कवसिायााातुपक 'वाम
ाााक' क
सम्पादन (१८४०)।



अनवन्ध घोष १८७२-
१८५०

मैथिली प्रेमो। वद्विापाा
गोाक अाेणीमे अाुवाा।



स न णी एाासिासग
१८५१- १८४१

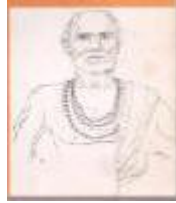
मैथिली प्रेमो ' मैथिली
ाााम' आ ' मैथिली
करोसुोमेथी एाु
वोकावुठेी' ।



कली यन्दा हा १८३१-
१८०७

मूणाम यन्दााथ
हा. गााम- पासिाणुव, एाेगा।
करोसुव, कवसिाणुव गामसै
वसिाणी। गासिासगकै मैथिलीक
पुसुगेमे मुपुय सहाया केवहिला।

का- मथिाि गाा
नामासम, गोा- सुया, मेसवामी
सगा, यन्दा
पदाव, अाुपुासुव
वसिा, अहवियायति आऽ
वद्विापाााथी संसका पुपु-
पुाकाक गद्व- पद्वमय अाुवाा।



महाकली ठाठेास १८५६-
१८२१

हगक णाणम षुाैआ गााममे १८५६ ई मे
ाथा म्ासु १८२१ ई मे अेवहो हगक
अेक णया उपपुय होवा
अा, यथा-नेसुव यति
नामासम. ❖ सानुा शकषा, ❖
❖सावतिा-साथवाग, ❖-यसुा
यति, ❖वद्विाव, ❖-गुा
सपुासति, ❖गानुा मथिा
माहाणुा आा मैथिलीक आािा
ई संसका, हगो णा आसोक
ााा। अा। कवतिाक आािा
गद्वमे सेहो ई णया कए। णेसुव
यति नामासम हगक सगसै वसिािा
ानुय अा। णाम-कथाक उवपुमे
सोाक महामाक महानुव एए मथिा
ाथा मैथिलीक पुाा ई अपा सुाया
ाथा अकाकै वपका कए अा।



म न हानुासा
शासुा (१८५३-
१८३१)

रउ कवाा ५० टा वौद्व यानुाप
संयुाक गोपासै १८०७ मे
वसिासम। [गुाए १, २;
कुकाणीपाए २, २०, ४८;
वनिुवपाए ३; गुाणीपाए ४;
यानुापाए ५; गुाणीपाए ६, २१,
२३, २७, ३०, ४१, ४३, ४८;
काणपाए ७, ८, १०, ११, १२,
१३, १८, १८, २४, ३६, ४०,
४२, ४५; कमुवामुवपाए ८;
ओमुवपाए १४; शाणुापाए १५,
२६; महयिापाए १६; गोापाए १७;
सहपाए २२, ३२, ३८, ३८;
शवपाए २८, ५०; आावपाए
३१; ठेवपाए ३३; एाकापाए
३४; णाएपाए ३५; णाकापाए ३७;
ककापाए ४४; णाणुापाए
४६; धमपाए ४७; णुापाए २५]



गोग्द्वेनगाथ
गुपुन (१८६१-१८४०)

वद्विपाना पद्व्यावठीक
संकठग आ
सम्पादन (१८९०)



म.म. पनमेश्वर हा १८५६-
१८२४

पनम १८५६ ई मे गनौगी गुनम (६१००॥)
पानिमे मेव छवग्वही गथा गविग १८२४ ई मे
। संसकृा वृथाकामक ई दगिगान
वद्विवाग् छवाह गथा **वेध्याकाम**
केसरी **क** उपाधिसं वृश्रीपति छवाह ।
मैथिली साहित्यमे अपन
कृानि **मथिषिगानुव**
वमिन्स **गथा** **सोभनगि**
आप्यथायकि **क** कामे महानुवपुनम
सुथान गपेन छथी ई महाना पनमेश्वर
सहितक दनवाने गान-पंडरिक पदपन
अनेको वृष यनी सुपुनगिगिगि छवाह ।



श्रवध वहिगी पुनसाद शाही १८५८-
१८२८



सुवतानु सुवतानु वय
या हा १८६०- १८२९

मधुवगी पानिगान
उवामो(गवानी) गाममे हगिकन पनम
मेवगहीहगिक कृानि सन
अछी १ सुवेयन- माधव यमपू कावध,
रुगधायवानुनाकि गानुपन्य
वृथाप्यग, इगुढान्य गानुवठीक(सुनी
मदगानगाना वृथाप्यगान मधुसूदनी
ठीका पन) इवृथापुनपियक
ठीका पश्रवयछदकतव गतिकृानि
वसियन दसवधगयान
ठपिपाम उसापुनपिकृष
ठपिपाम दवृथापुनगान
वसियन दंसदियान छकृषाम
वसिक १०वृथुपुनगिगिगि गूढान्य
गानुवठीक ११सकृानगिगि
ठपिपाम १२पामडन- खमड प्यादय
ठपिपाम १३ अद्वैत सदियो यगदृनकि
ठपिपाम १४कृकृकाअपठी पुनकास
ठपिपाम।



म.म. शशगिगि हा १८६०-
१८३०



मुंशी गधुगद्वेन दास १८६०-
१८४५

गाम- सपवान, जवि- मधुवगी "मथिषि
गटक" आ "दूनागद वृथापुग" क उपक



मधुसूदन ओहा १८६६-१८३८



मम मुनषीयन हा १८६८-१८२८

जन्म- गाम- खाल (जिबि मधुवनी), अपन माताक सुखामसोयपमे वसो गेलाह काशीसँ १८०६ ई मे ई "मथिबिभोद" नामक भासिक मैथिलि पत्रिकाक प्रकाशन शुरु केलगही हर्गोपेस (अनुवाद), मैथिलि व्याकरण, "अनुगत उपस्था" (उपस्थास) प्रकाशति।



मुकुन्द हा "वप्पसी" १८६८-१८३६

जन्म हनुमान वप्पसी ठेठ गुनाम (मधुवनी जिबि) मे १८६८ ई मे जेठ तथा हिनक विधवा काशीमे १८३७ ई मे जेठगही। हिनक विभिन्न संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछी। मैथिलिमे हिनक महानुपपुस्तक का अछी। "मथिबि भाषामय जालिस"। एक आनिकि मैथिलिमे हिनक सुष्ठु विविध संग सेहे प्रकाशति जेठ। मैथिलिक ऐतिहासिक वृत्तसंग सशसँ पहिने हिनके प्रकाशति जेठ। एहि जालिसमे मैथिलिक सन्ततोमुष्पी पत्रिय प्रस्तुत कए जेठ अछी।



डॉ. सग गंगागाथ हा १८७१-१८४१

जन्म मधुवनी जिबि सन्निव-पहिले गुनाममे १८७१ ई मे जेठ तथा विधवा पुन्यागमे १८४१ ई मे। ई अपन समयक संस्कृतक प्रकाशक विद्वान म म यतिनयन मसिन, म म जयदेव मसिन तथा म म शिवकुमार सास्त्रीसँ भीमासा एवं दन्तक अद्ययधन कएलगही तथा दन्तक विधिनि दुरुह ग्रंथक अङ्गोमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसानक ध्यान आकर्षक कएलगही। ई जलनमेगुठ संस्कृत काँषिण वगानसमे १८१७ सँ १८२३ यना पुनसिपिठ छलाह तथा एलाहाबाद विश्वविद्यालयक १८२३ सँ १८३२ पत्र्य गत कुठपति रहलाह। मैथिलिमे हिनक सम्पादनि यगदा हाक "महेसवामी संग्रह" तथा "गामगाथ-विनियुतगाथ पदावली" प्रकाशति अछी। मैथिलि साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशति हिनक "वेदांग दीपक" (दन्तक)



जगन्मदन हा जगसीदन १८७२-१८५१



वासवहारी ठाठदास १८७२-१८४०

"मथिबि द्वापम" क छपका

वर्षिक श्रुतग्रंथ अर्थात् एहिमें
जगिन हिनक गविध सग सामयिक
मैथिली पत्र-पत्रिकांमे प्रकाशित
अछी।



नामयगुप्त भस्त्रि "यगु
दु" १८७३-
१८३७ मैथिली प्रकाश



महावैद्यकागामायानु पं दीनवन्धु हा १८७८-
१८५५



शिवनाथ भस्त्रि १८७८-
१८३३

मैथिली शब्दकोष "मैथिली शब्द
प्रकाश" क लेखक।



कौतुकागुप्त सहि



ठकनाथ चौधरी १८८४-
१८२८

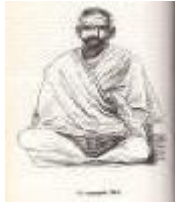


शिवप्रतीगागुप्त श्रीहा १८८६-
१८७०



कपटिश्वर भस्त्रि १८८
७- १८८७

गाम सभमपुन, थागा-
उपशानपुन, जलिन
सभसुगिपुन। ❖सीतादास❖ पुस्तक
अंजनसे प्रकाशित।



वाठकृष्ण भस्त्रि १८८८-
१८४८



वठेव भस्त्रि १८८०-
१८७५

हिनक जगल सहनसा जलिन
वगौल गुरामे १८८० ई मे एलं
गविध सुनवनी, १८७५मे मेठगहा
पुनानमने पं गेगाथ चौधरीसे
ज्यौतीषि पढी दि कासोमे पं सुधाकर
द्विविदीपीक शिष्य मेथिल। वहुन
वन्धु यनिसनसुवनी शिवन
(वानाससी) मे हसुनठिपिपिनि विजागमे
कानुय कएथ। पसुयात् पठनाक
काशीपुनसाद जयसवाठ नसिन्य
संस्थानमे अनेक पुनयोग नलिवनी
हसुनठिपिफिं देवनागेमे विपुयनगी
कएथ। ❖मैथिलीभोद❖ पुनकाशन
एवं मम मुनवीधन हाक पुनोसाहनसे



**आचार्य आनंदप्रसाद
१८८८- १९७१**

सोनामढीमे जनम आ दनरंगामे मृत्यु। "मैथिली नामयनि मागस" सहित गुणसोदासक समस्त नयनाक मैथिलीमे लेखन। मथिलीक्षेत्रमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रान्तीय केवहिना प्रकाशन संस्था "पुस्तक प्रामाण", "लेखनसमाज, पटनाक संस्थापक।



**सोनामढी ह। १८८९-
१९७५**

जनम यौगामा ग्राममे १८८९ ईमे तथा निधन १९७५ ईमे भेल। संस्कृतमे प्रयोगि शास्त्रक अनेक नयनाक अतिक्रम मैथिलीमे हिनक अमूल्य योगदान। (महाकाव्य), संस्कृत सुधा, लोक कथा, पद्य, पद्यवहान, उगटा वसाह, अठकान्दनाम, शुकभूषण, काव्य पट-नस, मैथिली काव्योपवहान, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि। हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि। मैथिली मोडक सम्पादन १९२० ईसें १९२७ ई. यती ई कएल।



**नामायाम ह। १८८२-
१९२८**

प्रयोगि १८९० ईसें भेदमे विप्लव विद्रोह हिनक प्रकाशना नयना अछि। नामायाम शिक्षा, यज्ञ, संस्कृत, शाला शिक्षा, गल्प-सुपु विवेक, समाज आदि। पम्पुडिनी यात्रा यत्र पटना रहल वनावनी महिमे विप्लव रहल।



**वन्नीनाथ ह। १८८३-
१९७३**

जनम मधुवनी जिलाक सनसिव ग्राममे १८८३ ई. मे भेल। तथा १९१४ ई. मे ई काशी जल कलेजमे। वृत्त दिन यती ई मुद्राक्षेत्रपुत्रक धर्मसमाज संस्कृत क्षेत्रमे साहित्यक अध्येताक छल। मैथिली विषयमा कवि विवेक तथा सुमनगी, मधुपनी, मोहनगी आदि



**विनयनाथ नाथ १८८३-
१९६४**

जनम मधुवनी जिलाक गणहना ग्राममे १८८३ ई. मे भेल। छठगी ई एकहानी वृत्तक आयुमे १९६७ ई. मे प्रकाशमे स्वर्गवासो भेल। ई अपन स्वनाम-चर्च पति। म म पथदेव मशिन तथा म म डा गंगाबाथ हाक सांगनियमे विद्यालय कएल।



**उमेश मिश्र १८८५-
१९६७**

जनम मधुवनी जिलाक गणहना ग्राममे १८८५ ई. मे भेल। छठगी ई एकहानी वृत्तक आयुमे १९६७ ई. मे प्रकाशमे स्वर्गवासो भेल। ई अपन स्वनाम-चर्च पति। म म पथदेव मशिन तथा म म डा गंगाबाथ हाक सांगनियमे विद्यालय कएल।

हिनक शपिय छथिह । संस्का
साहित्यमे हिनक अनेक नयन अछि
। जाहिमे नाया पनासिय
(महाकाव्य) क स्थाव वसिपिट
अछि । मैथिलिमे हिनक एकवली
पनासिय (महाकाव्य) एक गरीग
कीर्तमान स्थापति कएएक कोनो
अर्थकानक द्वागत नकवाक
हेतु एकवली पनासिय पनाप
अछि ।



वावू धनुषधारी दास १८ ८५- १८६५

मैथिलिमे वहिनो कविक अगुवा
पनासाति ।



अमनगाथ हा १८८७- १८५५

सनासिव पहिरोठ गुनामने १८८७ ई मे जेठ
। हिनक गयिन पटनामे जायन ई वहिनो लोक
सेवा आयोगक अध्यक्ष छथिह, १८५५ मे
जेठहो ई एवाहावद वसिबवदियाठयक
नओ वन्य यनी कुठपानि नहि पस्यातु हिनू
वसिबवदियाठयक सेहे कुठपानि पदके
सुसोनि कएएहो । ई अंगेणीक
पनासाउ वदिवान छथिह, नाहि संग
हिनदी, उरू, आनसो, संस्का, वठवा
एवं मैथिलिक सेहे अद्वान वदिवान छथिह
मैथिलिमे हिनका द्वाता
सम्पादिनि हनषगाथ काव्य
गुनथावली तथा गोवोददासक
सुनाडानगणन महान्वपुनास अछि ।
एहिसँ गरीग हिनक मैथिलि साहित्य
पनासिक अध्यक्षीय शासक तथा अग्य
ठेप पनासाति अछि ।

१८२३ सँ १८५८ यनी भसिनापी
एवाहावद वसिबवदियाठयमे
संस्का पनासापक छथिह ।
एनागो । मैथिलि शोध
संस्थानक गदिसक पदपन कछु
समय कानय कए १८६२ सँ ६५ यनी
कामेश्वर संहि संस्का
वसिबवदियाठयक कुठपानि नहवाह ।
मु मुनवीयन हासँ पनावाति
नए मैथिलिभोदमे ई ठपिव
पनामन कएएहो तथा अपन
वसिबि पनासाक नयनासँ मैथिलिक
गदयके समुदय कएएहो ।
मैथिलिमे हिनक पनासिद्वि गानय
अछि ।
(सेकसपीयनक टेम्पेस्टक
शावानुवाह), गवोपाप्याग,
मैथिलि-संस्का तथा अनेक
वनामगाणक एवं आठयगाणक
गविय; मगवोयक कृष्णाणक
सम्पादन, वदियापानि
कीर्तविना, कीर्तपानिका, जोनकृष
वापिय आदि अगुवा-सम्पादन
सेहे कएथि ।



गोठाठाठ दास १८८७- १८७७

हिनक पानुन एनागो । ठाठिक कसनौन मे
जेठहो । साहित्य सनाणाक आनिक्ता
अपन संगठन कषमना तथा मैथिलि
साहित्यक सनवोभुपी वकिसक हेतु
सगत गानुन नहवाक कामसँ गोठा वावू
मैथिलि संसाक एक सनामक नूपमे
नहवाह । हिनक गयिन १८७७ ई मे जेठ ।
मैथिलिक पनाया-पनासाने ई अपन
जीवन समपति कएने छथिह । पाठयकानमे
मैथिलिके स्थाव हे नाहि हेतु ई वोडा
उडओएहो । वदियाठय सनाक अनेक
पोथोक गनिनास कएथि । मैथिलि साहित्य
पनासिक ई संस्थापक मासुठक संसस्य
छथिह । १८३१ सँ १८४० ई पनायन ओकना
पनायन मगवो नहवाह । हिनक
मगवोवदियाठयमे गानिक नामक
मासिक पानक पनासाशन जेठ । एहिसँ
पुनव (१८२८-३१) कुसेसवन कुमनाणिक
संग संयुक्त
सम्पादनमे मैथिलिक नामक पान
यथओठ । ई गरीग एवं पनागाशिठ
वयानक लोक छथिह । गनव ठेपकके
पनासाहाति कनव, मैथिलिमे एकनापना
आनव, नव पनासाशनसँ मैथिलिक



कुमार जंगानन्द सहि १
८८८- १८७१

जन्म-वर्षी ११११११११११ २४- ८- १८८८, मन्सूर-श्रीवर्ग
पुनर्मात्रा १७- १- १८७०। शूद्रपुत्र
शिक्षाभंगी, वहीन एवं
कुठपति, कामेश्वर सहि ६१००।
संस्कृत वसिष्ठवर्षिणाथ
। नयना-श्रीवर्षि (अपुनः उपन्यास)
। तथा अनेक कथा एवं एकांकी। युगक
अनुप सामाजिक कृतीनि अर्क
आयन वनाए सुयानवादी दृष्टि कथा
संग्रहक नयना।



जगन्नाथदास हा ' वरिणी
' १८०२- १८८१



व. न. मोहन दाक १८८८-
१८७७



नगेन्दु नथ दास वरिणाथका १८०४-
१८८३



शुवशेखर पुनसाद १८०२-

६१००। पठिक वनीषी गाम, बिस
नाथसाहेव पोपनी छेहनासनाथा सनसुनी
सुकुठ छेहनासनाथमे १८३०-१८६४ ई. यनी
अथयापना मैथिलिमे " वाठ
नामाथाम- पुनकाशानि।



सुधाक हा " शास्त्री
१८०४- १८७४



**दाभोदा ७७ दास व्रिसा १
६ १९०४- १९८१**



**नानागाथ हा १९०६-
१९७१**

गन्म दनगंगा गणिक उगाण
(धनुमपुन) गुनाममे १९०६ ई मे एवं
हगिक गयिन दनगंगामे १९७१ ई मे
जेठगहा १९३० ई मे अउगेणमे एम ए
कस्यक वाद ई कनोक वनप यनी मयेपुन
उयय वदियाउधक पुनयागाय्यापक
छवाह, नकना वाद दनगंगा-नाण-
गस्वनेनोक पुसनाकाउयाय्यकपक
नूपमे १९३६ सँ अगामि समय यनी
नहवाह । १९५२ सँ दूर यगदयानी
मथिथि कठेणमे पुनो हा अउगेणिक
पुनयाय्यक नूँ कानका पसयाण ओहि
कठेणमे मैथिली व्रिसागाय्यकप
वनाअठ गेवाह । १९६५ मे नानागाथ वावू
साहित्य अकादमीक मैथिलीक
पुननिर्घि वनित्वायति जेवाह जाहि पद
पन ओ जीवक अग्न समय नक
नहवाह ।

हगिक नयगाक क्षेत्रग वहुन व्यापक
छठ । हगिक अनुसंधानात्मक गविक दू
गोट
संग्रह **गविवगयमाठा** तथा **पुनवं
य संग्रह** पुनकाशति अछि। संकषति
सम्पादति पुसनाक सभमे **मैथिली
पद्य-संग्रह**, **मैथिली गद्य-
संग्रह**, **पुनायोग गीत**,
कथा काव्य, **नवीन गीत**,
कविता कुसुम, **कथा
संग्रह** आदि अछि
। **कथासन्निशाग**क आयान पन
पुनाजण गद्य क्षेत्रमे
हगिक **उदयन-
कथा** तथा **वननयनिकथा** वेश
प्पयाति पओक ।
व्याकनसक **मथिथि भाषा
पुनकास**,
अठकानपुनत्रेश आदि अनेक
ग्रन्थ पुनकाशति अछि। **मैथिली**

**ववुआणी हा ' अग्रभाग'
१९०४- १९८६**

२००१- ववुआणी हा **अग्रभाग**
(पुननिर्घा पासुव, महाकाव्य) ठेठ
साहित्य अकादमी पुनस्का।



**गाम इकवाठ सहि
गाकेश (१९१२-
१९८४)**

गन्म १४ जुलै
१९१२, मधु २७
नवम्ब
१९८४, हगिक
मैथिली
वेकगीन (संग्रह आ
सम्पादन) एकटा
ठेठोसुडनी पोथी वग
गेठ अछि।

**श्रीवृषभ हा हाटी १९०५-
१९४०**



**काशीकाण मसिन "मधुप"
१९०६- १९८७**

१९७०- काशीकाण मसिन **मधुप**
(नाया वनिह, महाकाव्य) पन साहित्य
अकादमी पुनस्का। पुनापुन मैथिलीक
पुनसना कवि आ मैथिलीक पुनया-
पुनसानक समुपति
कायकना **हंका** कवितासँ
कानगी गीनक आह्वान कस्यवा ।
पुनका पुनमक वषिकषम कवि
। **वसठ अठनी कविता** ठेठ कथय आ
शिव-सेवेना **दू** सा। पन यनम
वेकपुनयिता गेटवनी

साहित्यिक पत्रिका
गौमासिक पत्रिका
संपादक



भक्तभोग्य गोसाई १७
८३- १८७२



मेहे दास

थरहा कोठी वनमगमी अरुवी
गाम नानागुणहवा
दास आसन नानामोहवा, कुपाघाट, गणपुन



वुयग गगन, सं १८२८-
१८८९



अनिल दास

भारतीय प्रसिद्ध गणपत वाचक



सुहेवा १८०८-
१८८३

गाम- डोडी, समस्तीपुरा पूना
गाम- कपिलेश्वर शक्ति "सुहेवा"
नामास्थी नसके समुदायक संग
हिनक नथी वेहे ववाह
संकीर्ण, वगिय
पदावधि, शिवामी, योवनी, हूवा-
संकीर्ण, सोतावनास
पुनवकाव्य आ
सुहेवाक- दोहावधि- कवित्त आर्
भारतीय महि वग आ
संकीर्णकान विकाक कडे
पुनवकाव्य अर्वा आ विकाक
अनुभवने व्यापक नूँ वववर्
अर्वा हिनक "वेहे
ववाह" भारतीय कोनाथी वाट्य
पुनवकाके विकाके अनुकू वगो
अर्वा



सुवांतना सेगनी
सुवा नामसुव भासुव



सुगन्द हा "शास्त्री"
१९३०- १९८८

जन्मकपुर, गेपा, युवावस्थाक
जेठक दुर्घटना श्रेयोगेपा पुनर्जा
पुनर्पिठानक मागद सदस्या- सु
सुगन्द हा शास्त्री

काञ्चीगाथ हा "कनिम"
१९०६- १९८८

जन्म स्थान-यन्मपुर, वेहवा
नेड, एनरगा वहीन। मैथिली भाषा
आंदोलनमे महत्वपूर्ण
भूमिका **पनासन** महाकाव्य छ
साहित्य अकादमी ओ **कथा**
कनिम छ वेदही पुनस्कारसँ
सम्मानित। प्रकाशित कृति
यंद्गात्रहम (उपन्यास), वीन-पुनसूत्र
(वाचकथा), जय जन्मभूमि
(एकंकी), वापिगा
वर्द्धियापति (गाटक), कथा-कनिम
(कथा-संग्रह), कनिम-
कवित्तिलि, क्लोक दलिक
वाद (कवित्तिसंग्रह), पनासन
(महाकाव्य) ओ कनिम-गविधावली
(गविध-संग्रह)
आदि १९८८- काञ्चीगाथ
हा **कनिम**
(पनासन, महाकाव्य) पन मैथिली मे
साहित्य अकादमी पुनस्कारसँ
सम्मानित।

सुप्रभागावत हा १९०६-
१९४८



वेरभरतीये रामकृष्ण

नमाकां हा, गेपा १९०
७- १९७१



ईशगाथ हा १९०७-
१९६५

वृहन्मयी पुनर्जाक कवि। प्राचीन
आ नवीन पद्यक कव्य-नयनाक
वैचिक्रम संयोग हिनक कवितामे
बेटेन अर्थात् दलीत वृत्त, शोषणक
समस्या, स्वदेश प्रेमक
यथानुवादी नयनाक संग संग
व्यक्तगिषिड कल्पनाक अनेक
वैशिष्ट्य कविता मैथिलीमे छपिठनी



सुव्रतेश्वर सहि 'सुव्रत'
१९०७- १९४४

अपन पारिक वृहन्मयी पुनर्जाक कवि।
प्राचीन आ नवीन गीतिक कवित्तिक
नयना वृत्ति संयामे कल्पनी
। **सुव्रत** शान्ति **कविता** संकलन
पुनस्कारसँ मैथिली श्रौण आ नव
यौनाक शंभु सुकठनी



कालिका हा १९०८-



हामिरेण ह। १८०८-१८८४

हमिरेण मैथिली कर्ता १८३३ मे कल्याण (उपन्यास), १८४३ मे "द्वितीयात्मक" (उपन्यास), १८४५ मे प्रामाण्य देवता (कथा-संग्रह), १८४८ मे गणशाठा (कथा-संग्रह), १८६० मे यम्यती (कथा-संग्रह) आ १८४८ ई मे यट्टन ककाक नंग (व्यंग्य) अछि मृत्योपना १८८५ मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा) पन मैथिलीक साहित्य अकादमी पुनस्कासन सम्मानिता।

मूठ गाम ढंगा (हमिरेण), मधुवनी जैन मार्क वनवट्टा, पो उमला, श्याम-मदनपुत्र, जिला-पुनस्योमे वसांगेला साधना (मधुवनी), मदनपुत्र आ काशीमे पासंगी व्याकासक अय्ययना "हनुमान यति" क लेखक।

गंनगाथ ह। १८०८-१८८४

गंन १८०८ ई मे दनगंगा जिलाक धनपुत्र गाममे जेठगृह मृत्यु ४-५-१८४४, यगन्धनी मैथिली कर्ता जेठमे अथशास्त्रक प्राध्यापक छलाह। अवकाश गृहमे क काव्य साधनामे लाग रहलाह। महाकाव्य, मुक्ताक, एकांकी संग वियमे ई साहित्य लेख छलाह। हमिरेण कौयक वंश महाकाव्य अठोलीक वृत्तक रत्न (अभिरामक रूप छल) म विषय अछि। मैथिलीमे सौगठ एवं वृत्तक रत्नक ई पुन्य पुन्योक्त। थिकाह। संस्कृत पत्रपत्रामे काव्य रचना करिहुँ पास्यान्य शैलीक रचना। हमिका नयनामे जेठ। हमिक कौयक वंश ओ कथाम यति महाकाव्य मउग-पत्र्याशक्ति एवं गमस्या मैथिली साहित्यमे अपन वसिष्ठ स्थान नपेछ। एक अभिराम मुक्ताक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं विषय शैलीक पुन्यना अवैत अछि। एक दिस यदी प्राचीन ढंगक ईश्वर वन्दनाक रचना कएलहुँ ते दिस दिस सौगठ (यगुणेशपदी) वेठेड आदि विषयमे पुनस सञ्चन। प्राप्ता कएलहुँ कथाम यति महाकाव्य पन हमिका १८७८ ई क साहित्यक अकादमी पुनस्कासन जेठगृह। १८८० ई मे हमिका अभिराम गन्धसम्पति कए जेठगृह।



जीवगाथ ह। १८१०-१८७७



सुनेण ह। 'सुमन' १८१०-२००२

गंनः गंनः वृत्तिपुत्र, जिला-समस्तीपुर। पुनकासि कर्ता पुनपिदा, अनयना, साओन-शादव, अंकावठी, अगन्नाद, पयस्वती, उगना आदि तीससे अधिक मौलिक कविता-पुस्तक; पुन्य-पनीक्षा, अगुणीजिला, ऋतु संगान तथा वनसन्नाकर, पानिपान-हाम, कथामगंन, आगन्-विषय आदि कविपय गन्धक अनुवाद-संपादन; मैथिली काव्य पन संस्कृतक पुनगाव गामक



पुनामयण ह। १८१०-

गाम नौवा काशी मैथिली गन्धनाथक सम्पादक।

समीक्षा-ग्रंथा **पथसवर्गि** ७९ १८७ मे साहित्य अकादेमी पुनस्का १ तथा **आना** ५१ १८७ मे मैथिली अकादेमीक वृद्धिपत्रा पुनस्का १ प्रकाशना । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र **सर्वदेश**क व्यवस्थापिका सम्पादनकार्त्तव्य- सुवेगद्वारा **सुमन** (नवीगद्वारा गद्यकालिका- नवीगद्वारा गद्य टोली, वागद्वारा) ७९ साहित्य अकादेमी मैथिली अकादेमी पुनस्का १ २००६- प्रसवेगद्वारा **सुमन**, **दशरथा**; **यात्री**-थेगद्वारा पुनस्का १



'गागाप्रानु' वैद्यनाथ मस्त्रि 'यात्री' १८११-१८८८

जन्म अपन माताजाम साठप्यमे वेधवे, जे हुनकर जाम गौरीक समीपमे अछि, जाम-दशरथा। मूठ नाम: वैद्यनाथ मस्त्रि। हिनके नाम गागाप्रानु नामे प्रख्यात। पुनस्का १ कर्त्तव्य: यात्री, पत्रलेखन गद्य गद्य (मैथिली कर्त्तव्य- संग्रह); पाने, वचनना, नवप्रानु (मैथिली उपन्यास); युगना, सान्ठे पंथेवा, प्रयास पथनाई आंथे, पथिजे वृत्तरेखा हिनके नामे कहा था, हिनके वाने वाहे वाथे, पुनानी प्रानु कौनस, नवप्रानु, एसे श्री हिन कहा ! एसे श्री प्रानु कहा ! (हिनके कर्त्तव्य- संग्रह); नानाथ की याथे, वचनना, नई पौथ, वावा वटेसननाथ, वृत्त के वेटे, दुपथेयन, कुमन्थेपाक, अथनन हन, उग्रना, धननाथि (हिनके उपन्यास); आसमान मे यगद्वारा तेने (कहाथी संग्रह); नसंभुन (हिनके पाम्पु कथ); अथनननाथ कथिथिननाथ (नवप्रानु-संग्रह); जीन गोवर्धन; मेघद्वारा; वृद्धिपत्रा के जीन, वृद्धिपत्रा के कहाथि (अनुवाद)। **पत्रलेखन गद्य गद्य** ७९ १८८८ मे साहित्य अकादेमी पुनस्का १ प्रकाशना । याथेवनी जीवन। मैथिली प्रानुनिक नूपमे नूस श्रमना। **गागाप्रानु (सुमन वैद्यनाथ मस्त्रि 'यात्री')**, हिनके आ मैथिली कर्त्तव्य, १८८४



आनसीप्रसाद सहि १८११-१८८६

जन्म: जाम-स्योन, जाम-समस्त्रिपुन। पुनस्का १ कर्त्तव्य: माथि दीप, पूजाक श्रुत, सुनथमुथी (कर्त्तव्य-संग्रह), मेघद्वारा (अनुवाद), आनसी, नवद्वारा, संगीतनी (हिनके कथ संग्रह)। **सुनथमुथी** ७९ १८८४ मे साहित्य अकादेमी पुनस्का १ प्रकाशना ।



गुनु जयदेव मस्त्रि १८११-१८८९ शशिपु गंगानाथ हा

इमे साहित्य अकादमीक छेवे (माना
देशक सन्तोय्य साहित्यक पुनसंका)।



प्रशोधन हा

मथिषि वेगव, दन्सन मैथिषि
पोथीपन १९६६ मे पहिषि साहित्य
अकादमी पुनसंका मैथिषि छेव
पुनपुन।



वैद्यगाथ मठठकि ' वयि'
१९९२- १९८७

१९७६- वैद्यगाथ मठठकि वयि
(सोनापन, महाकाव्य) छेव मैथिषिक
साहित्य अकादमी पुनसंका।



शीम हा १९९२-

पुनसंकाि जाषिक महगपुन गामका
जागम प गवम्वन १९९२ ई वैषिक
श्री श्यामानन्द सहिक
अध्यक्षतामे गानाधाम संकीर्ण
महामसुठठिक स्थापना।



नाथागाथ दास १९९२-



उपेण्डन ठाकुन ' मोहन' १९९३- १९८०

जागम १९९३ ई मे दनशगा जाषिक यानिया गानामे मेठठठि।
मन्पु २४-५-१९८०। संसका शक्तिमे साहित्यायान्य ओ
वडीदा नाणक वद्वित्-पनीकषासै साहित्य-नाणक उपायसि
वशिषाि मेवाह। दैगिक आन्यावगा मे आदिअहिसि, पस्यात् १९६०
सँ मथिषि महिनिक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कान्य
कनै १९७७ मे सेवा वविा मेवाह। मोहनपि कनीव पयास वन्य
साहित्य साधनामे वागठ रहवाह।
वाणियागवद, कुंजानण, सुदन्सन, पुम्डनीक, शासुगी, वामन
आदि छद्म नामसँ पान-पानकामे वविषि वषियपन हविक छप
सग पुनकाशानि मेठ अछामोहन पीक वाजा उडठ मुनठि मे
१०१ गोट कर्नािक संकठन अछि जाहिमे हविक सुदीनघ काव्य-
आनाधनाक वशिषिन वयिनयानाक ओ वशिषिन अगुनाकि
सामगानी उपव्य अछि। एहि पुसकपन मोहन पीके १९७८ मे
साहित्य अकादम पुनसंका मेठठठठि एहिसँ वहुन पुनव
हविक सुठठठठि गामक कर्नाि संग्रह सेहे पुनकाशानि मेठ
छठ।



जायगाथ मशि १९९३-
१९८५



स्त्रीकांग गकुन " वदिया
ठंका" 1"

पञ्जीकाग मोदागण्ड हा १८१४-
१८८८

आगण्ड हा १८१४-
१८८८

उच्य यौग पञ्जीशास्त्राग माग्नगण्ड पञ्जीकाग
मोदागण्ड हा, शविगण, अनगिया, पुगामिया।
पति- सुव स्त्री शपिया हा। गुग- पञ्जीकाग
शपिया हा। पुगामिया गणिक वगैठि उगक
शविगण गामक गणम रर सगिम्वन १८१४
इसोनाठमे अपग मोसा सुव उगण्ड सं
पञ्जीशास्त्रागक अय्ययग १८४८-१८५१ इ यग
दगगामे गह आयाग्य गगगय हाके पांण
पदशेठगशास्त्रागय पनीक्या- दगगग महगण
कुमाग गिगिगव सहिक यगगोपगोग संसकगक
अवसन पग महगणगयगगग(दगगग) कमेगवग
सहि द्वाग आगोणगि पनीक्या- १८३७ इ गहमे
मोपकि पनीक्याक मुप्य पनीक्याक मग उा सग
गगगय हा छठह।



टोक्यो हासेगावा, गदिस
क मथिठि म्पूणप्रिम,
गगगग



मौगगि पवास १८०८-
१८४३ संगीगण्म

पयगछियामे गणम आ अण वरसमे
मगगुय पयगछियोक गपवहदुग
उकधमोवागगयस सहिक शपिया



गामाशय हा ' गामगग' अगगिग गग
पाम्गडे १८२८- २००८

गणम ११ अगसग १८२८ इ गदगसगगगग क्धमपकध
एकदसो गधिके मयवनी गणिगगगण पणग गामक गाममे
शेठगहो अगगिग गीगणठि, हुगकग उय्यकोदकि शासग
गयग अछमिथिविवासो स्त्री गामगग गग गीगगुगगग। गग
वेदेहे गैगव, आऽ गग वदियापगकिठयाम केग गयग सेले
कपगे छथि आऽ गैथठि गगामे हगिकेग पयगठ गणयग गि
गगः केग अगनूप अछो



गामयगुग मठठिके यगुप
द संगीग १८०५- १८८०



अगयगगगयस मठठिके



कुमाग गगगण्ड सहि, संगीगण्म



संगीताचार्य नरवहदुम
उकृष्णीगारायस सहि



पंडति परभागद यौधनी, संगीतज्ञ



हृदयगारायस हा



संगीत गायकनी गणकुमा
नी श्याभागद सहि १८९
६- १८८४



गुनुदेव कामग
शास्त्रीय संगीत



मथिथिस कुमान हा, गवठा व्रादग



गागेश्वरी ठाठ कृमा, ग
वठा व्रादक



वावू साहेव यौधनी १८९६-
१८८८

दनीया गणिक दुवागुनी गामका १८४३ ६ मे
गोवकानुथ कठकृणा अस्थाला गवम
कक्षामे सुवगाणुय आगदोवगमे वाही कए
शिक्षाक शालिनी। कठकृणामे सुधागीत
मैथिलि संघमे पुनवेश कठकृणामे मैथिलि
आनट पुनस दंग, प्यथिल घोष
ठेग, कठकृणा-७००००६ सं मैथिलि-मथिथि
आगदोवगमे
सकृणिया कृहेस आ यामकस हूटा
गाटका १८७९-७८ यनी मथिथि
दनुशन आ मैथिलि दनुशन मैथिलि
मासिकक सम्पादग



उकृष्मस (उपग) हा १८९६-
२०००

मथिथि गणुय अगथिनी।



शुद्धदेव हा 'उत्पल'
१९१६-

गोड्डा ज्योतिष अखण्डान-
भेदपुस्तक लिखिसी। जन्म १६
अक्टूबर १९१६ ई।



नामयान्ति पासुडेय "असु" १९१७-
२०१०



उत्पलोनाथ हा मथिषि यान्ति कथा १९१
७- १९९०



उपेण्डेय गाय हा 'व्यास'
१९१७- २००२

जन्म स्थान-हनुमन्
वक्रीयेठ, मधुवनी, वलिन। १९१९-
उपेण्डेय गाय हा व्यास (हू
पान, उपन्यास) छे साहित्य
अकादेमी पुस्तकालय समन्वयि।
साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुस्तकाल
पुस्तक। पुस्तकालय कर्ता: कुमा, हू
पान (उपन्यास), वडिवना, जगना
जगणे (कथा-संग्रह), पान
संग्रहासो, पुस्तक
(काव्य), महाभारत (परिचय पुस्तक)
आदी।



मगमोहन हा १९१८- २००९

जन्म
सन्निवने, अशुभकाम, वीरगोड्या, मथिषिक
गिसापुस्तकालय २००९- स्वमगमोहन
हा (गोपान, कथासंग्रह) पान
मन्वयोपना साहित्य अकादेमी पुस्तकालय।



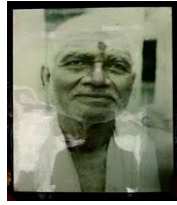
व्यासकेशि वन्मा 'मामपिडम'
१९१८- १९९६

जन्म स्थान-वेडा, दनगो वलिन। १९७३-
व्यासकेशि वन्मा (मामपिडम) (वैका
वगणाना, उपन्यास) छे साहित्य अकादेमी
पुस्तकालय समन्वयि। उपन्यासकाल, कथाकाल
ओ कर्ता पुस्तकालय कर्ता:
कोवनागुण, कर्को, अनुभवानोश्वन, वीरकि
वगणिय, वैका-वगणाना, अवलिन-कुसलनी, नाथ
नामपाव, आदिगुणम आदि उपन्यास ओ कंधलान
(गायक) आदी।



पुं सहदेव हा १९१९-

"मथिषि की वनेहन" पोथी
पुस्तकालय।



वुद्धियानी सहि नामक १९१९-
१९९१

जन्म मधुवनीमे १९१९ ई मे जेठ। अपन पतिो सु
कृषेनयानी सहिसै वगणिय वगणिय शक्ति गानहम
कएवह। ई नामक पुस्तक कएवह, मधुवनीक
मैथिली वगणियक छेवह। जन्मसँ अवकास
पुस्तकालय कएवह। वाक्या-वसुधिसै ई कर्तापुस्तके



आद्यायनाम हा १९२०-

बाग १६७६ अर्थात् संस्कृत तथा मैथिली दुनू
भाषामे हनिक नयना पुनकाशति अर्थात्
यथा-मैथिलीमे-पुनयास (कथा-संग्रह),
-मधुमती, -अमनवापू (कवनि-
संग्रह), -सनशय्या (पिंड-
काव्य) -सम्पत्ति साहसनी (महाकाव्य) आदि
।



यग्न् शानु सहि १८२२

२००४- यग्न्शानु
सहि (शकुन्तला, महाकाव्य) ७७
साहित्य अकादमी पुनस्कान।



सुधांशु श्रेष्ण यौवनी १८२२- १८८०

जगम दनगंजाक भस्मिन्तोषामे १८२२ ई मे
मेठगहा तथा मन्थु १८८० ई मे मेठगहा
कछि दनि वनिनिग जीविकामे नहि पश्यात
साहित्यकानक जीवन पुनानमन कएष। कछि
दनि वेदहेक सम्पादन सुनी सुमनजी
एवं सुनी कृष्णकागत भस्मिन्तीक संग कएष
तानुपश्यात १८८० ई से १८८२ ई धनी
पटगामे -मैथिली महिनि-क सश्व
सम्पादन कएष हनिक दू गोटे गायक-
-मन्थान याहक जोगी, छेयान
आयन, तथा पहि सौह हनिक
गाटकक गीक वयावहानिक अगुमवक
पनीयायक अर्थात् छद्मनामसे हनिक दू गोटे
उपनयास महिनि मे पुनकाशति मेठ अर्थात्
हनिक उपनयास ई वतहा संसा-जे मैथिली
अकादमी द्वाना पुनकाशति मेठ आ जाही
पुन १८८० क साहित्य अकादमीक पुनस्कान
देठ गेठ।



ज्योतर्मय भस्मिन् (१८२२- २००८)

मैथिली साहित्यक
एकटा वड पैघ वद्विवाग
उा ज्योतर्मय भस्मिन्
सन् १८८२ मे
इलाहाबाद
वसिष्ठवद्विवाग्यक
अंगनेजी आ आयुगिक
यूनोपयिग भाषा
वनिगक पुनोच्छेसन आ
हेड पद से
सेवागविान मेठ
छवाहा नकना वाद ओ
यानिकूट गानामेदय
वसिष्ठवद्विवाग्यमे भाषा
आ समाज वनिगक
डीग नूपमे कान्य
कएषगहा सव भस्मिन्
अप्ये भागतिय मैथिली
साहित्य समिति,
इलाहाबादक अध्यक्ष,
गंगागाथ नसिन्य
इन्स्टीट्यूट,
इलाहाबादक अवैगनिक
सयवि आ सम्पादक,
हन्दी साहित्य

सम्भेठन, पुन्यागक
पुनवन्ध वणिगक
संयोगक आ साहित्य
अकादमी, गई दृष्टिीक
मैथिली पुनानिधि आ
भाषा सम्पादक १९७
छवाहा मैथिली
साहित्यक शहिस,
श्लोक छट्टियेयन अँशु
मथिलि, कीनगयो
डुनामा सगक
कूटिकिठ
एडिसन, ऐक्यन्स
ऑन थॉमस हान्डी,
ऐक्यन्स ऑन श्लो
पोस्टस आ द
कॉम्प्लेक्स सटाइठ
इग एगठिसि पोस्टनी
हगिक छपिगि कछि
गुंथ अछा हगिक
वृह्ण मैथिली शव्द
कोष भाग १ दू प्पसुड
पुनकाशागि गए सकठ,
जाहमि देवगागनीक
संग मथिलिकृषन आ
श्लोकेक अंगुणेगीमे
सेहे मैथिली शव्दक
गाम १९९३ ३ श्रुवनी
२००८ केँ साग वणे
साँहमे हगिक गयिग
गऽ गेठगहा



गोवर्गिद हा १८२३-

प्रोगागगद हा १८२३- १८८६

उपेक्षा १८
१९२९-१९९९

हसिनाथो
मतिहसि, माहृवाणा
आनिगिग, धनुसि
नि हागिसिम गद
गुदहसिम नि
मतिहसि आदिपोथी
पुनकाशति

पुनकाशति- २२१५५, ससि
पाहि, मधुवनी, वहीन। सदि
कथाका, उपन्यासका, गदकका, शाषा
वैज्ञानिक ओ अनुवादका साहित्य अकादेमी
पुनकाशति, साहित्य अकादेमी अनुवाद
पुनकाशतिसे सम्मानगति। वहीन सनकास
कामधि गुरुके पुनकाशति, गुनधिसन
पुनकाशति आदिसे सम्मानगति। पुनकाशति
काः
उपन्यास, गदक, कथा, कविति, शाषा
वैज्ञानिक आदि विभिन्न विधिये अडतीस टा
पोथी पुनकाशति। पुनकाशति: सामा
पौती, वेपाथी साहित्यक शहिस (अनु) आदि
। १९९३- गोवर्गि ह। (सामा
पौती, कथा) पुनकाशति ७७ साहित्य अकादेमी
पुनकाशतिसे सम्मानगति। १९९३- गोवर्गि
ह। (वेपाथी साहित्यक शहिस- कुमान
पुनकाशति, अंग्रेजी) ७७ साहित्य अकादेमी
मैथिली अनुवाद पुनकाशति। पुनकाशति
सम्मान २००६ से सम्मानगति। वदिह
सम्पादकक समागान्ता साहित्य अकादेमी
शेथी पुनकाशति २०१० (सम्मान योगदान ७७)

हसिनाथ मधुवनी पाठिक कोशम
गुनामने १९२३ ई मे जेठवही म्पु १९९९ मे
जेठवही। अंग्रेजीमे एम ए कसपाक पस्यारु ई
कछु दनि यवृत्तयनी मथिली क्थिमे
पुनकाशतिक गदक। वहीन पुनकाशति
सेवामे १९९५ धनी विभिन्न पदपन काय कस
। ग्पस्यारुमैथिली अकादेमीक
गदिक ९९९ धनी योगदान ह। मैथिली
साहित्यमे अपन
उपन्यास १९९९मे एं एवं १९९९मे
हेतु पुयाग छथी। हसिनाथ गदक १९९९मे
मतिहसिम एवं कथा संग्रह १९९९
संशोधनमे पुनकाशति पुनकाशति कसने अछी।
एक अतिरिक्त ई महत्वा ग्पस्यारु
आत्मकथाक अनुवाद एवं १९९९मे
पुनकाशति गदक कथा संग्रहक
सम्पादन सेहो कसने छथी।



नामक १५५ ह। 'कसिग
' १९२३-१९७०

आधुनिक यानक वसिपेट
कविति, कथाका, यगिक। पुनकाशति
काः आत्मवेप (कविति
संग्रह), मैथिली गवकविति
(सम्पादन)।



उमागाथ ह। १९२३-
२००९

पुनकाशति- ०१-
१९२३, म्पु ०७-१२-
२००९ महौठ, मधुवनी। गुनधिस
अडतीस विभिन्न विधिये एवं पुनका-
शतिमे विभिन्न विधिये
वसिपेटवदिधायक, दनगं। नयना-
गेष्यारु, अतीत (कथा
संग्रह); मैथिली गवक
साहित्य, अनुवाद यगुष, वदिधायक
गीतशति
(सम्पादन)। १९९७- उमागाथ
ह। (अतीत, कथा) पुनकाशतिक
साहित्य अकादेमी पुनकाशतिसे
सम्मानगति।



जटाशंकु दिस १९२३-
२००६



**पुनवोध गानायाम सहि १
१९२४-२००५**

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाषाण एवं
आनसोक वद्विवाग् मथिधि, मैथिलि एवं
मैथिलिक ई अगव्य यक्ता छथि।
कठकता। नही मैथिलि
ए-नशन, मैथिलि कविति, मैथिलि
नामय आदि पाठकिक पुनकासनक
माध्यमसँ श्नी पुनवोधगी मैथिलिक जो
सेवा कए अछि तिकन वनासन थोडेमे
समयव नही। अनेक वउवा क्कि ई
अगवाए सेहे कए अछि हिन्दिमे सेहे
हिगक कविति संग्रह पुनकाशति
अछि कठकता। वसिंववद्विवाएयमे
हिन्दि क पुन अथयक्था
२००२- ७ पुनवोध गानायाम
सहि (पाएडक स्व- कुतुए रेग
हिन्दि, उन्हे) छेउ साहित्य अकादमी
मैथिलि अगवाए पुनस्का।

**मदनेश्वर मसि १९२४-
२००४**

"एक छथि महानगी" पुनकाशति।

**अमोघ गानायाम हा "अमोघ"
१९२४-**



**मुनषीधन सहि, वनजमो
हग डाकुन, सुशंकन हा,
मदनेश्वर मसि १९२४-
४-
२००४, छेउ गानायाम
मसि, देवगाथ नाथ**



मनगाथ मसि मंग १९२४-



**आगवद मसि १९२४-
२००७**



**डॉ. जयमंग मसि १
१९२५- २०१०**

जयम १५-१०-१९२५ म्पु ०७-
०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरीपुन-
मजगहि।



यगुनगाथ मसि अम १९२५-

जयम: प्पोजपुन, मयुवगी। वनषिठ कवति, कथाकान-
उपन्यासकान। हास्य-व्यंग्यक कवितिमे वेजोडा।
मैथिलिक छेउ समनपति व्यक्तित्व। पांय एनजगसं
वेसो कथा आ वद्विवाग्, वीनकव्या (उपन्यास) जए
समाधि (कथा संग्रह) पुनकाशति
।१९९३- यगुनगाथ मसि अम-१ (मैथिलि
पाठकानिक वद्विवाग्) छेउ साहित्य अकादमी
पुनस्कासँ सम्मानति। एम एए



**मुकगाथ हा (१९२६-
२००९)**

१९८५- जयमग्न भस्मिन् (कविता कुसुमाभाषि, पद्य) छेउ साहित्य अकादेमी पुनस्का- मैथिली।

एकेडमी, छेनेगियासनायसे शिक्षकक रूपमे अवकाश पुनप्रा. आशा दशि, गुण्दुदी, युगयक, उगटा पाठ आदि कविता संग्रह पुनकाशिता। १९८८- यग्नगाथ भस्मिन् (पुनसुनामक वोखव वेनायध कथा- नागसेपन वसु, वागुठा) छेउ साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवाए पुनस्का। यग्नगाथ भस्मिन् अमन २०१० मे मैथिली साहित्य छेउ साहित्य अकादेमीक श्रेष्ठ (माना देशक सर्वोच्च साहित्यक पुनस्का)।



शुशंकन ह। १९२६-



दीनागाथ पाठक 'वग्यु'
१९२८- १९६२



अनं वहिनी ठाठ दास "श्रुदु"
१९२८- २०१०

२००७- अगन वहिनी ठाठ दास (युद्ध आ योद्धा- अगम सहि गानि, मेपाठी) छेउ साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवाए पुनस्का।



क्षमकाग्न भस्मिन् १९२८- २०००



जगदागत् ह। १९२८-



दुर्गागाथ ह। "स्नीश"

हगिकन जगम मयुवनी जठिक वट्टी गाममे १९२८ ई मे जेठगही हगिदी आ मैथिलीमे एमए आ बीएड केवाक वाद कछु दीगि स्कुलमे अध्यापन, छेन मठिवा कठिण, छेनेगियासनायमे मैथिली आ हगिदी वनिजाक अध्यापक मैथिली भाषामे पहिली पोएयु दी। "स्नीश" जिक मैथिलीमे पुनकाशिता नयना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "बुधन मानती" (सम्पादन), "महामत्स्य ओ भगु" (कविता), "वाट्य कथा सा" (सम्पादन), "पुनुषान्थ" (पद्य वाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आठियवाग्नमक गविन्य।



**नामकमठ यौधनी १८२८
- १८६७**

महावि, सहनसा नयना- आर्हा
कथा, आनंदिअन, पाथन
शुभ (उपन्यास), स्वनांथा (कवित्त
संग्रह), एका पाठा (कथा
संग्रह), कथा पाठा (कथा संग्रह
सम्पादन)। हिनदिमे अनेक
उपन्यास, कवित्त
नयना, योनाडु (वडुआ उपन्यासक
हिनदि नूपागत) अध्वन पुनसहिया



**वशिखनाथ हा "वशिपायी"
१८२८- २००५**

"नाम सुधस सागत" (मैथवि
नामास) १८८० ई मे पुनकासिता २५
नववनी २००५ कें म्ासु।



**नयधानी सहि १८२८-
२००७**

समीक्षक, कवित्त पुनकासण:
वैद्यगाणमे नात्तकि
सहियां, समीक्षा शासना अर्हा।
नामक पुस कौण, मधुवनीमे
मैथवि वनिगाक पुनव अध्वकष।



**शैलेण्डन मोहन हा १८२८-
१८८४**

१८८२- शैलेण्डन मोहन
हा (शानायण्डन वृधकृत्तिआ
कथाका- सुवोययण्डन
सेग, अंगुणी) एठ साहित्य अकादेमी
मैथवि अणुवाड पुनसका।



**वनिधनाथ गकुन १८२८-
२००८**



**नमेशयण्डन वन्मा १८३०-
१८८०**



**गोपावणी हा 'गोपेश'
१८३१- २००८**

नाम मधुवनी नाविक मेहथ गाममे
१८३१ ईमे शैलेण्डनमोहन
नयति **सोण दासक यट्टिडी,**
गुम शैलेण्डन,
एठवम **आव कहु मग केहन**
एठवम, "मपाणक
पाठ" पुनकासिता शैलेण्डनमे



**वनिकाणण्ड गकुन १८३१-
२००५**

२००५- वनिकाणण्ड गकुन (यानन घन
गण्यो, पद्य) मैथवि एठ साहित्य
अकादेमी पुनसका।



**नामाकांन मसिन १८३१-
२००५**

सोनदासक थट्टी वेस लोकपुनयि
शेठ २००६ ई-श्री गोपाथणी हा
गोपेश, मेहथ, मधुवनी; धात्री-
थेना पुनसका।



शेठ १९३२- १९८३

जन्म स्थान वसई यागपुना
मधुवनी, वहिन। पुनसद्वि
कथाका। ओ उपन्यासका।
पुनकाशति कर्ता: पुनगिथि,
(कथा संग्रह), पृथ्वी-पुन
(उपन्यास) आदी।



मुनामि मधुसूदन गोकुल १९३२-

गानासंका वंदेपाययक वंश
उपन्यास "आनोय गकिलग" क मेथि अगुवा
शेठ साहित्य अकादेमीक अगुवा
पुनसका १९८९ शेठ छगही।



ब्रह्मचारी रामायस गोकुल १९३३-



धर्मकेतु १९३२- २०००

जन्म स्थान
कोरठय, मधुवनी, वहिन।
पुनसद्वि कथाका, उपन्यासका
ओ कर्ता। पुनकाशति कर्ता: दू टा
कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास।



नानमोहन हा १९३४-

जन्म स्थान कुमनवाजतिपुन, वैशाथि, वहिन। पुनप्याण
कथाका ओ संपादक। आर काएही पुनसू (कथा- संग्रह) शेठ
१९८६ मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानगति। पुनकाशति कर्ता: एक
आदी एकां, हूँ सँय, एकटा रोस, अगुवाक, आर काएही
पुनसू (कथा संग्रह), गठिनामा, जगही
ब्रह्मचारी, टीपुमीप्यादी (आवियग)। **आनम** पत्रिकाक
संपादनापनवोच सम्मान २००९ सँ सम्मानगति।



डॉ. धीनेन्द्र १९३४- २००४

जन्म स्थान
वेहना, मधुवनी, वहिन। पुनसद्वि
कथाका, उपन्यासका ओ कर्ता।
पुनकाशति कर्ता: कुहेस आ
कोरिम, पहाडा घुनक
आगि, सपुनप ओ मनु अपन
मनद्वि (कथासंग्रह) हेनमे टांगठ
कोट, काएही ओ आर (कविता
संग्रह) सहति कैक वयिमे ब्रिजिग
पेथी।



निमेश रामायस १९३४- २०११



बाबू श्री सत्यनारायस सहि आ नाथवायान्य



माधनन्द मिश्र १९३४-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई.केँ
सुपेठ पाठिक वनेगथि गाममे

गाम- नमेश गामायस दास, जन्म १५
मान्य १९३४ के मधुवनीक वहेना गाममे।
पति- श्री हरविष्णु ठाकुर दास।
शिक्षा मधुपुर, मधुवनी आ पटनामे।
१९६१ ईसे १९९४ ई तक
एक कालेज, पटनामे हिनदी
विभागेमे अध्यापक। पाथक
वाल (मैथिली कथा
संग्रह, १९७२) पुस्तकालिका मन्सु
१२ जनवरी २०११ के पटनामे।

नेत्रविज्ञानिक वेदा, आभिमोम
आ पाथक आभिमोम यन्त्र-
वर्णन- हिनकी कथा संग्रह संग
छहही विहाडि पाठ पाथक, मन्-
पुत्र, पोना आ यडि
आ सुन्यास हिनकी उपन्यास संग
अष्टो दशमि हिनकी कविता संग्रह
अष्टो एक आनिक सोने को मेय्या
माटी के वेग, प्रथम श्रेष्ठ पुत्र
य, मन्पुत्र, पुणेति आ सुनी-
य हिनकी हिनकी कविता
अष्टोविंश- भाषावर्ण
मन्सि (मन्पुत्र, उपन्यास) प
मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुस्तकालस
सम्मानिता।

प्रबोध सम्मान २००७से सम्मानिता।



नमान्जुद १९३५-
२०११



सोमदेव १९३४-

उपन्यासक ओ कवि। साहित्य
अकादेमी पुस्तकालस सम्मानिता।
पुस्तकालिका कविता संग्रह, लेख
अनकवि (उपन्यास), काठ खवनी
(कविता संग्रह), यत्रैव (गीता
वाद्य) सोम सास
(दोहा) २००२- सोमदेव (सहस्रमुष्मी
यौक प, पद्य) छे साहित्य
अकादेमी पुस्तकाल २००१ ई- श्री
सोमदेव, दनगंगा; यात्री-येना
पुस्तकाल, प्रबोध साहित्य
सम्मान २०११।



नमान्जुद ठाकुर दास १९३४-

"कामात्मक" सम्मानिता "यत्रि-
वियत्रि" पुस्तकालिका।



नमान्जुद गोमु १९३४-
२०११

जन्म स्थान
उसमान, दनगंगा, वहील। वनपिंड
कवि, कथाकाल ओ उपन्यासक।
साहित्य अकादेमी पुस्तकालस
सम्मानिता। पुस्तकालिका कविता:
कथोट, न्किस, अंतरेव



काकिकां ह। "वूय"
१९३४- २००९

हिनक जन्म, महान दानकिक
उदयनाथान्क कन्मन्म
समस्तीपुर जाविक कवि
गाममे १९३४ ई मे जेवना। पति
सुव पंडित नानकिसिंह ह। गामक
मध्य वृद्धिवाचक प्रथम



श्याम यन्त्र १९३४-

उपन्यास "नूपा दैवी" पुस्तकालिका।
गाम मन्गया, जावि- मधुवनी।

आकाश (कथा-संग्रह), दूधशुभ्र (उपन्यास), अंगार, ओकरे नाम (कविता-संग्रह)। २०००- १भाबदे गेमु (कठोक गस वाग, पद्य) छे साहित्य अकादमी पुनस्काग वदिल सम्पादकक समागान्ग साहित्य अकादमी छे पुनस्काग २०११ (सम्गान योगदान छे)

पुनयागायथापक छे। मागा सुव कथे देवी ग्हीमी छे। अंगारसंगानक समस्गीपुन कांछेग, समस्गीपुनसे कथकाक पस्याग वहाग समकानक पुनयंउ कनमयागीक नपमे सेग पुनंग कथेग। वाछे काछे कविता वेपनमे वपिश न्या छे। मैथिली पत्रिका - मथिली महिने, माटी - पागी, भाषा तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा पुनकाशति पत्रिकामे समग्र - समग्र पुन हगक नथगा पुनकाशति हेग गहछेग। गीवगक वरिधि वरिधे अपग कविता एवं गीग पुनस्गी कथेग। साहित्य अकादमी दखि द्वारा पुनकाशति मैथिली कथाक वरिधे (संपादक डां वासुकोगाथ हा) मे हास्य कथा कानक सूये मे डां वदियापति हा हगक नथगा **यनम शास्त्रनायानुयक उछेग कथेग। मैथिली अकादमी पटना एवं मथिली महिने द्वारा पुनसा पत्र गेग गारा छे। संगानस एवं हास्य गसक संग-संग वरियग मछक कविताक नथगा सेहे कथेग। डां दुगागाथ हा सुगस संकषति मैथिली साहित्यक शहिसमे कविक नपमे हगक उछेग कथे गेग अछे।**
पुनकाशति कविता (मन्गपनी)
: कविगवि- कविता-संग्रह



उगीवाठ संग्राम "सुगोत्रियि" १९३५-

"मथिली की पासुदिय पुनपनी" पोथी पुनकाशति।



गामगद, यगुषा, गेपाठ १९३५-२०२०

साहित्य तथा अग्याग्य क्पेगक कठोक सखे वृकसिअ अपग पुनसासुगीग आ पथ-पुनदुसक भागेग छथी मैथिली साहित्य-क्पेगने हगक पुनयिक मादे एवाए क्हेव पुन्यापु हेग। मेथिलीक मूदयग्य साहित्यकाग डां योगेग हगका मैथिली साहित्यक सनसनेपु कथाकाग भागेग छथी हगक कथामे पुनीकागकका अदुग पुनयोगेग गह, अपति एकटा अदुस कथाक समस्ग वैशपिटसवदियमाण गेग अछी। कथाकागक आनिका ई उाकषट समावेयक, गटककाग आ कवि सेहे छथी। गेपाठमे मैथिलीक पहि भोगेगनाग एपिवाक सुनेय सेहे हगका पाग छगीसामागकि कुगीसिअके कुसवासे यतिगस कनवामे, यतिगनीय वगएवामे आ मग-मसुगपिकपन अमटि छाप छेइवामे गामगद सदिहसुग छथी। यगुषा गिठिक कुन्या गाममे गगमठ गामगदक पुनस गाम गामगद



केदानगाथ यौयनी (१९३६-)

मैथिलीक पहि श्रुति 'मभागा गायय गीग' केन गतिगाग। द्रवभसें एकटा गतिगाग छथी केदानगाथ यौयनी आ दोस गदगभेग दासा वादमे आनुथिक मपुनीवस गेस गहगतिगाग। मेठपनि उदयगनु सहि मागा-सुव कुसुमपनी देवी, पतिग- सुव कसिनी यौयनी, गगम: ०३०१९९३६

गुनापुना गेग (दुगंग), अग्य पागिगीके सदस्य-पागी-सुगीगती कुमुद यौयनी, संगान- पुनयम पुगी-सुगीगती कगिस हा, दवगिय पुगी-सुगीगती अग्यगा यौयनी,

कृतिम छति अगुणोणी वषियक अवकासपुनापुन शकषिक नामगदुन व्वाकाम, पाठ्यपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ विपिवाक काणमे गनिगना सकृति छथि

शकषि- १९५८ ईमे अन्धशास्त्रमे सुनाकोणन, १९५९ ईमे ००० १९६९ ईमे केशिखेनगिया विसिं अन्धस्थास्त्रमे सुनाकोणन, १९७१ ईमे मान्केटिगि एड डिस्ट्रीब्युशन वषियमे गोखडेन गेट धूनिविसिं, सागशुनोसिसिको, उपअ सँ एमवीए, १९७८ मे गाना आगमन १९८१-८२ क वीथ गेहान आ पुनकशुनोमे शेन वम्वद, पुमे होश गिटासनेटक वाए २००० सँ छेनिधिसनास, एनंगामे गिसासद टा उपन्यास- यमेविनी २००४, कान २००६, माहुन २००८, अवाना गहनिग २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८ सम्मान- १) वटिह साहित्य सम्मान, वन्य-२०१३ (हानपेड मैथिली मंथ, गीथी द्वाला), २) पुनवध साहित्य सम्मान, वन्य- २०१६ आ ३) केएन सम्मान, वन्य- २०१६, 'अवाना गहनिग' छे



जीवकांत १९३६-

गाम- जीवकांत हा, पति- गुमानगद हा, माता- महेश्वरी देवी, जन्म- २५-७-१९३६ अगुआड, जति- सुपौठा गौकरी- वीपुआन शकषिक (उपपिपौषी १९५७-८१), हीनेदी शकषिक (उपडिओड एवं उपपिपुआन १९८१-८८)। पहि विथना- शोडिया आ टटिहे (कसगि), जगवनी १९६५ मथिखि महिनि)। पहि छपठ पोथी- दू कुहेसक वाट (उपन्यास १९६८)। गान पोथी- प्पिपिक वीअनी (२००७ वाठ पद्य कथा), अठगनी प्सठ वगमे (पद्य कथा संग्रह) आ पाना पुन पुनकासिया (जीवन- वानक अश)। पुनसकान- साहित्य अकडेमी १९८८ क अछि थिडे, पद्य, कनिम सम्मान (१९८८), वैदेही सम्मान (१९८५)। पुनकासिगि पोथी- **कसगि संग्रहनाथ हे** पथी (७१), थान गह होख मुकन (८१), गकैण अछि थिडे (८५), पाँडे (१९८६), पानि गोगमे अछि वसुनी (८८), शुगुनी गोठाकासिमे (२०००), गाछ हूँ-



हृदय १९३६- २०१६

पत्नी महाकृष्णी संग छायाथिनी "जगम गुआ मति हाहु" पुनकासिगि।



देवकांत हा १९३६-

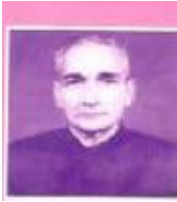
हूँ (२००४), छाह
सोहाश्रीन (२००६), प्यिपिनिकि
वोअनी (२००७)

कथा- संग्रह एकसगी डोढा किदम नम
ने (७२), सून्य गठि नहण
अछी (७५), वसु (८३), कमीनी
होण (८८)

उपन्यास कुहेसक
वाट (६८), पगपिपि (७७), गही, क
नहु गही (७६), पीयन गुणव
छण (७९), अगनिवाग (८९)

हिनदी अनुवाद- गशिगन की
थोडिया (नकैत अछी थोडि, साहित्य
अकादमी, दिसि २००३)।

पुनवोध सम्मान २०१० सँ सम्मानाति।



डॉ. अमरेश पाठक १९३३-६-

हिनक जगम सोनामडो जठिक
अनानुगत सामाना गुनामने १९३६ मे
जेटणही १९५७ मे पटना
वसिष्ठवर्द्धियाथमे मैथिलीक एन ए
पनीकषामे पुनथम श्रोमीमे
पुनथमस्थान पाओण। १९५७ सँ १९६०
यनी नामक ३५५
महावर्द्धियाथ, मयुवनीमे व्याप्यागा
नूपे नकना वाट पटना वसिष्ठवर्द्धियाथमे
व्याप्यागा। नूपे कान्य कनए छाओह।
पटना वसिष्ठवर्द्धियाथमे मैथिली
वशिष्ठास्यक नूपे। मैथिली उपन्यासक
आठियनात्मक अयप्रयण शोय
पुनवग्यपन हिनका वहिन वसिष्ठ-
वर्द्धियाथ द्वावा। डॉ. ठोडिक उपाथि
जेटणही। ई शोय पुनवग्य पुस्तकाका
नूपे सेहे पुनकाशति जेठ अछी वहिन
नापुटनराषा पनीषिक वर्द्धियापति
गुनथावठिक सम्पादक मसुडक
सदस्य। हिनक अग्य पुनकाशति नथवा
अछी नविवग्य संकण। एका
छोडा वशिष्ठा पन-पतनिकामे हिनक
करोको वविवग्य पुनकाशति छणही।
मैथिली अकादमी द्वावा पुनकाशति
कथा-संग्रहक बेहे एक सम्पादक छथि।
ई अयकिलन उयय सगनीय
आठियनात्मक वविवग्य ठोडि छथि।
२००० डॉ. अमरेश पाठक,
(नमस- शोषम साहनी, हिनदी) छेण



वठनाम १९३६- २००८

जगम स्थान
पयही, मयुवनी, वहिन। वसिष्ठा
कथाका। पुनकाशति कः
दकथण देवाण (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुन पुनदीप १९३६-

गुनाम- कथवान, दनशंगा। पुनशिक्षति
एनए साहित्य नग, वविव
शासनाती, पयगुनी सायका हिनका
नथति "जगदन्व अहे अन्वन्व
हमन" आ "सशक सुथि अही छे छे हे
अन्वे, हमना कए वसिष्ठा छे छे" मथिठिमे
छेणोड शए जेठ अछी

साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवा
पुनसंका।



नामदेव हा १९८६-

कथाकार, समीक्षक, अगुवा, ग्रंथ सम्पादक। साहित्य अकादेमीक मूठ एवं अगुवा पुनसंका पुनपा कर्ता। छ ना मोथो छि वसिष्ठवर्द्धिाध्य दनभंगाक मैथिली वलागाक पुन पुनयान्त्र। पुनकाशवः पसहिण पाथन, (अनु) आदी १९८९- नामदेव हा (पसहिण पाथन, एकांकी) छेठ साहित्य अकादेमी पुनसंकासँ सम्माननि। १९८८- नामदेव हा (सगा- नामदेव सहि वेदी, उजू) छेठ साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवा पुनसंका।



वीगेश नाथ ङकुन १९८६-

जन्म पुनसंका जाविक यमदाहा। पुनसंका १९८६ ई मे मेठगहा। गेगे अवस्थासँ गीत गएवमे एवं कर्ता। छिप्यमे वसिष्ठ नुय्या। कोनो मंथ पन गढ मेछा पन ई सहगहा। सुनोनाकेँ आह्लादि कर्ता छथी। हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मंगी महाकाव्य, एक पुनयोगयन्त्री काव्य, एक उपन्यास, एक गटक एक नाटक एवं एक हिनदी गटक, पुनकाशनि मेठ छगहा।



वीगेश वसिष्ठ वन्मा १९३७-२००३

मैथिली कर्ता कायस्थक पाँजाकि सन्वेषक, वलागक वलागिओ ओ पठ्ठनी तथा अग्य कथा (कथा संग्रह)



वीगेश मठकि १९३७

जन्म- ३ जगवनी १९३७ ई पनसोनी, मधुवनी मेकवा, सम्पादक, समीक्षक। आपन, अगुवापुनक सम्पादन। अगुवा-शिया (कर्ता संग्रह)।



कीर्तानायास मसि १९३७-

जन्म १७ जगई १९३७ ई केँ गाम शोकरा (वनीनी), जाविक वेगुसनायमे मेठगहा। हुनकर पुनकाशनि कर्ता अछी सोमारा, महागान (दीनव कर्ता), हम सावग गहा छिप्य, वसुत लेस शानि सुन (एहि पोथीपन साहित्य अकादेमी १९८७ पुनसंका), आदमीकेँ जोहिन (कर्ता संग्रह)। संसनास-अपन एकांके, सम्पादना, पुनक दनपसमे सम्पादन- आपन मासिक पुनिका, आयुगकि मैथिली साहित्य, 'दइ, नामकमठ जोवग आ साहित्य, 'दइ, कथा-संकठग- काठ कोडी। आयुग- अन्था- २००४



गौनीकांन यौधनीकांन १९३७-२००१



**पुगुठ कशिीन मशिीन १८
३८- २००७**

मैथिली शब्दकोष:



पुनश्चुष्ट कुमान सहि 'मौग' १८३८-

ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला- समस्तीपुर। मैथिलीमे
पुनपाठक मैथिली साहित्यिक
शाहिस (वर्नाटवर्ग, १८७२ई), रत्नहनुमान (नर्मिणाण
द्वारा १८७२ई), ३० मैथिली (नैमासिक
सम्पादन (वर्नाटवर्ग, वेपार १८७०-७३ई), ४ मैथिलीक
वेगगीन (पटना, १८८८ई), पुनपाठक आयुक्त मैथिली
साहित्य (पटना, १८८८ई), ६ पुनमयवृत्त यथगति
कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७ वाङ्मोक्तिक
देशमे (महान, २००५ई)। २००४- ७ ३ पुनश्चुष्ट कुमान
सहि (मौग) (पुनमयवृत्त की कवनी-
पुनमयवृत्त, हरिद्वी) छेठ साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद
पुनसका।



महेश्वरनाथ महेशिक १८३८-



पुनसुनाम हा १८३८-

ग्राम- मेहथ (मधुवनी), कर्ण-
डास्मेवश्वर अंशु पीस रंग
रंगुवाशि डनामा, कृषिसिधिन
पोस्टिक डनामा।



**कुठागवृत्त मशिीन १८४०-
२०००**

जन्म पकडी कोठे, सोतामढी, वलिन।
सुवाप्पिया
कवि, संपादक, समावियक।
पुनकाशिक कर्ण- नाव
एव, गोनक पुनिकूपमे (कवनि।
संगर), गानक भाषा
सन्वेकषाम, पानो, गानकमठ यौयनी
की ग्यावह कवनीयाँ (अनुवाद)।



**वठित पासवान 'वहिंगम'
१८४०-**

जन्म मधुवनी जिलाक एकहत्या ग्राममे
१८४० ई मे जेठवह।



**शुभुन गहमान हासमी १
८४०- २०११**

जन्म- पटना जिलाक वनाह गाममे।
वर्णना अध्यापक। हरिद्वी कवनि।
संगर "नर्मिणासि" आ मैथिली



गुमनाथ हा

गुमनाथ हा "वेक मन्थ" मैथिली वाट्य पुनिकाक संयावन- सम्पादन केने
छथी। मैथिलीमे आयुक्तिक वाटकक पुनसयवा हुनकन वाटक सग अछी।



**पुननास कुमान यौयनी १८४१-
१८८८**

ग्राम- पिडिनुछ, जिला- दरभंगा। पुनप्याण
कथाका। ओ उपन्यासका। पुननासक
पुनकाशिक कर्ण: कथा-पुननास, पुननासक

कविति संग्रह "नमिनेलि" पुनकाशिति
१९८८मे अगुवाकथाम
आगाए- अगुवाकथो देसगरी, उगुदेसं
मैथिलि अगुवाएपन साहित्य अकादमीक
मैथिलि अगुवाए पुनसका।

मयुधानिगि: एकाएक गटय शैथिमे हटा पाग, पुनुप संयुक्त पनचिाक पक्ष
ऐगलिन आ सगुनी गकन वनीयो।

पाथेय: एकाएक गटय शैथिमे नथिति, मुदा पुनसाएकक सग वसिषता ऐमे
गेटन। मयुप्य अगुवागता मथिथिक अगुवागसि ह्युपी गऽ गामकै कनमस्थवि
वगवैग छथी, स्वापन वनीय कनै छथी।

गुहककन: एकाएक गटय शैथिमे नथिति दलि नैदिसँ हनानग वनिग आ
मयुप्य-गनिग वगुग स्वगतगताक पहिगहयो आ वादे जीवकिपागपन छे
पुनवास कनवा छे अगुवागपन छथी।

सागम यगिति: एकाएक गटय शैथिमे नथिति। मैथिलि गगमयपन महि
अगुवागनीक अगुवा, सागम यगितिगक पुनिकथामे पुनवागुवास पपन गऽ
गलन अछी।

शेष गज: आयुगकि सामागकि पुनसाएक गटका पति-माताक म्गुयुक वाए
अगुवागक अगुवाक पुनगि पतिवग वयवला।

आगुक वेक: पुनसाएक गटका वसिष वनिगमयुप्यवगुगिय वेगोगगानी आ
वयिहक दायगिवक वोह।

गय मैथिलि: पुनसाएक गटका मथिथिक गथकि-सासकृाकि समस्य एकर
कथावसुग अछी।

महाकवि वदियापति: वदियापतिगि गव वसिषेपसा।

कथा, गव घन उदय पुनग घन पसय, ददिवग
(कथासंग्रह), अगुवागपन, युगपुनुप, हनग
गग नव, गवानमग, गगग पोपयनि किक
मछनी (उपगुवास)। वनिगिन महगवपुनग
पुनिकथिक सम्पादन। गगुमासकि कथा
गोपुग 'सगग गगिदिय गनय' केन
पुनगमगगदं- पुनगस कुमग
युगनी (पुनगसक कथा, कथा) छे साहित्य
अकादमी पुनसकानसँ सम्पागति।



साकेतगण्ड १९४०-

वनिषु कथाकान, गगगयक (कथा-
संग्रह) छे साहित्य अकादमी
पुनसकानसँ सम्पागति। पुनकाशिति
कःाि: मैथिलि कथा
साहित्यमे १९८२ सऽ सकृगिय।
गोडेक यगिसि पयास टा
कथा, गगिगगग संसगनग, यागग
वसिगस मैथिलिमे पुनकाशिति अगुवागस
पग पुनिकथामे छपग। पहिग मैथिलि
कथा **गुवेसियन**
१९८२मे **मथिथिमहिन**मे
पुनकाशिति। हनिदियमे हू एगग कथा
आद पुनकाशिति। सग दंदिमे छपग
पहिग कथा संग्रह **गगगयक** के
ओही वगुप **साहित्य अकादमी**
पुनसकान पैघ वागय **सऽ अवेवग**
वपिगकि गगुगकि कनै, पुनवागनग
के कथा वसुग वग क **गगकमग**
पुनकाशग सऽ पुनकाशिति एवं अगुग
यगयति उपगुवास (**वैकुमेटी**
अकिशग)
सगवसंग **आकाशवासीक**
गपुटीय कायकनमे पुनसगति हू टा
उगुपवीय वगुग नूपक



गंगेश गुंगण १९४२-

गगम
सुथग- पठिपवाड, मयुवनीसनी
गंगेश गुंगण मैथिलिक पुनथम
यौवटयि गटक वुथवियेयिक वेपक
छथी आ हनिका उयगिवक (कथा
संग्रह) क छे साहित्य अकादमी
पुनसकान गेटग छगुहो एकर
अगुवागन मैथिलिमे हन एकर।
मथिथि पनयिय, वेक सुग (कविति
संग्रह), अगुगन- अगुग (कथा
संग्रह), पहिग
वेक (उपगुवास), आर
गोन (गटक) पुनकाशिति हनिदिये
मथिथिये के वेक
कथाएँ, मगुपिदमक
गेका- वगगगनाक मैथिलिसँ हनिदिये
अगुवाग आ अगुग गैयान है (कविति
संग्रह) १९८४- गंगेश
गुंगण (उयगिवक, कथा) पुसगक
छे साहित्य अकादमी पुनसकानसँ
सम्पागति।



पुनेमसंकन सहि १९४२-

गगम+पोसुट- गोगयिग, थग- गगवे, गगि- दगगगगगौग
क मैथिलि: गैथिलि गटक ओ गगमंय, मैथिलि
अकादमी, पटग, १९७८ गैथिलि गटक पनयिय, मैथिलि
अकादमी, पटग, १९८१ गुपुगयग ओ वदियापति, कथा
पुनकाशग, गगगपुन, १९८६ अगुवागिक वदियापतिग
ह। मैथिलि अकादमी, पटग, १९८७ गगगयगयथ, गेपग
पुनकाशग, पटग २००२ अगुवागिक मैथिलि साहित्यमे हसु-
वुगुय, मैथिलि अकादमी, पटग, २००४
उपगुगगगकि, कगगगुगुग, केकगग
२००५, दंकेपस, कथा पुनकाशग गगगपुन २००८
दंयुगसंयके पुनगिग, कथा पुनकाशग, गगगपुन २००८
गुगगगग सगति ओ गटयमंय, गेगग सगति, पटग २००८
२००८-६-शनी पुनेमसंकन सहि, गोगयिग, दगगगग यगु-
गेगग पुनसकान।

◆महावर्णदा अग्रयामस्य◆ पन
आयानि ◆गंगो वेत्रा है◆ एवं
हानपंड के गामोस कृषेत्नक जवर्ण
उरुनक समस्था पन आयानि
वर्णनपक ◆ गैवा
जोगन ◆ यन्यति एवं पुनसद्वि।



**मानकसुडेय पुनवासी १८
४२- २०१०**

जगम गाम: गनुआन, जधि:
समसुतीपुन। पुनकाशति कर्ण:
अगसुत्यायानि
(महाकाव्य): एतदुथ (कवति।
संगुनह), अक्षय येतना (काव्य
संगुनह)। अजयिन, हन
कावदिस (उपन्यास)। ◆अगसुत्यायानि
नी◆ वेठ १८८२मे सहतिअ अकटेनो
पुनसुका पुनपान।



देवेगुन ह। १८४३-

गाम- यानपुना (मधुवनी), कर्ण:
वद्विपानकि सुनर्णानकि पदक
काव्यसासुतीथ
अय्ययन, उरुदास, सुयाकन ह।
"सासुती", अगुनव, वद्विजोसुध
घने टा।



डॉ जीमगाथ ह। १८४५-

जगम:कोरुप, मधुवनी, वलि। पुनपन
कवी, समोयक, पुनययापक
। ◆वविधि◆नविनय पुसुतक वेठ सनु
१८८२मे सहतिअ अकटेनो पुनसुकास
सममानति। पुनकाशति
कर्ण:न्यायाना, वीसा, को सुनैए को
गही, गाम ते थकि ओएह (कवति।
संकठन), पनयिअकि, सीतानाम
ह। कवी युडामासके काव्य
सायना, वविधि
(नविन, आवियना), टावत यौकसँ अदति।



महेगुन मठायि। १८४६

गाम- मठायि, जधि- मधुवनी।
मैथिलि सुपनयति गटककान, नु
नदिदेशक एवं मैठानुगक संस्थापक
अय्यकृष। ठोक सहतिअ पुन गंभीर
शोध आठेप। मैथिलिमे १३टा गटक,
१८टा एकांकी, १४टा नुककड आ १०टा
नेठयि गटक पुनकाशति आ
आकाशवासी सँ पुनसाति। सीनयिन
छेवेसाधि (माना
सकाम), इंटरनेशनल थिएटर
इंस्टीट्यूट (नेपाठ), पुनवोध सहतिअ
सममान अदिसँ सममानति। संपुनति
ज्योतिगोश्वर ठिपति मैथिलिक पुनथम
पुसुतक वनासनाकाकन पुन शोध कान्ध
। सुती महेगुन मठायिक जगम २०
जगवती १८४६ मे मधुवनी जधिक
मठायि गाममे वेठगही मठायिजि
मैथिलि हिनै, अंगुनी आ नेपाथि



डॉ नाम दयाठ नाकेश, सन्तुही, नेपाठ १८४२

मैथिलि माठायि, हिनैक पुनययापक आ नेपाठिक ठेपक ई तीनु
जाया ◆नाकेश◆क वयकर्णिसमे एना मे मदिनाएठ चैक जे कोनहुसँ हिनैका
अनिव गही कएठ जा सकैत अछी ई वसिषा: नेपाठिमे ठियेठ छथी, मुदा
ठेपनक वसिष मूठ: मैथिलिअ संसुकर्ण नैठ छनी ओना मैथिलि, हिनै
आ अंगुनीमे सेहो ई अठेक नयना कएठे छथी नेपाठक नापकिस-पुनपुना-
पुनपिठनक सदस्य ◆नाकेश◆ दखि वसिषवद्विआठसँ पीएयडी आ
अमेनकिसुथति समुठियाना युनजिनसुठिसँ पोसुट उरुद-नठ निसिन कएठे
छथी जे ◆नाकेश◆क जगम २५ जगुइ १८४२ ई कः सन्तुही जधिक
संसुठियामे वेठ छनी नेपाथि, मैथिलि, हिनै आ अंगुनीमे
मौठिक, सम्पादति आ अगुदति कः कनीव ह दन्जग पोथी
पुनकाशति, दन्जगनदिशक दनमस सेहो कएठे छथी नेपाठ पुनपुना
पुनपिठनक सदस्यना- सुती नाम दयाठ नाकेश (१८८८)।



**उपेगुन दोषी १८४३-
२००१**

जगम स्यान नामपुन-
कोरुगामा, दन्गुना। कवी-
कथाकान, जीत-जगठकान।
पुनकाशति कर्ण:यन्मासाक
कृषाममे (कवति। संगुनह)। हिनैदिमे
अठेक पोथी पुनकाशति ओठयिसँ
मैथिलि अगुवाह हेठ मन्थुपुनाना
साहतिअ अकटेनोसँ पुनसुकर्ण।
२००३- उपेगुन दोषी (कथा
कहनी- मनोए दास, उठयि। वेठ
साहतिअ अकटेनो मैथिलि अगुवाह
पुनसुकर्ण।

भाषाक जागृता आ थियेट्र
शिक्षा, पटकथा लेखन आ
गात्रसम्बन्धी शोधक श्रुतीवाचक
शिक्षक छथी। २००२ ई- श्री महेश्वर
मठगिया, मठगिया; यात्री-येता
पुनस्का। पुनवोध सम्मान २००५ सँ
सम्भारि।



**उदयशर्मा हा "वर्गिण
" १९४३-**

जन्म ५ अप्रैल १९४३ ई।
गाम- नहिको, मधुवनी। जन्म-
ग्राम- दुहा, मधुवनी। पुनकासति
कृति: संकलन, मौसम अथवा
पन, एका स्थापित, नगरे
गौना, एका जगपदमे, दोहा गीत सभ
ई- कहल
पुत्री, सहजगीन, अपकृष, पुनस
वाचक (कविता-संग्रह), धूनी
(सहयोगी कविता संग्रह); पाँच (कथा
संग्रह), उदास गाछक
वसंत (नाटक)। **माटी पाठक**
वैश्वस्य सम्पादन २००५ ई- श्री उदय
शर्मा
हा **वर्गिण**, नहिको, मधुवनी; यात्री-
येता पुनस्का।



नेवनी नमस गण, जगकपुन १९४३-



मंगेश्वर हा १९४४-

जन्म ६ जगवनी १९४४ ई। ग्राम-
गठगण, जगि- मधुवनी।
पुनकासति
कृति: प्याथि, अर्थगिन
गाम, वहसठ नातिक श्रुति (कविता
संग्रह); एक वेट्ट (कथा
संग्रह), ओहा छेपे गाम
वनाह (कविता गविवध); मैथिलि कथा
संग्रहक हिनै
अनुवाद **कुंडवि** गामसँ
पुनकासति। ई सुखस
पैनाडाश्रण (अंग्रेजीमे कविता
गविवध)। २००८ ई- श्री मंगेश्वर
हा, गठगण, मधुवनी यात्री-येता
पुनस्का। २००८- मंगेश्वर
हा (कविता डाना
पन, आत्मकथा) पन साहित्य
अकादमी पुनस्का।



मंगेश्वर मसि १९४५-

अनुवादक, गविवका। पुनकासतः
नमि साहित्यक इतिहास, श्रवण
(दुग अनुवाद)।



जगदीश पुनसा १९४७

गाम-वेनमा, नमुनिया, जगि-मधुवनी। एमएकथाकन (गामक जगिगी-
कथा संग्रह आ नरेगाम- वाठ-पुनक कविता
संग्रह), नाटककन (मैथिलिक वेटी-नाटक), उपन्यासकन (मौखिक
गाछक श्रुति, जिलन संघन, जिलन नमस, उन्धान-पान, जगिगीक
जीन- उपन्यास)। मातृसवादक गहन अध्ययन। हिनक कथामे गामक
विकक जागिगीक वनसन आ नव दृष्टिकोस दृष्टिगीयन हेन
अछि। वहिह सम्पादनक समागण साहित्य अकादमी पुनस्का। २०११
मूठ पुनस्का।- श्री जगदीश पुनसा मसि (गामक जगिगी, कथा
संग्रह)। मैथिलि उपन्यास 'पंजा' छे साहित्य अकादमी पुनस्का। २०२१



गाण



महानागायनिाण भक्ष्मी
श्वर सहि १८५८-
१८८८



महानागायनिाण नभेश्वर सहि १८६०-
१८८८



महानागायनिाण कामेश्वर सहि १८०७
- १८६२



सुन हगोवर्गिह भक्षि,
श्रीगोठ आ कामेश्वर
सहि



वर्गोदागर्गह हा १८८५-
१८७१



उठति गानायाम भक्षि १८२२-
१८७५



उा नामवग यादव,
गेपाठ नाष्टनपति



सुवर्गीय वरिधेश्वरी पुनसाद भंउठ, नागवे
ना १८१८- १८८२



शुपेर्गुन गानायाम भासुठ



कनूपती शकुन १८२१-
१८८८



नामवठिस पासवाग १८४६-

नाम प पुठर १८४६, नाम-
सहनवर्गी, नाठि प्पाडिया नामति
नागतीपिआ



नाम उषाम नाम "नाम"



जोगेन्द्र हा



युगनाथ मशिन



रामकांत मशिन



रामनाथ मशिन "महिनि"

"मैथिली मुहावना एवम् लोककथा पुस्तक श" पुस्तकालिका



जोगेन्द्र नानाप्रसन्न यौधनी, पत्रकार १९२९-२००८



मोहन प्रसाद १९४३-

जाम- नवानी, जगि- मधुवनी। मैथिलिक पुनर्पन समावेयका २००७ ई- श्रुती आनन्द मोहन हा. प्रसाद, नवानी, मधुवनी; धार्मी- येतना पुनर्पना पुनवेय सम्मान २००८ स सम्मानिका।



योगेन्द्र हा १९५५-

२००५- ५० योगेन्द्र हा (वहिनक लोककथा- पीसीनाय यौधनी, अंगोपी) छेव साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवा पुनर्पना पुस्तकालिका क्रांतिविरोधन ओ लोक साहित्य (गविन्ध) १९८६, पत्रिका (कथाकथांश) १९८७, अकरो मोहन सेवापत्रिका (अगुवा) २०००, अछेय सत्रययन (गविन्ध) २००२, वहिनक लोककथा (अगुवा) २००३, सुनेहना (गविन्ध) २००६, मैथिली पुनर्पनाकारिके सौ वृष (गविन्ध) २००६, गहवनी (गविन्ध) २००७, लोक- साहित्य ओ सर्व- सम्पदा (गविन्ध) २००७, मैथिलिक पान्पनिके



हीनानन्द हा "शास्त्री", पत्रकार



दीननाथ हा, पत्रकार

जातीय व्यवसायिक
शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) २००८



गणेश्वर हा, अर्थशास्त्र
ज्ञान-पत्रिका

"विकास ओ अर्थशास्त्र" प्रकाशिता।



प्रमेशंकर हा, पत्रिका



शान्तिगुप्त यौधनी, पत्रिका



जाणेश्वर हा (१८२३-
१८७७)

जन्म- सहनसा जाणिक नमुआन
गाम (आव सुपौठ जाणिक)।

कृष्ण- मथिषिकपत्रिक उद्भव ओ
विकास. अवहटः उद्भव ओ
विकास. मैथिली साहित्यिक
आर्दक, वृद्धिपत्रिक संगीतमे
वर्गमाणि वाद्यक- वाद्यक श्रेण्ड एवं जाण-
जाणिकी वर्गीकरणमा।

महाकवि वृद्धिपत्रिका
गायक, शास्त्रज्ञान्थ
गायक, कर्णनूपोषाट
गायक, एकदशे, वृद्धिपत्र-
कथा, उन्वशी, यन्मव्याव- कथा, मे
गका।



एसएससग्यान्थी

मथिषिक कथा आ शक्तिपत्रिका
पेपरा।



जायाकृष्ण यौधनी, शालिसका १८२२
१- १८८५

मथिषिक शालिस. अ पुनवेयोड मानिषिठिठिनातुने, थएए
सुओइस्थसुअड आसय छउइथउडअइएइइअथए ओड
मस्थसुअ प्रकाशिता।



पुत्रो नामशालिस सन्मा १
८२०- २०११



वर्णिपत्रिका मसिन् शालिसका १८२७- १८८४

उँ वर्णिपत्रिका मसिन्क जन्म १० आसूण १८२७ मंगानैवी गाम - जे गव्य
ग्याय आ जाणिक सायगाक जन्म- स्थथि अछि- (जाणिक मधुवनी) मे



द्वेषिगुप्त गानाम हा, शालिसका

बेठगृही श्री १८४८ मे पुनारीन गानगीय ब्रह्मिंस आ संस्कृती विषयमे एवाहावाए वसिंवरद्विधाअसं सगानाकोरान उपाय कएएक वाए कएक वनप यनी वहीन सनका आ पटना वसिंवरद्विधाअसं सम्वन्ध रहएह आ १८५७ ई सँ गानगीय पुनारीन वसिंवरमे काए कएएगृही आ ओकर शसिुपावराक, कौशाम्बी, वैशाखी, हसगानापुन, कुम्हरान, पाठवपुन, क गियन, सोनपुन, वसिंवर, गण्डा, गानगीन, यगुनवरवृषी, आ हनुपी पुएहमे वसिंवर गामकेमे गान बेठगृहीहिनकन एभिष-सम्पादन पोथी सभमे अछा: वैशाखी, १८५० कुम्हरान एकसकेवैशस: १८५०-१८५७ पुनारीन की द्पुथिमे वैशाखी वगणोस गट्टापान पानशिवेगुशेयन पमथिधि आन पम्ड आनकटक्यन (सम्पादन) द्कएयन हेनटिण अंश भथिधि अन्गान गानगवरी- एक अययन द्कषेन पुनारीनवसिंवर- द्पुनारीन शस्दावरी।



सुनेश्वर दा, गानगीन वसिंवर

२००१- सुनेश्वर दा (अनारकियमे वसिंवर- गनग वसिंवर गानगीकन, मनाडी) एउ साहित्य अकादेमी मेथिधि अनुवाए पुनस्का।



गानगीनथ ठाठ दास

गानगीन कएक देसमे गानगीन रहए छथि आ गीएटीमे गानगीन पुनारीनमे सेहो छएह।



भूपेन्द्रकांग दा गानगीन वैक गवर्नर १८९३- १८८८



एन एन दा उपेमेर



कामेगुनगथ दा "अमर" १८३८-

गनम- ४ गनगी १८३८, गाम कोरुण्य (मयवरी)। गनगोस (कथासंग्रह) पुनकाशना।



गानगीनगानास दा १८४१-



नकाकांग नास "नमा" १८४७



पुनोश्वेसन महेगुन १८४७-

गनम: बेठगृही, सुपौर, वहीन। पुनसद्वि कवरी, कथाकान, आवियक।



महेगुन १८४४- २००८

जन्म- ग्राहो पुनासि
समवत् २००३, पयथम नयवा-
वृत्क, वाठ भासिक पुनासि, कथा
वसिषांक द्वाविधि
गाममे १८६४ई, पुनासि
कृत्तिक) गीनय वावाणी-(नूसीसं
मैथिलिमे मैथिलिमे टाएस्तयक
कथाक अनुवाद-१८६७ईमे, (प)
श्रुतपान, कर्वाणि संग्रह १८७८,
(ग) यांगक गोठा (२००४ ईमे),
(घ) कर्टा पाँपि: हेसैा आँपि, कथा
संग्रह-२००५, शीघ्र पुनासि-
कृष्मकान्ता मसिन (नानिविन्ध)
साहित्य अकादेमी गई द्वाविधि। पुनासि:
डेढ साय नयवा (कथा-नानिविन्ध
कर्वाणि) मैथिलि हिनैकी पान-
पान्किका आकाशवासी एवं
दूरदृशकसं पुनासि पुनासि।
साहित्य अकादेमी द्वावा आधोपानि
कवा समुमेवनक आधोपानक कृममे
नेक यपेटमे पडद्विहोवा पान छावा
यनगिमा वसिषांगा सेवा नसि
अध्यापक (उय्य वद्वियाध)
सम्पत्क- श्नी
नानावास, नानावाय टोठ पो नरहन
(सम्पत्पुनी)।

वर्णाङ्गना वसिषवद्वियाधक
सुनाकोरान केरद, सहसामे मैथिलि
वसिषाधक पुनासि कर्वाणि साहित्य
अकादेमीसं पुनासि भोग्नाथ शैलेद
मोहन हा। सहयोगी संकलन- संकलप
। नानाकमठ जयन्ती पुनासि संपादन

जन्म मधुवनी जिलाक जमसम
गाममे पुनासि मैथिलि गीनका आ
गायका



सुमाभयर्गव द्वाएव १८
४८-

जन्म ०५ मान्य १८४८, माण्क
दिसानगा, सुपौषमे पैण्क
सुथाव: वठवा-
मेनाह, सुपौषनद्वियासि (मैथिलि
कथा- संग्रह), मैथिलि
अकादेमी, पटना, १८८३, हाथि (अंग
नेगीसं मैथिलि अनुवाद), साहित्य
अकादेमी, गई द्वाविधि, १८८८, वोछठ
कथा (हामोहन हाक कथाक यधन एवं
शुभकिका), साहित्य अकादेमी, गई
द्वाविधि, १८८८, वहिडा आउ (वंगला
सं मैथिलि अनुवाद), कसिन संकलप
लेक, सुपौष, १८८५, नाना-
वसिषाण ओन हिनै उपन्यास (हिनै
आधियवा), वहिन नानावा
पानिद्व, पटना, २००१, नानाकमठ
यौयनी का सञ्चन (हिनै
गीनवी) सानास पुनासिन, गई
द्वाविधि, २००१, वगैा-वगिडैा (कथा-
संग्रह) २००८ मैथिलिमे कनीव



सुमहा हा १८०८-
२०००

"श्चान्मेशन आंशु मैथिलि
छेगुपण" क ठेपका १८८८- सुमहा
हा (नानाक पानक
उत्पान, नानिविन्ध) पान मैथिलि
साहित्य अकादेमी पुनासिकसं
सम्मानि।



नामावर्णा द्वाएव, मैथिलि भाषिकी, ने
पाठ १८४२-

दिस- वद्विसक भाषावसिषाण जन्ममे पयासो आठेपक द्वावा
मैथिलिक वसिषिटाके उपाजान केगहिन। मैथिलि
वसिषिसासुन १८८४ ई मे जन्मगेसं आ मैथिलिक संग्रह-न
वधाक-म १८८६ ई मे वनठि आ न्युयानकसं
पुनासि। २००० ईमे उद्वनसं पुनासि गीन
आन्यथाप/पुनासि मे संकलति हिनक मैथिलि भाषा संवेधी
आठेप वसिष उठेपनीया नेपाठ नानाकय पुनासि-
पुनासिगसं पासाउ उहामु पुनासि- पुनासिकसं सम्मानि।

संगीतिका कथा, गीत टा समीक्षा आ हिनै, वंशवा तथा श्रुतियो मे अनेक अगुवाए प्रकाशो।



योगेन्द्र प्रसाद यादव , ग्राथिको, सनिहा, गेपा ७ १८४६-

१८८८ ई मे जनमविसै प्रकाशोि शुभ्र अंग मैथिलि साहित्य आ टा पत्रिका अंग गेपावोण एडिटरिअल क्लिअर गीउगिस अंग मैथिलि वंशवा- एडिटेयन एमंड कएयन आ एकेसोप्राथी अंग गेपाव (सम्पादित) प्रकाशोि गेपाव ग्राथिको प्रकाश- प्रकाशिकमे ग्राथ- वशिष्ठक प्रकाश- १६ कौक महत्वपूर्ण कान्थक सम्पादना गेपाव प्रकाश- प्रकाशिकक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (१८८४)। गेपाव प्रकाश- प्रकाशिक आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।



नमो गण्ड हा ' नमस' १८४८-

जनम: ०२ जनवरी १८४८, शक्ति- एम. पी. यो. आजीविक- गान्धीय गिण्ठन वैक, पटना (सेवा गिण्ठन)। **प्रकाशक:** १ गवेल मैथिलि कवितो, १८८२, २ मैथिलि गज कवितो, १८८३, ३ मैथिलि साहित्य आ गान्धीतो, १८८४, ४ अयोधिस, १८८५, ५ वेसाह, २००३, ६ गान्धी, २००५, ७ गनिसा कौस सुन कौ? हिनै- गिण्ठन वैक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित ८ मैथिलिक आनन्धिक कथा, १८७८ समीक्षा, ८ श्यामानन्द नथगवठी, १८८५, ९ नमो गण्ड हा नमो गण्ड हा कान् गिण्ठिसासु (१८९४) आ पुनर्वावह (१८९६), १८८४, ११ योवाथहाकान् श्रीनमो गण्ड हा पुनी यात्रा (१८९०), १८८४, १२ गेवाथ हाकान् सुनान्वाणिस गटक (१८९८), १८८४, १३ गान्धीतोवह दसकान् सुमति (१८९८), १८८६, १४ जीवक मसिनकान् गान्धिस (१८९६), १८८६, १५ गेटवॉट (गेटवॉट), १८८८, १६ नूथन गौ सन्ध गौ श्रुति, १८८८, १७ पुमथानन्द हाकान् भयिलि दन्धम (१८२५), २००३, १८ धुवनी नथगवठी (१८८८-१८३४) २००३, १९ श्रीवर्षहा (१८०५-१८४०) कान् वदियापति विसास, २००५, २० मैथिलि उपन्यासमे यतिनी समाज, २००३ अगुवाए **७७ ग्राथ- गान्धी सम्मान २००४-०५** (सोआइआइए, मैसूर) छओ वगिहा आड कटग- श्रुकोन मोहन सेवापति श्रुतियो उपन्यासक मैथिलि अगुवाए ७७ पुनप्रा।



गाम्भीर्य गङ्गा १८४८-

श्री गाम्भीर्य गङ्गा, जनम १८ मा १८४८ ई.प.मोहन, मधुवनीमे वनपिड कवि, गङ्गा, सम्पादक, समीक्षक ग्राथक आगुवाएमे सक्रिये गौहो। **प्रकाशोि कान्:** शक्ति, माटपिको गौ, देशक गाम छओ सोन योडिया, अपुनवा (कवितो संग्रह), वेणव कथा (व्यंग्य), मैथिलि लोक कथा (लोककथा), प्रकाशिक (अगुवाए कवितो), गान् सके छौ कान् कलि गान् अगुवाए कवितो), वाप्य प्रकाश अगुवाए (कवितो), गान्धिस (अगुवाए), सम्पादिक योपनव गौ (संस्मरणान्थक गविण्थ), आप्यो मुनगे: आप्यो योवगे (गविण्थ)। अगुवाए ७७ **ग्राथ- गान्धी सम्मान २००३-०४** (सोआइआइए, मैसूर) गान् सके छौ कान् कलि गान् शक्ति योपनवायक वांग्वा कवितो- संग्रहक मैथिलि अगुवाए ७७ पुनप्रा। वदिए सम्पादकक समागान् साहित्य अकादेमी पुनसकान् २०१२ अगुवाए पुनसकान्- श्री गाम्भीर्य गङ्गा- (पद्मनाथक माही, वांग्वासै मैथिलि अगुवाए, वांग्वा-उपन्यास - मागिक वदोपायया)



गंगा प्रसाद मिश्र "अ
केठा", गेपाठ १९४४-

पं सुब्रह्मण्य हा शास्त्री गणेश्वर
प्रसाद। पुनस्कारसं समामाना।
मैथिलीयत्तु कछि लोक कथा (संस्कृत
आ सम्पादन) आ शैलीयक
श्रुत (अनुवाद) प्रकाशित।



महेन्द्रनाथमि गधि, यगुषा, गेपाठ



पनमेश्वर कापडा, यगुषा, गेपाठ



ज्योती गाम् "जानि
मासु", गेपाठ



सुरेश हा, गेपाठ १९२०-
१९९५



गोहामि गाम् हा १९५०-



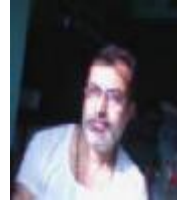
डॉ कमल गाम् गाम्
डानी १९५२-

कवी (मैथिली) पन शोध



वगिद वलिनी गठ १९५३-

गाम् स्थान पथलि, मधुवनी, वलिनी
।यन्यथी कथाकार। सधसं उपन कथा
प्रकाशित।



अनवरिद गकु १९५४-

पनी टूटिनेल अछि (कवी।
संग्रह), अगलक वगियमे (कथा
संग्रह), वहुपयि प्रदेस मे (गठ संग्रह)।



श्याम एलिने १९५४-

गाम् स्थान वनहा, वेनीपट्टी
मधुवनी, वलिनी। कवि, कथाकार।



दगिस कुमान हा

मैथिलीक शालिसपन ठेगन।



अशोक कुमान गकु

गाम् र गठवनी १९४४ ई गाम
वडागौत्र (पंडी)।

पुनकाशति कर्त्ता: सनसिमे ग्रा
(कथा संग्रह) अमृदति कर्त्ता:
कनपिन्सि (यन्मवीन माननी)



पुनगापनापाम हा, बे
पाठ



शीत हा, बेपाठ

गागमंड (गाटक-
अनुवाद), गशिा, वसुधाक
संसा (उपन्यास)



उगनापाम भसि "कक"



डां शम्भूगाथ यौधनी १
८२०- २००८



रुद्रकांग हा



पंथाग भसि



पुोशेस गुरभैना

पुोयोगीश्वरपन वेपना



भेगुन गापाम सहि "भग"



सुपकांग हा, पगकपु



नमाम हा (१८५७-)

नयना: पसुयाप (कथा-
संग्रह) - १८८५, काव्य-
वाक्य (कवना- संग्रह) -
१८८८, अठका- शासक (पुन-
पाम) - २००२, अठका-



वपियगाथ हा

"अहिक ठे" (गीत- गाठ संग्रह
पुनकाशति)।



पुोगागुद हीना

भास्कर (अधिकांश शास्त्र)-
२००३, शनिवार-
अधिकांश (संशोधन)- २००८, संशोधन
सम्पादन: मैथिली (मैथिली
वैश्वविद्यालय, मैथिली विभागात्
शोध-पत्रिका) -
१९९९, सम्पादन: मैथिली (मैथिली
वैश्वविद्यालय, मैथिली विभागात्
शोध-पत्रिका) - २००७, २००८



वावा वैद्यनाथ

पटना संशोधन (गणेश संग्रह)



उ. ग. सिंह यशुदास "अग्नि" १९५०-

मूठ गाम उ. ग. सिंह यशुदास, जन्म:
२७११९९९५०, संशोधन, मधुवनी। सेना गवर्ना वैक अधिकारी।
मैथिलीमे प्रकाशित पोथी- १। तोना अडगामे - गीत संग्रह-
१९७८; २। यानक ओर पान- दीनू कविति-
१९९९, गीत संग्रह (गीत संग्रह), गणेश संग्रह (गणेश संग्रह)।



वैद्यनाथदास हा १९९५-

वृद्धपुत्रासिमा, १९९५के
कैथिली, हंलपुन मधुवनीमे
गणेश संग्रह पाठ, वंशुशुभ कोनो
पत्रिका पाठ, दृगुशुक शुक
पाठ (कविति संग्रह) प्रकाशित।
मूठ: कवि, थोड कथा लिपिबन्धि, ए
अपन मानसिक अन्वेषणक
काम वेस यन्त्रिणि मेठ।
वर्द्धमवनापुत्रास पत्रिकाके पाठ
लिपिबन्धि समाप्तक कामक
पोषण हनिकन मूठ संग्रह पुनः
थकि।



हेनकेशम हा १९५०-

जन्म १० जुलाई १९५०
ई. गाम- कोसममे अधिकांशक
अध्ययन छोड़ि मालकुसवादी
नागरीलिपि संशोधन अनेक कविति
आ आधुनिकताक गवेषण
प्रकाशित। अनुवाद एवं वक्रोक्ति
वैश्वविद्यालयके नूतनी स्वरूप
छेपना प्रकाशित एवं जीवक
नाट्यमय बोधक अग्रणी
कवि। "एना न गहरी" (कविति
संग्रह)। २००८ ई. - श्री हेनकेशम
हाके कविति संग्रह "एना न गहरी"
के ७७ कोनागोनाग्रह भक्ति
साहित्य सम्मान।



उद्य गानायाम सहि गयकिता १९५१-

जन्म- १९५१ ई. कठकनामोपलधि काव्य संग्रह (कविति
वृद्धगति)। १९७१ (अमृतसुय पुत्राः) (कविति
संशोधन) आः (गद्यकक नाम जीवक
(नाटक)। १९७४ मे (एक छठ नाटा) (नाटकक
छेठ (नाटक)। १९७६-७७ (पुनर्जावननाटक
(नाटक)। १९७८मे (गद्यक आः अद्य
संशोधन)। १९८१ (अनुनाम) (कविति- संशोधन)।
१९८८ (पुनर्जावन) (नाटक)। १९९७-
(वैश्वविद्यालयक वाप- साहित्य) (अनुवाद)।
१९९८ (अनुनाम) - आधुनिक मैथिली कविति
वंग्रहमे अनुवाद, संग्रह वंग्रहमे दूटा कविति संशोधन।
१९९९ (अनुनाम) ओ पत्रिका। २००२ (प्याम
पेसाथि)। २००६मे (मध्यमपुत्रास एकत्रय) (कविति
संग्रह)। २००८ ई. मे नाटक "गीत संग्रह" मे
पुनर्जावन "सम्पुत्रास नूतनी" "वदह" ई- पत्रिकाके
यानावाहिक नूतनी ई- प्रकाशित जए एकटा कोनागोनाग्रह
वनेठका २००९ ई-



आशीष अगयगिहान

मूठ
छेपना: कुमारी इय्या (गणेश संग्रह), पंथापोडी (गणेश संग्रह),
अगयगिहान आयन (गणेश, नुवाँर आ कताक संग्रह),
मैथिली गणेशक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली वेव पत्रिकाके
नाक इतिहास, मैथिली गणेशके नेडी नेकेवन, अर्ध-अन्ध-
संशोधन।
गणेश संग्रह आ आशीष अगयगिहान (सम्पादन): मैथिलीक
पुनर्जावन गणेश, मैथिली गणेश: आगमन ओ पुनर्जावन वृद्धि
(गणेशक आधुनिकता-समाधुनिकता-संशोधन)।

श्री उदय गानायाम सहि नयकिना के गटक गो
सम्पत्ती: मा पुनवसि ७७ कीर्तानानायाम भसिन् साहित्य
सम्माना



कुमान पुनग १८५८

गाम मुपैशा कथा संग्रह, कविति
संग्रह आ व्यंग्य संग्रह सीधु
पुनकाश्या मैथिलिमे १८८० ई से
वर्गिउ छपना २००८ ई से एस साठक
भौग शंगक वाद पुन: नयनाक दोस
पाठिक पुनानुभा



कीर्तानागय हा १८५५-

कुनः मैथिलि भाषागुवाए



महेन्द्र हगानी



सुर यग्निकाग भसिन्
, आसी, दनशंग



सुर महेन्द्र गानायाम हा, वेठौणा, मधुवनी



सुरानाकुमान भठक, सोहनाय (पो
पनश्रीडा), मधुवनी



उक्ष्मीपानसिहि



सुरयग्न भसिन् नमाम



कशोरनाय हा

गाम- वटिगे, पो
सगसिवपाहि, मधुवनी। "वेकवेद"
पोथी पुनकाशति।



**सूत्रगानायाम हा "स
स"**

पोथी "मैथिली श्रुती
सोनामयनतिमागस" प्रकाशित।



डॉ सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १५ मार्च १९४६ ई। प्रकाशित
पोथी: काल, गीत गंग तेनह यति
(कथा संग्रह), पंडी पी छत्ता
(प्रहसन), वपिखी सुभाष (वाटक)



**सुव युगयुग मसि, नही
का, मधुवनी।**

मैथिली नाट्यक आन्दोलन कर्मी।



श्याम कशिीन सहि

कठिनद शर्ट

कागह ५१ वहास हन मैथिली गण संग्रह



कशिीनीकाग मसि

कोठकाक मैथिली सांस्कृतिक
परिषदक सकृपि सदस्य। गाम-
गोपीपट्टी ब्दयि (कमगौठ)



सूत्रगानायाम ठा क्मा

मैथिली यतिरक



सयिन्दगाथ हा

मैथिली लोक यतिरक

दयागाथ हा

गाम गणह, मधुवनी मैथिली
गामेठ मैथिली-
सांस्कृतिक, कोठका।



धकाक गकु

अन्तर्जातीय मैथिली परिषद आ
मैथिली अभियानसं पुठव।



ठे कर्ण मायागाथ हा १९४५-

जन्म १ अप्रैल १९४५ ई।
गाम- श्याम (मधुवनी)। एक गान यति
हेर (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह
सम्पादकक समानागत साहित्य अकादेमी
पुरस्कार २०११ वाठ साहित्य पुरस्कार- एक
मायागाथ हा (एक गाने यति हेर, कथा
संग्रह)



काथिगाथ गकु

गाम सन्वसोमा



नाशेण्टुन वमिठ, ढगक
पुन, नेपाठ १८४८-

मैथिली, नेपाळी आ हंगिदी भाषाक पुनापुन वमिठ शक्तिाक हकमे वीहियावालाथियो (पोप्युडि) क उपाथि पुनापन कएने छथीकामे ओपिकिऽ थयेपेट थस अनापनहिन 'ओ वमिठक छपणीक पुनसंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाळी आ हंगिदी साहित्यमे सेहो लेखन रहलथी अछी। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअनगान गानाव केमपस, ढगकपुनथामे पुनापनक कएलहिन 'ओ वमिठक पुनास गान नाशेण्टुन ठान छथिन। हंगिक ढगन रद जुलाई १८४८ ई.कऽ जेठ अछी साहित्यकानक नव पीढ़ीके गिनल। उपनेति कएवाक कामे ई 'ओशेण्टुनक वाद ढगकपुन-पुनसिक साहित्यिक गुनुक रूपमे स्थापति गऽ गेठ छथी।



नरेश कुमार प्रकाश १८५०-

ढगन २७ जुलाई १८५० गंगवाणपुन देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य-अपिण, महुआ मदन नस टपकय, वगि वागी दीप ढगथा कथा-संग्रह- नगी गेठ एनएक रंगान। उपन्यास- टहकैत दीसा गटक- योग्याण प्यौय।



ढगक कशौन ठाठ दास



कक्षमयण्टुन हा "मयं
क"



कक्षमयण्टुन हा "सागन"
१८५३-

"उयनिसू कौआ" मैथिली कवनि। संग्रह पुनकासनि।



सुवेण्टुन मोथी



शशविहण्टुन दास "पुनमि
ठ"



शशविह मशिन "शशनि"
१८४६-



सुवेण्टुनगाथ



अमनगाथ

१९७५ ई मे "कृषामिका" छुटुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।



वय्या गकुल



वुद्धगाथ भस्मि



गाणानाम सहि नागै, य गुषा



वैद्यगाथ वभि७ १९५५-



डॉ वासुकीगाथ हा १९४०-



जातिगद्द भस्मि "जीव ग"



वीनेगद्द गानाधाम हा



वीनेगद्द हा १९५६-
गोबू हा ५५ ठेय्गना



वैकुम्ह हा १९५४-

पति-
सुवर्णोय नामयगद्द हा. जगम-
२४ - ०७ - १९५४ (गानाम-
गनवाडा, जि.वि-दरभंगा), शिक्षा-
स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा-
शिक्षक।
मैथिली, हंगरी तथा अंग्रेजी भाषा मे ७
गद्य २०० गीतक रचना। गोबू हा ५५
आयानाति गटक ' ' हास्यसंग्रहमांगो



वैकुम्ह हा



वैद्यागद्द हा ' पञ्जीका' १९५७-

जगम-
०९०४१९५७, पम्पुडुआ, गौरी, ककरोड(मधुवनी), नशाक्य(पूनामिया), शिवगान (अनया) आ सम्पुर्ण पूनामिया। पति-
व्यथ यौ पञ्जीशास्त्र मान्वात्म्य पञ्जीका मोहागद्द
हा. शिवगान, अनया, पूनामिया। पतिमह-सुव स्त्री
शिक्षिका हा। पञ्जीशास्त्रक दस वन्य
यनी १९७० ईस १९७९ ई यनी अयुधयन, २२ वन्यक वएससै

गुं हा गया अग्र्य कहोगी" क छेप्यवा
एकन अगवा हिनदमे ठागग १५ उपन
यास गया कथाक छेप्यवा।



महेन्द्रन गानायाम कर्मस



डॉ. वशिष्ठेश्वर मशिन

पञ्जी- पुनव्यक संवद्वयन आ संक्यासमे संठगग
कृति- पञ्जी शाया पुस्तकक विपियगाम आ संवद्वयन।



अनजुन गानायाम यौधगी



नगेन्द्र
गाणकाम।



महेन्द्रन मशिन, नेपाठ



कमठ कांठ हा १९८३-



महाप्रकाश १९८६-

जन्म: वनगांव, सहनसा, वहिन।
बनीष्ट कला ओ कथाकाम।
पुनकाशति कृति: कलागी
संवावा, संग समय के (कलागी
संग्रह)। श्रीगानायाम मशिन
साहित्य सम्मान २०१० ई. श्री
महाप्रकाश (कलागी संग्रह) संग
समय के।



ध्यानगन्ध सहि हा १९८६-



अध्यायानाथ यौधगी, धनुषा, नेपाठ १९८७-

मूठा: कलाक रूपमे पनयित छथि। नेपाठक आयुष्क कलागीक
कृषानमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री यौधगीक छेप्यने
मानवीय संवेदनाक पुनविम्व पाओठ जाका अछि। कलागीक
संग कथा आ गविव्यमे सेहो ई कथम यथैव अछि। अछिछाप
छेप्यन हिनक वशिषा। थकिनी धनुषा जाठिक दुहवी गामक
नहनहिन श्री यौधगीक जन्म दशकृष्ण १९८७क ७क ७क ७क ७क
हिनक कृषागीक ओहियाम नामसँ एक कलागी-संग्रह
पुनकाशति छथि।



ब्रह्मिणाथ हा ' ब्रह्मिणि'

सयिनाम हा "सस" १८४८-

अग्नापिष्प १८४८-

जन्म स्थान मेरठ, मधुवनी वहीन।
पुनसद्वि गीतका, ब्रह्मिणि कथा
छेप्यन पुनानमन केवनि। पुनकाशनि
कृनि आणुन गनी
सगिनहन, शोभागाएउ उगीन
सूत्रक यमनक (कथा संग्रह)।

जन्म: गौरी, दनगंगा। मूठगाम:
मेरठ-१ हा। मैथिलिमे सहस्रानवाह
कवनि संग्रह पुनकाशनि। मुकृनि
पुनसंगक अगुवए पुनकाशनि।
वामपंथी आदितेगमे सकृनिधि
शिक्षा, समुवाए आद पुनिकक
समुपाएन। वामपंथी वयिनयानाक
सशकृ कवनि



मधुकांठ हा १८४८-

वीणु कुमर

सत्याब्रत दास



योगीनाथ

कुमाार १८५९-

नाम गनोस कापडि गनमन, धनुषा, ने
पाठ १८५९-

जन्म- वधयौना, जणि धनुषा (नेपाठ)। वनकठेठनी: औनास
धुआ (कवनि संग्रह), गह, आव गही (द्विगु
कवनि), गोना संगे जएवौ ने कुजवा (कथा संग्रह, मैथिलि
अकादमी पटना, १८८४), मोमक पवछैत अथन (गीत, गण
संग्रह, १८८३), अपुपन अगयनिहन (कवनि
संग्रह, १८८० ई), गानी यगुनावनी (गाटक), एकटा
आओन वसगा (गाटक), महासिसुन मुनदावाए एवं अगु
गाटक (गाटक संग्रह), अगात: (कथा- संग्रह), मैथिलि
संस्कृति विद्य नमाउंदा (सांस्कृति विविध सगक
संग्रह), वसिनठ- वसिनठ सन (कवनि- संग्रह), जगकपुन
ठिक यतिन (मथिलि पेट्रिडिगस), ठिक गाटक: जट-
जटनि (अगुसगयान)। नेपाठ पुनज्जा पुनपिठानक
सदस्यता- श्री नाम गनोस कापडि गनमन' (२०१०)।



धीनेन्द्रनाथ मिश्र

श्रिनेन्द्रनाथ कर्म, धनुषा, नेपाठ १८५९-

वहमेदव दास

छपकसँ अथकि शक्तिचक्र रूपमे परियति आ पुनरुत्थिति छथि।
 त्मन्निवृत्त वसिष्ठविरिद्यालयअनन्तगंगा ना व कैम्पस, जागकपुन-
 यामक सह-प्राध्यापक श्री कामक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपुन
 विपिठ कर्तिक छैथ मैथिलि, हिन्दी आ अगुण्डी भाषामे पुनकासति
 अछि। सुवागत-सुप्राथ ई कहियो काठकः कर्वाता-कथा सेहो विपिठि
 छथि। हिनक छप्यन जागवन्द्यक, जागकानोभुठक एवं सोहानए
 रहेन अछि। टिप्पणपुन वुहवा जाग अछि। ई हिनक गम्भीर
 अध्ययनक परिणाम थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक संघ-
 संस्थासभमे सेहो सक्रीय प्राध्यापक कामक जाग यगुधा जाधिक
 देवडीहा गाममे र जागवनी १८५१ ई.कः श्रेष्ठ छथि।



याम्डेसवनी प्याग

गाम- पट्टीटोठ, जागि मयुवनी।
 छुक्कथा छेठ यन्यति पुनसंसति।



दयाकाग्न हा



जागेगुन गानायाम सहि, गेपाठ



पद्मश्री श्री जागेगुन
 गानायाम सहि



हन्किग्न हा



श्रीगानायाम हा



पुनवासी साहित्याथका



सोगानाम सहि



गुठानगुद भस्मि



शैलेन्द्र कुमान ह्य १८५२-

जन्म स्थान हर्षपुर, वकशी
 टोप, मधुवनी, वहीना। पुनर्जाति
 कर्ता: आनंद अचर, दशम पुष्टी
 (कथा संग्रह), स्कोनोमिक हिस्ट्री
 अंश मथिषि (अंग्रेजी)।



वसिष्ठ आनंद १८५३-

जन्म: शिवगंज, मधुवनी, वहीना।
 पुनर्जाति कर्ता, कथाकार, संपादक।
 पुनर्जाति कर्ता टूटा उपन्यास टूटा
 समीक्षा, गीत टा कथ संग्रह, टूटा
 गीत-गण संग्रह ओ यान्टि कथा-
 संग्रह पुनर्जाति २००६- वसिष्ठ
 आनंद (काठ, कथा) मैथिली छे
 साहित्य अकादमी पुनस्कार।



धनुष्य ह्य

जन्म- वसिष्ठ "वाक्यान्वयविवरणम्" छे
 छे शैलीवासीधुवाठिकास
 पुनस्कार २०१० प्राप्त।



डॉ. योगेश्वर पाठक " वसिष्ठ", वैज्ञानिक

शिवशंकर शीतलवास १८५३-

जन्म स्थान वेल्हा मधुवनी, वहीना। पुनर्जाति
 कथाकार ओ आभियक। गीत ओ कर्ता सेले
 कहियो काठ छथि। पुनर्जाति कर्ता:
 नृसिंह, अद्वैत, गाछ-पान, गामक वेक
 (कथा संग्रह)।



केदार कानन १८५८-

जन्म स्थान सुपौर, वहीना।
 पुनर्जाति कर्ता, कथाकार ओ
 संपादक। पुनर्जाति कर्ता: आकाश
 टैल शब्द (कविता
 संग्रह), अद्वैत कर्ता गाम गाम
 मोहन गाम, पुनर्जाति संपादन
 संकल्प, शान्ति मंडन (पत्रिका)।



शिवकांत पाठक

अशोक १८५३-

जन्म स्थान
 वेल्हा, मधुवनी, वहीना।
 पुनर्जाति कथाकार, कर्ता
 ओ संपादक। पुनर्जाति कर्ता:
 यक्षवधू (कविता संग्रह)
 नृसिंह (सहयोगी कथा
 संग्रह), ओही गामक गोन (कथा-
 संग्रह), माणव (कथा संग्रह)।



डॉ. अशोक ह्य १८५४-

जन्म- दीप, जिला- मधुवनी।
 मैथिली, वांग्वा, मेवाओ आ देवगंजी
 पाठ्यपुस्तक विशेषज्ञ। साहित्य
 अकादमीक थाप।
 सम्मान २००७ कृषिसंविधान
 मध्यकाशी साहित्य छे।



हतिनाथ ह्य

"कोशम ज्ञानकथा" पुनर्जाति।
 कर्ता सह कथाकार। मैथिली
 साहित्यक मेधाकन (संपादन)



आद्यानाथ ह्य "नवीन"

गणेश्वर ह्य

२००६- गणेश्वर
 ह्य (काठवेध- समनेश)



"वर्षाभागत वाकली" पुनकाशति।



अमरनास १८५६-

मणुमदान, वांगलाउठ साहित्य
अकादमी मैथिली अगुवाए पुनसका।



धंनूनाथ भस्त्रि



दगिभवन शकुन



जामेश हा १८५०-



कगदुपनागायास ठाठ कर्मा



शेठेगदुन आगदुए १८५५-



कमठाकांन हा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



ठठठ पुनसाए शकुन १८५१-
१८८५

जगम प अवनो १८५१ मुंगेन मे स्त्रीमती
सुभदाना देवी आ स्त्री लीनागद शकुनक दुवगीध
वाकक। हलिक गुनाम- समौठ, जालि-मधुवनी।
सत्रिठि अजीगयिन, टाटा स्येठमे याकनी।
पुनकाश हाक अखिम "कथा मायोपुन की" मे
मुपुधु सुभक। गटककान आ मंय अगगिना।
हुगक वीपठ कछि पुनसादिय मैथिली गटक
छगहः वडका साहेव, मसिटा गयि
काका, ठेगसिा मरियाई, वकठेठ आदवा अंग।



ठठठि कुमान

हामिहव हा केन उपगसास
कगसाएगक अंगनीजी मे
अगुवास 'थे नगदि' नामसै
पुनकाशति।



मथिठिस कुमान हा



डॉ. कमठागदुए हा



ठेकगाथ भस्त्रि

'डांगरागे शोधितियस गह शुवलयि
धपहने गि मोनगह इगदी: माकगिग
गेड गहे मातिहोथि
भोवेभन' प्रकाशति।



डॉ. नवीगुन कुमान यौ
धनी १९६६-

जन्म: ५ भाद्रप १९६६ ई.
गणपतगण, सुपौछा मैथिलीक
प्रवाध्यापक। एकधामतीक पदक आ
वहिन आ हानप्यसुड सनकाग दवाना
पुनसकृता हानप्यसुडक मैथिली
अग्देवने अगामी।



अशोक अत्रियेठ

जन्म- ५ जगवती १९६७, गाम-
गुआ संग्राम, जाधि मधुवनी।
मैथिली प्रवाध्यापक। गथग: एक वनू
गेक वनू (छु गटक), मैथिली गथग:
सन्नेकषम आ वसिष्ठम, हना
देशक गगमे (मैथिलीक प्रथम
असंग गटक), सम्पादन:
हानप्यसुडक सगेश, कथोट (गौ
अंक), हानप्यसुड वामी (हिनै
सापुताहकि), सम्पादन:
अगान्ताप्टरीय मैथिली सम्भेवने
सम्पादन (२०००), पनमहंस
उकृष्णीगथ गीसवामी समिति
सम्पादन (२००८)



डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-गंग" कविति-संग्रह प्रकाशति।



डॉ. उमाकाग

मैथिली व्यंग्य-आव्यक पोथी "अपन
वान" प्रकाशति।



सुशील १९४२-

असमिति (छुकथा संग्रह), गामती (गटक) प्रकाशति।



श्रीदेव

मूठ गाम- वागेश्वरी ह। कथा-
संग्रह "हिस्रो", गटक "वेहक
कडगा", गीत-
प्रवग्य "पुठोमा" प्रकाशति।



सुकांग सोम १९५०-



डॉ. देवकांग मसि १९५२-



डॉ. गतिप्रगण्ड गण दास

जन्म ६१००॥ जाविक तौरी
 गाममे १९५० ई मे जेठगही वी ए
 पास कए ई पटनाक
 दैगिक **जावशकृति**क सहायक
 सम्पादक छथि। छेन गव शाना
 टारुस, पटनामेवाप्यवस्थासँ
 अपन पैतृक (पति यादवीजी) गुप्त
 कर्मणि कनवाक तथा कथा छिपवामे
 सेहे यश अजान कएलहो अछि।
 वनपानानाग नागोती सामाजिक
 वषियसँ सम्बद्ध
 व्यंग्यात्मक, सभ गायामे छिपि
 गव कर्मणि हगिक वसिषा। छगही।
 गामघनक पत्रिस नदगुकुठ शव
 एवं वनिव नयगामे कनमहो सद्य
 छथि।

पति कवयिडकृषामामि पे कासीकां
 मसि "मधुप", "वेनीपुन अगुमामुडमे
 मैथिली" पोथी प्रकाशति।

पति स्वतंत्रीय सुनधनागामस दासा आनवसिगल
 कौशल, आनवसिगल सँ अगुनेगी
 वशिषायकप पदसँ १९९९ मे अवकाशप्राप्ता।
 उाँ सुनेगईन हा "सुमन"क संशोधकत्वक
 कान्यकापमे "मैथिली पामनसदना सभति"
 (साहित्य अकादेमी, दिसि)क सदस्य मैथिली
 पत्रिका संग जोना वृक, प्रयाग; मैथिली
 महिने, पटना; स्वदेश, दनशगा; पृथुय, पटना
 आ पती पठा। अनसिमे नयना प्रकाशति।
 १९९७ ई सँ नापटीय स्वयंसेवक संघ मे
 सक्रिय। प्रांतीय पत्रागिथि २००४ यती जाधि
 सनसंघयापका जोषिअनदोषमे विकीर्ण
 सेगनी। उाँ एपिजे अवदुष कवामक अगुनेगी
 पोथी "स्वास्तेड मासुडस"क
 मैथिलिमे "पुनवति पुनजा" नामसँ अगुवा।
 साहित्य अकादेमी मैथिली अगुवा पुनसकान
 २०१०- उाँ गतिपानगद वाडस- (स्वास्तेड
 मासुडस- उाँ एपिजे कवाम, अगुनेगी) छे।



नागगाथ मसि १९५०-

"अ वनडस आर वुड ऑन
 मैथिली" प्रकाशति।



पशुपतिगाथ हा, महोत्तरी, गेपा १९५४-

हगिक ठेपन वनिनासात्मक लेख अछि आ सम्बद्ध वषियमे
 गोकपका जागकानो दैग अछि। वनिनिन पत्र-पत्राकामे हगिक
 ठेप-नयना वनोवनी दैपवामे अथेन रहैछ। नागाव
 कैमपस, जावकपुनयामे मैथिली वषियक प्राय्यापनमे संशान शनी
 हा। मैथिलीसम्बन्धी साण्डनात्मक गतिविधिसँ सेहे जुड छथि।
 मैथिली भाषाक विपोगुमुप अवस्थामे रहै अपन छिपि गिहुनामे
 वसिषपना नपगहिन शनी हा। एका संरक्षाम-सम्बद्धवक
 दिसामे सेहे कृतिसिधो छथि। प्राय्यापक हा। मैथिली महाकाव्यमे नस
 गतिपाम वषियपन वदियावागिथि कएने छथि आ शक्ति तथा कागन
 वषियमे सेहे सुगाक छथि। महोत्तरी जाविक एकहयिा रहगहिन
 शनी हा। जाव ४ दिसम्ब १९५४ कऽ जेठगही यिगेमे मैथिली
 गवसँ सम्नागति।



**अगवियगईन गकुन १९५४-
 २००९**

जन्म १३ सतिम्ब १९५४ ईके कलहिन
 जाविक सभे गाममे जेठगही १९९९ ईमे
 हगिदी साहित्यमे सुगाकोत्तान केवक वाद
 गवम्बन '९९ सँ
 गवम्बन '९९ यती "सुवह" हसुगिपिपि
 पत्रािकाक सम्पादन- प्रकाशन कएलहो
 आ कोसी क्षेत्रीय गामामास वैकमे अर्थिकनी
 रहथि। मैथिली, अंगिक, हगिदी आ
 अगुनेगीमे समानूषे ठेपना। म्त्रियक पुत्र
 वनेन ट्युमनसँ वामान यथे रहै
 छथि। **प्रकाशति कृति** आ व मागि
 जाउ (मैथिली उपन्यास) - पहिने शानती-
 मंडन पत्राकामे प्रकाशति जेठ, छेन
 मैथिली द्वावा पुसाकाका प्रकाशति
 जेठ; कय (अंगिक पहिने पामुड
 काव्य, १९७५); एक औन नाम (हगिदी
 गटक, १९९१); एक घन सडक पत्र (हगिदी
 उपन्यास, १९९२); ए पपेटस (अगुनेगी
 उपन्यास, १९९०); अगत कहँ सुप
 पावै (हगिदी कहनी संग्रह, २००७)। आ व
 मागि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि
 उपन्यासमे एक एहन पुवतिक संघन- गाथा
 अंकि अछि जे अपन ठागसँ जोवन वदवै
 अछि। असंख्य गामक ई कथा कुषिगनाक
 अयःपानक कथा, संस्कानरहिनगाक
 उदघाटन आ नवपियक पीठेके वयस्पवाक
 यतीनी छी।



वृषेश यज्ञेश्वर

जन्म रत्न मान्य १९५५ ई. में
 मेरठ जिला पति: सुव उदितगानायक
 श्रम, माता: श्रीमती सुवमेश्वरी देवी
 हिनका छंदलिनक गान वसिसेसुव
 छवही मूला: गानगीकिकुमी।
 नेपाछे विकनगनछेव गनगन
 संवन्धक कृममे १७ वेन गनिश्चान
 । छानग ८ वन्ध जेठ समुपनी
 नानई मयेस विकनगनीक
 पानटीक नपट छेव उपाययकष।
 मैथिलिमे कछु कथा वनिनिग
 पानपनीकमे पुनकासति।
 आनछेठन कवति संग्रह आ वेपी
 कोरनाछक पुनसदिय छेव उपन्यास
 मोदआरक मैथिलि नुपानगाम तथा
 नेपाछेमे संघीय शासनगनि गामक
 पुसाक पुनकासति। ओ वसिसेसुव
 पुसाद कोरनाछक पुनविद्वय
 गानगीक अनुयायी आ नेपाछक
 पुनानागीक आनछेठनक सक्रिय
 छेवया छथी नेपाछे गानगीकपिन
 वनेवनी छिपेन नैह छथी



गानायकनी १९५६-

जन्म: घोषनडीहा (मधुवनी) मैथिलि
 भाषा-साहित्यमे एम. ए. पी. एच. डी.
 कामेश्वर श्रम संस्कृति
 वदियाछथ, घोषनडीहामे अयथापन।
 पुनकासति कृति छवनी छुनिह
 छेव (काव्य-संग्रह)।



डॉ. श्री श्रीशंकर हा १९५२-



जगदीपगानायक "दीपक"

गानदेव मंडल

शिक्षा- एम. ए. एच. एच. पी. ए. गान- गान-
 मुसह-गयि, गानसाना (गान्मि, मधुवनी)। पुनकासति कृति अम्वना-
 कवति-
 संग्रह, हमन टोठ (उपन्यास), वसुंधरा (कवति संग्रह), जग (पटकथा
), छान (स्कॉकी), जग वंन (उपन्यास), नानिसीमीक गे (वहिन आ छे
 व कथा संग्रह), पंथेनी (छेव पटकथा), वापसा।



शशिपुसाद यादव



हियेगुन कुमान हा १८५८-

जन्म ३० अगस्त १८५८, गाम- कोरुप (मधुवनी), पति श्री कामेगुन गथ हा। टांसासुनम (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



महेगुन गानायाम नाम १८५८-

माणेश्वर मणुज १८५८-

जन्म गाम्हीया (माणपौर, मधुवनी) मे, १८७८सँ १८८२ धरि गौसिगामे वसिनिग जहाजपन कान्यन, सेन धात्री गेथमे सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।



गानागुन वसिणी १८६६-

महाषि, सहस्रमे जन्म पहि पोथी अपन भूदयक साक्ष्य (गणेश संग्रह) १८८९ मे प्रकाशित। अग्र्य पुस्तक हस्तकृषि, प्रथम लेख (कविता-संग्रह), अक्रियम (कथा-संग्रह), शिविधेम (छबुकथा संग्रह), कर्मवचन गणकमठ यौवनक कथाक एकटा यंपाकषी एकटा विषय संकलन- संपादन साहित्य अकादेमी मैथिली वाच साहित्य पुनस्का २०१०-गानागुन वसिणीके पोथी "३ शेठ" केँ कोटल" छै धात्री-येतना पुनस्का २०१० ई- ७- गानागुन वसिणी।

गवोगथ हा



गोथगुन हा

ए.डी.डी, बीए (अन्तशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कठमे डिप्लोमा मैथिलीक आनिक्ति हिनै, मनाडी, अजिगी आ गुणगामे वसिणी। १८७४ ईसँ मनाडी आ हिनै थिएटरमे गदिसका महानाट्य गानय उपाधि १८८८ आ १८८८ मे अखण्टी केन छै गायक सोना क गदिसका संग्रह आ अखण्टीक लेक कवाक शोच आ पुनस्कासँ १९७७ छथि आ गायसावासँ १९७७ छथि वसिणी। वाच छै थिएटरसँ गनिन टिपि मोडियामे नयनात्मक गदिसक रूपे कान्यकामन-विछव वेनायड मनाडी एकांकी (अनुवाद), सहिवलेकन (मनाडी साहित्यक १५० वर्ष), आकास (गिरीलेक यानावाहिक ३० एपीसोड), जीवन संग्रह (मनाडी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), यवाजी गाना यौवन (मनाडी), स्वधर्मन (मनाडी), अने गले कमी गले (हिनै), आरु (हिनै), धात्री (मनाडी सोनख), मधुनपण्य (मनाडी वाच-यानावाहिक), हेथकेअ ३१ २०० ए.डी) (डी.डी) २००८ मे- गोथगुन हा (विछव वेनायड मनाडी एकांकी- सम्पादन सुधा जोशी आ गानाक मनाकी, मनाडी) छै साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुनस्का।



महमोहन ह।



कुमान शैवेग्ट्



मेश १९७९-

जन्म स्थान मेहथ, मधुवनी, वहिना
 यन्त्रि कथाकान ओ कवि पुनकाशति
 क्ति:समाग, समानाग, एपुठ
 (कथा संग्रह), गागशेनी (गाग
 संग्रह), संगीन, समवेग सुनक
 श्रु, कोसी थानक सङ्गता, पाथन
 पन हूजा (काव्य
 संग्रह), पुनकिन्धिया (आवेयवाग्नक
 गविय)।



मेश पुनसाह १९७९-



प्रीति वहिनी १९७३-

जन्म स्थान कन्हैषि मठुकि
 थोष, प्पुजोषि, मधुवनी, वहिना
 यन्त्रि कथाकान, उपन्यासकान
 ओ रंगकन्मी। पुनकाशति क्ति:
 गुमकी ओ वहिर्दि, विसुवयिस
 (उपन्यास), श्रौतीह कमठा जपनीह
 कमठा, प्पामुड-प्पामुड
 जगिगी, सनोकान (कथा संग्रह)।
 २००७- पुनदीप
 वहिनी (सनोकान, कथा) मैथिली ठेठ
 साहित्य अकादमी पुनस्कान।



यश्वन्मोहन ह। पुनवा



डॉ सुशेग्ट् चान, ने
 पाठ



नोशन जगकपुनी, नेपाठ



डॉ अनवगिह अकू १९७३-



शुभ्रजित् ह्य "पुत्रीसु" " १९६१-

गाम तुमौठ दनगंगा, आसुठ नवठ
पुनगान, पांगठ गाछक छाहनी, ह्यनी
मोगक पपान योडिया, वसंतक
वापनिसा (कविता संग्रह), शून होश
नवसिंह (कथा संग्रह)।



आनानुगुर ह्य

जन्म: सुपौठ, वहिना मैथिली कवि
आ आठियक



भगिष मिश्र

"वीथ वैतानसोमे" (कथा संग्रह), श्रुति
श्रुस्य (अनल्लेख्योड मातिलिखि
श्रुस्य तानसुठोद विनी
एगठिसह), पनप, पुनसुतावना, नयना
नसाधन (आठियना) पुनकाशिता।



देवसंकन गवौन १९६२-

श्री ना ना सी (गद्य-पद्य मसिनाति
हिनै-मैथिलीक पुनानमक
संग्रह), यागन-काजान (मैथिली
कविता
संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्य
क पनदिस्य, गीतकिस्य के रूप में
वहियापति पदावधि, नाजकमठ योथनी
का नयनाकन (आठियना), जमागा
वदठ गसा, सोना वलू का
यान, पहयान (हिनै
कहनी), अश्रिया (हिनै कविता-
संग्रह), हाथी यठ वजान (कथा-
संग्रह)।



कुमान मगिष अनन्दि १९६४-



वदनी गानापथ वना



राजेंद्र कशोर, नेपा ठ



श्याम सुगद शशति, नेपाठ

श्याम सुगद
शशति, जगकपुनयान, नेपाठ पेसा-
पानकाशिता। शक्ति: त्रिभुवन
वसिष्ठवहियाठयसो, एमए मैथिली, पुनथम
श्रीसोमे पुनथम सथागा मैथिलीक पुनस:
सज वधिमो नयनागा। वहुन नास नयना



हिमांसु योथनी, नेपाठ

पति: सुवृणीय कामेश्वर
योथनी, माता: श्रीमती यगदनावती
योथनी, जन्म: वी स २०२६प
एहन, सनिहा, शक्ति:
सुनाकोतान (नेपाठी), पेसा:
पानकाशिता (सम्पाना): नाप्टनधि

वर्गिनिव पान-पानकिमे प्रकाशति।
हनिदी, नेपाळी आः अंग्रेजी भाषामे सेहे
नयनान आः वृहतास नयना प्रकाशति।
सम्पानि-काव्यापुन प्रवासक अनव
वृहतामे काव्यना।

समायान समिति), क्वाः की नान
सोडू ? (मैथिलि कविति
संग्रह), वरिगा दू दसकसं नेपाळी
आ मैथिलि छेपन तथा अशियावमे
वनिवृत्त कनियामिषिष आ वनिवृत्त
संघ संस्थासं अवह्य।



सत्यनानाप्रसाद मेहरा



शुभवन्सुवन पायेय



राजेन्द्र हा, यगुषा



अशोक कुमार मेहरा



यश्रज्ज् वरिह्विष, सनिहा, नेपाळ १९७३-



धीयेन्द्र कुमार हा

नसना नकैत पाविगी, एक सृष्टि एक कविति, एक समयक
वात, युअनाएअ आक्तासिअ (मैथिलि कविति संग्रह), शूनमनका
अक्ष्ट वाटकहनु, गोनूहाका कथाहनु (मैथिलिसं नेपाळी
अनुवाद), मैथिलिक कक्षा १ सँ ५ आ वाअ-साहित्य संदन्गक तीवटा
पोथोक सह-छेपका प्रकाशनातिक मूअ
सहियां (मैथिलि, प्रेसमे), दवति विपिन्युगि
मैनुअअ (नेपाळी, प्रेसमे)।



नमिषि हा, नेपाळ



गौनीनाथ (अनंदकार्ना)

"अनंताकि" क सम्पादना



सुनीवाम

कथाकार, समावेयक



**नमाम कुमान सहि
१८६८-**

"श्वेत सं हसियन", "दुःस्वप्नक
वाह" (कविता संग्रह), "हमन
पसात संसात सात" (छवि
नविगय), "ननिपयखन"
(आवियना), "उर्जा जो ते
सुगगा" (नाट्यस्थानोसं मैथिली
अनुवाद) प्रकाशित।



अजति आजाह

"पेन दुःनास्व मे पथरी" छेउ
साहित्य अकादेमी पुनस्कात।



कुमान मगोण कस्यप

**वदवैत समय (मैथिली
छु कथा संग्रह)**

मुपुनाम आठम

"पनयिय वगैत शवह" (कविता
संग्रह) प्रकाशित।



**वदनी गाय
नाय 'अमान्प्र'**

'मैथिली मैया कतू
वयित' प्रकाशित।



वगिह मसिन

उाँ वगिह मसिन सम्पुनानि आइ
आइ थो नूडकी, उतानाम्पडेमे
अंगुणेजी पढवैत छथि आ हगिक
नयगाव अंगुणेजी आ हदि मे
पुनकाशित मेउ छगही अही वन्य
हगिक कविता संग्रह पठिगन
धोपस गह ओतहेन
ओमस पुनकाशित मेउ छगही एकन
आनिकन ई अंगुणेजीमे आवियगाक
कथानमे आठ टा पोथी संपादन केने
छथि हगिक पोथी छोमभुगथिगोण
धकठिउस जोन एगगिनस गह
पर्येगिसिनस वहुतो र्शनीगयिगि
संस्थानमे पाठ्य पुसाक रूपमे
पढाओव जाइत अछी।

**उाँ वगियेगह ह
१८६४-**

"मैथिली व्वाकनाम ओ
नयना", "मैथिली भाषा
वगिनाम" प्रकाशित।



कसिन कानोग

"कछि सुना गेउ
हमना" प्रकाशित।



आगह कुमान ह १८७७-

जगम स्थागः मेहथ, हंहापुनः पति।
सुव अगधकां ह। माता शोमती
रुगहकाथि देवी, पुनकाशित- "ययासा
गवको कर्णिके उवास", "हगा
पुनकाशित", "वदवैत समाप", "टाकाक
मोउ", "कठह" (पाँच मैथिली
गाटक) प्रकाशित। वदह सम्पादकक
समागगन साहित्य अकादेमी पुनस्कात
२०११ युवा पुनस्कात- आगह कुमान ह।
(कठह, गाटक)



वगदेवीपुत्र गवनाथ,
गाटकका-1



यगन्नेश



गाम सेवक सहि



सहिद दुर्गागण्ड हा, गे
पाठ



उदयनाथ हा "अशोक"



कपटिश्वर-1 नाउ

उपहन (वहिन- छु कथा संग्रह) पुनकाशति।



कपटिश्वर साहू



डॉ शम्भु कुमान सहि

जन्म: १८ अप्रील १९६५ सहनसा
 गणिक महिषी पुनयडक छुआन गाममे
 आनशकि
 शकिषा, गामहसि, आरु, वीए (मैथिली
 सम्मान) एमए मैथिली (सुनसम्पदक
 पुनपुन) गणिका मॉडी गोगुपुन
 विश्वविद्यालय, गोगुपुन, वहिन
 साँ गस्थ [वहिन पाठना
 पनीकषा (सस्थ क
 समनुद्य) व्याप्यगो हेतु अतीनाम,
 १९९५] मैथिली गटकक सामाजिक
 वित्तनन वषिस पुन पी-
 एथडी वनष २००८, गणिका
 मॉ गवसिवविद्यालय, गोगुपुन, वहिन
 साँ मैथिलिक कनोक पुनगिठि पन-
 पनिका सभमे कवगि, कथा, गविध
 आदी समय-समय पुन पुनकाशति।
 वनगमानमे शैकषकि
 सघहकान (मैथिली) नाप्टनीय अनुवाह
 मसिन, केन्दनीय माननीय गषा
 संस्थाग, मैसून-६ मे कान्यन।



कृष्णयगन्-1 पादव, गेपाठ



श्रिविकाग्न गकुल



श्रीवाकाग्न हा



उमाकाग्न हा आ प्रायिका, मैथिली नंग मंथ



श्यामागत गकुल



हानिकां गठ दास, गेपाठ



शशनिथ गकुल, गेपाठ



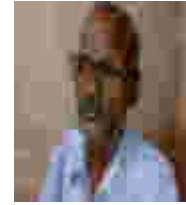
दुर्गागत मंसु

संयथिका, कथा कुसुम (वहिन आ छवु कथा संग्रह), यक्षु प्रकाशना



श्रिवि कुमार हा १९७३-

श्रिवि कुमार हा १९७३-
हा १९७३-७४, पतिका नामः
सुव काषी काग्न
हा १९७४-७५, माताक नामः
सुव यगद्वनका देवी, जन्म तथिः ११-
१२-१९७३, शिक्षाः स्नातक
(पुनर्पिडा), जन्म स्थानः
मानक- माथिपुन मोडन, जा
- वेगूसनाथ, भूगनामः ग्राम-
पानाथ - कान्तिन, जाि -
समस्तीपुर, पतिः २४८९७, संपुनः
पुनवचक, संग्रहस, पो एम ए स्योनस
ठा, मेग नोड, वसिष्ठपुर जमशेदपुर
- ८३१ ००१, अल्प गतिविधिः
वृष १९९६ सँ वृष २००२ यना
वहियापना पनाथिद समस्तीपुरक
सांस्कृतिक, गतिविधि एवं मैथिलिक
पुनथान-पुनसाह हेतु डॉ. गनेश कुमार
वकिठ आ श्री उदय गानाथस योयनी
(नाथपुनपुनसुका पुनपुन
शिक्षक) क गानाथमे संलग्ना
प्रकाशना कृतिः कथामपुनना-
कवना-संग्रह, अंशु-समाधियगा



नाम प्रतिस साहु

मनक
मैठ, अंकु- छवुकथा संग्रह, नथक यक्का उठयिठे वाट (कवना टनका संग्रह), कन वगु जग सुग्ना (दोस कवना टनका संग्रह), सुकठक पयिजी (वहिन छवु कथा संग्रह), दूवयेयनी (छवु कथा संग्रह) प्रकाशना



महाकाण्ठ शुकुल



वयेश्वर हा, गनिमठी

"गविन्ध-गकुञ्ज" पुनकाशति।



धीनेश्वर कुमान, गनिमठी



धनेश्वरशेखर कामर्णि
पट्ट-

मैथिली कवी शिक्षा- एमए
(गणनीशिसान्), पति- सु
योगेश्वर कामर्णि, गाम-पोस्ट-
कान्धिग, गामा- खमास
गण, थावा- नोसडा, पति-
समस्तीपुर, वहिना संपन्नपिनपमसु
सहकारिणी पुनसाप पदावकिनी
(विनीपट्टी)।



गणेश प्रथिस नाय

"ननुनाथि", "छठकि डाल",
"हमन यानुयाम" पुनकाशति।



वनिध शुकुल

अपना पुनवाक भोग (कविता संग्रह)



सुधाकर हा, महोर्णी
, नेपाथ

सपस वैशी सडक गाटकमे मंथग।



सदने आराम "गौरान"

गाम-पुनसौथिग, गामा-
जयगण, पति मधुवनी।



डानु शुकुल कशी मशि "शुकुलेश"

मैथिली कथा संग्रह- गोवर्धना।



दशरथ कृष्ण

"पुत्रोत्पत्ति" क सम्पादन



उमेश पासवान

"वृत्तान्त" क सम्पादन



अशोक साहू



डॉ. गणेश कुमार मश्री

डॉ. विनय विश्ववधु



श्रीम प्रकाश झा

बोधनदी (मधुवनी)

"कवि वृत्ति" क सम्पादन (गणेश, सुवास आ कवि सम्पादन) सम्पादन



डॉ. अमोघ नाथ



शशि कुमार प्रसाद

गणेश प्रसाद मश्री हास्य

मैथिली भाषा क गणेश प्रसाद मश्री हास्य क पहिल सम्पादन

"हमना वृत्ति" क सम्पादन आ "गणेश प्रसाद मश्री" सम्पादन



गणेश गणेश झा मधु

गणेश गणेश झा मधु (गणेश सम्पादन), गणेश कवि सम्पादन (गणेश कवि सम्पादन), गणेश (गणेश सम्पादन), गणेश (गणेश सम्पादन) सम्पादन



गणेश कुमार मश्री गणेश



अशोक साहू (१९५३-)

मूठ नाम- गणेश गणेश झा, साहित्यिक नाम- अशोक साहू नाम-वाथ (मधुवनी), मधुवनी कवि सम्पादन, गणेश सम्पादन, गणेश सम्पादन (कवि सम्पादन); मास्टर नाम यशोवन्त, कवि सम्पादन (कवि सम्पादन); हास्य सम्पादन (गणेश सम्पादन)।



दधिप कुमार हा



डॉ नालकाण हा

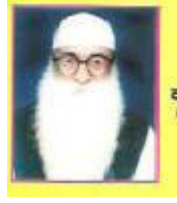


अनुराग, गेपाठ



मुरलीधर हा

कवचिपुत्र, दलभंगा वाठ कथा संग्रह "पठिपठिह गाछ" (२०१०) प्रकाशना।



कमलधर दास

"मैथिली कृतम कायस्थक गोत्र, पुत्र, भूठ आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशना।



श्रीकाण मसुठ, मैथिली नगमंय



वेयन गोकुल

गाम: यवौनागंण, मधुवनी। प्रकाशना कृति: वैथिक अपमान आ छोगन्देवा (गाटक), वाप भेट पतिनी आ अर्थिकता (गाटक), वसिवासघान (गाटक), जँय-नीय (गाटक), गौट (गाटक); एक दण्डसँ वेसी गाटक प्रकाशक प्रतिक्रामे।



गंगा हा

मैथिली नगमंय ककठि मंय, कोकना। कोकना आ गाम पणुआगिह टोठमे मैथिली नगमंय गिहसना।



नवोनाप्राम मसि १८५५-

पति- श्री गोविन्द मसि, माता- श्रीमति अदुवा देवी। गाम- कुशमौठ, पोनादह- वाराण, भासा- अनेउहाट, पति- मधुवनी। मैथिली नगमंयसँ सम्बद्ध "कोकठि मंय" संस्थाक माध्यमसँ।



कमलेश कुमार दास, नगमंय कठिका



कशीन केशव, मैथिली नगमंय



कुमार गगन, मैथिली नगमंय



अशोक झा, जहकपुर



मदन गङ्गुल

यन्यति गंगुली, जहकपुरक
यन्यति संस्था मथिथि गायकका
पनीषिक संस्थापक। गीत दशकसे
वेसी समयसे गंगुलीमे सक्रिय।
करीव ३००० गीत मथिय गायकक
सथे पुनसुगति, २००२ गीत
सङ्क गायकक हजामसे वेसी
पुनसुगमे अगिय २० गीत टेली-
सीरियल आ आया दगाव मैथिलि
श्रियन श्रिममे अगिय।
पुनसुका: सप्तम अगुनापुनयि
महासवमे सनसुकेषु अगिया
२०४८ वसि, कृषेगीय पुनगि।
पुनसुका (गोप सनका) २०६३
वसि।



अरुण कुमार यादव, मैथिलि नगमंय



आशुतोष यादव अशिक्षा



कृष्ण कुमार कश्यप १९८८-

जहम १५ सतिमवन १९८८ ई। पति- कवि-
उपन्यासक सव सुहृदगामयस वव "सैवथिय"।
जहवनी १९६५ ई मे गेवा सग छे "वास्ट
सुख", १९८१ ई मे "कथा आचारिणी जिलव आ
शिक्षास पद्यति" क पुनसुग आ गक
कान्थाववथव छे सवि कश्यप आ अशविवक
सहयोगसे "गामती वकिस संस्था" क स्थापना।
यव: अशविवक संग "मेघदूत" आ "गीत-
गोवविह" क मैथिलि अगुवा, भाव-गान, मथिथि
यति-शिक्षा, गान-१, मथिथि यति-
कोन, गान-३।



उदित कुमार



पुनवीरस कुमार गङ्गुल



वव पंडित, मथिथि भूगकव

वटोही हा, भयिषि यति
१क०

जन्म तथि- ३१ दिसम्बर १९७७; जन्म
स्थान -
कन्हैषि, सकनी, मधुवनी; शिक्षा- स्नात
गानासस हाई
स्कूल - बनपानिगाम, बी एस सी - मेमोरिअल
कॉलेज - बनगंगा, डिप्लोमा इन शैक्षण
डिजाईन (बिशनर इंस्टिट्यूट ऑफ शैक्षण
डिजाईन - वयो दक्षिणी), यति-क० आओ
शैक्षण पुनर्वागुमानमे वशिष योगदाना, गिवास
स्थान- दक्षिणी, इंडिया; पति- श्री सत्य
गानासस
गकुल, सकनी - कन्हैषि; माता- श्रीमती
माधो गकुल, सकनी - कन्हैषि। वनमानमे
अपन एकसपोन्ट वणिगस एसथेट) क गामस
सुनआन, पुनवमे पुनोडकट डेवोपमेन्ट आओ
मन्यटक रूपमे कामना।



नागेण्डू पंडित, भयि
० मूनाकि०



गंगीस यण्डू ००



गवेण्डू कुमान हा, पानका०



यण्डू कशीम ००, पान
१क०, गेपा०



उपेण्डू मगान गागांसो, गेपा०
सडक वाटका



नमेश नंगन, पनवाहा, गेपा० १९९६-

पनवाहा, गेपा०मे जन्म। गेपा०प कथा- जगानक गरीब मुदा
सम्मानाति गाम। जगपक्षयन कथा- दूधट आ मोहक
शक्ति। थोड वपिठना, मुदा वेन-वेन यन्यति नहवाह।



वनिगत गकुल

"वोकी अछा हिममन दूयक कान" पुन
कासाति।



सुजीत कुमान हा, गेपा०

जहिदी (उद्युक्था संग्रह), यडि (उद्युक्था-
संग्रह), गोपान्टन जयनी (गोपान्ताण), गण्य (उद्यु कथा संग्रह), पण्ड



सनोण प्यठिड़ी

गेपा०क पहिठि मेथिठि नेडयो वाटक
संथा०क

गोवाळी (उद्यु कथा संग्रह), कोरवी धूर्तिश्रुत (वाच उद्यु-
बहिर्गा कथा संग्रह), दूधमती- (सम्पादन- गोवाळी आ मैथिलीमे)।



देवांशु वर्तस

जन्म- गुवापट्टी, सुपौठा मास
कम्प्युटर्सिखने
एम्.ए. हीनदी. अंग्रेजी आ मैथिलीक
व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकाके
कथा, उद्यु कथा, वार्ता-
कथा, यति-
कथा, कानून, यति-पुस्तक
साहित्यिक प्रकाशना विशेष: गुजरात
नालय साठ पाठ्य-पुस्तक मंडल
द्वारा आठम कक्षाक उच्च वार्ता-
कथा संग्रह प्रकाशित
(२००४ ई), गताशा: मैथिलीक पहिल-
यति-सम्पुर्ण
(कॉम्पिक्स) प्रकाशित।



संतोष मिश्र, गोपाठ

पोसपुत्र (उद्यु कथा-
संग्रह), उदास मोन (उद्यु कथा-
संग्रह), एना-करी (कविता-
संग्रह), अरुणा (संपादन- कविता-
संग्रह)।



सुगीठ कुमान महपत्रिक, गायक, जगक पुन, गोपाठ १९६८-

मैथिलीक गायक- संगीतकारक रूपमे पुनसद्विद्य छथि। मैथिली
भाषाक गीतसभमे मौलिक तथा सांस्कृतिक संगीतक संग्रहमे
हिनक सक्रियता पुनसंस्वीय छथि। सुगीठक गायन तथा
संगीतमे कैसेट एवमसंग सेहो वाहन ग्रेड अछि। एम्पनदिसि
हिनक सक्रियता पुनसाहित्यक रूपमे कम नहिहुं गुणात्मक
दृष्टिहें हेंदयसंप्रति मातृ जगत अछि। पिशास वार्ता-
शिक्षक छथि।



धियेनृद प्रेमनृषि, सि हा, गोपाठ १९६७-

वर्ष २०२४ साठ ग्राहव १८ गते सनिहा
ज्योतिष गोवर्धनपुर-१, वसुंधीपुन
जामे जन्म लेलिन प्रेमनृषिक पुनस
नाम धियेनृद हा छथि। कानूनपुनस
हेछे भयिष्य कानूनक पुनसुत्र
कानून गोठी नृषि- धियेनृद
धियेनृदक अवाज गामक वय्या- वय्या
थिनेह अछि। पत्रपत्रक मैथिली
साहित्यिक पत्रिका
आ समाज मैथिली सामाजिक
पत्रिकाक सम्पादन।



धियेनृद नारायण मिश्र

पत्रिका नाम: स्वर्गीय सुनय नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाका
श्री देवी, पैतृक नाम: अर्देन डीह, मातृक: सवित्री आ उग्रोद्या वार्ता-
वा आयोगक उप सचिव, दृष्टिमे संप्रेषण मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट आ व से
वा वार्ता- शिक्षा: यन्त्रयानो भयिष्य महाविद्यालयसँ वापस-
सी गौतमि वार्ता-पुनसि; दृष्टि वसिष्ठविद्यालयसँ वधि सनातन पु
नकाशिक कर्ता: मैथिली:-

- १. ज्ञानसँ साँह यनिक (आत्म कथा), २. पुनसंग्रह (गविय), ३.
- स्वर्गा पहि अछि (धार्मिक पुनसंग), ४.
- असाह (कथा संग्रह) ५.
- नमस्तस्यै (उपन्यास) ६ वविय पुनसंग (गविय) ७. महाराज (मैथिली
उपन्यास), ८. एकांते (मैथिली उपन्यास)
- ९. सोमाक ओहियान (मैथिली उपन्यास) १०. समाधान (गविय संग्रह) ११. मा
नृषि (उपन्यास) १२. स्वर्गविक (उपन्यास) १३. संपादन (उपन्यास)।



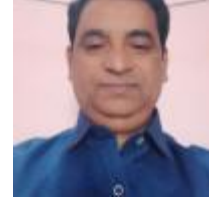
कुमान बास्कन



श्रीमनेगुन पादव, गेपाठ



श्रीमोद कुमान हा
१८६८- २०२१
वमिवक
पथान (कवतिा
संग्रह) पुकासति



मनोण कुमान मम्ड
पुसद्विध कवतिा गद्य
यथा सेहो



श्री शूषम पाठक

शहिसठ (गाठक),
वद्विहःसदेह रट (श्री
शूषम पाठक आ उाँ
कैश कुमान मशि-
अंक १-३५० सँ),
वद्विहःसदेह २७
(गणेश गकुल आ
श्री शूषम पाठक
आग भाषासँ अगुदति
गद्य आ पद्य- अंक
१-३५० सँ)



संदीप कुमान साश्री

"वैशामने दवगपन" पुकासति, ऐ
पोथीने मेथथिक पहिठि दवति
आत्मकथा संकषति मेठ



डाँ जयिउम महमान
जाश्री

सम्पुनिसुगतकोपल हविदी
वमिग, मनिना गाथि
काँषण, गसा



नद्युनाथ मुप्यथिा



पुनदीप पुषुप



मुगुना जी

भोकाम दसि (वीहर्णा
कथा संग्रह),
पुनीक (वहर्णा कथा
संग्रह), माँह
श्रांगभे कथाआए छी
(मैथिली गण
संग्रह), हम पुछै
छी (साक्षात्कार),
गीत टा वाठ गटक
(मैथिली वाठ
साहित्य), पुनपुय्यी
(मैथिली वाठ कव्ता-
वाठ साहित्य), घाह
(हास्कू-टका संग्रह)



गाम यग्द १ गाम

सपना साका (कथा
संग्रह) पुनकासति



वर्गीत उत्पठ

हम पुछै छी (कव्ता
संग्रह), नेहन पन गधू -
काशीगाथ सहिक हर्दि
उपग्यासक मैथिली अगुवाह,
मग्नान्द-पुष्पशु-
ठेपक हसिक-श्रीवासाव
"सठम" (हर्दि-सँ मैथिली
अगुवाह), मोहनदास- उदय
पुनकासक हर्दि उपग्यासक
मैथिली अगुवाह



आयान्य गामगद
मसुठ

सामाजिक यतिक
सोतामठ, सेवानवि-
पुनयागध्यापक, माता-यग्द-
पति-सुवनापेसुन मेठ, पत्नी-
पुनमिठि देवी, गन्त गिर्ण-
गन्तरी इन्दो योग्या- एम-एससी
(नसायन शास्त्र), एम ए (हर्दि),
नृत्य- साहित्यिक, मैथिली-हर्दि
कव्ता -कहनी ठेपन आ अठेप
पुनकासति पोथी - मैथिली कव्ता
संग्रह नासा के व वांटयो रवर
पुनकासति नयना - सहयो कव्ता
संग्रह पोथी - गनक गदगी गानकी
आ शैल्य गाना रवर पत्नी -
मथिलि समाज, घन-वाहन आ
अपुनवा (मैसाम) अप्पान-दैनिक
मैथिलि पुनग्यासक पुनकासा
सामाजिक-सामाजिक यतिक,
दायित्व- पुनव गिठि पुनगिठि,
पुनथमिक शिकषक संघ, उमना,
सोतामठ। स्थायी पत्नी- गाम-



पं वाठ
गोवर्गिंद ' आनंद'
घनक नाम- गोवर्गिंद
दादवा वनाम-
पुनकनाम-
नापुप (आधुनिक
मैथिली
व्याकरण) पुनकाशति।



ठाठेव कामा
दक्षिण
दृष्टि (गविग्य-
पुनवग्य-
समाधेयगा) पुनकाशति।

पपिना वशिष्ठपुन थावा-पनिहिन
गधि-सोतामदी वनामान पना-
पपिना सदन, मुनवसिथक वानुड-
०४ सोतामदी पोस्ट-यकमहवि
गधि-सोतामदी गानुप-वहिन पनि-
८४३३०२



पं कैठाश कुमा मशि
समापशासुती- भागव
वनिआगी कथा कवति आ
भागव वैपनागिक आठपु
सश पुनकाशति।



नामक ्षम पनाथी
"दू पटीक वीय",
"पुनकिकान एपग वॉकी
अछा" कवति संग्रह
पुनकाशति दधति ठेपग
ठेठ पुनसद्विद्य।



गानापाम दादव
सठ्ठैना- गुनुमैना (अमना
पुनवक अवसन पुन
सुवतानना सेगवी
ठेकनिक
सुननाम) पुनकाशति।



उमेश मंडठ
गशिठकी- कवति संग्रह, मथिठिक संसुकान गीठ, वधि-
वुपवहन गीठ आ गीठगद (संकठग),
"मथिठिक वनसुपति सुठसुठ सो मथिठिक ठीठ-
ठगठ सुठसुठ सो मथिठिक ठीठगी सुठसुठ सो", सगन गाना
दीप ठीठस- शाठिस, दुध- पाना शुनाक-
शुनाक (कथा एवं पामुठठपिठगदीस पुनसाद मसुठठ)-
(छाया एवं सनुपादन- उमेश मसुठठ), हनिदुसगानी मुसठमान
औन हनिदुसगानठिठ - मूठ हनिदुठेठप- गीठिस सनुना, मैथी
ठी अठवद- उमेश मसुठठ।



यगुनमासी



कुंज वहीनी, मैथिली गायक

सुप्र हेमकागत हा, गायक



गामवावू हा, गायक

मुनवीधन, मैथिली शक्ति गतिदेशक



वपिउदासी



जतिगुन सहयोगी



उदतिगानाग्राम शक्ति गायक



पुनकास हा, शक्ति गतिदेशक



कीर्तिआजाद क्रिकेट



श्रीनाम हा सतंग



अशधिक हा गोष्ठ



अशोक कुमार १८८९-

साथगाम कापुडकानक परिवानमे समसुगीपुन जिविक भोप्यिानपुन सम्पदागी गाममे जगमठ अशोक कुमार कहियो सुकूठ नही गेछाहा दानमे पयास टाका कमेनहिन दविषिक एकटा गोष्ठ कठवक एहा कैठीके १८८४ ई मे योनिक भयिधानोप छग कए गोष्ठ कोनससँ वालन कए देछ गेछा वेह कैठी दस



गजेश नंगन, मैथिली सेडिना प्रोजेक्ट



संग्रह हा

सुव्रानगंग, शागवपुन भोयोरोषक सईश्री

साधक गीतान गानक गम्बन एक
गोष्ठ्यन वनगिठ



वर्गिदेश्वर पाठक



गानकमठ हा, अंग्रेजी छेपक, पानकान

हगकन अंग्रेजी उपन्यास "ए वू वेडस्पेड", "इश्चू आन
अश्चनेड ऑश्च हास्टस" आ "श्यापनपूश्च" पुनकाशति छगही "ए वू
वेडस्पेड" (१८८८) पन हुगका "कामनवेष्ठय गारुनस पुनारण
श्चॉन वेसुट श्चुसुट वुक- यूनेसियो" गेटठ छगही गानकमठ हा
शुनी मुनीश्वरन हा आ शुनीमती गणना हाक पुन छथि,
"आइआस्ट्रीपडगपुन" सँ गोटकछथि, आ आइ काएही दिक्रिबिमे नहै
छथि, गनए ओ "अम्पडियन एक्सप्रेस" मे एडटिन छथि



मानस वहिनी वनमा, वैज्ञानिकि



श्चमीश्वरन गाय 'गोसु'
मथिठि गन १८२१-
१८७७



गामयानी सहि 'दगिकन' मथिठि गन १८०८-
१८७४



गामवृक्ष वेनीपुनी १८८८-
१८६७



डॉ हनरिश्च गनुम १८२२
७- २००८

गनम २१ गन १८२७ ई।
गाम- यकसठिम, पो- पटोनी, गठि-
समसुनीपुना गीन दनुगन सँ वेसी हगिदी
पोथी गहामे काव्य- कथा- पुनवग्य
सममठिठि अछथि



हगशिकन शुनीवासाव "शठग"
१८३४-



सुव गनानुदन पुनसाद हा 'द्वगिण'
हगिदीक साहित्यकान



नामेश्वर प्रेम

हृदयिक गायकका।



डॉ गवठ कशोर दास "गवठ"



मोहनागुप्त हा १९५५-



नामाज्ना सशधिन



गामेश यंयठ १९३०-
२०११



डॉ अमनेगुट



गोगेठठ मनीषी



कुगुण अमनिस



शंसु अगेहि

गुणु म गगवनी १९४१, पुनकाशति
कृाःओहाएठ डीह (कथा-
कावुध) १९९९, सगंणा (कथा
संगुनह) १९९९, गेसनी
वेनीओ (कथा
कावुध) २००३, वगुणकिस छंड
वगिस २००७



पोद्धाऱ नामावगाम अु
म १९२३- १९९९



मगहऱ रमाम १९३०-
२०१२



अुम पुनकास १९४९-
२०१२



शंशुभन पासुडेय

गनिहुना यूनीकोडक आवेदनकर्ता।



एगिस कुमान भसिन

भयिषिक वाङ्मयि एकसुपन्य।
भयिषिक भोटा-भोटी सभ यानपन
कगिाव पुनकाशनि। उगन वलिा की
व्यथा कथा (१९९०), कोसो- उन्
कैड से सगन- ए- भौा
नक (१९९२) वंदिगी महगंदा
(१९९४), वोसा पेड ववूठ का- वाङ्
गयित्नास का
नहस्य (२०००), वगाना पन
भगपून भयिषि की कभग गदि
(२००४), गुगलि गदि औा नकनीकी
हाड- शुक (२००५), , दुई पाटन के
वोथ मे- कोसो गदि की कलगी
(२००६) तथा वागभनी की सङ्गानि
(२०१०)।



ओमपुनकाश गानगी १९९८-

कोसो गदि क लोक सांस्कृतिक अध्ययन - गदियाँ गानी है, वा
हान के पानपुनक गद्य आ भैथिषिक लोक गद्य पुनकाशनि



बैदेही साहा



प्राणभवक्य पन्नी भैत्रेयी

प्राणभवक्यक दू टा पन्नी छथिगिह पहि
कात्यायनी आ दौस भैत्रेयी। भैत्रेयी
वहमवादीनी छथि कात्यायनीसँ हुनका
नीगटा पुन
छथिगिह- यगनकागना, महाभेघ आ वीणसा



भोतीदास

भयिषिक नक (वोवी) गानक
वेकदेवना



वह्दिवा

यनपागानक वह्दिवा



गांगो देवी

भयिषिक भवाह गानक वेकदेवना।
गांगोदेवीक गगना अपनो भयिषिक
भवाह वेकनामे पुनयगति अछा



नेसमा, कुसुमा, शुभवा



मोंगक मोतीसायन



वन्ध्यावासिनी देवी मैथिली लोकगीत १९२०-२००६



कामेश्वरी देवी १९२२-

मधुवनी जलिक नवानी गामका जन्म १९२२ ई मे अपन माताक बाहनमे जेठनी पतिपे मदनमोहन ह। वनीवासिनी पुनसंविद्य तागतिके पम्पति केशव मोशिन हनिक पति। छथथनि "मैथिली संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमबला क्रास



आसमिा सहि १९२४-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका । पुनकाशन: मैथिली लोकगीत, वसन्तेश्वरी (अनु), शशि पेठ गीत आदि। छेडी वनेवोन कालेण, कथकनामे पुनव पुनयापिका।



पारिी दे १९३३-

जन्म: रद जगवनी, १९३३, पति: श्रीमनाथ मोशिन, पति: ५५५५, दुःखगंगा, मैथिलीक वसिष्ठ कथाका। एव उपनयासका। मनीथिका उपनयासपन साहित्य अकादेमीक १९९२ ई मे पुनसंका। मैथिलीमे काजगू हू सय कथा आ पाँय टा उपनयास पुनकाशति। विपुव वाठ साहित्यक सजना अनेक शानतीय गाथांमे कथाक अनुवाद-पुनकाशति। पहिठि पुनवोध सम्भाग २००४ सँ सम्भागति।



यतिनधेया देवी १९३५-



मोहनी दे १९३७-



ऽ सावतिनी दे



कवतिा देवी १८४२-



पुनशावती हा १८४५-१८८८



गीनणा गेमु १८४५-

जन्म: ११ अक्टूबर १८४५, नाम: कामाय्या देवी, उपनाम: गीनणा गेमु, जन्म स्थान: गवटोठ, सनसिवपाही। शिक्षा: वीए (आनर्स) एमए, पीएचडी, ग्रेजुएट। पुनकाशति नयना : शोसकम (कवतिा मिति, १८६०) छेप्यन पुन पानिवािकि, सांस्कृतिकि पनिसक पुनवाव। मैथिलि कथा याना साहित्य अकादेमी गई दृष्टिसँ

पुनमथि हा



सुव खालानी सहि १८४५-१८८३

खालानी सहि: जन्म १ जुलाई, १८४५, गधिन : १३ फुन, १८८३, पतिा : पुनो पुनवोध गानायाम सहि समुपादिका : मैथिलि दनशन, वशिष अध्यापन : मैथिलि, हगिदी, वंगला, अंग्रेजी, भाषा वणिआन एवं ठोक साहित्य। पुनकाशति कृति : सवोमा (आसकन वारुडक शुभेय गटकक अनुवाद १८६५), पुनम एक कवतिा (१८६८) वंगला गटकक अनुवाद, वषिवृक्ष (१८६८) वंगला गटकक अनुवाद, वगिदिती (१८७२), सुवयति: मैथिलि कवतिा संग्रह (१८७३), हगिदी संग्रह



बीमाा डकुन १८५४-

जन्म- गवानीपुन, पम्डीठ (मधुवनी)। पतिा- सुनो सुनोमोहन डकुन। पुनकाशति कृति: मैथिलि गानकावक पुनपुन, इतिहास- दनपम (समीक्षा), वदियापकि उतस (समावेयना), गानती (उपन्यास)

शागुति सुमन १८४२-

जन्म १५ अगिम्बन १८४२, कासमिपुन, सहनसा, वहिन, पुनकाशति कृति: शो पुनोक्षति, पनछाई टूटी, सुठगो पसोने, पसोने के नशिा, मौसम हुआ कवीन, सनध येनावनी गही देना, नप गेहे कयनान, गीनन-गीनन आग, मेघ इगुनगीठ (मैथिलि गीत संग्रह), शोय पुनवंध: मधुवनीय येतना औन हगिदी का आयुगकि काव्य, उपन्यास: जठ हुका हनिना समुभाग: साहित्य सेवा समुभाग, कवतिा न समुभाग, महदेवी वनमा समुभाग अध्यापन कान्या



उषाकनिम पाव १८४५-

जन्म: २४ अक्टूबर १८४५, कथा एवं उपन्यास छेप्यनमे पुनपुया। मैथिलि तथा हगिदी हुन भाषाक यनयति छेपकि। पुनकाशति कृति: अगुनानती पुनसन, हुनवाकषण, हसोना मंजुषि, गानती (उपन्यास)। २०१०-सुनोमति उषाकनिम पाव (गानती, उपन्यास) छेठ साहित्य अकादेमी पुनसकान- मैथिलि।



जानग सुधा मशििन

गानक उययतन न्यायाध्यक यानि महिलि न्यायाधीस आ पहिठ मैथिलिनी।

सुवातगत-धोतान मैथिली कथाक
पन्हाह टा पुननिधि कथाक
सम्पादन।संज्ञान यान पधिसभ कथा
संग्रह, आगा कृषम छे कलिया
संग्रह, कामधना कथा
संग्रह, पुनायिछवा हिनदी कथा
संग्रह, १८६० से आर्यनी सप्तमे अथकि
कथा, कलिया, शोधनविनय, छगिनवि
नय, आदि अनेक पुन-पुनिका तथा
अननितगुणनयथमे पुनकाशति
मैथिलीक अननिकि कछु नयना हिनदी
तथा अंग्रेजीमे सेहो २००३- नीना
नेमु (कामधना, कथा) ७७ साहित्य
अकादेमी पुनस्का।



जस्टिस म्हुठा मसिन



वीमा कर्मा १८४६-

जन्म ३ नवम्बर १८४६, गाम- पटोरी, पोपंयगछिया, जिला- सहरसा।
सदस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी पानामुसदान् समिति १८८७-
१८८३, सदस्य, गाथा पानामुसदान् समिति (मैथिली), यानतीय
ज्मानपीठ अवकाशपुनापुन वसिन्वदियाव्य आयन्य आ
अध्यक्ष, मैथिली वसिन्व, पटना वसिन्वदियाव्य **पुनकाशति**
कर्मा अंगुवा, वावनाक अस्थपिपान (मैथिली काव्य
संग्रह), शम्पवाह, तुनयमेव समनपये, अनुववय (हिनदी काव्य
संग्रह)। पुनकाशयः सपुनपदी (मैथिली नविनय संग्रह), याननिकि
पुपुडममि मैथिलीक पुनसद्विय उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा
कछु कहै अछि (मैथिली आधियवा); जगिगोवामा (हिनदी काव्य
संग्रह), कर्मसः (हिनदी आधियवा)।



शेखारिका वन्मा १८४३-

जन्मः अगस्त, १८४३, जन्म स्थानः वंशाधि
टोवा, गारापुन। शक्तिधाम, पी-एयडी (पटना
वसिन्वदियाव्य), ए एन काव्य, पटना मे हिनदीक
पुनाययापिका पदसे सेवानविर्ण। गानी मवक गुननयकि
पुनकाशतम १ससे ४१७ अथकिना नयवा पुनकाशति
नयवाःहृत्तेन गोन, वपिकैत गोन, वपिनवयवा (कलिया
संग्रह), समनगिग्या (संसमनास संग्रह), एकटा
आकास (व्युक्तया संग्रह), यायावनी (यातना-
वर्णावण), शावाजपठि (काव्य-पुनगी), कसिन-कसिन
जोवन (आत्मकथापन साहित्य अकादेमी पुनस्का)। अन्धयुग
(व्युक्तया संग्रह) आपन-
आपन पुनी, गाराशंस (उपन्यास)। २००४ ई- ७० स्त्रीमती
शेखारिका वन्मा, पटना; यातनी-येतना पुनस्का।



गीता हा १८५३-

जन्मः २१-०१-
१८५३, व्यवसायःपुनाययापिका।
छेम्पन पन समाजक पनमपना तथा
आयुनकिनाक संस्कान से हेला
वसिन्वदियाक पुनवावापुनकाशति
कर्माः शनीयुछ, कथा संग्रह
१८८४, कथाववनीन
१८८०, सामाजिक असगतोप ओ
मैथिली साहित्य शोध समीक्षा



आशा मसिन १८५०-

जन्मः ७-१८५० ई, पुनकाशति
कथा मे मैथिलीक संग हिनदी मे सेहो
। सनसै पैघ वपिय मैथिली कथा
संग्रह।



डॉ सुनीतिहा

। वधिव्र मौसी (वाठ छुक्था संग्रह)।



पुणेमठाना मस्त्रिम ' पुणेम
' १८४८-

पुणेमसुथान-नहकि, माता:सुमीमणी
वृंदा देवी, पति:पुं दीनाराथ
हा, शिक्षा:पुणे, वीरड, पुनसद्विच
अशक्तिनी हू सयसं वेशी वाटकमे माग
छेवनी गोमि (वाटयमंय) क युवापुनव
उपाययक्षा, पति:किक
सम्पादन, कथावेपन आदिम कुसव
। अतिपिन आदि अनेक संस्था
द्वारा पुनस्कृत-सम्पादन।



डॉं श्रुतिना हा १८५७



मेरका मठविक १८६६-



शानदा सगिहा मैथिली ठो
कगीत १८५३-



ठावपनी देवी



सकुंठा यौधनी



गोदावरी दाना, मथिली
यतिनका



उषा वन्मा १८४८-



कमठा यौधनी १८५३-

कृता- मैथिलीक वेश-शूषा-
पुनसाधन सम्बन्धी
शब्दावली, पुनकाशनाधीन: वाटे
वधिव्र पाना (कथा संग्रह), पयि
मधुमास (कविता
संग्रह), आशापुनसा देवीक वंगठा
छु उपन्यास मन भूषाक मैथिली
अनुवाद। मूज सुशुनपुनसे पुनकाशनि
मैथिली साहित्यिकि



सीता देवी, मैथिली यत्निका



जंगा देवी १९२८-१९८९

मैथिली यत्निका

पत्रिका संचालक सम्पादन (१९८४-८५)



सनस्वरी यौधनी, जगज्जुन



उषा वरुणना हा

काशी हविट्ट वसिष्ठवर्द्धिप्रथमे मदन मोहन माधवप्रिय एवाता मैथिली अध्यापन सुनू मेठ मुदा ओ वादमे वरुण शः गेठ पुनः एक अध्यापन छेउ उप-कुछपती गारुस शटगाउनक कान्यकाछमे मैथिली अध्यापन केन्द्रक स्थापनाक २०२० मे घोषणा मेठ, कछ संकाय पुनः पुनो वीजिय वरुण समन्वयक आ वसंत महिषी महावर्द्धिप्रथमे गणघाटक प्राध्यापक उषा वरुणना हा के सह-समन्वयक वनाओठ गेठ



उषा अनुरामा यौधनी



वनि १९५५-

मैथिली क ३ साहित्य अकादमी पुनःसकन वीजिता छेपकक ४ गोट कविता "कन्यादान" (हमिओहन हा), "गण पोपने मे कविनी मछलियाँ" (पुनःस कुमान याउधनी), "वठि टेरनी की जयनी" व "पटाकपेप" (छवि गे) हनिदीमे अरुणारि गोट छेककथाक पुस्तक "मैथिली की छेक कथा" व "गोठ हा के कसिसे"। मैथिली कथा संग्रह "पोहसें गकिसै"।



ज्योत्सना यग्नम १९५३-

जन्ममैथिली १५
दिसम्बर, १९५३, जन्मस्थान : मनुआना, सियथि।
पुनः, समस्तीपुर, पति : सुनी
मानकम्पेय प्रवासी, माता : श्रीमती



सुस्मिता पाठक १९५२-

जन्म: सुपौठ, वलिन। पतिमैथिली कविता संग्रह पुनःसकन।
कथावाचक, कथासंग्रह पुनःसकन। गणनीति सासनामे एमए संगीत, पेटगिमे नृत्य। मैथिलीक पोथी पत्रिका पन अनेक गेप्यायति।



उमिथि देवी, मैथिली यत्निका

सुशीला हा, अद्यापण। सुपरयिनि
कवयित्री, कथाकार। पुनकाशति
कथा: योगसाई (कविति
संग्रह), हिनिकोवा (कथासंग्रह)।

पुनकाशति। समकाशिन
गीतन, समध, आ गकन संपदनक
कवयित्री। अनेक शाषामे नयनाक
अनुवाद पुनकाशति।



प्रमुणा देवी, भयिषि यति
निकाश



प्रशोदा देवी, भयिषि यतिनिकाश



रामा हा, सम्पादनक भयिषि द्वापाम



पुर्णा हा

अनुशाति (छवुकथा संग्रह)।



सुया क्शाम



गुण दाम

सम्पादनक, भयिषिगण



नायिका हा, अंग्रेजी ठे
पिका

हुनकन अंग्रेजी
उपन्यास "सुमेठ" आ "ऐनटनस
ऑन ट्रेन हॉन्स" आ अंग्रेजी छवु
कथा संग्रह "ए एक्सेन्ट एम्डे
मातुनी" पुनकाशति अखी
उपन्यास "सुमेठ" छेप हुनका "शुनेन्य
पुनिकास गुएनठन" पुनसकान गेटठ
छवु आ ई पोथी सोठह शाषामे अनुदति
गेठ अछी नायिका "एम्हन्सट
कांठेप" सँ "एन्युपोपोवोनी" पढवे
छथि आ "शिकागो वसिववदियाथ" सँ
गाणनीनी विपिआनमे मास्टन्स उगिनी
ठेने छथि आ "हिनिसान
ठरन्स" आ "विपिआन वन्ठड"मे
काप केने छथि आ संगामे "गाणिव गांधी
आउगडेशन, दठिणी" मे सेहो, जाए



स्वरजपुनमा हा १८७०-



पूपा धीनू १८७३-

पूपा धीनू- जन्मस्थान-
भयनाकडेनी, सपानी, श्रीमती
पुनम हा आ श्री अनुमकुमान हाक
पुत्रीसुधायी पना- अयठ-
सगनमाथा, जठिठा- सनिहा पुनथम
पुनकाशति नयना- कोखी
कागए, माटसँ
सगिह (कविति), गगना वेठक देस-
दानमस (कनक दीक्षतिक
पुसाकक योगेन पुनमन्सिंग
मैथिलिमे
सहअनुवाद, सडगीतसमवगधी
कति नाप्टनीयगान, गोन, गेहक
वएन, येतना, पुनीयान हनन
कमौआ (पहठि मैथिलि
सीडी), पुनम गेठ
गनसुस्कीमे, सुनक्षति मात्तव

ओ आंकवाहसे पीडति वयया सग छेउ
सम्पन्नक कान्यकनमक पानमहा केने
नहथी आर काछी ओ अपन पती आ
वय्यीक संग टोक्योमे नहै छथी



गणना हा, वद्विपाना
संगीत गायिका



नस्मदिता, गायिका, जनकपुर

गीतमावा, सुपक संगेसा सम्पादन-
पुस्तक, मैथिली साहित्यिक भासिक
पत्रिका, सम्पादन-सहयोग, हनन
मैथिली पोथी (कक्षा
१, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा ८-
१० क ऐच्छिक मैथिली विषय
पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।



कामिनी कामाधनी



मुग्गी हा युवा नयनाकान



कामिनी १८७८- युवा कवयित्री



दुक्सागा सहिदीकी



कल्पना भस्मि, मैथिली
गंगमंथ



प्रयोताहा,
, मैथिली गंगमंथ



कनिम हा, मैथिली गंगमंथ



पुनयिका हा, मैथिली गंग
मंथ



ऋतु कनिम, मैथिली गंगमंथ



प्रयोतावित्स, गंगमंथ



गेहा वन्मा, नंगमंय



सवतिा



श्रुपुनयिा



मूडुवा पुनयाव



श्रुमम मशिा, महिवा वांकुसगि



गाम्पी दास, महिवा यत्निका



वगामसी पंडति, महिवा यत्निका, धनुषा, नेपा



देवकवा देवी क्म, महिवा यत्निका, नेपा



मदनकवा क्म, महिवा यत्निका, नेपा



महासुगुदनी देवी, महिवा यत्निका



गत्निका हा, महिवा यत्निका, नेपा



शुषो साह, महिवा यत्निका, महोत्तरी, नेपा



गणनी पृथ्वी



गौरी सेन

संगीता कुमारी, मैथिली श्लोका प्रोजेक्ट



सीमा दा

वर्गिदेसूत्री दास



वामी भस्मि, कवयित्री १८५३-१८८६

कोरुण्य, मधुवनी। जन्मस्थान गिठिठि, नेपाल



मौसमी वनूजी, कवयित्री



श्रेय दा



शान्तिदेवी



अश्विनी

पति। श्री उग्र नारायण ठाकुर, पति श्री उमेश कुमार कर्मठ (वसिष्ठ)। शिव कल्प आ कृष्ण कुमार कल्पक सहयोगसे "शान्ति विकास संस्था" क स्थापना। नयना: कृष्ण कुमार कल्पक संग "मेघना" आ "गीत-गोविन्द" क मैथिली अनुवाद, माछ-बाग, मैथिली यति-शिक्षा, बाग-१, मैथिली यति-कोन, बाग-३



मुग्गी कार्ना

सुमधुवन नारायण श्रॉप्या, अंगतः (कविति संग्रह), युक्का (वाच कथा संग्रह) पुनकाशति।



पुनेमा दा

मथिलि ठोक कवि



श्रुसिमाहा

मैथिली लोकगीत



श्वेता हा यौधनी, यतिनकाम

गाम सनसिव-पहिले, छवति कथा आ गल्हवण्डिजानमे स्नातक मथिलि यतिनकामे सन्धुकिट कोनसाकथा
 पुनरुसिनि: एक्सएलआनआर, जमशेदपुरक सांस्कृतिक कानुनकान, ग्लाम-श्री मेठा जमशेदपुर, कथा मन्दिनि जमशेदपुर (एफ्डीवीशन आ वनकसाँप)। कथा समवन्धी कानुन: एनआरटी जमशेदपुरमे कथा पुनारिगितिमे गतिमाधकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ यनविसेना, जमशेदपुरमे कथा-शिक्षक (मथिलि यतिनकथा), वृमेन कविण पुस्तकाध्य आ हॉटेथ वृषेवा-१६ छठ वाठ-पेटिगोपुनारिधिनि सपानसन: कानपोनेट कम्प्युनकिसनस, टसिको; टोएसआनडीएस, टसिको; एआइएडीए, स्टेट वैक अंश समुडयि। जमशेदपुर; वरिगिण वृधका, हॉटेथ, संगडन आ वृधकागिण कथा संग्रहाक

हॉवी: मथिलि यतिनकथा, छवति कथा, संगीत आ गानस-गान।



श्वेता हा

मथिलि यतिनकथा, सम्पुनता संगिपुनमे गविसा



मानी हा



मोती कर्मा

मथिलि यतिनकथा



निकी पुनरुसिनि



प्रान्मा हा



डॉ. नर्गिणी यौधनी



नीरम यौधनी, कथक नृत्यांगना



३१ मई

पति सुश्रितगण
मई, गाम- महिसानि, ६१००॥
पतिश्री कर्मेश
कुमान, गणेश, ६१००॥



पुनिका हा

पुनिका हा संग मैथिली गुरु
पोस्ट "समदिया"
गोसाभाइवयोगसपोथोम क संयावन



आनी कुमानी १८६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे
गानी" पुनिकाशनि

गुण कर्म

गौरी मयुवनी, समपुनिकायुकेमे नहै
छथी गौरीमाइववागानिसुयोक पुन
हुगकन कवकानि दियसके छी



सुगानामायम



मीना हा

वनेसुट कैसनक समसुथापन वदिह मे मीना हा केन एकटा छु कथा पुनिकाशनि
शेख ई मैथिलीक पहिले कथा छथ जे वनेसुट कैसन पुन वपिथ गेथ हनिदिमे से
हे गायन एहि वषियपन कथा गहि वपिथ गेथ छथ

पुन मंड

पुनिका हा संग मैथिली गुरु
पोस्ट "समदिया"
गोसाभाइवयोगसपोथोम क संयावन



उं छति हा १८५१

पुन
पुनियोग, ६१००॥ "मैथिलीक
गोण समवन्धे
शवदावधि" पुनिकाशनि।



शुपमा पुनिकाशनि

पतिडान कर्म, गाम-
उजान (वडकागाम), पो वेल्ला
गोड, जिला ६१००॥ समपुनिका
वोपिथाना (संयुक्त गण्य
अमेनिकामे), शिक्षा- एएएससी
(गु वपिथान), एग मैथिली
विवि, ६१००॥ वीएससी वीआन
अमेरेडकन विवि
मुणशुशुपुनिस, हॉवो, मैथिली
यतिनकथ, कमपुनिकाशुड
यतिनकथ, छति कथा उपव्यथि
अपिथि गानिथ कथ आ एसनकानी
पुनियोगिक
पुनसकान १८८५ मे; संस्कान
गानि गव गण्य
पुनियोगिक १८८८ मे सहवागी



मैथिली गोकुल

मैथिली लोकगीत आ शास्त्रीय संगीत गायिका



सोनी नीलू हू

मैथिली गंगमंथा "श्रौनी-पथानी" कविति संग्रह प्रकाशिता



शिक्षा

मैथिली गंगमंथा



पुनीता गोकुल

ग्राम- जगेश्वरी, थाया नानागंग, पुनमियाँ मैथिली वाउ साहित्यमे "गोबू हू आ आन यतिन कथा २००८", "मैथिली यतिन कथा २००८" आ "मथिलि कथि कहेवना २०१०", वदियापतिक पुनुष पनीकथा (वाउ साहित्य) २०१४ प्रकाशिता



अनुपमा हू

ट्रांसपेनेसी इंटरनेशनल, बालना



रानीना मरुतिके



नेवनी मिश्र



अनामिका राज



सांगता कक्षमी यौवनी

ग्राम गोवर्द्धपुर, जिला सुपौल
गोवासी आ गोरगढ़ मशिन
महावदियाउध, सहनसा मे कान्यका
पुस्तकालयायकष श्नी श्यामानन्द
हाक पोषड सुपुनी, आओन ग्राम
महाषि (पुनवास
आनापट्टी), जिला सहनसा गोवासी
आ ददिलि स्कूठ अंशु रंकोनामिकेस
सँ पुठठ अल्लेपक आ
समाजशास्त्री श्नी अक्षय कुमार
यौवनीक अन्यांगिणी छथी
पुनामीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर
रहति शिकषाशास्त्रक स्नातक
शिक्षाथी आ एक्ट
समाजशास्त्री सँ सावधिक यथि
आम जीवनक सामाजिक वषिध-



डॉ. क.प.सिंह भासिकीय मसि

पति डॉ. शिव कुमार हा. गाम
गयी, सासुर- गजलगा. मेडिकल
शिक्षा प्रो. प्रो. डॉ. संपीट्ट ग्नाय
हॉस्पिटलसँ सम्पन्न कस सृष्टी-
योग विशेषज्ञा मुम्बईसँ १९८०-८२
मे प्रकाशित होखल मैथिली
पत्रिका "वदिए"क पाठि
भासिकीय मसि (गन्तगा- मैथिली
श्रमि- आउ पयि हमन गगनी) संग
सम्पादन



कुसुम सिंह प्रत्यावर्ण (आत्मकथा)

वैशु आ पास कऽ महिषासुर
साधक संस्था आ प्रघटनमे
होके विशेष अर्थीय स्वाभाविक



गन्दीनी पाठक १९६१- पाथक श्रम (कविति संग्रह)



क.प.सिंह हा १९६५-

गोसाउनक गीत, गशामुक्ति हति
गावे गीत, गनियो (वाउ साहित्य)
आ यात्रावनी- श्रेष्ठकित वन्म
(हिनै अनुवाद क.प.सिंह हा)
प्रकाशित



स्वर्णाशिकमनी

कविति संग्रह प्रत्यावर्ण
प्रकाशित



गोमसिंह हा

श्रमि गनी संग्रह (कविति
संग्रह) प्रकाशित



सर्वा हा "सोनी"



आशा हा

करो हमनो सुग, यगवान (कविति
संग्रह), प्रतीक्षा (कथा
संग्रह), सगिहक दाम (वीहनि



दीपा मसि

सम्पादन- वयो

"सांगीतिक अकाश"- कवता संग्रह
आ "मथिठिमे
सधामाम" प्रकाशति।



पठ्ठरी मम्मूठ

कवता

कथा संग्रह), आठियनाक
वातायन (आठियवा), सांगिक
स्वन (सुपुठवद्व्य
कावध) प्रकाशति।



गनिमठा कम्म (१८६०-)

शिक्षा - एम ए, बैहल -
पानाणपुन, दनडाणा, सासुन -
गोदियिनी (वठवा), वननामन
गवास - गौथी, हाणपाम्ठ,
हाणपंड सनकाग महवि एवं वाठ
वकास सामाणकि सुनका वगिण
मे वाठ वकास पानिणगा
पदावकिनी पद सं सेवागवि
उपानान स्वर्गान ठप्यन।



सवता हा

खेनामे डेन वृद्धिसोड थनादतिगि
गद पयसोमस(खयथ) आ मडुठ
(मधुवनी ठियेयन श्वेस्यत्रिठ) क
माय्यमसं मैथवि ठठ अगधिन।



वठिना थौथनी

कवता संग्रह- "थानाक
वृद्धि" आ कथा
संग्रह "कनक्षु" प्रकाशति।



अगठिवा १८८८-

मूठ नाम- अगठिवा
कुमानो "पह", "ओ छौडी" (कथा
संग्रह) आ पोथी-पाड (आठियवा)
प्रकाशति।



वठिना वठिमिश १८७८-

मूठ नाम- वठिना हा। पति: सुनी
मुप्ययदना हा; पति:सुनी समुठ्ठगाथ
हा, शिक्षा वीए, वृणा-
वृथापान, सुथासी पाना- पैतृकि-
गठिठा महोतनी गाना महोतनी
गठेश्वन (नेपाठ), वननामन-
वामपाठी मानुग पदठ, काठमांडू
(नेपाठ)। साहित्यिक उपठवर्थ-
गोणपपान, आणुन, आठन,
समय गण, थानुनी ठिकोसठ
समानिकि- ऐसठमे कवता।
प्रकाशति। मैथविठिमे प्रकाशति।
पहठि गथवा- वचिक शूणा (कवता)।
२०१८ मे कवता संग्रह "गह सीना
गह" प्रकाशति।

(य) २०००-२०२३ वरिंहः प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (सन् २०००) श्पषाम रररट- ५४७३३ वर्यपरुअ (सन् २००४) सम्पादकः गणेश्वर शर्मा एदितिः घाणेश्वर थहाकुमर न सपेयनोड मारोतिसे - पुवसिहेद नि वरिहा, तहे एदिति, वरिहा हेउदस तहे गिहण तो योतो तहौव लयहविस् तहेमे- वासेदौव लयहविस्, गिहण तो तानसओते तानसओतिनाते तहेसे लयहविस् लद योतो तानसओते तानसओतिनातेदौव- लयहविस्; लद तहे गिहण तो - पुवसिह् पानिण- पुवसिह् । उउ तहेसे लयहविस् लयगाकान् संग्रहकर्ता अपन भौतिक आ अपनकाशति लयगा संग्रह (संपूर्ण उपायान्तर लयगाकान् संग्रहकर्ता मध्य) दितिगोतिसनाउवदिविहावाभितियोम कें मेउ अट्टेयमेसूटक रूपमें पड सकैत छथि, संगे ओ अपन संक्षिप्त पत्रिय आ अपन सूकेन कएउ गेउ श्रोते सेहे पडयथि एउ प्रकाशति लयगा संग्रह समक कॅपीनारट लयगाकान् संग्रहकर्ताक उगमे छग्विआ जणः लयगाकान् संग्रहकर्ताक नाम वै अछि तणः ई संपादकाधीन अछि सम्पादकः वरिह ई-पत्रिकाशति लयगाक वेव-आनारव्व थोम-आयानि वेव-आनारव्वक गनिमासक अचिकान, ऐ सन आनारव्वक अनुवाद आ विपिनानाम आ तनो वेव-आनारव्वक गनिमासक अचिकान; आ ऐ सन आनारव्वक ई-पत्रिकाशन् प्रनि-प्रकाशक अचिकान लपैत छथि ऐ सन उउ कोनो न्अयउट् पानिनिमकिक प्रावधान वै छै, से न्अयउट् पानिनिमकिक इच्छुक लयगाकान् संग्रहकर्ता वरिहसे वै पुउयु वरिह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकैत अछि ए मासक ०१ आ १५ तथिकी वरिहयोगि पत्र ई प्रकाशति कएउ जाइत अछि थहे योगेगनस लद दियुमेगनस - पुवसिहेद वर वरिहा (सन् २०००) श्पषाम रररट- ५४७३३ वर्यपरुअ (सन् २००४) ले पेनीदियाउउय वेगिग यहेयकेद डेन लयससविधितिय सिसेस श्रोपठौतिह दिसिावठितिसि सहैउद गोन हवे दडिडियुगय लयससगिग तहेसे योगेगनस दियुमेगनस

(य) २०००-२०२३ सन्वायिकान् सुनक्षति वरिहमे प्रकाशति सगटा लयगा आ आनारव्वक सन्वायिकान् लयगाकान् आ संग्रहकर्ताक उगमे छग्वि मासिक गिहण तो सन २००० सँ ग्रहसर्तिपपन छउ हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक गायहल्लाम, हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक आदिकिपन आ अपनो ५ पुउर २००४ क पोसट हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक गायहल्लाम (कछु दनि उउ हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक गायहल्लाम ठिकिपन, सनोतौपवायक मायहगोड हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक वरिह २५८ यापाने(स) डनोम २००४ तो २०१६- हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक गिहण-प्रथम मैथिली वर्यपरुअ मैथिली वर्यपरुअ एगोरोटन) केन रूपमे इन्टरनेटपत्र मैथिलीक प्रायोगिक उपस्थतिक रूपमे वरिहमाग अछि ई मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका थकि जकल नाम वादमे १ जनवरी २००८ सँ 'वरिह' पडैतइन्टरनेटपत्र मैथिलीक प्रथम उपस्थतिक पत्रिका वरिह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका थकि पुहुंयउ अछि, ए हानपूनीगीयतिसियोम्वहासकिक पत्र ई प्रकाशति हेइत अछि आव 'मासिक गिहण' जाउव्वान 'वरिह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जाउव्वानक एगोरोटनक रूपमे प्रयुक्त ऋतु-लह अछि वरिह ई-पत्रिका श्पषाम रररट- ५४७३३ वर्यपरुअ

